

भारतीय ज्ञानपीठ काशी

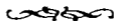
स्व० पुण्यश्लोका माता श्री मूर्तिदेवी की पवित्र स्मृति में

तत्सुपुत्र सेठ श्रान्तिप्रसाद जी द्वारा

संस्थापित

ज्ञानपीठ मूर्तिदेवी जैन ग्रन्थमाला

इस ग्रन्थमाला में प्राकृत संस्कृत अपभ्रंश हिन्दी कन्नड तामिल आदि प्राचीन भाषाओं में उपलब्ध आगमिक दार्शनिक पौराणिक साहित्यिक और ऐतिहासिक आदि विविध विषयक जैनसाहित्य का अनुसन्धानपूर्ण सम्पादन उसका मूल और यथासम्भव अनुवाद आदि के साथ प्रकाशन होगा। जैन भक्तों की सूचिमाँ क्षिलालेख सग्रह विशिष्ट विद्वानों के अध्ययनगुण्य और लोकहितकारी जैन साहित्य गुण्य भी इसी गुण्यमाळा में प्रकाशित होंगे।



ग्रन्थमाळा सम्पादक और निबामक (संस्कृत विभाग)

प्रो० महेंद्रकुमार जैन, न्यायाध्याय जैन-प्राचीनन्यायतीर्थ, आदि

बौद्धदर्शनाध्यापक संस्कृत महाविद्यालय

हिन्दू विश्वविद्यालय काशी

संस्कृत ग्रन्थाङ्क ६

प्रकारक—

अयोध्याप्रसाद गोयलीय

मन्त्री, भारतीय ज्ञानपीठ काशी,

दुर्गाकुण्ड रोड, बनारस सिटी

मुद्रक—श्री पुष्पीनाथ दार्शनिक मार्गद्वय भूषण प्रेस कायवाट काशी।

स्थापनाख
आन्वय इच्छा ९
वीर मि त २५५

सर्वाधिकार सुरक्षित

{ विष्णु सं ९
१८ फरवरी १९५४

नाममाला



एव मूर्तिदेवी मातेरवरी सेठ शास्त्रिमसाद् जैन

NAMAMALA

BY

MAHAKAVI DHANANJAYA

With the

BHASHYA

OF

AMARAKIRTI

AND

The Anekartha nighantu and Ekakshari Kosha



EDITED WITH NOTES

By

Pt SHAMBHU NATHA TRIPATHI

Vyakaranacharya Sapta Tirtha

Published by

BHARATIYA JNANA-PITHA KASHI

First Edition }
1000 Copies }

CHAITRA, VIJ 1847

VIKRAMA SAMV 2007

APRIL 1920

{ *Price*
Rs 3/8

BHARATIYA JNANAPITHA KASHI

Founded by

SETH SHANTI PRASAD JAIN

In memory of his late benevolent mother

SHRI MOORTI DEVI

JNANA PITHA MOORTI DEVI JAIN GRANTHAMALA

In this Granthamala critically edited Jain agamic Philosophical Pauranic literary historical and other original texts available in Prakrit Sanskrit Apabhramsha Hindi Kannada Tamil Etc will be published in their respective languages with their translations in modern languages

AND

Catalogues of Jain Bhandaras inscriptions studies of competent scholars and Jain literature of popular interest will also be published

OLYMPIA EDITOR OF THE SANSKRIT SECTION

Prof MAHENDRA KUMAR JAIN

NYAYACHARYA JAIN PRACHIN NYAYATIETHA IK

Professor of Buddha Darshana Sanskrit Mahavidyalaya
Banaras Hindu University

SANSKRIT GRANTHA No 6

Publisher

AYODHYA PRASAD GOYALIYA

SFCY

BHARATIYA JNANAPITHA KASHI

DURGAKUND ROAD BANARAS CITY

1 issued
{
Talguna kr 1 0
Vir Sam 2170

All Rights Reserved

{ Vikram Samvat 2000
{ 18th Feb 1941

FOREWORD

The Bharatiya Jnanapitha, Banaras founded by Shri. Shantuprasad Jain to perpetuate the memory of his mother Murtidevi, has undertaken an ambitious plan of scholarly publications dealing with all aspects of Ancient Indian Culture with a very broad outlook and vision, and has already issued a few works in various languages such as Sanskrit, Prakrit, Pali etc. The undertaking has secured a learned scholar of proved ability in Pandit Mahendra Kumar Nyayacharya, of the Sanskrit Mahavidyalaya of the Banaras Hindu University as a General Editor. The Jnanapitha has already published a few works and has a number of others in active preparation.

The present volume contains two small works of the famous lexicographer Dhananjaya. The first is called N A M A M A L A, a collection of synonyms, while the other is called A N E K A R T H A—N A M A M A L A, recording words with plurality of senses. The first work contains just 200 stanzas, while the other is smaller still. The most important feature of the first work is that it publishes for the first time the Bhashyas of AMARAKIRTI, who gives etymological explanations of each and every word in the work, and adds a few more synonymous words from his own observation. His Bhashyas follows the same methods as are used by Ksatrasvarnin in his famous commentary on AMARAKOSA. The entire work is very carefully edited with appropriate references to authorities by Pandit Shambhunath Tripathi, a Saptatirtha and also a Vyakaranacharya of repute. On reading his foot-notes, I often felt that Pandit Tripathi excels the Bhasyakara both in ingenuity and accuracy nay I would go further and say that his etymological explanations are happier still. I am sure the scholars will admire his work in the foot-notes.

The volume is further equipped with several indexes. They include naturally the word-indexes of both the works edited but there are in addition index recording additional words from Amarakirtis Bhasya, a list of Yaugika words a list of works and authors cited and a list of quotations cited in the work, all this being done by Pandit Mahadeva Chaturvedi, Vyakaranacharya. In fact the editorial part of the volume is as thorough as is humanly possible and I have nothing but high admiration for the ability of Pandit Mahendra Kumar the General Editor in securing such a team of scholars to produce this volume.

Banaras Hindu University
6th September 1949

P. L. VAIDYA, M. A. D. Litt,
Mayurbhanj Professor and Head of the
Department of Sanskrit & Pali.

प्राक्कथन

(हिन्दी अनुबाध)

अपनी पूज्य माता मूलदेवीजी की स्मृति के लिए ताहु साहित्यसभा जीजन द्वारा संस्थापित भारतीय ज्ञानपीठ बनारस में बिड़लागुरुं प्रकाशनों की एक उत्साहपूर्ण योजना हाथ में ली है। प्राचीन भारतीय संस्कृति के विज्ञान दृष्टि में कल्पना वाले सभी अंगों का प्रकाशन इस योजना के अन्तर्गत है तथा अब तक इस संस्था से संस्कृत प्राकृत पाली आदि विभिन्न भाषाओं के कतिपय ग्रन्थ प्रकाशित हो चुके हैं। इस योजना के सम्पादन के लिए काशी हिन्दू विश्वविद्यालय के संस्कृत महाविद्यालय के मुख्य विद्वान् पं. भद्रेश्वरकुमार श्यामाचार्य प्रधान सम्पादक के रूप में प्राप्त हैं। आन्वर्ति से अब तक कई एक ग्रन्थ प्रकाशित हुए हैं और कई एक प्रकाशन के लिए तैयार हैं।

वर्तमान ग्रन्थ में प्रसिद्ध बौद्धिकर बन्धुग्रन्थ के दो कृतियाँ सम्मिलित हैं। पहली नाममात्र कहलाती है जिसमें पर्यायवाची शब्दों का संग्रह है और दूसरी अनेकार्थ नाममात्र जिसमें अनेक अर्थ बोधक शब्दों का संग्रह है। पहली कृति में २ श्लोक हैं जब कि दूसरी कृति उत्तरे काशी छोटी है। प्रथम कृति के सम्बन्ध में उल्लेखनीय विशेषता यह है कि इस पर लिखा गया अमरकीर्ति का भाष्य पहले-पहले प्रकाश में आ रहा है। अमरकीर्ति ने नाममात्र के प्रत्येक शब्दों की व्युत्पत्ति वैदिक स्पष्टीकरण किया है और अपनी दृष्टि में आज कुछ और पर्यायवाची शब्दों को शामिल कर दिया है। उनके भाष्य की वही तराचि पद्धति है जो कि अमरकोश की प्रसिद्ध शीला में शीरस्वाधी ने अपनायी है।

सम्बन्ध कृति का सम्पादन स्वातन्त्र्यात् पश्चित शम्भुनाथ त्रिपाठी व्याकरणशास्त्रज्ञ सपत्नीर्ष ने बड़ी साधनशील से तथा प्रभाषों का उपयुक्त व्यवहार देते हुए किया है। उनकी दिव्यियों का अध्ययन करने से मझे अनेक बार प्रतीत हुआ है कि पश्चित त्रिपाठी-वसित और सुद्धि दोनों में कहीं-कहीं भाष्यकार को भी मात कर गये हैं इतना ही नहीं उनके व्युत्पत्ति संबंधी स्पष्टीकरण और भी अच्छे हैं। मुझे विश्वास है कि बिड़लागुरुं लीज विष्णुजी में त्रिपाठी जी के प्रयत्न की प्रशंसा करने में।

ग्रन्थ में अनेक अनुक्रमिका लमा दी गई हैं। उनमें सम्पादित दोनों कृतियों की शब्द सूची का सम्मिलित होना तो स्वाभाविक ही है परन्तु इसके अतिरिक्त अमरकीर्ति के भाष्य के अतिरिक्त शब्दों की सूची पौगणिक शब्दों की सूची उद्भूत शब्द और पर्यवर्तियों की सूची तथा शब्द में उद्भूत शब्दों की सूची भी सम्मिलित की गई है। यह सब पश्चित महादेव जी चतुर्वेदी व्याकरणशास्त्रज्ञने किया है। सचमुच में ग्रन्थ का सम्पादकीय भाग उतना पूरा बना दिया गया है जितना मातृजी शक्ति से सम्भव था। और इस सब के लिए मैं प्रयत्न सम्पादक पश्चित भद्रेश्वरकुमार श्यामाचार्य की योग्यता की सराहना करता हूँ जिन्होंने ऐसे ग्रन्थ के प्रकाशन में इस प्रकार की बिदुग्मलक्ष्मी को उपचित किया है।

काशी हिन्दू विश्वविद्यालय
६ गिनम्बर १९४९

पा. एस० पैरा
पृ. ५ की तिर
नवरत्न प्रोसेसर तथा
अध्यक्ष ताहुत काशी विभाग।

प्रस्तावना

सम्प्रदायि निष्पत्तेः परब्रह्माविमर्शनि—ब्रह्मविष्णु

सम्प्रदाय में पारंपरिक स्थिति परब्रह्म की प्राप्ति कर सकता है। यह सिद्धांत इस बात की पुष्टि करता है कि साधक को पहिले सम्प्रदायित और उसकी मर्त्या तथा भाव का ज्ञान आवश्यक है। यदि उसे सम्प्रदाय के बाह्यार्थ याचार्थ और तात्पर्यार्थ की प्रविष्टि का बोध नहीं है तो वह भटक सकता है। बस्तुतः सम्प्रदाय भावों के होने का एक लक्षण ब्रह्म है। जब तक संकेतग्रहण न हो तब तक उसकी कोई उपयोगिता ही नहीं है। एक ही सम्प्रदायसंकेत से निम्न विभिन्न अर्थों का वाचक होता है। इसीलिए दर्शनशास्त्रों में एक पक्ष यह भी उपलब्ध होता है कि सम्प्रदाय केवल ब्रह्म की विवक्षा को सूचित करते हैं परार्थ के वाचक नहीं हैं। 'घट' शब्द का संकेत ब्रह्मा ने जिस रूप में जिस मोता को ग्रहण करा दिया है उसी अभिप्राय का छेदन वह सम्प्रदाय उस मोता को करा देगा। सम्प्रदाय विद्यमान अर्थों को भी कहता है और अविद्यमान को। एक शब्दविषय भी सम्प्रदाय है जिसका अर्थ वाच्य परार्थ इस संसार में नहीं है और घट सम्प्रदाय भी है जिसका वाच्य पड़ा भीतर है। जहां सम्प्रदाय के सम्बन्ध में यह निश्चय करना है—यह सम्प्रदाय अर्थवाची है और यह अनर्थवाची-वेदी शीर है। फिर भी शास्त्रियों ने यह प्रयत्न किया है सम्प्रदाय के सार्थकत्व और अनर्थकत्व का विवेक हो जाय।

उत्तका मुख्य उपाय है अन्वितग्रहण या संकेतग्रहण। जिस अर्थ में जिस सम्प्रदाय का संकेतग्रहण होता है वह उस अर्थ का वाचक हो जाता है। यह संकेत कब कितने ग्रहण कराया इसका निर्णय कठिन है। ईश्वर की संकेत ग्रहण कराने के लिए धारिताया प्रकृति की बस्तु है। इसका इतना ही अर्थ है कि बुद्धपरम्परा से सम्प्रदाय संकेत का ग्रहण बराबर होता जाया है और वह अनादि है। उसमें विज्ञेय हेतु कर श्रोतार भी सामान्यतया संकेत की परम्परा अनादि है। जब से यह शीर है तभी से सम्प्रदायसंकेत है। इस संकेतग्रहण के उपाय निम्न क्रियित हैं —

'दानिप्रदं व्याकरन्मोदमानमोनाप्लवास्याद् व्यबहारात् ।

वागम्यं प्रोवाद् विवृतेर्ब्रह्मि सामिभ्यन् सिद्धपरत्स्य बुद्धेः ॥

अर्थान्—व्याकरण उपमान शीर अन्वितवाच्य व्यबहार, वाच्यशोच विवरण और प्रसिद्ध सम्प्रदाय के सामिभ्य से संकेत ग्रहण होता है। इनमें व्याकरण से यौगिक शब्दों का व्युत्पत्ति द्वारा संकेत ग्रहण हो भी जाय पर टङ्क और यौगिक शब्दों का संकेत ग्रहण व्याकरण से नहीं हो सकता। अन्वित-कोश ही एक ऐसा उपाय ब्रह्मा है जिससे तभी प्रकार के शब्दों का संकेत-ग्रहण हो जाता है।

श्रीराम अर्थान् प्रकृतानां या अंशारः व्याकरण से सिद्ध वा बुद्धपरम्परा से प्रसिद्ध ब्रह्म की यौगिक शब्द वा यौगिक शब्दों का अनेकार्थ के साथ संग्रह शीर में होता है। भावा बही समुद्र और शीरिण समुद्रि जली है जितना शब्द अंशार पर्याप्त हो और जिसमें व्यबहार और परमात्मा के लिए उपयोगी सभी सम्प्रदाय विद्यमान हों। जिसमें अन्य भाषाओं के या बिदेसी शब्दों के ब्रह्मों को या उक्त स्व-स्वरूप करने की साम्य हो। इस बुद्धि से संस्कृत भाषा उत्तरी समुद्र नहीं बन सकती। इनका कारण यह रहा है कि इस भाषा पर एक वर्ष का प्रयत्न रहा और उनसे इसकी वाच्य शक्ति को कम अर्थ के कल्पित अर्थ से बढ़ दिया जा। उस अर्थ ने उस अर्थ में अर्थान् अर्थान् और शब्दों के अर्थों का जो उस समय की अर्थान्तिपा भी उन्वितार ब्रह्मा पाय शीरिण दिया था। फिर भी संस्कृत की भी प्रकृति अर्थान् उपलब्धि आदि के शीर से शब्दीन्वितार शक्ति की

उसीके कारण यह अक्षरबद्ध होकर भी विद्वानोंमें अक्षर्य बनी रही। संस्कृत को लोकभाषा का पद या सबकी बोली होने का सौभाग्य नहीं मिल सका। इस भाषा सम्बन्धी अक्षर्य विचार ने संस्कृत के कोशाचार को भी सीमित कर दिया।

भाषा के एकाधिकारियों ने तो यहाँ तक कह डाला है कि अपभ्रंस या अन्य लोकभाषा के शब्दों में वाचक शक्ति ही नहीं है। शक्ति का अपभ्रंश लट्ठी या लठी है। ये लट्ठी या लठी शब्द में वाचकशक्ति स्वीकार नहीं करना चाहते। इसका कहना है कि वाचकशक्ति तो 'यष्टि' शब्द में ही है। लट्ठी या लठी शब्द पुनःकरण से जो लठी यथा का शब्द होता है उसकी शक्ति इस प्रकार है—अक्षर ही जो लठी शब्द को पुनःकरण से संस्कृत 'यष्टि' शब्द का स्मरण करता है और फिर उस 'यष्टि' शब्द से परार्थबोध होता है। अर्थात् ऐसे जो लठी को जिसने स्मरण में भी 'यष्टि' शब्द नहीं सुना उसे भी लठी शब्द से परार्थ बोध के लिए संस्कृत 'यष्टि' शब्द का स्मरण आवश्यक है।

इस भाषाचारित वर्गप्रमुख से संस्कृत भाषा एक विशिष्ट वर्ग की भाषा बन कर रह गई। या महाभाषा के पक्षमा आधिक्य में लिखा है कि—'उस्माद् बाह्योत्पन्नं न स्तेष्विष्टं न मायमाश्रितं न स्तेष्विष्टो ह वा एव अपभ्रंसः। अर्थात् अक्षर्य को न तो स्तेष्विष्ट शब्दों का व्याख्यान करना चाहिए और न अपभ्रंस का ही। अपभ्रंस स्तेष्विष्ट है। अपभ्रंस का विवरण भी यहाँ यह दिया है—'यदि तावच्छब्दोपदेशे चिन्ते नीरूपेत्स्मिन्पुनरिष्टे गम्यते एतद् गाम्भाययोपदेशमा इति। अर्थात्—यौ शब्द है और यौ यैमा आदि अपभ्रंस है।

यद्यपि भाषा को संस्कृत रखने के लिए व्याकरण का संस्कार आवश्यक है तभी यह एक अपने विशिष्ट रूप में रह सकती है, किन्तु और अक्षर्य का अनुशासन भी इसीलिए आवश्यक होता है परन्तु उसके उच्चारण में किसी भाँति विशेष का या वर्ण विशेष का अधिकार नमाने से उसकी व्यापकता तो एक ही जाती है। नाटकों में स्त्री सूत्रों तथा दासों से प्राकृत भाषा का अनुशासन जाना उचित नहीं का ही जाती है।

इतना ही नहीं वर्मलेख में तावु शब्द अर्थात् संस्कृत शब्द का उच्चारण ही मुख्य माना गया। इसका यह तावु परिचय का कि वर्ण का ठेका भी भाषा प्रमुख से द्वारा एक वर्ण विशेष की गिला। हुआ भी यही। वर्ण का अधिकार और उसके आर्थिक सम्बन्ध एक वर्ण का हो गया।

इस सम्बन्ध में मौलिक शक्ति महाभजन महावीर और बुद्ध ने की। इनके भाषा के इस कल्पित अक्षर्य को तोड़ कर जनभाषा में वर्ण का उपदेश दिया और स्त्री सूत्र तथा नाट्य से नाट्य व्यक्तियों के लिए वर्ण का बोध कोला। वर्ण के उच्च पद के लिए शक्ति का कोई अक्षर्य इनने स्वीकार नहीं किया। इस भाषाशक्ति से प्राकृत भाषाओं का विकास हुआ। यह नहीं है कि प्राकृत भाषाएँ व्याकरण और विन्यासगत से मुक्त हों। इनके अपने व्याकरण हैं, अपने नियम हैं जिनके अनुसार वे अक्षर्य पुस्तक और कल्पित होती रही हैं।

महावीर और बुद्ध के काल से केन्द्र ईसा की तीसरी सदी तक प्राकृत भाषाओं को गति मिलती रही। अशोक के शिलालेख प्राकृत भाषा में उक्तम्ब होते हैं। शातवाहिक प्राकृत भाषा में बरते रहे हैं। पुनः संस्कृत युग में इन भाषाओं की गति मन्द पड़ी। इस युग में चीन और बौद्ध आचार्यों ने भी अक्षर्यभाषा संस्कृत में ही की। यही कारण है कि दोनों के विपुल साहित्य से संस्कृत का कोशाचार जरा हुआ है। दार्शनिक क्षेत्र में उच्च पुण्य तो नानार्थ विन्यास सम्बन्धित लिट्टेन अक्षर्य आदि के प्रयोग से ही बची। तात्पर्य यह कि अक्षर्य परम्परा ने अक्षर्य में संस्कृत भाषा के विकास में भी अरुण अक्षर्यको योवदान दिया।

प्रस्तुत ग्रन्थ—

नाममाता कोष्ठ का एक सुन्दर और व्यवहारोपयोगी भाषणक शब्दों से समृद्ध ग्रन्थ है। महाकवि वनञ्जय ने २ श्लोकों में ही संस्कृत भाषा के प्रमुख शब्दों का चयन कर पामर में साधारण कर दिया है। शब्द से शब्दान्तर बनाने की इकट्टी अथवा निराली पद्धति है। जैसे पृथिवी के नामों के आगे 'पर' शब्द जोड़ देने से पर्वत के नाम 'मनुष्य' के नामों के आगे 'पति' शब्द जोड़ देने से राजा के नाम 'कुक्ष' के नामों के आगे 'वर' शब्द जोड़ने पर बन्दर के नामों का बन जाना आदि।

इसपर अमरकीर्ति विरचित भाष्य सर्वप्रथम प्रकाशित किया जा रहा है। इस भाष्य में प्रत्येक शब्द की व्युत्पत्त्यसिद्ध व्युत्पत्ति सूत्रनिर्देश पूर्वक बताई गई है। उच्चारि से लिख हो या अन्य रीति से पर कोई भी शब्द निर्मुत्पत्ति नहीं रह पाया है। इन व्युत्पत्तियों की प्रामाणिकता के लिए मूलापुराण, पद्यनिधि शास्त्र पद्यसिक्तक चण्डू नीतिवचन्यामृत, विसम्बालकाव्य, बृहत्प्रतिष्मय भाष्य महाभारत सुल्लिप्तमुक्तावली, द्रव्यशेखर, अनेकार्थप्रतिष्मय अमरसिंह भाष्य आद्यापर महाभियेक, नीतिसार, शास्त्रत हैमीनाममाता आदि ग्रन्थों तथा पद्मकीर्ति, अमरसिंह, आशाचार, इन्द्रनिधि श्रीरस्वामी, पद्यनिधि, श्रीमोज हनुमत्पुत्र आदि ग्रन्थकारों को नाम निर्देशपूर्वक प्रमाणकोटि में उपस्थित किया है। अनेक व्युत्पत्तियाँ तो अमरकीर्ति की कल्पना के अन्तर्गत बराबर हैं। बचा—

“अप्यन्तं सुद्वन्द्वबोध्यं स्पन्देति मल्लं अर्चति मिसके स्पर्शे से सुद्व चण्डू मर जाय च्छ मच्छ है।

‘न नन्दति भ्रातृजाया यस्यां सत्यां सा नान्या’ जितकी मौजूदगी में मौजूदाँ सुद्य न हो च्छ नान्या—नन्द है।

यज्ञानां पशुकारणसप्तगामाभिति यज्ञाति अर्चति पशुपक्ष का विरोधी स्पन्देव है। आदि।

इसके साथ ही एक अनेकार्थ निबन्ध भी मुद्रित किया गया है। इसके अन्त में निम्नलिखित पुष्पिका लेख है—“इति महाकविचण्डूग्रन्थस्यैति निपद्यत्तमये शब्दसंकीर्णं अनेकार्थप्रकल्पनो द्वितीय परिच्छेदः। इसकी एक भाग समुद्रतम प्रति पं कुक्कलिकोरेजी मुदतार अविच्छाता बोरसेबामन्दिर से प्राप्त हुई थी। रचना शैली आदि से यह विरचय पूर्वक नहीं कहा जा सकता कि यह उन्हीं वनञ्जयकी कृति है, यद्यपि पुष्पिका वाक्य में स्पष्ट रूपसे वनञ्जय का उल्लेख है। इसके साथ ही एक असाधारण एकशब्दोपयोग का भी उद्घरण किया है। इसको हस्तलिखित प्रति भी बोरसेबामन्दिर से ही प्राप्त हुई थी।

प्रस्तुत सस्कृत—

अमरकीर्तिरचित भाष्य की एकमात्र बहुमुद्र प्रति ऐलन पञ्चमाल सरस्वती भवन शास्त्राचार्य से प्राप्त हुई थी। इसके आचार से इसका सम्पादन पं सप्तमुनाबजी त्रिपाठी ने किया है। संस्करण में जो अनेक परिच्छिन्न हैं वे सब पं महाशेखरी चण्डूकी व्याकरणशास्त्र ने तयार किये हैं। टिप्पणियाँ पं शंभुनाथ जी त्रिपाठी ने बड़े परिश्रम से लिखी हैं। मझे यह लिखते हुए आनन्द होता है कि उनके उत्तरोत्तरी अथवा पाश्चित्य का परिचय टिप्पणों में पर पर पर मिलता है।

ग्रन्थकार

[महाकवि धनञ्जय]

नाममाता के कर्ता महाकवि धनञ्जय है। इन्होंने स्वयं अपने किसी ग्रन्थ में अपने समय का बि के बारे में विचार नहीं किया है। ये गृहस्थ थे। हितम्बानकाव्य के अन्तिम श्लोक की व्याख्या में उसके होशकार ने धनञ्जय के पिता का नाम बसुदेव माता का नाम श्रीदेवी और ध्व का नाम शशरत्न सूचित किया है। इसकी व्याप्ति हितम्बानकवि के नाम से भी। नाममाता के अन्त में धामा जानेवाला यह श्लोक स्वयं इतका तात्की है :-

‘प्रमाणमकसङ्घस्य पूज्यपादस्य अक्षयम् ।
हितम्बानकवे काव्यं यत्प्रथमपविषयम् ॥’

अर्थात्—अकसङ्घदेव का प्रमाण दास्य पूज्यपाद का अक्षय—व्याकरण शास्त्र और हितम्बानकवि का हितम्बानकाव्य ये तीनों अपूर्व रत्नय है। यह श्लोक नाममाता के भाष्यकार अमरकीर्ति के सामने था उनमें इतकी व्याख्या भी की है। इतमें इतका उप-नाम ‘हितम्बानकवि’ सूचित किया गया है। टीका भी है क्योंकि महाकवि धनञ्जय की सर्वश्रेष्ठ चमत्कारिणी कृति हितम्बानकाव्य ही है। बरिदराज शूरि ने पाश्चिमाय बरित के प्रारंभ में हितम्बान काव्य की प्रशंसा करते हुए लिखा है :-

“अनन्येवसम्बाना कनयो ह्यये मुहुः ।
वाचा धनञ्जययोगुणता कर्मस्वेव श्रिया कथम् ॥

अर्थात् धनञ्जय के द्वारा कहे गए अनेक सम्बान-अर्थभेद वाक्य और हृदयस्पर्शी वचन कानों को ही प्रिय जैसे लगते थे कि अर्जुन के द्वारा छोड़े जाने वाले अनेक लक्ष्यों के भेदक मर्मनेत्री वाच कर्म की प्रिय नहीं लगते ?

हितम्बान काव्य अपने समय में पर्याप्त प्रतिष्ठा प्राप्त कर चुका था। इसका उल्लेख बारा-बीस भोजराज के समकालीन भाषार्थ प्रभाकर ने अपने प्रलेखमल्लनासंख्य (पृ ४ ९) में किया है।

जसहज (१२वीं शती) विरचित सुविठ मुस्ताकनी में राजसेकर के नाम से धनञ्जय की प्रशंसा में निम्नलिखित पद्य उद्युत है —

‘हितम्बान निपुणता त ता चके धनञ्जय ।
वया जग फल तस्य सता चक्र धनञ्जय ॥

इस श्लोक में राजराज ने धनञ्जय के हितम्बानकाव्य का नमोमुग्धकर तरनि से उल्लेख किया है ।

धनञ्जय कवि के द्वारा एक विद्यापहार स्तोत्र भी बनाया गया है । यह अपने प्रस्ताव श्लोक और गभीर्य के लिए प्रसिद्ध है। कहते हैं यह श्लोक उनके तर्पण पुत्र का विद्य उत्तरण के लिए बनाया था ।

समयविचार—

इसके समय के लिए निम्नलिखित विवरण हैं :-

(१) प्रलेख काव्य	आदि है	(२) ने इनक नहीं
------------------	--------	-----------------

- (२) इसी तरह बहिराज सुरि (सन् १३५) ने पार्श्वनाथ बरित में बतञ्जय और त्रिसम्बान का निर्देश किया है अतः ये ११वीं सदी के बाद के नहीं हैं ।
- (३) जम्भुम (१२वीं सदी) ने राजसेनर क नाम से सुवितमुक्तावली में जो पद्य उद्धृत किया है, वह राजसेनर काम्पमीमासाकार राजसेनर है । इनका उल्लेख सीमवेद (ई १६) के पद्यसिक्तय जम्भु में पाया जाता है अतः राजसेनर का समय ई ११वीं सदी सुनिश्चित है । राजसेनरके द्वारा प्रसिद्ध होने के कारण बतञ्जय का समय ११वीं सदी के बाद का नहीं हो सकता ।
- (४) डॉ. हीरालालजी ने वटल्लुत्तम प्रथम भाग की प्रस्तावना (पृ ६२) में यह सुचित किया है कि त्रिसतेन के पुत्र बहिरसेन स्वामी ने बबला डीका (पृ ३८७) में जने कर्ण नाममाता का निम्नलिखित श्लोक प्रभावशय में उद्धृत किया है—

हेतावेवं प्रकाराधीं व्याकच्छेदे विपर्यये ।

प्राप्तुमहि समस्तौ च इतिशब्दं विदुर्भया ॥

यह श्लोक जनेकण नाममाता का है । बबलाडीका वि सं० ८७३ सन ८१६ में समाप्त हुई थी अतः बतञ्जय का समय ११वीं सदी के बाद नहीं हो सकता ।

- (५) बतञ्जय ने अकलंक वेद का उल्लेख 'प्रभावमकलन्तुस्य' श्लोक में किया है । अकलंक का समय ई ७वीं सदी निश्चित है अतः बतञ्जय ७वीं सदी से पूर्व के नहीं हो सकते ।

संस्कृत साहित्य का संक्षिप्त इतिहास के लेखकड्वय ने बतञ्जय का समय ई १२वीं शतक का मध्य निर्धारित किया है । (पृ १७४) जने अपने इस मत की पुष्टि के लिए डॉ. के. बी. पाठक महाशय का यह मत भी उद्धृत किया है कि—“बतञ्जय ने त्रिसम्बान महाकाव्य की रचना ई ११२३ और ११४ के मध्य में की है” । पर उपरोक्त प्रमाणों के आभार से बतञ्जय का समय ई ८वीं सदी का अन्त और ११वीं का पूर्वार्ध सिद्ध होता है । जम्भुम की सुवितमुक्तावली में जो ई १२वीं सदी की रचना है राजसेनर के नाम से उद्धृत 'त्रिसम्बाने निपुणता' श्लोक काम्पमीमासाकार राजसेनर का ही हो सकता है, न कि प्रबन्धकोश के कर्ता राजसेनर का । संस्कृत साहित्य के इतिहास के लेखकड्वय यहाँ भ्रान्ति कर बैठे हैं वे स्वयं जम्भुम की १२वीं सदी का विशाल लिखकर भी जसमें उद्धृत राजसेनर को १४वीं सदी का जैन राजसेनर मताते हैं ।

अतः बतञ्जय का समय उपरोक्त प्रमाणोंके आभार से ई ८वीं का उत्तर भाग और ११वीं का पूर्व भाग प्रभावित होता है ।

मान्यकर अमरकीर्ति—

महामुद्रित अमरकीर्ति ने नाममाता के भाष्य के अन्त में यह पुष्टिका बरय लिखा है—
“इति महामुद्रितकीर्तियमरकीर्तित्ता त्रिचिद्येन श्री ऐन्द्रबंशोत्पन्नेन दाम्बवेचता कृतानां बतञ्जयनाम नामायां प्रकनकाण्डं व्याख्यातम्” इससे इतना ही बात होता है कि अमरकीर्ति त्रिचिद्येन उपाधि से विमुद्रित थे और वे ऐन्द्रबंश (सैतबंस) में उत्पन्न हुए थे ।

इन्होंने अपने को 'दाम्बवेच' उपाधि से जलद्वन्द्व किया है ।

मंत्रल श्लोकों में पूज्यपाद अक्षयऋषि विद्यानिधि और समस्तभद्र के साथ ही साथ एक कःभाग

१ इसी के आभार से कलामुद्रोद्य की प्रस्तावना (P XXXII) में भी राजावतार नामा ने भी भी बतञ्जय का समय ११वीं सदी लिखा है ।

कीर्ति को भी नमस्कार किया है। इन्होंने ब्रह्म के बीच में बहो जाक्यकता भी नहीं है बहो भी अपना नाम देने में संकोच नहीं किया है। कई स्थानों पर ब्रह्मब्रह्म के इनकोनों की उत्पत्तिका में भी "सम्प्रति मनव्यवर्ध आरभ्यते अमरकीर्तिना" (पृ १३) आदि लिखा है। जो स्पष्टतः ब्रह्म उत्पन्न करता है। एक जगह तो ब्रह्मब्रह्म के इस इनकोन्य की व्याख्या करते हुए स्वर्ण अपना ही नाम लिख दिया है—“आरिबिर्बन्धतेऽमुना। अमुना इवानी आरिबिर्बन्धते कम्पते। केन भाव्यकर्वा श्रीमदमरकीर्तिना। स्पष्टतया यहाँ 'ब्रह्म' का उतर 'ब्रह्मब्रह्म' होगा चाहिए।

अमरकीर्ति नाम के तीन विद्वानों का पता लपता है—

- (१) 'ब्रह्मब्रह्मोद्भवस्य' आदि ग्रन्थों के रचयिता अमरकीर्ति। इन्होंने वि सं १२४७ साधों सुवी १४ के दिन ब्रह्मब्रह्मोद्भवस्य ग्रन्थ समाप्त किया था। अर्थात् वे ईसवीय १२ वीं सदी के अन्तिम भाग और ऐरवही के प्रारम्भ में विद्यमान थे। ये अन्तिमपति आचार्य की परम्परा में हुए हैं। इनकी पुत्र परम्परा यह है—अन्तिमपति साहित्येय अमरसेन श्रीवेच ब्रह्मकीर्ति और ब्रह्मकीर्ति के सिन्ध अमरकीर्ति।
- (२) बर्धमान के प्रगुह अमरकीर्ति। इनकी परम्परा इस प्रकार है^१। श्रीवेच विद्यालकीर्ति सुमकीर्ति ब्रह्मभूषण अमरकीर्ति परमभूषण बधमान। बर्धमान ने एक संवत् १२९५ बीसाह सुवी ३ बुधवार को बर्धमान की निवटा बनवाई थी। इस शिवाके के अनुसार अमरकीर्ति का समय एक १२५ के आसपास सिद्ध होता है। ये ईसवीय १४वीं सदी के विद्वान् थे। इनके इस समय का समर्पण एक १३ ७ में उत्कीर्ण वि अपनपर के शिलालेख से भी होता है।
- (३) ब्रह्मवत्पारि महाभारत के रचयिता बर्धमान के समकालीन विद्यालक के पुत्र विद्यालकीर्ति के सवर्मा अमरकीर्ति। इनके सम्बन्ध में ब्रह्मवत्पारिवारिक में लिखा है—

“श्रीयाधमरकीर्त्यात्पट्टारकविरोमणि।

विद्यालकीर्तियोगीन्द्रसवर्मा धारणकोपिचः॥

अमरकीर्तिमुनिविमलाश्रय^२कुसुमभाषमयापलकव्यमुत्।

जितमठापहुतारितमारण यो अपति निर्मलधर्मपुत्राधक ॥

अर्थात्—धारणकोपिच विमलाश्रय काजवेता निर्मलपुत्र और धर्म के आधर तथा जितमठके प्रकाशक अमरकीर्ति पट्टारक विद्यालकीर्ति के सवर्मा थे।

विद्यालकीर्ति के पिता विद्यालक का स्वर्गवास एक १४ ३ सन् -१४८१ में हुआ था। यह उत्तेक ब्रह्मवत्पारि महाभारत में विद्यमान है^३। अतः उनके पुत्र विद्यालकीर्ति के सवर्मा अमरकीर्ति का समय करीब सन् १४५ अर्थात् ईसवीय १५ वीं शताब्दी तिष्ठ होता है। ब्रह्मवत्पारि धारण का समाप्तिवास १४ ४ तक अर्थात् १४८२ ई है।

१ बेली डा हीराकाव का 'अमरकीर्तिनिधि और उनका पदकर्मोत्प्रेष' लेख। जैन विचार २ अंक ३।

२ जैन विद्यालक संघट्टरा १११वां शिलालेख।

३ प्रचारितसंग्रह के उपासक पं के सुबबकी छात्री ने 'धारे बह्मवत्पारिवारिकस्य सवर्मा' का अर्थ एक १४९३ दिया है। जब कि ब्रह्मवत्पारि धारण की समाप्ति सूचक 'धारे ब्रह्मवत्पारि ब्रह्मवत्पारि का अर्थ १४ ४ तक दिया है। सोना जगह का का गुण लेना चाहिये। यदि ब्रह्मवत्पारि धारण एक १४ ४ में समाप्त हुआ है तो जगमें एक १४९३ में हुई विद्यालक की मृत्यु की बर्धमानों का सार्थी है? ४ बेली प्रचलिनसंग्रह पृ १२८।

इस तीन अमरकीर्ति में प्रस्तुत ग्रन्थ के रचयिता छन्दाम्बोध के रचयिता नहीं हो सकते क्योंकि उनका काल बि० १२४७ के आसपास है जब कि नाममाता के भाष्य (पृ० ६२) में आसावर के महाभियोग से उद्धरण दिया है। आसावर ने अपना अनामरकामृत बि० १३ में समाप्त किया था। अतः प्रथम अमरकीर्ति इस ग्रन्थ के रचयिता नहीं हो सकते।

इस से यह निष्पन्न निकलता है कि प्रस्तुत ग्रन्थ के भाष्यकर्ता अमरकीर्ति बि० १३ सर्पात् ईशवीय १२४३ सेटहवीं सदी के पहिले के विद्वान् तो नहीं हैं। इन्होंने भाष्य में भोज (११वीं सदी) इन्द्रमणि (१०वीं सदी) पद्ममणि (१२वीं सदी) सौमप्रस (१२वीं सदी) हेमचन्द्र (१२-१३वीं सदी) आदि के ग्रन्थों से भी नामोस्मैव पूर्वक अवतरण किए हैं। शेष दो अमरकीर्ति एक व्यक्ति तो हैं ही। द्वितीय अमरकीर्ति की प्रस्ता में बिजयपुर के तारामेख ने निम्नलिखित पद्य मिलते हैं—

“धिष्यतस्व गुरोःसिद्धनागंभूपोनिधि।

बीमानमरकीर्त्यायो देविकापेष्टः समी॥

निजपद्मपुत्राटं जटयित्वा नलोपतो हृष्ये।

वविचिच्छिन्नबोवपीपं तममरकीर्तिं भजे तमोहरणम्॥’

अर्थात्—अमरकीर्ति महान् तपस्वी प्राप्त और सभी समाधि कमानेवाले योगी थे। इस वर्चन से ज्ञात होता है कि ये अमरकीर्ति शास्त्रकार की अपेक्षा योगी और तपस्वी ही विशेष रूप से थे। नाममाता भाष्य में जिस प्रकार की यथोक्तिता इकट्ठी है वह एक योगी और तपस्वी में नहीं हो सकती। अतः मेरे विचार से द्वितीय अमरकीर्ति भी प्रस्तुत ग्रन्थ के रचयिता नहीं हैं।

तृतीय अमरकीर्ति के वर्चन में ‘आसन्नकोविद’ विशेषण उनके पाण्डित्य का निर्देश कर रहा है। अतः हमारे प्रकृत ग्रन्थकार वसन्तकव्यादि पद्याशास्त्र के रचयिता वर्तमान के समकालीन विद्यामन्त्र के पुत्र विद्यालकीर्ति के सर्वात् अमरकीर्ति हैं। वे सन् १४५ के आसपास अर्थात् पन्द्रहवीं सदी के विद्वान् थे। इस समय का साक्ष्य एक प्रमाण यह भी हो सकता है कि इनने कल्याणकीर्ति को नामकार किया है। कल्याणकीर्ति का एक जिनपद्मपुत्रोदय ग्रन्थ मिलता है। उसकी प्रकृति से ज्ञात होता है कि ये बहुराज कलिकाती के शिष्य थे। कल्याणकीर्ति ने जेठ सुदी ५ वाक संवत् १३५ में जिनपद्मपुत्रोदय समाप्त किया था। अर्थात् सन् १४२८ में यह ग्रन्थ समाप्त हुआ था। यदि यही कल्याणकीर्ति अमरकीर्ति के द्वारा स्तुत हुए हैं, तो मानना होगा कि अमरकीर्ति पन्द्रहवीं सदी के विद्वान् हैं।

आमार—

इस ग्रन्थ के संपादक डॉ० यशवन्तराव शिवाजी व्याकरणाचार्य सप्ततीर्थ अनेक शास्त्रों के पंडीत विद्वान् हैं। वर्षों तक उनसे जैन विद्यालय इन्वीर में साहित्य और व्याकरण का अध्यापन कराया है। वे जैन परम्परा से पूरी तरह परिचित हैं। उनके जैसे अग्रज ज्ञानी निरहङ्गारी और विद्याजीवी विद्वान् विरल हैं। उनके तत्सम्पर्शी पंडीत पाण्डित्य का निर्वर्णक यह संस्करण है। ज्ञानपीठ इस ग्रन्थ के सम्पादक के रूप में उन्हें पाकर पीरवाचित है।

डॉ० पी० एस० शंकर ने इस ग्रन्थ का प्रत्येक अक्षर हमें उपकृत किया है। डॉ० हर चोबिन्दाजी दासजी व्याकरणाचार्य ने अनेकानेक निषेध का सम्पादन किया है। डॉ० महादेव अनुबेदी ने सम्पादन परिशिष्टनिर्माण और मूक संशोधन में पूरा योग दिया है। डॉ० प्रजलजन्तवी सिध व्याकरणाचार्य ने भी प्रेरक शक्ती आदि में पूरा सहयोग दिया है। मुद्राकरणकी व्याकरणाचार्य एन० ए०

नाममाला

अमरकीर्तिविरचितभाष्योपेता

श्रीपञ्चपादमङ्गलहृदयमनन्तबीर्षं विद्यादिनन्दिनयिनं च उमस्तमद्रम् ।
 कल्पयाद्यकीर्तिममलं प्रथित्य बीरं भाष्यं क्रीमि परमं पुत्रमुद्विगिर्षम् ॥ १ ॥
 तस्वत्त्वाः प्रसादेन रम्पटेऽमरकीर्तिना ।
 भाष्यं वनञ्जयस्यैवं वाचानां धीविह्वलये ॥ २ ॥
 यद्यपि वनञ्जयी (केनी) स्तो भावो वस्तुं न शक्नते ।
 तथाऽप्येवं प्रवक्ष्यामि वाग्देव्याथ प्रसादतः ॥ ३ ॥
 पूर्वाचार्यकृता प्रायो मुत्पत्तिरुपरिस्पते ।
 क्वापि क्वापि स्वपुत्रपाऽपि घृन्वतामत्र मे पुत्रै ॥ ४ ॥

५

शिशाकभाचार (श्याचार) परिपालनां ममत्करतमुद्गातचर्मद्वारेण निर्भिन्नश्याकभाष्येभ्यं

च वनम्बयपुत्रा इहाधिकृतद्वेषतानमत्कारार्थं स्वीकृत्वा—

१०

तन्नमामि परं ज्योतिरवाङ्मनसगोचरम् ।
 उन्मूलयत्यभिधां यद् विद्याम्बुनीलयत्यपि ॥१॥

तत्परं ज्योतिः—

“जमो” अरहृतायां णमो सिद्धायां णमो आइरिघायां । णमो अचक्रमायाणं णमो कोप सज्जसा
 ह्युयं ॥” ईदृश्विचम् । नमामि नमस्क्रीमि । किंविशिष्टम् ? अवाङ्मनसगोचरम् वाच च वाची मनसं^३ १५
 च चित्तं वाङ्मनसं तदौत्साङ्मनसधोर्नं गोचरं न प्रवृद्धीन्तम् अवाङ्मनसगोचरम् अवाङ्मनसकृत्वात् ।
 तथा श्रीलं शब्दमेवे—

“नमस्तु^३ नमसा साध मनसं मनसाऽपि च । तमसेन तमः प्रोक्तं तपन्तु तपसा सह ॥”
 तथा च पञ्चनखिशालै—

“स्वानुभूत्यै भवेद् शब्द रम्यं यथात्मवेदिनाम् । जाले तत्परं ज्योतिरवाङ्मनसगोचरम् ॥” २०

१ एतत्वाङ्मनसकारात्मकम् अथितियात्मवर्तिस्त्रिधाचार्योपात्मवर्षतापुत्रमत्र ज्योतिः । २ नर्भं तु
 नमसा तार्थमित्यादिशब्दमेवौक्तप्रमाद्यतोऽकारान्तोऽपि मनसशब्दः वाङ्म । ३ साम्प्रतं निर्वाचनगतवत्रा
 त्वमुद्विष्टे शब्दमेवप्रकारप्रत्यये एतत्त्वच किञ्चिदस्मत्तपोलम्बम् । तद्विचम्—

कुमुद कुमुदा चापि बौध्दिस्वाद् घोषिता तद् । तमस्तु तमसा प्रीतं त्वसाऽपि रवः स्फुल्लम् ॥१५॥
 अत्र काशप्रकर्षाद्यपि मनसशब्दः प्रप्रत्यस्तथापि तन्निष्ठनगृह्यपुलके तत्तयैवातीदिति श्रुवम् ।

में प्राक्कथन का हिन्दी अनुबाध किया है। पं. जुगलकिशोर जी मुस्तार ने अनेकार्पणिक्रम और एकाक्षरी कोस की प्रति भेजी। पं. श्रीनिवासजी झांसी न. माध्य की प्रति भेज कर अनुपहीत किया है।

भारतीय ज्ञानपीठ के संस्थापक शैठ शान्तिप्रताप जी तथा अध्यक्षता श्री रमा रानी जी की संस्कृतनिष्ठा उदार बुद्धि शानानुराग और सोबन्ध इस संस्था के जीवन है। अपनी स्व. पुष्पकोका माता मूर्तिदेवी के स्मरणार्थ मूर्तिदेवी ग्रन्थमाला के संस्कृत विभाग का यह छठवां ग्रन्थ प्रकाशित हो रहा है। इस ग्रन्थ रचयिता ने ऐसे ही अनेक लोकोपकारी सांस्कृतिक कार्यों की भासा है।

इस संस्था के कमनिष्ठ मन्त्री श्री अयोध्याप्रताप जी गोयलीय की कायबुद्धि साधनेवा और प्रयत्न से इस संस्था का इस रूप में सम्भालन हो रहा है। म. इन सब का आभार मानता हूँ।

भारतीय ज्ञानपीठ काशी
पीठ मन्त्र १५
बीर सं २४७६
३।१।५

}

—महेन्द्र कुमार जैन
ग्रन्थमाला सम्पादक

प्रकाशन-व्यय

४) कागज ९ शीम २२ × १९/३२ पीछ	५८५।।।)	कार्यालय व्यवस्था मूल संशोधन आदि
१७५) छपाई पृष्ठ १९६ दर ५) प्रति कर्म	४३६=)	सम्पादन
२) मिश्र बंधाई	५)	सेट आलोचना विज्ञापन आदि
६) कवर छपाई	७८७।।)	कमीशन
४) कवर कायम		

कुल लागत ३९३४=)

१ प्रति छपी। कागज एक प्रति ३।।।=)
मुद्र्य ३।।)

सभाष्या नाममाला

अनेकार्थनिघण्टु एकाक्षरी कोशश्च

महाकविधनञ्जयप्रणीता

नाममाला

अमरकीर्तिविरचितभाष्योपेता

भीष्मपुत्रादमरकलामनन्तर्षा विद्यादिनन्दिनमिन च समस्तभद्रम् ।
 कन्यायाभीष्टिममल प्रथियत्क कीर्त्त माय्य न्नीमि परमं पुत्रपुत्रिदिदपै ॥ १ ॥
 सरस्वत्या प्रतापेन रम्यतेऽमरकीर्तिना ।
 माय्य वनकनखैर्द बालानां भीमिदृशये ॥ २ ॥
 वपयि वनकनो (पेनी) क्ती मायी वस्तु न शक्यते ।
 तथाऽन्वर्द प्रववमामि वागेभ्याम प्रववदः ॥ ३ ॥
 पूर्वाचारैर्कृता प्रायो व्युत्पत्तिरूपदिरमते ।
 क्वापि क्वापि स्वपुत्रपाऽपि जन्मतामत्र मे पुत्रैः ॥ ४ ॥

५

विद्यासमाचार (व्याचार) परिपालनाय अमरस्वरत्नमुद्गातर्षाकारेण निर्विजशास्त्रकामात्पयं
 च वनप्रववपुष इशाभिहृत्तैस्तानमस्काराचं श्लोकमाह—

१०

तन्नमामि पर ज्योतिरबाङ्मनसगोचरम् ।
 उन्मूल्यत्यविद्यां यच्च विद्यामुन्मीलयत्यपि ॥१॥

तत्परं ज्योतिः—

“जमो” अरहंतायं जमो सिद्धायं जमो आइरियायं । जमो उच्यतेकाचारं जमो छोप सन्नसा
 हूय ॥” इतिविषयम् । ममामि ममस्वरुमि । किंचिदिदम् ! अशाङ्मनसगोचरम् वाक् च वाणी मनसं १५
 च चित्तं वास्मनेते तयोर्बाङ्मनस्योर्न गोचरं न प्रत्यक्षीयुतम् अवाङ्मनसगोचरम् अलक्षणस्वरुपात् ।
 तथा शोक शम्भेदे—

‘नमन्तु’ नमसा साच मनसं मनसाऽपि च । तमसेन तमा मोक्त तपन्तु तपसा सह ॥’

तथा च पद्मनिन्दिताले—

“स्वाप्तुमूर्त्तये मर्देद् गन्धं रम्य यच्चात्मवेदिसम् । ज्ञाने तत्परं ज्योतिरबाङ्मनसगोचरम् ॥” २०

१ एतत्पद्मनमस्कारात्मकमन्त्रप्रतिपाद्यमर्हतिद्वाराचार्योपास्यवर्णनापुरुषस्य च ज्योतिः । २ नमं तु
 नमसा तार्थेतित्यादिशम्भेदेरीकप्रमाचरीऽकाराम्णोऽपि मनसशब्दा तात् । ३ साम्प्रतं निर्वायतागरकम्ना
 लक्षमुद्रिते शम्भेदेदप्रकाशम्भे एतत्परं किञ्चिदन्यथोपलम्भम् । तदित्यम्—

कुमुदं कुमुदा चापि शोफित्याद् बीयिता च । तमस्तु तमसा मोक्तं रक्तताऽपि रक्तं स्मृतम् ॥ १५ ॥

अत्र काश्चिदर्थोपपत्ति मनसशब्दं मन्त्रप्रकृत्यापि तदानीन्तनमूल्यपुस्तके तदर्थेवासीदिति भुवम् ।

यत् अविद्यां पापविद्याम्, चातुकारसूत्रम्, वैद्यकसूत्रम्, त्रिचर्यादिसूत्रम्, रायसूत्रम्, गन्धर्व
सूत्रम्, पद्यसूत्रम्, अयसूत्रम्, यौद्धसूत्रम्, मयसूत्रम्, दूतसूत्रम्, राजनीतिसूत्रम्, चातुरङ्गसूत्रम् । गण-
द्वारगपुराणश्लोकगोब्रह्मण्यशब्दात्मनानां [च विद्या पापविद्या] कथ्यते तान् उन्मूलयति मूलाहुश्चेत्यति ।
यत् विद्यामपि उन्मीलयति स्थापयतीत्यर्थः ।

५

द्वयं द्वितयसुभयं यमलं युगल युगम् ।
युग्मं द्वन्द्व यम द्वैतं पादयो पातु जैनयो ॥२॥

इय युगे । द्वौ अथवा यौ यस्य तद् द्वयम् "द्वित्रिभ्यामयद् वा १" । द्वितयम् द्वौ अथवा यौ
यस्य तद् द्वितयम् । यमयम् उभौ अथवा यौ यस्य "द्वित्रिभ्यामयद्" इत्यनुवर्तमाने "उभान्मां नित्यम्" ^३
इत्ययद् न द्व तद्वद् । यमलं यम शारीरि यमरुम् । युगल युग शारीरि युगलम् । युग युगवर्क य । युग्मं
१० युग्मते बर्मेभूत्वा युग्मम् । समाभवत्यन्तं युगम् । युग्मम् कुनठि द्वितयेन युग्मते नित्यम्ते युग्मम् ।
"मुक्तिविरचितं प्यरु" । द्वन्द्वम् द्वौ वाक्यार्थः इन्द्रम् । यन्मयुपपत्त्येकत्वाद् यमम् । इत्यामिर्त
यैवम् द्वैतमेव द्वैतम् । पातु एषद ।

अपिर्मुनिर्यतिर्मिसुस्तापसः सञ्चितो ब्रवी ।
तपस्वी संप्रमो योगी बर्णी साधुश्च पातु वा ॥३॥

१५

इत्यत्र मुनी । अयति कालत्रय आनावीति क्षपिः । "रिचिदुधिगुनाम्नुवपात्कि" । तथा
च परास्तिके—

रिपणात्स्नेह्यराक्षीन्धुयिमाहुमनोपिय- ।

यतिः यो वैश्वानरात्मः उन्मयिधानौकामेन रुष्याधरिचरकाव यौगान् शुक्लप्यानबर्न
प्यानव यते त यतिः । तथा च परास्तिके—

२०

"यः पापपाशनाशाय यते स यतिर्भवेत् ।"

मुनिः, तपश्चत्वाद् तर्मेर्नन्वते मुनिः । "भन्वतेः कित्त उच्छ" । तथा च—

"भाष्यस्वावासाविद्यानां महङ्गिः करिर्यते मुनिः ।"

मिथुः मिथते इत्येर्षीत्सौ मिथुः । "उन्मयार्थविमिथानुः" । तापसः उभौ कियते यस्य
त तापसः । "अप्" च । तपश्चत्वात्वा न कश्चमत्सर्भे विनीतौ अय च इति । संश्रिताः संश्रयते
२५ स संश्रिताः । "इत्येवते नित्यम् । अथत्यवविभाषवा यो तन्मूकत्वे इत्यस्य अतेऽपे नित्यमिधरो
भवति, मिथयो नास्ति । ब्रती "हिसाऽनुवस्तेयाऽअद्यपरिप्रहेभ्यो विरतिर्भवत्" ।" अत विपतेऽत्य
वती । तपस्वी "अन्यनाशमोर्द्वेषुचित्परिसंभयानरसपरित्यागविक्रियापशासनअयकलेरा बाह्य
तपः" । "भायश्चित्तबिनयभेयात्तुत्स्यस्वाभ्यापय्युत्सर्षम्यानाम्भुत्तरम्" ।" तपश्च कियते वस्तेति
तपस्वी । अयमी तवमन् संयम इतिप्रप्राशङ्क्यः । वनो कियते वस्तेति संयमी । योपी * मुक्ति" ^८

२५

१ यद् इत्यस्य पूर्वम् 'तथा इति परं बोध्यम् । २ इ य ७।१।१५। ३ फलस्य हे
य नोपलब्धम् । परं द्व द्वित्रिभ्यामयद्वा इत्यनुवर्तमाने उभान्मां नित्यमिति टीकोत्तरचनाकल्पयमेव
तत्सूत्रमिति निर्भीचते । ४ कालत्रयकतुगपरत्वेयं भुव्यति, प्रकृतार्थे द्व युगं शारीर्येव । ५ अ त
१।५७ इति प्यकृ म्भवया कुत्वं च । ६ गुनाम्नुवपात्किः अ त ३।१५ इति क्षिप्र । ७ वरसि
आ ँ क ४४ । ८ वती प्रस्ते । इा तर्षवाद्भन्व च त ३।१४ इत् । ९ यथ आ ८ कल्प
४४ । १ का त ४।१ इति क्षिप्र । मनु अथवीचने । ११ यथ आ ८ कल्प ४४ । १२ अ
ए १।४।५१ । १३ पा ए ५।१।१ ३ । १४ इत्येत्थिं ब्रते नित्यमिति पाठवन्कनाम्भु ७।४।४१ ।
१५. त ए ७।१ । १६ त ए । १७ त ए । १८ * एवश्चिद्विद्वारुत्पाने मुक्तिं योगे ववादी
परमैवहो मुक् त्वापो वा विवारी आत्मनेवही इत्येवम्याठा न्यम् ।

योगे बुध उमाचौ पर बुध उमाचौ वा ि । आत्म बुध उमाचौ । पर बुध उमाचौ वा रि ।
 आत्म * पुनक्ति मुकते वा इत्येवंशीतः योगी । बुधभन्नेत्यादिना' विनिष् । यर्था बर्षो ब्रह्मचर्यमलकस्य
 बर्षो । साधुः शिष्यत्वा दीक्षादिवनात्प्राप्तपराङ्मुखा' लक्षणाभ्योन्मुक्तनमाचौ मोक्षमार्ग्युद्धानपरो वा
 स साधुः । तिरिदि कापयति कापययिष्यति वा साधुः ।

"स व्याख्याति न शास्त्रं न ददाति दीक्षादिकं च शिष्याख्याम् ।
 कर्मोन्मुक्तनमो [धम] प्यातः स पात्र साधुर्भवेः ॥"
 "हृत्पापाभिनीत्यरिशास्त्रप्रपञ्चिबनिचरिषट्ठिम् उच्यु' । यो मुमान् पातु रघट ।

दीक्षित मौण्ड्यं शिष्य च तमन्तेयासिन विदुः ।

बत्पारा शिष्ये । [दीक्षितम्] दीक्षा संवाताऽप्येति । २ तारुकितादिदरुनात्संवातेऽर्ध इतच् ।
 मौण्ड्यम् मुखे मल्लके अर्धं बन्नाविषं मौण्ड्यम् । शिष्यम् शिष्यते स्तुत्यापते गुह्या शिष्याः । १०
 "बृहस्पतीन्शास्त्रसुगुरां क्वपू" । गुरोरन्ते बळ्यन्तेवापी तम् । विदुः क्वयन्ति ।

कुसान्ताऽगमसिद्धान्ताः

धनः सिद्धान्ते । लोकात्तां उन्नेह्व कृताः अन्तो पिनाशो येन सः कृतास्तः । अगम्यक्षरीत्यागमः
 अगमनभागमो वा । सिद्धान्तो [सिद्धोऽन्तो] निश्चयो बल स सिद्धान्तः, समवाऽपि । सर्वे पुंति ।

ग्रन्थ शास्त्रमत' परम् ॥ ४ ॥

प्रजाति^६ रचयतीति ग्रन्थः । शक्ति शास्त्रम् ।

भूमिर्भू पृथिवी पृथ्वी गह्वरी मेदिनी मही ।

परा वसुमती धारी क्षमा विश्वम्भराऽधनिः ॥ ५ ॥

वसुधा धरणी क्षोणी क्षमा परित्री क्षितिष्व क्व ।

कुम्भिनीलोर्वरा खोर्वी जगती गीर्वसुधरा ॥ ६ ॥

उत्पत्तिर्भूमौ । भवति तर्धमत्र भूमिः । "कर्मिभूमिरभवा" । १ न्वत्सत्साल्त्वं भू ।
 रेफान्त्याभ्यवम् । प्रथते पृथिवी पृथ्वी च । गुरयतीति गह्वरी । गह्वरीति पाठः । न्याये मेधति क्षिप्रति
 यपुडैरभमेदोबोधद् वा मेदिनी । मद्यते मही । मह पूजायाम् । बळ्यगान् धरा । बळ्यस्यस्या
 वसुमती । दधाति उपधाति मेधयार्थं वैदो वापिति धारी । "कर्मणि वेठ हूत् ।" केचिद्दधातेरपीच्छन्ति ।
 क्षमण क्षमा । "प्राप्तुक्कभिरादिभ्यल्लभच्" । १ कित्त विभक्तिं विद्भवम्भरा । 'नामिन् कुञ्चविचारि
 तपिरमितहा संवायाम्" २ । क्षमत्यः । भूतानवति क्षयतिः । क्षिपामीः । ३ 'अदुष्टदुष्टम्भम्भरविहृति-
 प्रहिन्वीऽनिः । क्षनि प्रलयः । क्व दधातीति वसुधा । वरति पर्वतानिति धरणीः । 'भूनीऽनिः ५'
 क्षीति क्षुप्य क्षोणिः । क्षिपामीः । क्षोणी । 'दृष्टु क्व शब्दे" । क्षमते भार क्षमा क्षमा च । वरति
 तर्ध धरिणी । वरति धर्मं प्राप्नोति प्रलयकाहे क्षितिः । कावति कुवते वा कु । कुम्भो खनीत्यतिदीवी
 अक्षरत्वाः कुम्भिनी । पति क्व क्षमाम् इत्या । "हराङ्गयकभित्तिव्यविरुजंनककलयम् ।" "शययवः— ३०

१ बुधभक्षुवद्विपहृष्टुशुभ्रद्वीश्वबाहुकपाक्षमाक्ष्माक्ष्मरक्षाऽम्बाहृतां च इति पूर्व का
 ए ५०।२।२ का उ १।। ३ तल्ल संवाते वारकावेरितच् इति वा कू पू ए ५०८ ।
 ४ मोक्षमस्वास्तीत्यपि विभेदं विभेदम् । अर्धं आदिन्वीऽच् । ५ का ए ५।२।३ । ६ प्रपति
 रप्यते इति कर्मणि विभेदो बोधः । ७ का उ ३।१२ इति न्वतेर्मिष किल्वं च । ८ गृहीतीति गह्वरी
 गह्वरी इत्यपि पाठ इति बुध्यम् । ९ अ ए ५०।५ इति हूत् । १० बल्लय्य क्षमते इति क्षमा
 पचादिवाचच्, यच् । ११ का ए ५।५।२ । १२ का ए ५।५।४ । १३ का उ २।४६ ।
 १४ का उ २।४६ अदुष्टदुष्टम् इत्यादिच्यम् । १५ का उ २।१७ ।

शुद्धीप्रथमत्रिपिनमरगौरमेरीराः एते रक्षुमावनात्वा निपत्सन्ते । क्लेशमुर्धति दिनसि फलेन उच्यते । उर्ध्वं । उर्ध्वं शुभं उर्ध्वं शुभं हिवाप्याः । उर्ध्वमूर्धति म्यान्तीति उर्ध्वः । शिवामीः उर्ध्वः । रावान्तरं गच्छति जगतिः । शिवानीः जगती । उर्ध्वं गच्छति गौः । झिनोः । गमेर्धोः । “ गौरी धुटि ” इत्यौत्थम् । वृष् भारते । धुः । धरति धरते । इम् । अस्व वृष्टिः । धारि वाठम् । वधु वधुनि वा धारवति वधुन्धरा । नाम्नि
 ५ वृष् १ कल्पवयः । कारितस्या २ कारितलोपः । अग्निधानात् इत्वाः । “ इत्वा १ ध्योमोऽप्यः । ” “ शिना १ ”
 मादा । शूतवात्री, एतगर्भा विपुला धामराम्बर, एतवती, रता अचला अनन्ता रूपाम्—
 कारवती, गोत्रा, स्थिरा उर्वराहा ।

तत्पर्यायघर शैलस्तत्पर्यायपतिर्नृप ।

तत्पर्यायरुहो वृक्षः शब्दमन्यं च योजयेत् ॥ ७ ॥

- १० योजयेत् बोधेत् अर्थं शब्द च । तत्पर्यायघरः शैलः । मूमिघरः मूरघः पुषिषीघरः पुषीघरः, गङ्गीघरः, नेदिनीघरः महीघरः, वराघरः वधुमतीघरः धारीघरः विश्वम्भराघरः, अग्नीघरः वधुधाघरः धरवीघरः शोषीघरः ज्वाघरः, धरिषीघरः शितिघरः, कुषरः कुम्भिनीघरः इशाघरः उर्धराघरः उर्ध्वघरः जगतीघरः गोघरः, वधुन्वराघरः । अतर्धिशति नामानि शैलस्य देवानि । तत्पर्यायपतिर्नृपः । मूमिपतिः, मूरपतिः, पुषिषीपतिः, पुषीपतिः, गङ्गीपतिः, मेदिनीपतिः महीपतिः, वरापतिः, वधुमतीपतिः, धारीपतिः, ज्वापतिः, विश्वम्भरापतिः, अग्नीपतिः, वधुधापतिः, धरवीपतिः, शोषीपतिः, ज्वापतिः, धरिषीपतिः, शितिपतिः, कुषपतिः, कुम्भिनीपतिः, इशापतिः, उर्धरापतिः, उर्ध्वपतिः, जगतीपतिः, गोपतिः, वधुन्वरापतिः । अतर्धिशति नामानि वपत्येति शालम्भानि । तत्पर्यायरुहो वृक्षः । मूमिः शूराः, पुषिषीः, पुषीः, गङ्गीः, मेदिनीः, महीः, वराः, वधुमतीः, धारीः, ज्वाः, विश्वम्भराः, अग्नीः, वधुधाः, धरवीः, शोषीः, ज्वाः, धरिषीः, शितिः, कुषः, कुम्भिनीः, इशाः, उर्धराः, उर्ध्वः, जगतीः, गोः, वधुन्वराः । अतर्धिशतिपर्यायनामानि वृक्षत्येति शालम्भानि ।
- २५ शूङ्गी । पर्वाधि क्तकत्व पर्यंतः । “ पर्यमन्मां ताः । वानुरक्षत्वं सानुमान् । बलं शिखीति गिरिः । गुनामुपपात्तिः । न गच्छतीति नग । बोऽप्युपपात्तिः । नाम्नुपपत्ते गमेर्धो भवति । शिखा उच्यतेऽप्य शिखोच्चयः । अम् आकारम् अचीति अग्निः । मूलविम्ब किः । शिखरमस्तस्य शिखरी । शिख वृषभरं कुन्नाति शिखारवतीति शिखकुत् । बर्धविकारत्वाद् भक्षरत्वं १ उकारः । एतम् एतन्मुक्त्वात्कुम्भः स्तुत्येति कम्भमन्नात्वं वातोः प्रयोगः । शिखरे शिखरकत्वात्स्य स्योर्भेति मस्तु । “ मूषीकति ” । शैलः, शितिः, गोत्रः, आहारी, कुषः, प्रावा ।
- ३० प्रसवं पार्श्वं तटं सानुमैखलोपस्यका षष्ठी ।

द्रीमृदचलाः शूङ्गी पर्वतः सानुमान् गिरिः ।

नगं शिलोच्चयोऽग्निद्वच शिखरी त्रिककुन्मस्तु ॥ ८ ॥

- २५ इत्यत्र पर्वति । द्रीं विमर्शति द्रीमृत् । स्वत्वानात् न पठति अघकाः । शूङ्गमस्तालीति शूङ्गी । पर्वाधि क्तकत्व पर्यंतः । “ पर्यमन्मां ताः । वानुरक्षत्वं सानुमान् । बलं शिखीति गिरिः । गुनामुपपात्तिः । न गच्छतीति नग । बोऽप्युपपात्तिः । नाम्नुपपत्ते गमेर्धो भवति । शिखा उच्यतेऽप्य शिखोच्चयः । अम् आकारम् अचीति अग्निः । मूलविम्ब किः । शिखरमस्तस्य शिखरी । शिख वृषभरं कुन्नाति शिखारवतीति शिखकुत् । बर्धविकारत्वाद् भक्षरत्वं १ उकारः । एतम् एतन्मुक्त्वात्कुम्भः स्तुत्येति कम्भमन्नात्वं वातोः प्रयोगः । शिखरे शिखरकत्वात्स्य स्योर्भेति मस्तु । “ मूषीकति ” । शैलः, शितिः, गोत्रः, आहारी, कुषः, प्रावा ।
- ३० प्रसवं पार्श्वं तटं सानुमैखलोपस्यका षष्ठी ।
- नितम्भमन्तो दन्तश्च तक्षुवानपि गिरिः स्युतः ॥ ९ ॥

१ का घ २। १। ११ । २ नाम्नि वृष्भविपारितस्त्रिमिदहा लंकायाम् इति पूर्वं का घ ४। १। ४४ । ३ कारितत्वानामिर्धुवपरख इति पूर्वम् का+घ १। १। ४४ । ४ का+घ ४। १। २९ । ५ का घ २। ४। ४ । ६ पर्यमन्मस्तः श कं घ ४। १। ७३ । ७ का उ १। ११ । ८ का घ ४। १। ४० । ९ का उ १। ५ । ११ । ११ पर्यायिनाथेन उकारस्य लोपोऽपि बोध्य । ११ श प २। १। ९ । शिखि ककुपानि शूङ्गाम्यत्येति विमर्शोऽप्यत्र । शिखकुत्पर्यंते वा घू ५ । ४। १४० इत्यकारलोपः । १२ का उ १। १ ।

पर्वतमेकलायां दश । प्रस्थीयते वनेनात्र प्रस्थम् । 'नाम्निस्परब' क । ठभयम् । पाति रक्षति वनम् पादयम् । तत्रति ठक्छायं गच्छति-तटम् । त्रिपु लिङ्गेषु । स्नोतीति छानुः । 'इयापा विमीम्बदिशाप्परुद्रपश्चिबनिषरिचदिम्ब ठप् ।' "यख दाने" इत्य षतो प्रयोगः । मेहनस्य खं तस्य मां ज्ञातीति निरुक्तिः । मिनोति प्रक्षिपति कामिषित्तानिति वा मेखला । उपरत्यका उप छमीपे भवा उप-त्यका । "उपाभिन्वां त्यकञ्चाल्नास्ठयोः । तटमत्वास्ति तटी । क्रीडायं वनछाम्पतीति' नितम्ब' । अमतीत्यम्ता । "मृगुवाइत्यमिदमिल्लुपुम्बस्त" 'पुम्बस्तप्रबो भवति । दम्पतेऽ (भ) एवतेऽनेन वृन्तः । 'मृगुवाइत्यमिदमिल्लुपुम्बस्त' । तटम्ब' । तट्टानपि गिरिः स्मृतः । प्रयवान्, पार्ष्ववान्, तटवान्, चाटुमान्, मेखलावान्, उपत्यकावान्, तटीमान् नितम्बवान्, अन्तवान् इत्यत्रान् ।

राजाधिप' पति स्वामी नाथः परिवृढः प्रसू ।

ईश्वरो विभूरीशानो भर्तेन्द्र इन ईशिता ॥१०॥

चतुर्दश रात्रिः । स्वायमारोण' रात्रते इति राज्ञा । "इषितचिराभिबम्बिप्रदिबिपुम्बः कनिः ।" को यम्बद्भावाब' । एम्ब' कनिः प्रययो भवति । अदि ऐरुबर्मे पाति रक्षतीति अधिप' । तथा च उपत्यकावृती अधि वक्षीकुरगाधिदानाध्ययनेरथर्वस्मरजाधिपयु । पात्यवतिपतिः । 'पातेईति' । अय्याद् इतिऽन्वयो भवति । "अयु गती" सुपूर् । शोभनममतीति स्वामी । "आभमेरिन्' दीर्घरच ।" एतुपपदे अमेबातीतिन् प्रययो भवति । नाथपति त्रिपु नाथः । वृहि इहि वृद्यो" । दो वृद । अत एव वृ इः परिपूर्वात् परिइ इति परिवर्हिति स्म वा परिवृढः । "गत्यर्वा' इति क' । "परिवृढवृदा प्रमुबलवती" एतौ प्रमुबलवतोर्यर्षभोर्षभार्थम् निपात्येते । परिपूर्वत्व इ हेरिबन्नाभो नलोपरच । वृद्वृहीः प्रत्यन्तर वीरपीत्यन्ते । पे थ प्रत्यन्तरयोरीच्छक्ति, वेयाम्पते वृह वृहि वृह इहि वृह इद्यो"इति पाठान्तरं वर्तते । तेन पाठान्तरेण वृहस्य वृहस्य वा "पुः वृड" इति निपाताः । तत्र वर्हिति स्म वर्हिति स्म इति वाक्यं क्रियते । प्रभवतीति प्रसू । "सुबो वृर्षिराम्येय व" "वानुबन्व" ऊकारसोपा । "ईर ऐरुबर्मे" ईन् इत्येवंशील ईष्टवः । "कशिपिभिभावीशत्वाप्रमदा च ।" एना क्तो भवति तन्कीलादिपु । विभवतीति यिसु । इत्यन्वयः । ईन् शक्नोति छिन्धित्यतिप्रशयान् क्तुम् ईशताः । आभितवन्वान् विभर्ति पोपयति भर्ता । इन्ति परमैश्वर्यमुन्वतो भवतीति इन्द्रः । "स्त्रावितविभविशकिबिपुत्रिकरिमदिमदिचन्नुग्नीभिन्मो र्क" एतीति इनाः । "इष्टिकृपिन्वो नक्" । इत्ये ईशिता ।

अनोकइस्तक शास्त्री शिटपी फलिनी नग ।

दुमोज्झमिप' फलेग्राही पादपोऽगो वनस्पति ॥ ११ ॥

हादश वृत्ते । अनतः शकृत्स्य अर्द्धं गति इतीति अनोकइ' । *अनोकइत्वेन वा अनोकइः । तस्मिन्नेनाठं तका । 'अनुवृषदितिरितनिमस्किशीह्म ठ' । शालाः छम्पस्य शास्त्री । त्रिव्यो विलारी

१ का लू ५१३।५ बलुतस्य नामि त्परत्ते क स्वयम् वर्तति विषानाश्च वनये कविपान मिति क । २ का ठ ११ । ३ पा लू ५१२। १८ इति त्वञ्च प्रयवशाच च । ४ क्रीडायं वनेस्त म्यते काइत्येते इति कर्मणि विप्रो म्याय । ५ का ठ ५१२० । ६ का ठ २११ । ७ ठ लू ११ । ८ का ठ ११५२ इति पाठेर्भक्तिम रिशोपरच । ९ का ठ ६१८। पाकिनीवैलु त्यामिरीरवये वा लू ५११।२६ इति त्वञ्चाम्नामिन्प्रययन तापिता । स्वमैश्वर्यमत्वास्तीति विप्रः । १० गत्यपारमंरिश पशीकृत्वात्तत्रतत्रवृद्धीर्भक्तिम्य' इति वृत्तं का लू ५११।४८ । ११ का लू ५११।५५ । १२ का लू ५१५।५ । १३ वानुबन्वेऽन्वयवशाहेतौ इति वृत्तं का लू २११।४२ । १४ का लू ४५।५७ । १५ का ठ २१४ । १६ का ठ २१२ । १७ अत्र प्राणये । अजिति रशानोप्युत्तर्न परीतीति । अत्र पातीरोवइत्यय धीयादिह इत्येवेदितोः । १८ का ठ ११५ ।

ऽस्तस्य चिदपी । अज्ञानि क्तस्य फलिनः । 'अथवाहान्यामिनश्' । म गच्छतीति वयाः । 'बोऽ
 संज्ञायामपि' । इति वृद्धि गच्छति अथवा द्रुह वीरुदेशोऽप्याप्तीति द्रुमः । अरुभिभिरपरतैः विवति
 पाति वा अरुभिषयः । अरुभिषयः । अज्ञानि गृह्णातीति फलेप्राप्ती । अग्निधानादीर्षः । 'अत्रमसरचः
 प्रहैः । 'पादैः पितृति पत्नीर्ष पादपः । न गच्छतीत्ययाः । 'मगत्वाऽप्रचिनि वा' विष्णवेन नकारलोपः ।
 ५ कन्त्य पतिः धमस्यतिः । 'पारस्करादिवास्तुर्' । महीसह कुयः, याताः पत्तायी हृः वृषः कुयः
 विहरः अगभापि ।

तत्पर्यायचरो ज्यो हर्षिर्वस्त्रिमुखः कपिः ।

धानरः सुवगश्चैव गोलाह्नूलोऽथ मर्कटः ॥१२॥

एकैर्निरुति मामानि इती । अनीकपरः तद्वत्त शालिचर, चिद्विचर फलिनपरः,

- १० मगत्वा, द्रुमचरः अरुभिषयः फलेप्राप्तिचरः पादपचरः अगचरः, कन्त्यपतिचरः । इत्यादिवाप्यज्ञानानि
 मर्कटस्य ज्ञेयानि । इतीति इति । 'हः लर्षवाऽन्त्यः । क्तसो ह्रस्वेऽथ वक्षिमुक्ताः । क्तस्ये वाकुना शरीरे
 कपिः । 'अहिः क्तस्योर्ल' लोपश्च । आन्यां किं अन्वयो भवति नलोपश्च । वन कन्ति-उन्मथते वासरा
 नरीऽपि । अन्वेन उक्ताकेन गच्छति प्लवगाः । 'बो अंज्ञायामपि' च । गां गृहिं हृत्तृतीति गोलाह्नू
 लम् । गोलाह्नूत्तमत्वातो गत्वाह्नूत्तः उक्तादित्यात् 'लंगे दीर्षश्च' । मूह अथत्वात् । भिजते मर्कटः ।
 १५ 'वय' 'मर्कटै' प्लवगत्तमत्वात्तो निपात्येते । कनीकाः । प्लवङ्गम् । श्रीरा । शालाङ्गम् ।

विपिनं गहनं कक्षमरण्यं काननं वनम् ।

कान्तारमटपी दुर्गम्

नव वने । कन्त्ये कन्त्ये भवेनात्र विपिनम् । 'वेपिद्वयोऽथ स्वयम्' इतीति । उच्चादी
 उक्ते । 'पुकिनाऽप्रिगेरिषविपिनद्विभिनमहिनानि । एतानि इनमत्तवात्तानि निपात्येते । 'गहाते
 २० भृगादिभिर्गोहनम् । उभयम् । अयति पर्यति कक्षम् । अन्ते गन्त्ये स्वापरे अरवयम् । प्रतिप्रागन्ति अथ
 वा अरवयम् । 'अर्तेरन्वः' अण्वात्तः अन्वो भवति । उभयम् । कन्त्ये मन्त्येऽस्मिन् काननम्' ।
 कन्त्ये ऐम्भते वनम् । कान्तम् कान्तम् गच्छति इच्छति वा कान्तारम् । अन्त्येऽस्मान्मरुति । क्षिपामीः ।
 अटपी । कुत्सेन महता कन्त्ये गन्त्ये दुर्गम् । मानाऽर्षे । तम् इम्म् शकम् अरव्यानी पक्षम्
 ('अरवयम्) ।

१ पाठ मत्स्य ५।१।१२२ । २. अ. ए. ५।१।१० इति गमेर्षः । ३. का. ए. ५।१।१०
 अनेन प्रहैरिन् । एवं त्वि वृद्धपभावात् फलेप्राप्तिरिति क्तं उन्मथति । तन्नामिधानादीर्ष इति दोषकाय ।
 तन्नामिधानादीर्षनाभावात्तोर्योऽप्ये फलेप्राप्तिरिति दीर्षरहितस्यैव दर्शनात् फलेप्राप्तीति क्तं चिन्तयम् ।
 ४. नेदृशं किमपि वृत्तं कायै । नगोऽप्राथिनि वा इति हे. श. ए. ३।२।१२०। ५. पारस्करप्रवृत्तिनि
 च तहायाम् पा. ए. १।१।१५. ६. अ. अ. वि. ५।१८. प्रमाद्यम् । तदुक्तम्-दृष्टीऽग. किलरी
 च शालिचरवाचिर्दृष्टीर्दुमी बीकोर्दृष्टी कुयः चितिवहः अरव्यो विषयः । मन्त्यावर्तपरसिकी तद्वत्
 पर्यां पुत्तन्वदिय-वासानोऽप्यगन्त्यावयनगा स्वागमो पुष्यः ॥ इति । ७. का. उ. ५।१।८. का.
 ए. ५।१।१०। ८. अर्किकपिमपिपिवादिन् ऊटीहा अ. उ. ३।१. इत्तत्त उपादिवास्तुगे दीर्षरमैति
 दुर्गुति । १०. का. उ. ३।५. ११. पा. उ. ३।५. १२. का. उ. ३।२२ । इतीत्यन्वय नपेर
 वारेकायच । १३. गम् विज्ञोऽने । अन्त्यमन्थानीति कुष् । कन्त्येऽनवीरिति निर्देशप्रत्या ।
 १४. का. उ. ३।२। १५. कानयति दीपयति त्वरादि । कनी बीती । कुष् । कम् कक्षम् काननं बीजनमस्य
 भेति विपरीत्युक्तः । १६. क्तपुष्पतिरे कन्त्य-अथवेति अरव्य शब्दाः कन्त्यदुर्गो उक्ताः । तदुक्तम्-
 'अत्रपारस्करादीर्षोऽप्येऽप्ये कन्त्य इत्यपि । क्तपुष्पेर्निर्दिष्ट एते कन्त्यावयन्ति ॥

शबर स्याद् वनेशरः ॥१३॥

परशब्देन कुन्ते शबरस्य नव नामानि । विपिनशरः गहनशरः कक्षशरः अरभ्यशरः कान
नशरः वनशरः कान्ताशरः अरबीशरः, दुर्गशरः ।

पुलिन्द शवरो द्स्फुर्निपादो व्याघ्रलुम्बकौ ।

घानुष्कोऽथ किरातश्च सोऽरण्यानीशरः स्मृतः ॥१४॥

पौलस्त्ये भ्रमति महत्त्व याति गच्छति पुलिन्दः । पुलिन्दश्च । शवति^१ निर्द्वलं गच्छतीति
शवरः । वासभ्यः । शवति अरभ्यं शबर^२ । इत्यति अन्वयुपनिषत्सु इत्युः । अग्निनिर्द्विणी यु^३ ।
एवो यु प्रवर्तौ भवति । निषिद्धि पापकर्माश्च निपातः । नियन्त्रण । वा^४ ज्वलावितुनीशुभो यः । “व्यघ्र
ताडने” अथ विप्यतीति व्याघ्रः । ‘दिशि’^५ तिहिरिलपितवतिवियतीश्वरयाता^६ च । एता^७ शो भवति ।
सुम्नते एवमेते मांति सुम्नः । स्वार्थे का लुम्बकः । वनुवा^८ छद् वन्ति इति घानुष्कः । किरति शरान्^९
किराताः । अरभ्यश्च अरण्यानी (वन) शरतीति अरभ्यानीशरः^{१०} । इन्द्र^{११} वल्लभशरश्चक्षुमुद्रहिमपमारभ्यपम-
यवनमाद्रुक्षाचार्याद्यामाजुष्ट ईशश्च । अरण्यानीति ।

घावार्तिरि क पयोऽम्भोऽम्भु पायोऽर्ण सलिल जलम् ।

सरं वनं कुञ्जं नीरं तोयं जीवनमम्बिपम् ॥ १५ ॥

अथादश पानीये । शरवति तुयामिदम् वारि, वृषोति वा वारि । वृषवतिपिराविश्वनि
मेरिम् ।” एव इय प्रत्ययौ भवति । अकार इत्यङ्मात्कार्यं । सन्तु न धार् । अन्तीये । काम्ने इत्येते
कम्, क्वतीति (वा) । “कम्नेतेर्द्विबन्धी” प्रत्ययौ भवतः । पीवते पयते वा पयः । “पीक् पाते ।”
“त्वं” वाऽम्भोऽम्भु । अमति गच्छति स्वादुलं घान्तम् अमम् । “अम गतो । “अने” म्भोऽन्तश्च । अकार
उष्वात्कार्यः । “अमि शब्दे” “अमु” इति शौभो वा “शिवावाम् ।” अम्भते वृष्पातीरित्यम्भु । “अम्भि-
कम्भिम्याम् । आम्भानुः प्रत्ययौ भवति । पीवते पाति वा पापः । “अम्भितिरिदुपिपुष्विपिपिपि-
शिगुम्बल्यम् ।” एवत्यङ् प्रत्ययौ भवति । को वयङ् भावार्थः । श्रुशोत्पर्यः । गम्यते ज्ञानपानार्थः
घान्तम् अर्थस् । अति गच्छति सलिलम् । उवाचौ “पञ्च सेवने । “वात्वाकः पा घः । “अचते”
इति सलिलम् । “सेवितेनश्च चत्स लुक्” । सेवेतिः । प्रत्ययौ भवति चत्स लुक् च । अति नीचं
गच्छति अलम् । अर्धं च । श्रुवाति दिनसिद्धि वृष्पाम् इति शरम् । कम्पते सेवते एतत् वनम् । कोहते
कुञ्जम् । प्राक्किपेत् शक्ति नमतीति नीरम् । मीवते दिनसिद्धि तुयां मीरम् च । इति तुयाम् तोयम् । “तु”
शौभ आचरणाद्यो वा । अम्भतेऽनेन जीवणम् । अम्भितम् च । आम्भन्ति अमुप्रमित्यापा । आम्भते^१ विभन्
प्रत्ययौ भवति । इत्यञ्च । अमु विद्या यार्थः । अम्भितेकत्स । क्लीकत्स । अम्भते^२ अमुकत्स ।

१ शव गतो म्भानिः । वाङ्मकारः । २. का उ ४।१। ३ का ए ४।१।५ ।
४ का ए ४।१।५ । ५ वनुः अरभ्यमत्येति म्युलतिर्मुक्ता । अरभ्यमित् । ६ किरतीति
किन् । कु विभेत् । क्यत्वञ्च । अकलीकत्स । अत छातस्यगमने । पञ्चाद्यङ् । किरात्साकत्सवेति किरात
इति वृषाम्युत्पत्तिः । ७. महत्त्वमरण्यानी वन शरतीति विग्रहो मुक्ता । ८ इर् पाणिनीय ४।१।४९ अत्र
यमेत्यङ् पाठः । ९. का उ ४।५ । १० का उ ५।५ । ११ का उ ४।५९ । १२ का उ ४।५९ ।
अमति स्वादुलं गच्छतीति शेषः । रामाभमम्भु अमिशब्दे इत्यतोऽम्भु प्रत्ययमाह । १३ का उ ५।१५ ।
१४ का उ २।१ । १५ अमति इत्यत्र पर्यायी गम्यते । पयोऽर्णश्च शब्धो ननुऽप्यभावात् । श्रु गतो ।
१६ का ए ३।८।२४ । १७ अमति गच्छति निम्नमिति विग्रहे छद् गतो इत्यस्मात् कतिक्त्स्यनि
इत्यादि १।५।४४ एतेषु तावितोऽन्वयः । १८ का उ ३।१९ ।

‘अपच’ इति पुनरि दीर्घः । अयाः । अयुस्त्वत्खात् शशावेर्न दीर्घः । अयाः । ‘अया’ मेरः । इति विभक्तिमे पत्यः । अयिः । अयुः । अयुः । अयाम् । अयुः । २ बर्गादि शरसेषु द्वितीये वा । अयुः । अयुः । आगप्रश-हे अयाः । वैश्वि ईर्हे शैवेन आनोठौती विपाम् । उभयम् । पनरथा पुष्करम् । मेघपुष्पम्, पानीवम्, उष्णम्, धीरम्, सुवनम् पद्मम्, कमलम्, श्रीशालम्, अमृतम्, कञ्चम् सर्वतोमुखम् आनतं इति नानार्थे ।

तत्पर्यायचरो मत्स्यस्तत्पर्यायप्रदो घनः ।

तत्पर्यायोद्भव पद्मम् तत्पर्यायधिरम्बुधिः ॥ १६ ॥

तस्य पर्यायवृत्तपर्यायाः, उत्पन्नं चरशब्दे प्रमुञ्चमाने मत्स्यनामानि भवन्ति । बार्चरा, बारिचरा, कञ्चराः पश्यचरा, अम्बुचरा, पापचरा, अर्वाचरा वलिलचरा बलचरा, शरचरा वनचरा, कुशचरा नीरचरा, टोवचरा, बीनचरा, अचरा, विपचरा । प्रथमो बारिपर्यायशब्दात् प्रथमं नामानि भवन्ति । बार्चरा, बारिचरा, कञ्चरा, पश्यचरा, अम्बुचरा, पापचरा, अर्वाचरा, वलिलचरा, बलचरा, शरचरा, वनचरा, कुशचरा, नीरचरा, टोवचरा, बीनचरा, अचरा, विपचरा । इत्यस्तीनि पनना मानि । उत्पन्नाभिर्भवत् पद्मम् । बारिपर्यायशब्दात् उद्भवत्पद्मस्यो उद्भवत्पद्मस्यो भवन्तानामानि भवन्ति । बाष्पवत् वातुद्भवत्, अमृतवत् पपठवत्, अम्बुवत्, अम्बुवत् पापवत्, अर्वावत् वलिलवत् बलवत्, शरोवत्, वनोवत् कुशोवत्, नीरोवत् टोवोवत् बीनोवत् अचोवत् विपवत् । तत्पर्यायधिरम्बुधिः । वाः शब्दा (शम्बुपर्याया) प्रे भिप्रमुञ्चे विशम्बुप्रयोगे अम्बुधिनामानि भवन्ति । बारिः, बारिधिः, कञ्चिः पयोधिः अम्बोधिः, अम्बुधिः, पापधिः अर्वाधिः वलिलधिः, बलधिः शरधिः वनधिः कुशधि नीरधिः टोवधिः बीनधिः, अम्बिः विपधिः ।

पृथुरोमा पट्टसीणो यादो वैसारिणो झप ।

विसारी झफती मीन पाठीनो (S) निमिपस्तिमि ॥१७॥

एकादश मत्स्ये । पृथुनि किलीर्णानि रोमास्त्व पृथुरोमा । पट्ट अर्वाधि स्वर्जन-रत्न-नाथ चतु-भ्रौत्र-भनाति पत्य व पट्टसीणाः । पाति गच्छति कठे यादुः । विरति ‘प्रदारेर्णिन्’ विसारी मत्स्य इति । स्वाभेऽन् । विसारिणः । अयति अन् द्विनसि अयः । ‘घ गती’ । घ ग् घ गती वा’ । घ विर्वा विरति किरति वा हत्येर्वाऽन् विसारी । विपतिम्यामाघ सतेर्णिन् प्रत्यय । अस्वी (स्व) इति । विरतिन् इति वाते वि । “इहन् [पूर्वत्] (पुपार्यम्भा शो च)” । शक्ति शर । शर (न) वाचने (राति) शीघ्रत्वाच्छर । मीपते हिस्तेऽन्वीऽप्यत मीनः । बहुव्रीह-स्वान् पाठवति भवत्वेन पाठवत् वा पाठीनः । निमिपति परस्परं द्विनसि इत्थिति वा निमिपः । ‘नाम्प पप (वात्) पृथुद्वा क्” । तिन्ति कठेनात्रो भवति तिमि । मत्स्यः, अण्डकः, शरसी विमारः, बलचर शरणी ।

घनाघनो घनो मेघो नीमूतोऽन्नं चत्प्रहकः ।

पजन्यो मिद्धिरो नम्राट्

१ वा न् २।२।१ । २ वा न् २।३।४। ३ वा न् ५ न् २५७ । ४ वा न् ३।२।५ इति शिन् घ । ५. वा न् ३।२।७ उन्नतिपामादि लनेरान्त्वानम् इति वाशिषाहृति । ६ वा न् ३।२।२१ । ७ निमेपतिरित्याम्बिनाम् । कोपान्तरेषु तेषामनिमित्तञ्च लनेनाप्य अत्रान्वनिमित्त इत्येव धृदो युक्त । न तु निमित्त इति । लुपन्-विमारः शरसी शरणी ८।२।२।२।२।२।२।२ । ८ वा न् ४।२।५१ ।

नत्र मेमे । इन हिंसागत्यो । इन्तीति घनाघनाः । 'अच्' 'पनापन' इति घनेस पनापन इति निपाठः । अथवा "अचिकित्सादचननचराचरचलाचलपठापठबाषडपनापनपाठूपटा वा" इति नामभूता सहा स्या । तत्र क्लारे "अनामुपभात्" कः । क्वचित्चरिचक्षिपविविहनिपाठवृत्तिन्वीऽधूमस्यवी विचिचननिपाठनं वेति । काशन्दात् क्लदः क्लस, चर, चलाः पठाः बड, पना, पठः इत्यपि भवति । इत्यते बाडुना घनम् । "मूलां पनिरच । अच् । निह सेकम् । मेहति तिञ्जति भूमिमिति मेघ । ५
 "अच्य चाम् (दिव्यम्) अच् । नामिनो गुणः । "न्यङ्ङु" इत्येवमादीनां चर्षो कर्षी भवत् । इभ (इत्थ च) षो भवति । बीजनत्वं बलत्वं मृतः पुटत्वं इति निवृत्त्या जीमूतः । बीजत्वेन भूतानि वा जीमूत । बीज प्राणने । अन्नत्वेन राति वा अन्नम् । अन्न गत्वर्षः । न अन्नवति तपो बध्नादित्येके । भाजोति सर्वां दिशो वा अन्न क्लीबे । "बलाकादिभिर्होवते घञाङ्क" । वारिवाङ्को वा । प्रवर्षति क्लं पर्जन्यम् । उषादौ "पृषी घम्ये पृष्ट्ये पृषाति वा पर्जन्यः । "पर्जन्युप्ये" इति अय्यप्रवन्तो निपात्वते । मेहति तिञ्जति विरभ मिहिरः । महर मुहिरभ । न प्राग्भते न शोभते नञ्भाट् । "निकम्प्राविपुर्विभावाम्" एषां निवृ भवति । अन्ध, लनकिनुः पयोवर, धारधरा भूमयोनि, तडित्त्वान्, वारिवा अमुप्य मुदिर, क्लदुच् । १०

अय्या सौदामि (म) नी तडित् ॥१८॥

आकाशिकी सणरुषिघिघुत्

पद शय्यायाम् । शय्यति शयि शय्या । शय्या च । शयिषति वा शय्या । सुदाम्ना अत्रिया एकदिक् सौदामि (म) नी । 'तेनकश्चिद्विभक्त्' । शोभनस्य दाम्नी क्वचनरभोरिवं उरुश्री सौदामि (म) नी । सौदाम्नी । सौदामिनी च । ताडयति तडित् । ताडयतेचिनुक् । ताडयति मेघं ताडयतेऽप्री वेति तडित् । तान्तम् । आकाशपति स्तोक्काल रोषते वा आकाशिकी । "आच् मर्यादाऽभिधियोः । इये चो रोषते शाकते सणरुषिः । विद्योतते विघुत् । चपक्का अधिका उण्डदा, हादिनी, अधिरुष्टु, ऐरावती, चञ्जला चडुवा विरया । १५

सत्पतिरमुद ।

विघुच्छाम्ने पतिशम्ने प्रबुक्कमाने अमुदनामानि भवन्ति । शय्यापतिः सौदामनीपतिः तडित्पतिः आकाशिकीपतिः सणरुषिपतिः विघुत्पतिः निपाठपतिः अशनिपतिः बडपतिः उल्कापतिः इत्यादिपनामानि स्यु । १५

निपाठमशनिर्वचमुन्काशम् च योजयेत् ॥१९॥

चत्वारो बन्ने । निर्हयतेऽनेनेति निर्घातम् । पर्यवदीनस्ताति अशनिः । अण्डपुनूपम्

- १ इत्येधेत्वं च का वारिकम् । अच् पनघन इत्याकारेणं वचनं न क्वचित्पु पस्तन्मम् । या ए ४।१।५५ पनापन पाठूपडम् इति । २ इत् ए नीपलभ्यम् । चरिच क्षिपविविहनी वा इतिवचम्भाक् चाम्पातल वचम्भम् इति काल्पा वा । ३ का ए ४।२।११ । ४ का ए ४।५।५ इति इन्तरस्य पनिरादिरच । ५ का ए ४।१।४८ । ६ म्पदवादीनाम् इति का ए ४।६।५७ इति इत्यप । ७ कलागानिर्होवते । घोहाद् गवा । कर्मणि क्नुत् । अथवा क्लेन हीयते आहावने वा क्नुत् इति रामाभम । पृरीदरादित्वाद् वारिवाह क्नुत् इत्येव बलादक इति निगोचस्य । ८ का उ १।१।६ का ए ५।१।५७ । ९ तेन प्रीकमित्यतन्ने नेत्यभिकार "अचिक्" इति चै ए १।३।८१ । ११ तम नकासाकाण्टी वरवा इति विभे आनातिक्रडा चन्तवचने इति वा तूथेय समानराशरुधरपाराण आशेर इक् अच्ये रिक्वाण्ठीनि आनातिगोति म्नातमपि सायु । १२ का उ ४।११ ।

स्यकृतिमहिम्नीऽपि। एम्नीऽपि। प्रत्ययी भवति। 'डु उ स्तुर्वां वज्रनिर्घोषे' स्तुर्वातीति वज्रम्^१।
शुभ्रात्^२—'शुभ्रोऽत्रजकिममद्रगौरमेरिताः' एते रज्जु प्रववास्ता निपात्यन्ते। पठित्यपि ववति पञ्चम्।
उपति क्वति उक्त्वा। उक् इति वीथीऽयं वाङ्मनो।

परिपत्कर्मः पङ्कः

५ ववः कर्मि। परि सम्प्रदाय् भाराकन्ताः वीरति गन्तुं न शक्नोतीति परिपत्। ^३उक्त्वात्पु
इदुह्नुविविदभिविभ्रिक्किरीयाद्युपकर्णे' श्यामुपकर्णेऽपि मानुपकारिणम्। इत्योति केही दिनलीति
कर्मिः। 'पृथ्विचरिर्कर्मिऽपि'। पम्पत्वे विल्लारति वपांकाशेन पङ्कः। उभयम्। उच्यते 'पम व'
पनात्वे पम्पते वा पङ्कः। 'पतिपनिम्नां का' धाम्नां का प्रत्ययी भवति। तथा वामरविहः—

११ निपदूचरस्तु वम्पाद्याः पङ्ककोऽप्यी शारकर्मौ^१

१० निपदूचरः, वम्पाद्याः शारः, इतिक्लिन्न चिक्लित्थानेकार्ये।

तलम्

तलात् वम उद्भवम् पङ्कम् कर्मवम् परिपम्प इत्यादीनि अमरनामानि भवन्ति।

वामरसं विदुः।

कमल नखिन पवूम सरोजं सरसीरुद्रम् ॥ २० ॥

सूरदण्ड कोकनदं पुण्डरीकं महोत्पलम्।

१५ एष कमलनामानि भवन्ति। वामरति वल काञ्चति वामरसम्। अमरविहभाष्ये—'वामः
प्रकर्षो रसाऽस्य वामरसम्। वमः प्रकर्षाऽप्यस्तारण्यवत्। केन मत्तमेन मन्वते वार्यते कमलम्।
विवा वाताऽयं काम्यते वा। पठिकमिमुधिकुशिभा कला। एवम् कलाः प्रत्ययी भवति। कमलं च।
नलाः अन्वत्य नखिनम्। नखति प्राकर्मति किम वा नखिनम्। पुष्टिनक्षितक्षिमक्षिहृदिभ्यः
२ किनाः'। मलं च। पद्यते पाति लक्ष्मीरप पद्यम्। ^१ कर्मिपुहुहुविद्योषवमावालयो मः। उभयम्।
अपि तद्वागे वातम् सरोजम्। सरसा रीरति प्रादुर्भवति सरसीरुद्रम्। ^२ सूरम्प तर्पण्य
कार्युद्रम्। कोकनदकामाका नदन्वत्र कोकनदम्। क्वीने। [रक्त] कुमुदम्^३। रक्तकमलम्।
विद्योपद्यम् [कुमुदकमलविद्योपे]। पुञ्चति माङ्गल्यवास्तुपुण्डरीकम्। मर (मृत्) प्रमरने
२५ रयाने। पुष्टिदित्येके। पुष्टति पुण्डरीकम्। भाष्यकर्ममते पुष्ट शोभे। पुष्टति वस्यति
शोभा पुण्डरीकाः। 'अनुनादिकास्ताद्वाः' अनुनादिकास्ताद्वातोर्त्वं प्रववो भवति। मरुत्प तदुत्पलं
च महोत्पलम्। तथा च इत्यानुवा— पुण्डरीकं^४ सिताम्बुजम्^५।

१ स्तुर्वातीति विमहे स्तुर्वापाठो ववादेरी रक्त्यात्वबध निपात्य । वव गतो । ववतीति विमहे
कवलं रक् २ का उ १।१०। ३ का ए ४।१।७४ । ४ का उचारी फलम् न नाथि । पा
उ ए १।८४ वलिक्योरम इत्यमर । ५ का उ ५।१ । रामाभमलु पथि विल्लारे कर्मिचि
हस्तारपति पन् इत्याह । ६ अमर १।१ । ७ छी भा १।१।४ । ८ का उ १।१ । ९ का
उ १।६ । १ का उ १।५। ११ लरी दण्डो मयति विमहो म्वाप्यः । १२ अथ कोकनदं रक्तकुमुदे
रक्तवज्र इति मेदिनी उच्यते प्रमाणम् । १३—पदवीकादवरच पा उ ४।१ इति मुद्रवातो रीकन्
प्रववान्तः पुण्डरीकश्चो निपात्यते । रामाभमस्तु पुष्टिपाठोरीरुद्रत्ववमाह । भाष्यकर्म मते पुष्ट
वातोरीरुद्रत्ववो वास्तागम्पत्पुथवं विषयम् । क्वलं इत्यवयव ल मुस्ताः । १४ इत्यानुवा १।५८ ।

इन्दीवर चारविन्दं शतपत्रं च पुष्करम् ॥२१॥

स्यादुत्पल कुवलयम्

उत्त नीलोत्पले । इन्दति शोभैस्त्वयं प्राप्नोति इन्दीवरम् । अरान् रात्री विन्दति इति अरविन्दम् । किवृत्तामे विन्द अरपूर्वाः । अरान् विन्दतीति अरविन्दम् । 'कर्मणि च विभः' श प्रत्ययौ भवति । इति परपञ्चम् । स्वमते-अस्यत्रापि भेति [कर्मण्यश्] अण् वाचकः । "चारिणाति वेद्युदेन्निवेतिवारिपरिनिधि(मि)विन्दा लनुत्पलो" पयामनुपचरौ शो भवति । चक्रलाञ्जवच अर विन्दम् । पिण्डी (पुण्डरीक) कमलोऽयं द्व (अपि) अरविन्दम् । रात्रिरोपपद्य अरविन्दम् । केचित्कम लोऽपि पु स्तवं मन्वन्ते । शतं पत्राभ्यस्य शतपत्रम् । श्चीने । शोभां पोषयति पुष्पति वा पुष्करम् । शोभामुत्कर्षय पकति गन्धतीत्युत्पलम् । कौ बलते प्राणिति कुवलयम् । कुक्षितो बहिर्बलपः पत्रपट्टन मत्येति भीमोवा ।

विशेषमाह—

अयं नीलाम्बुजन्म च ।

इन्दीवरं च नीलेऽस्मिन् सिद्धं कुमुदकैरपि ॥२२॥

नीलाम्बुजन्म । इन्दतीन्दीवरम्^१ । कुवलय [वलनीश्लेसि] धामान्वल [भीष्के] विशेष इति । अस्मिन् सिद्धे । रात्री विकसं करोति चन्द्रेण काम्ये वा कौ मोक्षे वा कुमुदम् । शान्दम् । के उक्ते अतो रीति चेतो इतः तस्ये^२ मित कैत्यम् । श्चीने ।

तद्वृत्ती

तस्य कमलस्य पत्न्यपि 'श्वती इति प्रपुष्पमाने कमक्षितोत्तमानि भवन्ति । तस्मरुत्पली कमलवती, नक्षिणवती पद्मवती शरोकवती, शरतीकवती, कौकनदवती पुष्परीकवती, महात्पलवती, अर विन्दवती शतपत्रवती ।

विसिनी श्रेया

विनविकासिन्नामेक^४ । किरमत्पत्न्या विसिनी । नक्षिनी । पुत्रिणी । मुखाक्षिनी ।

अततीर्वन्तरी लता ।

दण्डीनामानि योन्यानि—

अदुर्ब^१ (अत्वारो व) लवाम् । दृष्टोतीति अतती । मङ्गला ततिरस्या अततीः^२ अतिथ । अगारित्वाद्भवत्म् । वस्तुते वस्तवती । लाति लकति चित् वा लता^३ । अन्ते वेष्टे पल्ली । वस्तवतीः । वन्किरिद्वयोऽपि । विवामी । वन्ती । वावथ । बीदम् (प्) गुस्मिनी श्यानिनी शारिवा किर्मी च । वृक्षशास्त्राणामपि ।

१ का ए ४।१।१ । २ का ए ४।१-२४ । ३ इन्दतीन्दीः लक्ष्मी । लवाम्बुज इव उ ए ४।१।१० इवन् । इरिकात्पत्तिन इति डीप् च । उत्पलवतीम्यम् इति अन्त्यस्वरमप्युक्तम् । ४ एक विसिनीशब्द इत्यर्थः । ५ अत्र अत्वारो अतर्पामिति पुत्रम् । ६ प्रतनीतीति अति । तन् वाती तिच् । ती च संज्ञावामिति किच् । शूरीवरा विलासस्व व इत्यन्त्र । ७ लतिः लीपो पादुर्वेदनापो लपतीति लता । पचाद्यच् इत्यन्त्र । ८ शारिवाऽन्त्योऽन्त्यन्तममौपभिविशेषवाचकः । किर्मिः शी स्वर्धपुष्पां स्वादपि माज्यवाशान्भो रिधि विस्वसौचनप्रमाणत किर्मिशब्दः । किर्मीशब्दो स्वर्धपुष्पी-माजा-पलाशवाचकः । वृक्षशास्त्राणं लतावां वा उभावप्यप्रतिद्वौ । श्लोऽभेदेन प्रमाणम्

वारिधिर्नर्णयतेऽधुना ॥२३॥

अधुना इवानी वारिधिर्नर्णयते कल्पते । केन ? भाष्यकर्ता मुनिभीमवमरकीर्तिना ।
 वाग्यं समुद्रनामानि प्राग्मन्ते—

स्रोतस्विनी धुनी सिन्धुः सून्ती निम्नगाऽपगा ।

नदी नदो द्विरफस सरिभामा तरङ्गिणी ॥२४॥

५

एकदश नषाम् । स्रोतः प्रवाहोऽल्लवत्वात् स्रोतस्विनी । धुनीति कल्पते धुनिः^१ । शिवामी ।
 धुनी । स्वयसि बले पठति सिन्धुः । सिन्धु । 'स्वयसि' सम्प्रसारणं प्रथमम् । 'वटेम्बो बल' इति स्वयसि ।
 निम्न गन्धति निम्नगा । आ धमन्तावानोति अर्धभिरगति वा आपगा^२ । आपेन वा गन्धति आपगा ।
 नदस्त्वन्क शब्दं करोति नदी । नदति नद्यः । 'अर्ध' पञ्चाद्विभक्तं अर्धम् । द्वौ रेफौ तदो बन्व द्विरफः ।
 सरति तमुद्रं गन्धति सरिम् । ताम्बन् । तरङ्गाः कन्त्यस्यां तरङ्गिणी । वदिनी । नर्मरिणी कृत्वा
 शेषादिनी तरङ्गती, समुद्रकान्ता इतिनी स्रोतः, क्यु कुन्त्या द्वीपती रीषोक्त्या ।

१०

तत्पतिष्व मधस्यग्धि,

तस्या धु-याः पतिधुनीपतिरित्यादिऽसुद्रनामानि भवन्ति । स्रोतस्विनीपतिः, धुनीपतिः सिन्धु
 पतिः सखसीपतिः, निम्नगापतिः आपगापतिः नदीपतिः नदपतिः द्विरफपतिः, सरिपतिः, तरङ्गिणीपतिः ।

१५

पारावारोऽमृतोऽमवः ।

अपारवारकूपारी रत्नमीनाऽमिघाऽकर ॥२५॥

समुद्रो वारिराश्विष्य सरस्वान् सागरोऽर्णवः ।

नव समुद्रे । पारमाह्वयोति पारवायात् । अमृतत्वोत्सवः अमृतोऽमवः । अपारं वात् अल
 क्वाऽप्यो अपारवाया । न कुं कृषोति मर्वादायातनादकूपारात् । इत्याहुषे—'न कुं कृषिषी पिपति न्या
 ज्जोतीति अकूपाराः । अकूपारीऽपि । रत्नमीनशब्दोपेते आकरे प्रमुच्यमाने समुद्रनामानि भवन्ति ।
 २० उलाकरः पुपुरोमाकरः पञ्चमिशाकरः, वादाकरः^१ वैशारिकाकरः मयाकरः विशाम्पाकरः, शकटाकरः,
 मीनाकरः पार्थनाकरः निमिषाकरः, तिन्नाकरः । 'उन्दी क्लोदने' तस्य^२ । धमन्ताहुनस्वरागादिति
 समुद्रः^३ । स्थावितम्बिष्वम्बिष्वशक्तिष्विष्विदिमदिमन्दिष्वन्धुन्दीन्दिनी रक्' अत्रिसुभ्रानाम
 गुणःप्रयुक्तः^४ । तथा च इत्याहुषे—'मुद्रन्ति मिमीमवन्ति मौमाऽन्तरीक्षनादेयजज्ञान्वात्र समुद्रः ।'
 २५ अपारतिह— समुनपि समुद्रः । वारिणां क्लानां राशिर्वापिराशि । सरति अत्तराशानि
 क्तवस्य सरस्याम् । सागरत्वात्सं सागरः, क्तवत्तद्वैः साकत्वात् । अर्णोति क्तवस्य अर्णवः ।

२५

१ धुनीति कल्पयति वेत्तादीन् । धुन् कल्पते । क्विप् । पुरोदरादित्वाच्चुक् । नान्तत्वात्प्रीर् धुनी
 इति राभाभम् । २ का उ १।७ । ३ अर्धभिरगतीति विमिश्रणं एकस्वत् अर्धभाषीऽप्यारस्य
 शेषस्य च पुरोदरादिभ्येन निपातात्साधम् । ४ का ए ४।२।४८ । ५ अर्ध कूर्तिरिति शीतोकायन्तवाठी
 पुञ् । तदुक्तम्—'अर्धं नदी क्रीडात्प्रीरिति शारदात् १।७२ । ६ वादत् शब्दस्य क्लान्तत्वात् वाद आकर
 इत्येव न द वादात् । ७ धमन्ताहुनपि आर्णो करोति भूभागादेवात्वादेव विमह । अत्रास्मादित्यया
 दानार्थीकाको नपेयशीव । समीचीना मुद्रा अक्षरविशेषा बन्दिन् एव मुद्रया मर्वादवा वर्तते इति
 ध्युत्पत्त्यन्तरमप्युक्तम् । ८ का उ २।१४ । ९ का म् १।११ । १ मुद्र संतो चुराशि तस्य^५ ।
 क्पादात्संते क्पादात्स्युरादिष्वी वैजत्यिक्त्वात्सुप्रसृतीरपि पर्वे । समी मकारलोच पुरोदरादित्वाच्च
 दीप्य । ११ धी मा २।१।१।

तथा च क्षीरस्वामिभाष्ये- 'अर्णोऽस्वास्वयंशः । 'अर्णसो खोपश्च' इति वाः सखोपश्च ।" उदधिः उद्वान्, तोबनिधिः अन्तराशिः नीचिमाती शशम्भः । उद्वेशः उद्व-सखो- क्षीरोदः सुरो- इच्छः स्वावृ- दम्भुदः भृगोः ।

सामोपकण्ठं तीरञ्च पारं रोषोऽवविस्तटम् ॥२६॥

उद्व-ध्मीये । पिम्-कन्धने । तिरोति कन्धतीति स्वीमा । 'परमोमापीष्वा-चमा' ५
एते मन्त्रप्रधाना निपात्यन्ते । कण्ठस्य ध्मीये उपकण्ठम् । कन्धन्वस्मातीरम् । तदति पक्षते इव के तीरं वा । 'पिपतिं वृषोति बलेनेति पारम् । पार्यते ध्माप्यतेऽस्मिभिति वा । स्वस्मि क्लृ-भेगन रोषसु । शास्त्रम् । उभयम् । अक्षयानम् अक्षयिः । "उपको दः किः" । उद्वपते ब्राह्म-तेप्रभवा उद्वम् । श्रियु । तटः । तटी । इदस्यौ वा । तटिः । स्थियामी, तटी । कूत्तम्, कन्धः, प्रमातः तीरम् । १०

मङ्गस्तरङ्गं कक्षोलो भीषिरुत्कलिकञ्जलि ।

पाली घेला तटोऽखासौ विभ्रमोऽप्यमुदन्वत ॥२७॥

एकादश तरङ्गे । मङ्गलं बले स्वभवे मङ्गः । तदति पक्षते तरङ्ग । 'तृपतिन्नामङ्ग-''
आन्वामङ्गश्रमो भवति । कण्ठन्तेज्जेन नद्य कक्षोल । कुशिलं खोदति कक्षोल इत्येकः । वाति (भवति) गच्छति यीचि- । स्थियामी भीषी । वृषिभुक्त्यैश्च कक्षयति उत्कलिका । रिक्- १५
याम् । आ तमन्ताद् बहते ब्राह्मलि । पात्यते पालिः । स्थियामीः । पाली । घेलाति पूर्व्यादि कालमुपदिशति घेला । स्थियाम् । तरङ्ग उच्छ्वात्तरङ्ग तटोच्छ्वासी । तदति तटः । उच्छ्वसनम् उच्छ्वासः । विभ्रमति विभ्रम- विकारः । कस्य ? उद्वस्यतः तदुद्वस्य । अर्णि, शरी ।

अप्रति मनुष्यवर्षा आरभ्यते श्रीमद्भरणीतिना-

मनुष्यो मानुषो मर्त्या मनुजो मानवो नर ।

ना पुमान् पुरुषो गोपा

एकादश मनुष्ये । मनोरथस्य मनुष्यः । * कुशनिपात्यन् प्रथमापत्येपि" । कुशनिपात्या
मणीपि मनो उद्वस्य । कश्चिद्विररररर न इति । अन्ता । * मनुष्य । मानुष । उद्वसौ च ।
मन्वते मुञ्चन्तुलादिकमिति मनुष्य । " मनेदत्यः उद्वस्यत्तवः । मानयति मन्वते इति वा मानुषः ।
'मानेस उद्वस्यत्तव । उभयम् । २०

१ ही भा १।६ । * क्रीपात्यरेणु उद्वस्य शशम्भ इति नाम मोपकण्ठम् । कर्ष
चित्तमाधानापेक्षायां शशम्भ इति पाठी नीच । शशी चन्द्री अक्षरिचङ्गे बंशप्रकाशक मस्येति
ठडिप्रहः । चन्द्रस्य उद्वस्यमकलं पुराणमतिशम् । ३ का उ १।५ । / हृ-अवनतरङ्गवी । क
प्रत्यये कूट इ-दीर्घत्वं च । अनीणादि शशम्भ । तरङ्ग पत्यालु पार तीर कर्मवामा । उद्वस्यीत्
तीति विभ्रमे पक्षयच् । ५ पात्यनपूरणया पू-कक्षस्तेन पिपतीत्यस्य पूरणीति पर्यायो युक्तो न तु
वृषोतीति । असादित्वाप्य । धर्मस्वामी तु परे पार्ये अर्षे कूत्तम् पारम् इत्याह । ६ का उ १।५।०
इति कि । ७ का उ ५।२२ । ८ कक्ष अन्वते शन्दे कक्षते इत्यस्य शशम्भन्त इत्यर्थ । उद्व-
दित्वादीकञ्च । कं बहम् तस्य कीदृशचन्द्रा-अवका । मनुस्वतस्य परतवसो लकार इति रामाभयः ।
९ कन्-उद्वस्ये । केशो विद्य उ सू ५।३२ इतीषिम् । १० कस्य चिद्विद्विद्वत्त्वाने मनो पयुष्यं
वा नू पू-अ इति प्य पण्य प्रायवी इति पाठी युक्तः । ११ वा उ ६।१ । १२ का उ ६।११ ।

‘रुचीय वाञ्छिष्ठ वास्यो भरमेते मुञ्जङ्गमाः ।

न पुनः पञ्चहीनरवात् पञ्चगुमासन्तु मानुषम् ॥’

भ्रित्वे मत्पैः । “^१ इत्य” । त्वापैं स्त्री वा । मनोर्वातः मनुजः । मनोरस्य मानवा^२ ।
 नृणाति भिनवति नरः, क्षीभ् प्रापये’ नयतीति वा । “^३ निवी वाऽनुबन्धश्च” । अस्मात् श्चन् प्रत्ययी
 भवति च च वाऽनुबन्ध इत्येतेऽन्वयराहित्योपायः । पूर्यति कुलमनेन धान्तः—^४पुमान् । उवादी
 पूरः पवते पुनातीति वा पुमान् । “किर्मन्त्यश्च” । अस्मात्किः प्रत्ययी भवति अत्य च मन् अन्त
 च अत्रात् इत्यत्य च । इकार उच्चारणार्थः । पुरि पुरि शब्दात् पूराद्वा पुरुषः । पूराति पूरयति वा
 स्त्रीशानुद्गरं गर्भेद्येति पुरुषः^५ । “पूरातिः कुब” । अस्मात्कृत् प्रत्ययी भवति । कौञ्जकषा । अन्वेषा
 मपीति वा इत्थः । पूर्या । तत्त्वे पुरुषः पुङ्गवश्च । “गुच परिच्छन्दे” । गुण्यति गोष्ठा^६ ।

घवः स्यात्तपतिनृपः ॥२८॥

तस्य मनुष्यशब्दस्वाप्ते घव-पतिशब्दप्रयोगे सुप्तानामानि भवन्ति । मनुष्यश्चः मातृपञ्चवः
 मत्स्यश्च मनुश्चवः मानश्चवः नरश्चवः नृचवः, पुत्रश्च, पुत्रश्चवः गौशाचवः । मनुष्यपतिः, मातृकपतिः
 मत्स्यपतिः मनुकपति मानकपति नरपति नृपति पुत्रपति, पुत्रपति गौशापतिः ।

सृत्योऽथ सृतकः पत्ति पदाति पद्गोऽनुगः ।

मटाऽनुजोव्यनुधरः श्लज्जोबी च किङ्करः ॥२९॥

एकादश सेवके । भ्रितव इति सृत्यः । “^१ म्मोऽर्थशाभात्” । भ्रित्वे राडा यव । त्वापैं कः ।
 सृतकः । पतिव अथो यच्छ्रुति पत्ति पवन वा । [पाराभ्याम्] अतति [पदातिः] । पारातिकः ।
 पत्तिः पत्ति इकः । “^२ भिनवादिन्वात्त्वापैं ठञ् । फ्रन्मा^३ गच्छतीति पद्गः । अनु पश्चात् गच्छति
 अनुगः । भवति युद्ध विभक्ति मटाः । अनुजीवतीत्येवंशीला अनुजीयी । अनु पश्चात्पत्तिपुत्रश्च ।
 श्लज्जोऽनुकेन शोषतीत्येवंशीला श्लज्जोवी । किं कुलितं कार्यं विदधाति किङ्करः । उवापः सेवकः
 पद्गोश्च पद्गः पदिकश्च । तथा च पशुश्लोक- (श्लो ११)

“सत्यं दूरे विहरति सर्म साधुभावेन पुंसो सर्मश्चित्तस्वह कृत्तया धाति देशान्तराणि ।

पापं क्षापादिश्च च तनुते नीचदृष्टेन सार्धं सेषाहृष्टेः परमिह परं पातकं नास्ति किञ्चित् ॥’

स्त्री नारी भनिता मृग्धा भामिनी भीरुरङ्गना ।

ललना कामिनी योपिव् योपा सीमन्तिनीति च ॥३०॥

१ अ उ १।१२ । २ वास्यप्ये वा क पू ४०१ इत्यच् । ३ का उ १।४१ । ४
 पाति पुनाति वा पुमान् । पातेर्मुञ्जन् पूर्वा इमुञ्जन्, पा उ ४।१० इति इमुञ्जन् इति प्रक्रियाऽन्वयः ।
 ५ वा उ ४।४२ । ६ पुरि शब्दादिषु द्व निरुक्तप्यनारी विमहन्तु पूरादीन्वादिरेव । ७ अ उ १।५४ ।
 ८ गौशाशब्दस्य पुरुषार्थे कौशास्तत्प्रमाणं नीपलक्ष्यम् । तदुक्तम्— गौषा तलनिहात्मनीः वि बी । गोषा
 प्रविशितोपे स्य अन्वापातस्य च वारणं । अकारात्स्त्रीलिङ्गात् च सर्वमात्स्योक्तम् । अ उ २४।१ अतोऽत्र
 मूलं मूषम् । गोइ इति पाठे द्व गोदी मस्तिष्मरवालीति गोइः मुक्कमस्तिष्मरवात् पुरुष इति उवाचम् ।
 तदुक्तम् गोइ द्व मस्तवस्तेहो मस्तिष्मो मत्सुशुक्क । अ चि १।२८२ । ९ का ए ४।१।२५ इति
 क्वत् । १ आणादिकसिं किच् का च उवाचामिति वा किप् । पवनं वा इति स्मृतपतिश्चमत्सि
 क्त्वापैक्या । ११ अमतिन्वा च पा० उ ४।११ इत्येतेभ्यः । पादस्य पराभ्यादिभ्येण इति परादेशश्च ।
 १२ भिनवादिभ्यश्चै म् ४।१४ । १३ पराभ्यां पाराभ्यां वेति वचनम्, न द्व फ्रन्मामिति । पाद
 इत्यादी । पात्स्य पराभ्यादीति पात्स्य पद् ।

नितम्बिन्यबला वासा कामुकी वामलोचना ।

मामा तन्दरी रामा सुन्दरी युवती बला ॥३१॥

हाचि शक्तिः त्रिषाम् । "गन्तुं चाच्छादने शृङ्गात्वाच्छादयति स्वदीपान् परशुमानि ति स्त्री । उखलौ । शृङ्गात्वाच्छादयति शक्यव्यमानमिति स्त्री । शृङ्गातेष्टत् प्रथमो भवति । अक्षरमात्रं । "गन्तुं च" । अथवा इद्रपाठः । इन्द्रशुभोऽन्वत्तरादिज्ञापार्थं । इन्द्रो नदाथर्षं । रकारमात्र एव । अमरतिलहमात्रे - सत्यायत्य(तेऽ) स्यां गमा एत्रा ।" तथा च इलायुधे- "स्तृणाति बिन्देकमाच्छिद्यनति स्त्री" । नरस्य स्त्री वातिर्येवतापी । नरं वनति भवते वनिता । गृह वैश्वित्ये कार्येषु मुह्यति मुग्धा । सुहैर्षक्यं इत्य ग् । भामते कुप्यते (ति) मामिनी । [भामः] श्रीभोऽखत्स्याः वा भार्मिनी । बिन्देत्वन्त(त्स्वा)मीरु । "भियो वस्तुश्री च ।" मीरुः । परशुमात्रान्यत्वा अङ्गना । हाडवति (हाडति) विहाडति ललवति (ललति) नरमीच्छते वा ललना । "लल इषावाम्" । भामान् कामयते कामिनी । युगः वीशोऽत्र चाड् सेवाऽर्थे । योपति पुरुष गच्छति रतेच्छुना आत्मनो योपा । "क्य शिप क्य भ्य द्य मय हर रिष क्य क्य विंठायां" । योपति दिनस्ति इन्तीति योपि । "इष्टवडि इतिवुपिन्व इति" एव्य इतिप्रथमो भवति । "कार ठकारायाः । अमरतिरे- "यौति पुसा योपित् । अवादिस्वाभाव्यत्वे योपिठा च । वीमन्तोऽखत्स्या वीमन्तिनी । वणाति वित्तं वपुः । नितम्बोऽखत्स्या नितम्बिनी । न विपते क्लमत्सा अजला । वा' लोभान् हाति यद्वातीति बाला । 'यमु कान्ता' क्य । अमेरिनिर् कारितम् इन् । "अख्येप " दीर्घः । कामयते इत्येवशीला कामुकी । " शुकमगमहनृप भूत्वालयस्तवयानुचन् । ' कारितलायाः । ' निमि " दीर्घमाव । मकाराऽनुचत्वात्पूर्वस्योप दीर्घः । वामे सुन्दरे लोचने नेत्रे यस्याः ता वामलोचना । "भाम श्रीभे" चुरादी । भामवति । "भाम श्रीभ" म्वादवकाराऽनुचत्वात्त्वनेपरी । भामते मामा । वसुधोपादिदणनात् । लुग सुधमसुरं वसा ता तन्दरी । नरेषु रमते मनाति रमवति वा रामा' । इष्ट द्विपते आद्रिषते वनोऽत्र शोभनो इती वराङ्गच्छिद्रमत्सा वा ' सुन्दरी । अथवा 'सुन्दर' इति लौकिक्य चाड् । युक्तशब्दावहादिबिहितसिः' य युपतिः । बु मिमल यौति नरान् मिमपति श्रीवार्तिको वा इति युवतिः । अथमी । युवती । वृन्मिन्याः । तथाहि प्रयोग -

मर्तो मंगर एव सुख्यवसति प्राप्तः समं वपुमि
 धूनी काममयं हुनोति च मनो वैधन्यदुःखात् वपुः ।
 बालो दुस्तयत्र एक एव च दिगुः क्यं कृतं वेपसा
 जीवामीति महीपते प्रकपति यद्बेरिसीमन्तिनी ॥"

वक्तवितानुसयान् वास्तवतीति बला " । कामनेत्रा पुरग्मी, वाकिता बहिनी, प्रमदा रमणी

१ का उ ४११६ । २ का घ ११२१ । ३ छी मा २१५२ । ४ का उ ११२८ इति विद्म इत्य गदच । ५ का घ ४११५६ । ६ का उ १११५ । ७ छी भा २१५१ । ८ का क उ ४१२१ । ९ का घ ४११४४ । १० कारितस्यानामिद्विचरते का घ १११४४ इतीनेो हाप । इनः कारितश्च वास्तवमात्ररत । ११ निमित्तागारे नैमित्तिक्याप्यनाव इति परिभाषेन्द्रोक्ते अट्टक्युपरिभाषार्थरत । १२ रमते रामा । अक्षरदिवात्वात् । रमवतीति तु न युगम् अन्तस्य वक्तवित्वाभावात् । १३ बु धनीत उतगि मुग्धी । उन्दी क्लेश । वाङ्मनादय । शुक्यादि तादृकारस्य परस्मै । गौरादिस्वादीन् इति रामभम । १४ का घ ४११५ । १५ वक्तवित् । पुणोभक्तती त वस्तव्य विमद । एवाप्य । गिबन्तात् वाचा इति वान् ।

५

१०

१५

२०

२५

दयिता मयीमरुतिनी कान्ता वशा, महिषा मरेला च ।

मार्या जाया जनि कुन्या फलत्र गेहिनी गृहम् ।

महिषा मानिनी पत्नी तथा दाराः पुरन्त्रयः ॥३२॥

एष कश्चि । इषम् धारणपोपरावोः । त्रिपदे पुष्यदे गर्भेण भार्या । “^१शुभार्थम्भङ्गना

५ स्तात्पम्भ । बभ्रमात्रः । अशोपयाम्भुक्तिः । भार्या इति वातम् । “^२जिवामादा । आश्लवः । प्र
ति । ^३ भद्रपायाः तिलोपम् । तिलोपा । “^४व्या वनोदानो वा (कि) नाति जाया । ‘^५नी मादुमभि
च’ । सुस्री वास्ये आत्माऽनजायत । “^६सम्भारया-कन्या वन्या जाया इत्याद्य शब्दाः बभ्रुवन्त्या
निपात्यन्ते । अनवति पुत्राङ्गनाः । इ^७ उर्वाशुम्भ ” । कुले वापुः कुन्या “^८युग्वारिताः । अ
मर्षे क्व लोकारिः । क्वडति मापति बीवनेनेति “^९कञ्जम् । ‘अमिनदिक्रिन्म्योऽनः अमप्रत्ययः ।

१ कञ्जम् । कञ्जवोरैश्चम् । प्रथ ति न्यु क्का मुरा । मोऽनु । गेहस्तत्वा गेहिनी ।
मह उपादाने । गृह्णाति म्पुपाकिं गृहम् । ‘गेहेलम्’ अश्लवः । ‘महिषा’ —सम्भारयम् ।
मस्ये पूष्यते । मोहिका । मान प्रशमकोरोऽन्या मागिनी । पति पठति वाति पत्नी । इ विदारणे” । इ
क । बोवति शतलाङ्गोभवति पुष्य एमिरिति दारा । ‘मार्षे’ वम् । अकारमात्रः । ‘इक्तिः । दार
इति वातम् । प्रथमा वत् । प्रत्या बहुलं च । पुरं अमरमिति गेशान्ते पुरं शरीर परन्तीति “^{१०}पुरन्त्रयः ।

१५ वेजम्, सृष्टमन्वारिणी गृहाः, सृष्टवी सृष्टरा । ”

षलमा प्रेयसी प्रेष्ठा रमणी दयिता प्रिया ।

इया च प्रमदा कान्ता चण्डी प्रणयिनी तथा ॥ ३३ ॥

एकादश बलभाषाम् । वन्तते फलुभिलं सृष्टवोतीति षलमा । “^१हृद्यशक्तिवर्द्धिति

२० बलिबन्धिन्योऽभाः अम मयवः आश्लवः । अतिशयेन प्रिया प्रेयसी । “^२तर”^३तनेवलिङ्गः अर्थाऽनै
पुत्र तम ईशदु इह” इत्येते प्रत्यया भवन्ति । अतिशयेन प्रिया प्रेष्ठा । एते क्तोऽन मनाति रमवति

का घ ४।२।१५ इति प्लव्णव । २ का घ २।४।५९ । ३ का घ २।१।१७ ।

४ का ठ ४।३ । ५ का ठ ३।१४ । ६ का घ २।९।११ इति प्लव । ७ का ठ १।५।

गड सेचने । पाठति गच्छते वा मन्त्रेराहरेण कः पा ठ इत्यत्रम् । कञ्जवोरैश्चम् । क्व शातन मर्षे ।

क्वडति क्वड्यते वा वादुलकाद्यत्रम् । क्वं मयुर अग्नि प्रायते रक्षति वा । वैङ् पाठने क इत्यस्य ।

८ अकार(वठन्मुद्यो बुभ इति पूर्वं का घ २।२।७ इति छल्लोपो दुरागमरश्च । ९ मोऽनुत्वार

मङ्गने इति पूर्वं का+घ १।३।१५ इत्यनुत्वार । १ का न्द ४।१।९ । ११ का घ ३।४।१२

प्राहृक्पावयिष्यधिविशिन्धिरिमिच्छन्निश्चप्ररबीनामगुच्छे इति पूर्वंघञम् । १२ का घ ४।५।१३ । १३ का

घ ३।६।५ । अशोपय वा दीपो वृदिनामिनामिनिश्चट्टु इति एत्यस्यम् । १४ स्वापु कुन्मिनी पुरन्मी

२।६।९ । इयमरादिकोरोपु दम्भेवायस्तुगम्भीशब्दस्यैव लताइव पुरम्भ इति पाठोऽनुक्त इति न

अमितम्भम् । पुरं परन्तीति विमह अत्र ह वा ठ ४।१।१९ इति इ । पुनोररावित्वायुरोऽकारान्तरं

मुनागम+अनि रोव्या उत्सा+पुरासतेः । अत एव वी म्नातर्कैर्बन्धुमता च राजा पुरमिप्रमिभ क्मशः

प्रनुक्तम् इति स्यु । पुरम्भमवन्तीति न विचाररश्चम्, लतापकापुशातनविरहात् । १५ भार्याविपुरण्यन्त-
शब्देण नामान्तरिणोपभावात्पर्यमेदो न किमर्तव्या । लघया-भावे जाया कुन्या, कलत्र गेहिनी गृह पत्नी
दारा वरिष्काम्प्रोराचमा । महिषामानिन्म्यो विशिष्टनाविके । पुरन्मी पतिपुत्रमती । १६ का ठ ३।१२ ।
१७ एषप कान्त्यर्त्तं नोऽन्यत्रम् । गत्याङ्गारेऽन्यम् शा घ ३।१।२५ इतीवदुम्यवी बीप्य ।

वा रमणी । नरेण ह्यते गण्ड्वति ईशे वा दृषिता । प्रीणाति पतिविच रक्षयति प्रिया । इत्यते ह्यते वा इष्टा । प्रकृते मदीय्याः प्रमदा । काम्यते नरेण काम्ता । चण्डते कुण्डति जयसी । चण्डिका च । प्रशवीय्या अस्तीति प्रशयिनी ।

सती पतिव्रता साध्वी पतिवत्येकपत्यपि ।

मनस्विनी भवत्पार्या-

एत पतिव्रतायाम् । एक पतिव्रतीति सती^१ । पतिव्रत करोति पतिरेव व्रत सेव्यो नान्यो भवता इति वा पतिव्रता । पतिसेवैव व्रतं ब्रूयाः पतिव्रता । पत्न्युक्ति—“वास्ति” स्त्रीणां पृथग्यज्ञो न मठमिति ।^२ वाचयति साध्वी । पतिरस्या अस्तीति पतियती^३ । एक पतिरस्याः वा एकपती । मनोय्या अस्तीति मनस्विनी । भवति सेव्यते अपार्या । सुपरिता ।

विपरीता निरूप्यते ॥ ३४ ॥

मवा धनज्ञेन भाष्यकर्ता अमरकीर्तिना वा कथ्यते विपरीता अत्रश्या ।

बन्धकी कुलटा मुक्ता पुनर्मूः पुनश्चली सुला ।

बद्ध बन्धनायाम् । बध्नाति तत्रबन्धितानि बन्धकी । कुलमरति कुलटा । तथा बौध्वादा ‘रत्न रत्नस्यैकमेव’ इतिवन्ति । अस्तीपथावा दीर्घ । कुलपूर्वा । कुलं दास्यति कुलटा । ‘कुले दाते रिक्तुं बन्ध’ कुले उपपद्ये दातेरिभ्रमत्स्य वा मन्वो भवति इत्युक्त्वा । स्वाचारं मुच्यते (ल) पावा बनेर्वा मुक्ता । पुनर्भवतीति पुनर्मूः । पुमांश्च बालयति पु अस्ती । अं पम्पेन्द्रितोत्पन्नसुखं हाति यद्वातीति सुला, अन्पुनश्चल्यत्वात् । पद्मुक्ता स्वैरिची अस्ती इत्यपी चर्षवी अस्तिनीता, अमिठारिका अपला ।

स्पर्धाभिसारिका दूती स्वैरिणी भ्रमफली तथा ।

पद्म दूतान् । ‘सुश संशयों । सुशति, त्यक्षयति, अस्वादीद् पर्ययों वा भञ् । त्ययों । ‘पद्म बभिशसुशयोर्वा पद्म । नामिन ‘अ गुण’ । क्षिणागादा’ आप्रत्य । स्पर्धा । पुण्यान्तप्रभिसरति अमिसारिका । वृक्षयेय्या^४ मीलनात् दूती । ‘ईर् गती कथ्यते च’ । ईर् । ईरशम् ईर । ‘भाषे’ पञ् प्रथ । तस्य ईर् स्वैर । स्वैरो विद्यतेय्या स्वैरिणी । ‘तत्रस्यास्तीति मन्वन्त्वनि’ इन् । नद्यापिम्बवाद् ई प्रथयः । रपुनर्वेन्व मरय अत्यम् । टी सुखम् कसति निष्पादयतीति शम्फली । तथा सेनेव प्रकारेण ।

गञ्जिका छञ्जिका बेरया रूपाञ्जीवा विलासिनी ।

पण्यस्त्री दारिका दासी फण्डुषी सर्ववह्न्या ॥ ३६ ॥

नव बेरनायाम् । मयाः पेरकीप्रत्यया गण्यतीश्वरनीश्वरी वा गञ्जिका । ‘हवि लावि लावा सव तर्क मर्तने । छञ्जयति निः स्वानुवयान् तत्रवतीति छञ्जिका । बेरो बेरनायाने भवा बेरया^१ । फण्डेण वा धमन्ताञ्जीवतीति रूपाञ्जीवा । विलाठीय्या-स्तीति विलासिनी । तथा बौध्दम्—

‘हावा मुलविद्यारः स्याद् भावश्चित्तसमुद्भवः ।

विद्यासो नेत्रजा होयो विभ्रमोऽत्र दगन्तयोः ॥

१ अस्पाठी शत्रुप्रत्ययास्तौ कीकन्तः लवीशब्दः । २ ‘नास्ति स्त्रीणां पुत्रग वदो न व्रतं नाप्नुवीययाम् । पतिं शुभ्रयते वैन तेन त्वयें न हीवते’ इति मनुस्मृतिः ५।१५५। ३ पतिव्रती, एकपती इति पाठो कुक् । ४ का ठ ५।४७ । ५ का घ ४।५। ६ का घ ३।५। ७ नामिनधीपथावा लोपोः इति पूर्वस्यम् । ७ ब्रूयते परित्यज्यते । अस्व कर्तार जीपुमांश । = का घ ४।५। ८ का घ ३।५। ९ का घ ३।५। १० का घ ३।५। ११ का घ ३।५। १२ ‘रपुनर्वेन्वो लोममन्वत् त्वरहकचर्षान्दरी अयि’ इति पूर्वस्यम् । १२ बेरौन वैपथ्येन शोभते ‘अर्धैश्यायद्’ इति बन् । बेरो भवा विगारित्वायत् ।

पच्यत्व स्त्री पच्यत्वस्त्री । परिमाणं कृत्वा स्मृतौत्वर्थः । इत्यादि विदारपठि कामिनम् वारिका । इत्यति परिपूर्णवा ह्यति इत्यात्मानं वा वासी । वाशी । वास्यवत्यः । कामयते इत्येवंगीशा कामुकी । अनेवां पुत्रयाणां बल्लभा सर्ववर्द्धना । वेंरित्री ।

“वसुवष्टिकुभामिद्या शीघ्ररूपादितेबिनी ।
प्रसाधनोपचारका सैरिग्री कच्यते बुधेः ॥”

गन्धकारिका । पच्यत्वी च ।

अन्तेष्टी इयितः प्रीतः प्रिय कामी च कामुकः ।

वस्त्रमोऽसुपति प्रेषान् विटश्च रमणो धरः ॥३५॥

प्रबोधश्च कान्ते । काम्यतेऽमित्यत्र कान्तः । इत्यत्रे इष्टः । रमा कृपा संवाता अत्येति इयितः ।

१ वारिकादिपदानां लक्षणं इतन् । २ इत्यपार्थक्यं योर्लोप एते प्रत्यये पे च । अकारलोपः । हीरेकः । प्र प्रकर्मणश्च ई काममुच्यते इतः प्राप्त मीतः । पुनोदरादित्वात् अकारलोपः । प्रीत्यादिस्य प्रीतः । प्रीत्याति प्रीत्याति वा प्रियः । ३ नाम्युपवर्तीकृतं क । ४ स्वरापविकर्षणोपर्याप्तत्वात् वातोऽितिबुधौ । कामोऽस्वातीति कामी । कामयते इत्येवंगीशा कामुकः । कच्यते पश्यमानः । ५ इत्यष्टाभिर्मरि रस्त्रिकारिणिभ्योऽम् । अन् अन्तः । अस्वनां प्राधान्यां पतिः असुपतिः । अतिरूपेण प्रिय प्रेषाम् । ६ प्रियस्त्रिकर्षणोपर्याप्तत्वात् प्रयोर्बहुवारकाराणां प्रत्ययत्ववेदित्वात् नमिः विसृत्वा विदुःत्वात् । ७ विट शब्दे विरति कामोऽस्त्रियं करोतीति विटः । इत्युपयेति च । ८ रम्य श्लेषावात् । रम्य । रमती करिषत् । तं प्रमुह्य इत् । अत्योपपादीर्षः । मातृकचानां हुत्वा । रमयतीति रमणः । ९ मन्वादेऽपु । १० कुम्भनामनाकाणां कनः । ११ कारित्वेन कारितलोपः । १२ नस्य अत्वम् । इवोति धर वति वा धरः । कयिता । पतिः करयिता । भर्ता । भौता । धरा । रच्यः । प्रयोक्तृः । १३ अन्तः शब्दो कामपितरि को वा दीर्घश्च अनपति च । अमिकः । अमुकः । प्राङ्गानिनाथः । सेका ।

सवित्री जननी माता

धरा मातरि । धृते जनवति सवित्री । जनवति भावतेऽर्था वा जननी । माति गर्भोऽम् १मानवति वा माता । अम्बा ।

जनकः सविता पिता ।

२५ धराः पितरि । जनवति उत्पादयतीति जनकः । पुत्रान् वृक्षे (धृते) सविता । अहिणाट् पाति रक्षतीति पिता । “उपार्शुं पा रक्षन् पातीति पिता । ‘स्वसादका’ १ । स्वदनपूनेत्यत्र च वृक्षोऽनुष्मण्डलिनिष्ठातृषु विद्युद्भवामातृभ्यामप्ये एते शब्दाऽनुष्मण्डल्यास्ता निपात्यन्ते ।

१ ‘वसुवष्टिकुभामिद्या शीघ्ररूपादितेबिनी । प्रसाधनोपचारका सैरिग्री स्वशोति चेति कात्वम्’ इत्यमरकोशे स्त्री त्वा । २ अ अ पू ५ ८ ३ का व् २।१।४४ । ४ अ व् ४।२।५१ । ५ अ व् १।४।५१ इतीप् । ६ का उ व् १।२२ । ७ पा व् १।४।२५७ इति अिगशब्दस्य प्रायेण । ८ इत्युपपत्तौप्रीकितं का पा व् १।१।२१५। ९ का व् १।४।१५ इति इत्वम् । १० का व् ४।२।२५ इति पुङ्लवणम् । ११ अ व् ४।१।५।४ इति योऽनादेयः । १२ अ व् १।१।४। इतीनोर्लोपः । १३ का व् २।४।५। १४ काठने नैतत्पुत्रमुत्पन्नम् । वित्पुत्रात्प्रापते ‘शुद्धशक्ति-कोशरिके’ इत्यादि वृत्तम् ४।१।१७। तेन अस्त्ववान्ता पत्ने दीर्घान्तधामिनीऽनीक इति निपातितः । १५ मानवतीर्षः विप्रश्च मातृत्वमेव । मा मातृ । वृक्षः प्रत्ययान्तः । १६ का उ २।४२ ।

देहापघनकायाङ्ग षणुः सहनन तनुः ॥ ३८ ॥

कलेवर शरीर च मूर्ति

इह देहे । देहश्च अपघनश्च कायश्च अङ्ग च । समाहारस्मात्कारेणैकवचनम् । दिह । देहीति
 देहः । 'दिविदिदिरित्पिरवचिम्ब्वतीपूरुवाता च' । एतां षो भवति । अपघनत्वे अपघनात् ।
 'मूर्त्ती' धनिम् अङ्ग । चिन् चवने । चि । शीवतेऽपी काया । 'शरीरनिवाक्योः कर्मादा' ५
 चिनोत्वे शरीरे निवासे चाये पत्र भवति आदेशश्च को भवति । ठक् शक् वल् मल् रल्
 ललि हलि बन्त्य रगि लगि षगि, बगि मगि स्वगि इगि रियि ङिगि गत्यर्था ।
 अङ्गति मर्यां गङ्गीतीति अङ्गम् । उच्यन्ते पुत्रानां चनेनेति षणुः । अङ्गपुत्रपिचिभनितनि
 वनिम् उच् एम् उच् ष्यपयो भवति । अङ्ग्यन्ते अङ्ग्यन्ते वातयोऽत्र संहननम् । वाङ्मिः रसलगात्
 मेदोऽस्तिपत्रशुभैस्त्वन्ते तनुः । तन् । उच्चाशौ तनुमित्तारे । तनोतीति तन् । कृषि चमिठनिषनि १०
 वषिठविलिभिम्य ऊः एम् ऊमत्वयो भवति । कङ्कते रिपरत्वं गच्छति कलेवरम् । कङ्कति मापठि
 वा कलेवरम् । कलेवरं च । अमरतिहभत्वे कङ्कयते कलेवरम् । शीमिठे ङ्व गच्छति रोमञ्चपरिमि
 शरीरम् । 'कृ-शशी-कृम् ईर' । एम् ईरप्रत्ययो भवति । उच्चादिस्वाद् । 'मूर्त्तां मोहकुम्भ्यावरौ
 मूर्त्तं । मूर्त्तं मूर्त्तिः । स्त्रिया ङि' । 'भोपवत्वोश्च कठि' इति षेद् । उच्यतेऽपि (वी) 'इति ङङ्ग्र
 शोप' । 'नामिनाभोदङ्कुपु रोर्ध्वङ्गने' ११ शीर्षं । अङ्गनाम् १२ । प्रय ङि । 'रेक १५' विभङ् । १५
 वर्मं । पुत्रम् । पिण्डम् । ज्ञेयम् । गोत्रम् । पनः । पुद्गल । प्रतीक । अश्वकः ।

अस्मिन् भव

अस्मिन् अये मभः कापभ । देहभः । अपघनभ । अङ्गभ । षणुर्भवा । सहनन
 भव । तनुभव । कलेवरभवः । शरीरभव । मूर्तिभव । कायः । देहः । अपघनः । अङ्गः ।
 षणुर्भ । सहननः । तनुः । कलेवरः । शरीरः । मूर्तिः । एतानि पुत्रनामानि भवन्ति । भव २०
 प्रयोगे ।

सुतः ।

पुत्रं सनुरपत्यं च तुक् लोक् चात्मजं प्रजा ॥३९॥

अथ पुत्रे । सुते सुतः । पुनातीति पुत्रः । "पुत्रो हत्वश्च ।" अस्माद् षङ्प्रत्ययो भवति
 वातोह त्वश्च । कोऽयुधार्थ । तथा च लौमनीश्याम् "य उत्यजः पुनाति बंधं स पुत्रः । अथ २५
 पुत्राग्नेो नरकात्वापते वा पुत्रः । सुते सुतः । सुविधिम्या बन्धत् ।" अग्नां तु मत्वयो भवति
 च च बन्धत् । "पूङ् माडिधर्मविनीचने ।" पक्ष शक्त पत्तु पयि च गती । पत् नञ् पूर्व । न पठति पेन
 वातेन पूर्ववा नरकाशौ तद्व्यपत्यम् । "नमि पतेर्व" बन्धयवा । नत्व' त्त्यु ङि । नपु

१ का ए ४१२।५८ २ का ए ४।५।७।८। इत्यन्त् क्त्वादेशश्च । ३ का ए
 ४।५।१५ । ४ का ठ २।४। ५ का ठ १।१। ६ कळे सुके म्पुत्राग्नेऽप्यन्तो वा नरं भेङ्गम् ।
 "इहात्मापति" ति एतन्मा अङ्गुक् । इत्यन्त्यत् । ७ अरि भा २।१।७ । = का ठ १।५। ८ का
 ए ४।१।७।२। इति ङिप्रत्ययः । १ का ए ४।१।८ । ११ का ए ४।१।५।८। १२ का ए
 १।८।१।१। १३ 'अङ्गनामस्वरं परं बर्षं नवेत्' इति पूङ् काठ्यन्यत्रम् । १।१।२१। इति अङ्गनाम पर
 बर्षयोगः । १४ "रेफतोर्वितर्बनीव" इति पूर्वम् । का ए २।१।६।१। इति उच्चात्त्व विठर्गः ।
 १५ का ठ ४।४। १६ मी वा तमु ५ ए ११ । १७ का ठ १।५ । = का ठ ६।१ ।
 १९ "नत्व त्त्युक्ते लोचः इति पूर्वम् । का ए २।५।११। इति नलोप ।

अथा १ । मोक्ष २ । तौ बति ३ दुःख् । स्वप्ते तोकम् ४ । आत्मनी वात आत्मजः । प्रक्येण वाता प्रजा । ५ धम्ममीपम्बन्धे कोर्षे । बाहः, पादः, अर्भकः गर्भपोषणम् । पृथुः, शिशुः शशः विष्णुः बटुः माणवकः, भ्रूः ।

उद्ग्रहस्वनय पोषो दारको नन्दनोऽर्भकः ।

स्तनन्धयोधानस्यौ-

अथौ बालके । उद्ग्रहतीति उद्ग्रहः । सन् । तनीति विस्तारयति बंशम्, तनयः । "तनेः ६ न्व । पत्ते वातेम पोतः ७ । दारयति ह्याति वा तस्थीनां मर्माति दारकः । ८ ट्ठनि वपुडौ । नद् । अत एव नन्द् । नन्दति करिषत्तमन्वः प्रयुङ्क्ते । ९ 'वातीत्य होतो (हौ)' इम् । नन्वतीति नन्वन्तः । 'नन्दि वासिनिदिदुषिवाविरोभिषधिन्व इन्स्तेन्वोऽर्भक्याम् पुत्रत्वयः । त्वमते नन्वासे कुं तु प्रत्वयः १० मुञ्चानाम् ११"- इति युरयाने अन्तः । "१२ कारित्वानामि कारित्तौपः । 'अर्भ' मह पूजानाम् अर्भत्यर्भकः । १३ मूकारवः । मूकमुकाऽर्भकपुत्रकस्तकमुभ एते कश्चन बान्वा निपात्स्ये । तनी बन्धीति स्तनन्धयः । १४ 'शुनीस्तनमुम्बन्ध्यास्वपुम्बे वेद्य ।' सन् । उत्तानः शेते उत्तानघाय । १५ 'उत्तानादियु कृत्स्' अन् ।

स्त्री चेद् दुहितर विदुः ॥४०॥

पुत्रा दुहितर १६ दोग्धि मातृकुलं हुनोति वा विदुः कथयति । तनवा पुत्री ।

वयस्याऽस्त्री सहचरी सत्रीषी सबयाः सखी ।

पद् सन्नाम् । वयसा इत्या वयस्या । वयसी च । आत्मन्वाप्तिर्त्तं ताति आसिः । शिवामी । आसी । तह तां चलीति सहचरी । त्वाऽतीति वन्द् । 'व्यवन्तिरसां तमिचमिति रत् ।' इत्यने सत्रीषी । तह वयसा वर्तेते सबयाः १ । छानं च्वातीति वलि (वा) । शिवामी सखी । "सख्यारवः" वलि अग्नि ग्रहि इत्यादयो विप्रयवान्वा निपात्स्ये ।

आलीविषदितं मित्र सम्बन्धो मित्रयुक् सुहृत् ॥४१॥

अत्वारो मित्रे । आली रक्षितानि वयसादीनि नामानि मित्रवाप्यानि सूरित्यर्भः । 'मिमिवा स्नेहने' । मेघति ध्व मेघते स्न वा स्नेहदुस्ती भवति स्न वा मित्रम् । १ 'मिमिदिन्वा वद्' आन्वा ११

१ 'अकारयस्यमुडौ मुम् इति पूर्वम् । अ ए २।२।० इति सेतोपो युरागमम् । २ मोऽनुस्वारं अङ्गने इति पूर्वम् । का ए २।५।१५। ३ ट्ठव हिंवाहावाप्तनिकेत्तेयु' । वपुडौ वा चिन् । तौ बति पितृवचनमादौ 'दुः' इति संज्ञायम् । ४ तौति पुरवति पितृकार्भे विदुःमात्रेऽपीति वाक् । ५ तौत्रो वादाविवाहतिरिदुः । वदुक्कालः इति स्तुत्यन्तरमप्युद्धम् । ६ का ए १।५।५१ । इति बनेर्षे । ७ का उ २।२।५ इति तद् वातोः क्वप्रत्वयः । ८ पत्ते बनेनेति विप्रहस्तु नौक-वाचकपोते बोधम् । पुत्रार्भे द्व पुनाति पत्ते वा वय पोतः । मुमुवाहत्वमि - इति का उ १।२।० एतेण तप्रत्वय । ९ पुत्रविमनोदारण्य वासाहाय न पत्ते । अतो इच्छाति दारयति वा मातृविक्रान्, पित्रोर्नित्तन्वानता बन्वातिर्भेति त्वाशशोऽप्युद्धम् । १० का ए २।२।१ । १ का ए १।२।५१ । नन्वासे युः इति एते दुर्गहृतिः । ११ का ए १।१।५४ । १२ का ए २।१।२।० इतिनी बोधः । इन कारित्तवा कात्तने । १३ का उ २।५।०। १४ का ए १।३।११ । १५ का ए १।३।१८ अन् दुर्वहृतिः । १६ दोग्धि पितृकुलं वरति हुनोति वा मातृकुलं दुहिता । स्वसाविस्वापुन्यत्वम् इत्याशयः । १७ अ ए १।१।७।१ इति वरस्य सप्यादेशः । १८ छानं वरी वत्वा इति विमहो म्वाप्य । स्त्रीतिर्बन्धनेति छानत्वं तादेशः । १९ अ उ १।१।२० का उ १।४ । २१ मेघति मेघते इति वर्तमानकालिको विमहो बुधः न द्व भूतकालिकः ।

नक् प्रत्ययो भवति । क्वारो बन्धुभावात्पत्नेनागुणत्वम् । तन्महृत्त्वेन क्त्वातीति सम्बन्धः । मित्रं पुनक्तीति मित्रयुक् । अणु इरति चिच सुहृद् । शोभनं हृदयं पत्य वा । क्त्वा लिङ्गम् ।

सहकृत्वा सहकारी सहाय सामवायिकः ।

चत्वारः वशाये । सहकृतवान् सहकृत्वा । कर्मभ्यः कतिप् प्रथम । प्र० ति । 'पुटि' वा 'दीर्घः' । सह सम्पत्कारोतीति सहकारी । 'नाम्बकातो' चिनिस्ताप्त्विने । सह वार्धम् अयते गच्छति सहायम् । समवाये त्रिकुलः सामवायिकः । इहण् ।

मनामिः सगोत्रो बन्धुश्च सोदर्य

चत्वारो भ्रातरि । समाना माभिर्वत्स सनामिः । समानं गोत्रं इत्य सगोत्रः । क्त्वाति स्तोत्रेण बन्धुः । 'पद्वति' बतिइतिमित्रपीडिकन्दिबन्धिबन्धिश्चिम्ब' एव एकादशम्य त् प्रत्ययो भवति । सोदर्याः । समानीदर्यं, समं शीदरः, समानोदरः आत्मीय, स्वजनः भ्राता, भातिः १० समामेया उपिण्डः ।

अवरजोऽनुजः ॥ ४२ ॥

कनीयान्-

द्वौ (बनौ) शत्रुभ्रातरि । अवरं पश्चात्तातः अवरजः । (अनु) पश्चात्तातः अनुजः । "उत्तमी" पश्चात्तातं (मन्ते च) नेर्हः" । अवननयोरतिशयेन युवा कनीयान् । "युवाऽन्यथौ" क्त्वा । कनिज् । १५

अग्रजो ज्येष्ठ

अग्रं तातः अग्रजः । प्रकृतो हृदो ज्येष्ठः । 'पृदस्य च' इदशम्यस्य च आदेशो भवति । पूर्वजः बरिष्ठः, कपीवान्, अग्रिजः ।

भातृजानी स्वसाऽनुजा ।

त्रयो मगिण्याम् । भातृजाता भातृजानी । स्वत (स्व) ति क्त्वाति क्षिपति चित्तं स्वच्छ" । २० अदन्ता । अतु पश्चात्ताता अनुजा । भगिनी । मयी च । बामिः । बामिभ्यः ।

मधुः म्वसा ननान्वा स्यात्-

म्यात् भवेत् । मधुःम्वसा भगिनी । ननान्वा । 'द्वनदि तमृदौ' । नद् । "अत" एव " नम् पूर्वः । न नक्त्ति अणुभावात्सत्ता क्त्वा ता ननान्वा । 'नदि' च नन्वेच्छ न् दीर्घम्" नदि उपपत्ते

१. अणु इरतीतिभ्युपतिष्ठु तातसुहृदृशये तन्मवति । मित्रवाचकत्वात्सुहृदृशये द्व शोभनं हृदयं इत्येत्येव । इहणस्य इहारेण समासे । २ का सू ४।३।९ । ३ पुटि वाक्यमूढी" ४ का सू २।२।१० । का सू ४।३।११ । ५. का उ १।१। ६ का सू ४।२।११ । ७ वर्तमानप्रत्यये नीपठ्यम् । ८ वर्तमान कालने नीपठ्यम् । ९. नात्येतिन्दीर्घे प्रापृशानीशय्य उपलभ्य नात्येत्तन्वाचकं किमपि व्याकरणात् । भातृजातति मित्रहोऽपि भगिनीर्बे-लंघत । तथापि भ्राता सह भातृजातति विप्रय्य बाहुल्यकारी शारिकमधुप्रत्ययं क्त्वातो प्रकृत्य अणुत्वात्पीपि भ्रातृजानीति शब्दो मन्वध्यात्पत्न्यात् क्वचित् समासे । १० स्वत्ववि क्षिपति चित्तं भातृ स्वसेति मित्रहो दीप्य । अणु क्षेत्र" दिवारी । मुपूर्वाकात्वात् हुम्बसेच्च न इति अणुप्रत्यय । काठ-प्रोशादी द्व स्वकारवः इति 'नक्त् प्राणने इत्यत अणुप्रत्यये शकारस्य क्वारे च "रक्त्तीति स्वता इत्याह । अत्र क्षिपतीति वर्तनं च अणु क्षेत्र इत्येव भाव्य अणु र्भवेत् इति काठे । ११ "अत एव वर्तनादिमनुक्त्वात्ता मोऽर्थादिति दुर्गमिति । का सू ३।१।१ । १२ का उ सू २।१।१ ।

एति नन्देर्षांशु न् प्रत्ययो भवति अकारो दीर्घश्च भवति । ननान्ता इति धात्वम् ।

मातुलानी प्रियाम्बिका ॥ ४३ ॥

हो मातुलनार्थायाम् । मातुलत्वेन भार्या मातुलानी । "इत्" कश्चनभार्याशुश्रिमवमारण्य
वचननमातुलाचार्याणामानुष्ङ् ईप्" । अन्वैव अम्बिका । "अम्बादिभ्यो ङङोका" ङ, ल इक, प्रत्यया
भवन्ति । प्रिया चाद्यौ अम्बिका प्रियाम्बिका ।

वैपारातिरभिज्ञोऽरिर्द्विद् सपत्नो द्विपत्रिपुः ।

भ्रातृभ्यो दुर्बनः शत्रुदुष्टो द्वेषी खलोऽहितः ॥ ४४ ॥

पञ्चम्य शत्रौ । विधिज्ञान ई लक्ष्मीम् ईरवति निर्गमवति नीरः, नीरस्य कर्म वैरम् ।
[वैरमस्यास्तीति वैरी ।] वैरिपुरमिर्षति गच्छति आरातिः अरातिश्च । न मित्रम् अमित्रम् ।
अपमन्दितारिक्त् । "विपक्षे मम्" इति वारत्त्वत्"स्यम् । शत्रुत्वमिर्षति अरिः । द्वेषीति द्विद् ।
"व्य" इति पूर्वः शत्रुदुष्टोऽभिदभिदक्षिप्रभिनिराशनुपतरोऽपि द्विप् । एकार्पाऽभिनिवेशेन क्तान्तं
पठति सपत्न । द्विप्ने द्विपन् । निशुद्रं रवति रिपुः । शत्रुदुष्टं शत्रुदुष्टं शत्रुदुष्टं शत्रुदुष्टं शत्रुदुष्टं ।
एते ङङङवन्ता निपात्यन्ते । निपात्यन्मप्राप्तप्रापञ्चार्थं प्राप्तस्य वाचनार्थम् । लक्षणेन वचनार्थं लक्ष्यं
निपातनास्तिस्रम् । तथा क्षीरत्वामिनः— "रेपयति रिपुः । रेपू गतो । प्रादं भवति मारवति
"भ्रातृभ्यः । दुर्बनः दुर्बनः । परमभटारकमीवश्च कीर्तितम्भापित्तम्ये—

प्रशास्या न नमस्याऽपि दुर्जनैर्या विधीयते ।
कष्टकः पादसन्तोऽपि न शुभाय प्रजायते ॥

तथा च घृत्किमुक्तवक्ष्याम् —

'वरं क्षिप्तः पाणिः कुपितफयिना वक्त्रकुदरे
वरं मन्पापातो व्रसादनककुम्भे विरचितः ।
वरं प्रासप्रान्तः सपदि अठराम्बर्हिनिहिदो
न ज्ञान्यं दौज न्यं तदपि विपदां सख्यं विदुवा ॥'

अत्र ये केचिद् दुर्बनः सन्ति तेषां मस्तकेऽनिपातो भवति । तथा च —

'दुरज्जण सुहियः होह जगि सुयगु पयासिठ मेज ।
अमिड बिसै वासरु विमिष जिमि मरगाठ कश्चेण ॥'

श्रुत्याति शीर्षते वा ' शत्रुः । दूष्यते निन्द्यते श्लोकं सुप्र । द्वेषि ' इपोऽस्तस्य वा द्विपन् ।

१ पा ६ ४।१।४९। अत्र घृत् वैरमेत्यधिकं पाठः । २. दावनाम्पुनादिभ्योऽन्त् बुधादित्वात् ।
लतो मत्वये अत इन्तनी इतीन् । ३. श्च गती । आर्ध्वकाम् श्चचातोर्भाद्रुकादादिभ्यश्च ।
अन्वव द्व म राति सुर्षं वदातोति नम पूर्वकात् 'य (दात्रे) वातो ङिप् ङीच सङ्घावामिति ङिप् ।
४. 'तदन्ववद्विष्यतदभाभेयु नम' वती इति वच्यम् । अन्त्वरे' वार क्ता १४ ६ । ५ वा
६ ४।१।७४। ६ का उ ६ १।१। ७ क्षीर मा २।८। ८. ज्येम् संवरो वात्तामिनकार्यं
त्वादिताऽपि इति । आर्ध्वानुरो क । ९. निर्दयसागरवन्तालवप्रकाशितकाष्णमातात्मम गुच्छमिति
मुत्तावनी ११ इतो । १०. तावप च १ । ११. अन्वारव । अश्रुमम् शिपुशत्रव । एते कस्य
वन्ता निगावन्ते । इति वा उ दुर्ग इ १।१९। १२. द्वेषोऽस्तस्येति क्तान्तमर्पाऽभिपद्येण ।
विमदस्य द्वेषीत्येव । शत्रुम् ।

लक्षति लम्बगुणानाद्यादपटीति खल- । न मैत्री द्वितीति गच्छति न द्विती वा 'अद्विः । अग्निपातिः पतिरख- अहन विषांशु परिसम्पी पर अगुह्य अरवी पर्यवस्थावा शाश्वतः, प्रत्यनीक इत्यर्थः हुहृद् हसु' अभिमन्वी ।

दीधितिमानुरुसोऽगुर्गमस्ति किरण फर ।

पादो रुषिर्मरीचिर्मास्तेजोऽचिगीद्युति प्रमा ॥४५॥

योदश किरणे । त्रिषीते दीप्यते दीधिति । 'दीधीदो द्विः' दीधीदो पातोर्दिति अयसो भवति । भा दीनी' भाति मानु । 'दामारिहम्नो तुः ।' एम्नो तु प्रत्ययः स्वात् । वरति रवी 'उरु । युति । अरुते वयद् व्याप्नोति अंशुः । स्त्री । उणादी । अनच् । अनितीति अंशुः । अनेः' यु अनेपंती शुभ्रवती भवति । ["'भा दीनी' भाति मानुः । 'दामारी'] गी मुञ्ज वभस्ति 'गमस्ति' ।

यर्णागमो गणेशादी सिद्ध वयविवर्ष्ययः ।

योदशादी विचरन्सु वयनाशः प्रपोदरे ॥

कीर्ष्यते किरणाः । हलादुक्ते किरति विशिषति तर्मानि किरणः । "५ कृभूम्ना वन । कर्ष्यते वत् । पठते पादा । 'पदवचिरेत्युशोकां पम् । रोचते रुचिः । प्रियते तमोभेन मरीचिः । स्त्रीनी । उणादी । प्रियते मरीचि' । 'मृषश्चिम्बामीचिः' धाम्यामीचिः प्रत्ययो भवति । भाठन क्विपि वागो भास् । स्त्रीनी । पु स्वेवेति शब्दमे' । भा । भाषी । भाः । तत्रवतीति सेज् । अर्षवतीति अर्षिच् । अर्ष्यते पूस्वते अर्षिः । "अर्षि" 'गुचिश्चिद्गुचिश्चिद्दिम्य इति । गच्छति तमोऽनीति वी । स्त्रीनी । योठन द्युति । योठते (वा) द्युति । प्रभाति प्रमा । रोचि' अनीशु मरीचि रश्मि द्युति इति विभा वम वसु वत् प्रमह उपपृति पृथिव्ये पुरिन मकूच विरीकः रोकरच ।

दीप्तिज्योतिर्महो धाम रश्मिच्छ्वो विमावसु ।

कत तद्वति । दीप्यते दीप्ति । योठन उपोति । ज्योतिरादवः' । ज्योतिर्वहिरादव । महति महः' । वान् । धीयने वृषेच नस्त्यन् धामन् । रश्मि शीघ्र । रश्मि अरुतुन रश्मि' । ऊर्ध्व वलाग्रचनयो । ऊर्ध्ववतीति ऊर्ध्व । क । [विभा वसुर्वस्व व विमावसुः ।] (विभा । वसु ।)

शीतोष्णप्रायपूषाञ्चौ तदन्ताविन्दुमास्त्रौ ॥४६॥

तयोस्त्वौ 'तद्वस्त्वौ । इन्दुमास्त्रौ । इन्दुरथ भास्करश्च इन्दुभास्कर । कर्ष्वस्त्वौ । शीतोष्ण

१ न मैत्री द्वितीतिमेति मृते विग्रहो बोध । गदपर्यव्याकर्त्तरि ऋ । म द्वितमस्मादिदि रामाभम । २ वा उ म् १।२१ । ३ वा उ म् २।७ । ४ 'बन्' निवर्त्तते बन् पातो 'स्यवि तस्यी स्वारि उ भूषेच रञ्ज्यव सञ्ज्यारण्ये च । ५ वा उ म् ५।१८ । अंशुपनि विभात्रवति 'अशु विभात्रवे' उपत्यञ्च इन्दुरवस्त्वौ च । ६ पुनकण्ठ्यापरिहाव । ७ वभस्ति दीपयति । भठ भर्त्सनीदी- पयो । तिञ्चप । पूषीदरादिस्वातीदशादी वर्षविचारवरीनात्प्राकार । ८ शा म् २।२।७३ । पूषीदरादव इत्यत्र कारिकाकण्ठ पठित' । ९ वा उ म् १।१७ । १० वा म् ७।५।२ । ११ वा उ म् ३।८ । १२ वा उ च । १३ वा उ म् २।८ । १४ महर्न मह । मच्छते पूषवते वेति रमाभम । १५ वन्दुनसु विभा इति वसु' इति च तत्रतः संज्ञा । तमुन्ती 'विभात्रसु शब्दस्य पूर्वान्निवाची । तदुक्त पूर्ववती विभात्रसु इति अम वो ३।३।२१ । १६ तं दीपित्वाद्यं चट्या अउ यवोस्वी तन्वी इत्यपं त्मातो बोधः । तयोस्त्वौ विनि त्मातस्यु हावत्त्वात्तत्रमुत् ।

(प्राय) पूर्वाश्वी । शीशीष्ठी (प्रायेण) पूषाश्वी यथैरिन्दुमास्त्रयो (ठौ) शीशीष्ठ (प्राय) पूर्वाश्वी । शीतदीधिति । शीतदीधितिमान् । शीतमानु । शीतमानुमान् । शीतस्यु । शीतस्युमान् । शीतगमस्ति । शीतगमस्तिमान् । शीतकिरञ्ज । शीतकिरञ्जवान् । शीतपाद् । शीतपाद्वान् । शीत-
 ५ शिबि । शीतशिबिमान् । शीतमरीचि । शीतमरीचिमान् । शीतार्चि । शीतार्चिष्मान् । शीतभा । शीतभावान् । शीतगु । शीतगोवा^१ (मा) न् । शीतघृति । शीतघृतिमान् । शीतप्रम । शीतप्रमावान् । शीतदीति । शीतदीतिमान् । शीतम्बोति । शीतम्बोतिष्मान् । शीतमहा । शीतमहत्त्वान् । शीतबामा । शीतबामवान् । शीतरश्मि । शीतरश्मिवान् । शीतोर्ब । शीतोर्बवान् । शीतविभाषसु । शीतविभाषसुमान् । किरञ्जशब्दानां (श्वेत्) पूर्वं शीतशम्भ्रयोगे चञ्जनामानि भवन्ति ।
 १० उष्णशब्दयोगे स्वर्नामानि भवन्ति । उष्णदीधिति । उष्णदीधितिमान् । उष्णमानु । उष्णमानुमान् । उष्णोस । उष्णोसवान् । उष्णस्यु । उष्णस्युमान् । उष्णगमस्ति । उष्णगमस्तिमान् । उष्णकिरञ्ज । उष्णकिरञ्जवान् । उष्णपाद् । उष्णपाद्वान् । उष्णशिबि । उष्ण-
 १५ शिबिमान् । उष्णमरीचि । उष्णमरीचिमान् । उष्णभा । उष्णभास्वान् । उष्णतेवा । उष्णतेवत्त्वान् । उष्णार्चि । उष्णार्चिष्मान् । उष्णगु । उष्णगोमान् । उष्णघृति । उष्णघृतिमान् । उष्णप्रम । उष्ण-
 प्रमवान् । उष्णदीति । उष्णदीतिमान् । उष्णम्बोति । उष्णम्बोतिष्मान् । उष्णमहा । उष्णमह-
 २० त्वान् । उष्णबामा । उष्णबामवान् । उष्णरश्मि । उष्णरश्मिवान् । उष्णोर्ब । उष्णोर्बवान् । उष्ण-
 विभाषसु । उष्णविभाषसुमान् ।

श्वशी विद्युं सुधासृतिं कौमुदीकुमुदप्रियः ।

कलासृचन्द्रमाशन्द्रः कान्तिमानोपधीश्वर ॥ ४७ ॥

२० वरा अत्रे । शशोऽस्वास्तीति शशी । विरवास्त्वमूर्त्तं विद्युः । "शौ वाजश" । सुधा अमूर्त्तं सृषते सूधासृतिः । कुमुदानामिषं विद्याय (व) वैश्वान्त्यौमुदी (श्वौत्वा तत्त्वाः शिवः कौमुदीशिवः) । कुमुदानां शिवः अमीश्वः कुमुदप्रियः । कलां विनर्त्तति कलासृत् । "मा माने" चन्द्रं मातीति चन्द्रमाः । "चन्द्रे" माते^२ चन्द्रे उपपद्ये अस्मात्कञ् मत्वयो भवति । अगुशब्दाभावात्परस्मैयः । भिषधयोगे स्तर्भाय दत् । चन्द्रतीति चन्द्र । "रश्मि" तन्निशितशक्तिश्चिभिद्युदिवदिमदिमन्दिचन्द्रश्वी-
 २५ श्विन्मौ रश् । कान्तिरस्तीति कान्तिमान् । ओपधीनामिषयः ओपधीश्वर । इत्युः रौमः, रत्ना, रौहिणीपक्षमा, अश्वशुभेराः अग्निनेत्रप्रद्युम् । तथा बीजत वराशित्तके—^३

आहु नैत्रोत्थमत्रेः स्रुतममूर्त्तनिधे य इरेर्नैर्मचम्बु
 मित्रं पुष्यायुषस्य त्रिपुरविह्वलिनो मौलिमुषाविधानम् ।
 वृत्तिसेत्रं सुराणां पशुकुस्रतिह्वल्य बाल्ययं केरवाश्व
 सम्प्रीतिं वस्तनोतु द्विभरजनियतिभ्रन्त्रमाः सवकाशम् ॥^४

१ "मातुपभाषाम् इत्वारि वत्वविचारकं तत्रम् । मन्वराऽश्वौत्वात्तन्मन्वरापिषोपभाष मन्मोर्मकारत्ववकारं शास्ति । अथ तत्पत्त्वामाभावात् "शीतगोमान्" इति वक्ष्यम् । वस्तुस्तु शीत गोशब्दस्य कर्माकारणे ततो "गोच्छदिल्लुकि" इति तयो दुर्बलत्वात् "शीतगवान्" इति सुवचम् । विद्यातत्तस्तु पेशशस्त्वो मनुषिष्ठाः । तदुक्तं "न कर्माकारवान्त्वर्बर्बो बहुवीरिभ्येत्तर्बर्बर्बतिषिक् । २ का उ ऋ ५२। कुम्बव । ३ चन्द्रं कर्पूरं मातिं सुतपतिं लालस्वमेति मन्वीकषिप्रहार्य । चन्द्रमाह लालं मिमीते तुल्यवति लालस्वमेति विप्रहात्स्वपञ्चमम् । ४ अ उ ऋ ५ २।५० । ५ का उ ऋ २।५० । ६ अस्मा १।५० इती ।

प्राणेशुः, श्वेतरीषिः, शशाङ्कः द्विवरात्र रत्निकर पीयूषरविः निशीथिनीनाथ
बैबलूकः मुगाङ्कः शाखावशीरमण मा' अमुष्यते कथमायेतिक् । सुषामूर्तिः अमृतनिर्गमः
वमुद्रनचनीतम् । शरवाम् १ ।

उठ्नि भानि तारसं नक्षत्रम्—

चत्वारो नक्षत्रे । अथति महाम् उठ् १ । अङ्गीवे । तथा चामरतिहे ५—

“नक्षत्रमूर्त्तं मन्तारा तारकाऽप्युडु या स्त्रियाम् ।”

भाति दीप्यते भम् । क्षीरत्वामिनि—“मा विघतऽस्य मम् । कस्वना ताटा १ । तारपति

वा । अमुष्यति दिनखि तम् अक्षम् । नक्षति से वाति न तमः वि (ह) खोति वा नक्षत्रम् ।

“अमि नक्षिकृत्स्वोऽत्रः । तारक क्लीबऽपि । नक्ष शरवत—

“नक्षत्रे वाऽश्चिमध्ये च तारकं तारकाऽपि च ।

सर्वं च—

द्वित्रैर्भोमि पुराणमौक्तिकपनक्षद्वार्ये स्थितं तारकैः”
उत्पति

(नक्षत्र पश्यन्ति परं) पतिगणप्रयोगे चन्द्रनामानि भवन्ति । उडुपति । ताटापति ।

अक्षपति । नक्षत्रपतिः । उडुपत्रः । उडुत्वामी । उडुनाथः । नक्षत्रेश्वरः । तारेन्द्रः ।

निष्ठा ।

स्रणदा रत्ननी नक्ष दोषा इयामा क्षिपा

वम रात्री । निशाति तनुकोति शेषामिति मिश्रा निशो वा । ‘आत’ रक्षोपक्षो ।

अक्षमक्षरं वदतीति स्रणदा । तमगा रक्षति रत्ननिः । क्षियामीः । रत्ननी । रत्नशम्भुः वा नखा

दित्वासीः । तेनेति नक्षम् । इष्टं रूपवति वाऽत्र दोषा । आदन्तोऽत्रवाऽनन्ववः । इयापन्ते गण्डन्ति

पतिव्यप चर इयामा । तयाऽनेकार्ये ११ (अनि)महर्षाम्—

“इयामा रात्रिस्तु पिट्ठयामा इयामा क्षी मुग्धपौषना ।

इयामा मियङ्गराख्याता इयामा स्याद् वृद्धारिका ॥”

क्षिप मेरुते । क्षिप् । क्षस्य क्षिपा । ११ पाऽनुकृत्तनिदादिन्वयवह । क्षिपन स्थापन क्षी

निर्गमते वा । तनी । तना आदन्तोऽम्बानम्बव । तमिखा । तमखिनी । विनाखरी । नक्षमुला । शर्षरी ।

त्रियामा । निराधिनी । वामिनी । ववति । वातनयी । उषि ।

१ लोपा पूर्वपरत्व च अक्षत्वये तदैवेव इति कात्यायनवार्तिकम् ॥४॥८१॥ वा
लूकस्य पूर्वपरलोपविधावक्षमत्र प्रमाणं काव्यम् । २ ‘देयी’ शम्भु मान्धवायावाचकः । क्षीरत्वामि-
क्षाऽम्बरमायेऽपि बहुत्र उपलभ्यते । ताडुत्तमस्य पञ्चाक्षराकल्पितत्वात् “देयी” इतिवद् बोध्यम् । बलुत
स्वर्ष शम्भो वैशिक एव । ३ अथति प्रमां रक्षतीति कः । “अत्र रदुते” क्षिप् । “अत्रत्वे” लृट् । अफते
इति हु । अफतेर्लृट्प्रत्ययः । ऊभाठी हुभेति कर्मकारक । नक्षत्राणां रक्षकारत्वादाकारादीत्यतनशीलत्वाय
उडुत्वमुपपन्नम् । इको हलः इद्वन्वारस्य हल इति वीर्यवर्ष । ४ अम को १।१।२१। ५ क्षीर
मा १।१।२२। ६ भिरादित्वावह । अकि परे गुणः । निगाठनाद्दीर्घः । ७ अथति अमुष्यति “अधी गती”
पुरादि । क्षीरादिक् कश्चनः क्षि । पत्नत्वत्त्वानि । अक्षमिति । ८ का उ नू १।५। ९
“नक्ष शरवत इत्यारम्भ “स्थितं तारकै इत्यन्त पाठः १।२।२२। क्षीरत्वामिभान्त्योऽत्र परीतः ।
१० का नू ४।५।८। ११ १६ लोको इतीका । १२ वा नू ४।५।२२ ।

करः ॥४८॥

(निशापर्वावापरं) करग्रन्थे प्रमुञ्चमाने कर्त्रनामानि भवन्ति । निशाकरः । अश्वत्थकरः । नक्षत्रकरः । दीपाकरः । श्यामाकरः । अषाकरः ।

तरणिस्तपनो मानुर्भ्रंश्च पूषाऽर्ष्यमा रविः ।

तिग्मः पतङ्गो द्युमणिमार्तण्डोऽर्को ब्रह्माधिपः ॥४९॥

इनः सूर्यस्तमोऽध्वान्ततिमिरारिर्विरोचन ।

५

उत्तराश्र सूत्रे । तरन्वनेनेति छरणिः । अतु'सप्तपुत्र' इत्यत्र विहितमिहोऽनुतिः । तपति विशोऽत्र तपना । भाति दीप्तये करः मानुः । 'शोभाति' इत्यत्रोऽनुः । नुः प्रत्ययः । 'अप्य कन्वने' कन्वाति कन्वत्येव च नः । "'कन्वे'त्र'विभ' । अस्मात्कन् प्रत्ययो भवति अप्यारेणम् । इकार उच्चारणार्थं । पुष्य पुषी । पुष्पाति भवति तेजसा पूषा । पूषादेवः— "पूषाभ्रंमनुषुह्वम्बन्वन्वोऽनमातरिस्वन्वलोऽनस्नेहन् मूर्धन्वुपन्वोपन्' एते कल्पन्त्या निपात्यन्ते । इवर्त्तति अर्ष्यमा । अतु गती" । कन्वते क्वन्ते रविः । 'इः "उर्वावाप्यः" । तीर्तिह्यतीति तिग्मः । "तुक्तिरचित्वा 'प्यक्' । पतति नक्षत्रपथे पतङ्ग । "तु- 'पति'म्यामङ्गः' । आन्वामङ्ग- प्रत्ययो भवति । दिवो मक्षिरिव द्युमणिः । मृत्पङ्कत्यापत्वं मार्तण्डम् । मृत्पङ्कम् । आकाशमिवर्त्ति अर्कोः । उचारो "अर्षं पूषायाम् । अर्ष्यति अर्कोः । " इत्यभीकायाश्च

१

१५

विष्णुदाशारायः कः एन्- कः प्रत्ययो भवति । महाशामभिरा स्वामी ब्रह्माधिपः । एतीति इनः । ' इच्छि'कृपिन्वी नक्' । द्वपति (म्रैरवति कर्मणि) लोकात् सूर्यः । 'सूर्य'कृष्णाम्भ्याः' कर्तरि' । सूत्रे इति कल्पवृक्षान्तो निपातः । उमरच भ्रान्तं च तिमिरश्च तमोऽध्वान्ततिमिरा, तेषामरिः,— तमोऽरि- भ्रान्तारि तिमिरारिः । विरोचते इत्येवर्त्तितो विरोचनः । " ब्रह्मादेव स्वह्वानादे' । अषा ईर्गच्छात् स्वह्वानादेर्पुः भवति । आवित्- लक्षिता तरसकिरणाः प्रपीठना भास्करः, तिग्माशुः दिनमणिः, २० भास्वान् विषत्त्वान् हरिः विष्कर्तनः भगः, गौरति दिनकर एत एतश्च, अंशुमासी मिहित तिमिर रियुः अंशुमान् अंशु हरिदश्व' उच्चारण' प्रभाकरः, मानुमान्, इंत लगाः, मित्रः, विश्वभातुः अर्ष्यति कर्मकाषी बगच्छुः, दादशाला कपीठकुः ।

दिनं दिवाऽहर्दिषसो घासर-

पञ्च द्विवचने । 'धोऽवत्पञ्चने' पति लङ्भवति अन्वकारमिति दिनम् । रीनात्^{१२} इ (घटेरि)

२५

घ^३ घटे नमस्यसो भवत्काशस्त्वेष । रविर्दी [पान्' ही] व्यतेऽत्र; आदत्तानम्भवम् द्विपा । अर्षन्तं क्लीबम् । दिनं विदन् । न बहवति काल (एषि) महाः । 'नमि'^{१३} बहवतेः" इति शिन् (कनिः) । दीम्बतीति द्विवचः^{१४} । दिवचम् । वेतववाहृदिवचघटनवा एतेऽवत्प्रयवान्ता निपात्यन्ते । वातवत्त्वच घामरः^{१५} । वातोऽपि । उमवम् । रिवि बरिब्रतिभ्रमिवातिम्बोऽरः । एम्बो-र- प्रत्ययो भवति । पुः । वसा ।

१ का उ लू २।४। २. का उ लू २।७। ३ का उ लू २।५। दुर्गकृतिसम् । ४. का उ लू २।५। ५. का उ लू ३।१। ६ का उ लू ३।५। ७ का उ लू ५।२। ८. का उ लू २।५। ९. का उ लू २।५। १० का लू ५।३। ११ का लू ५।७। १२. का उ लू ६।५। १३ का उ लू २।७ १४ दीम्बति दीम्बति प्रकृतिः पुत्र दिवच इत्यपि । १५. का उ लू ३।१। १६ 'वात उपसेवायाम् वातपति दुर्वालोई प्राशिनं का वातः । विदहे अत्र' इति पदमभिवम् । १७ नैक्युषम् का उच्चारो लक्ष्यम् । तत्र कवाभ्यः लक्ष् ३।६। इति दक्षम् । कर्त्तृति वातर वापानी लक्ष प्रथम इत्युपम् । तत्रैव अनुर्वादे ३३ उमरत्यमि लूम् 'अपविशतिवातिव्य तदा इति वातिवातो लक्ष्यव उच । वातपतीनि वातर । कौतुरिप्यनुपादित्वम् 'अति'कमिषमिष मि विवातिव्यभिन्' ३।२। इति वातिवातीत्यन्वच ।

तत्करम स ॥ ५० ॥

दिनकरः, दिवाकरः, अह्नकरः दिनकरः वाठरकरः इत्यादि पूर्वनामानि भवन्ति ।

चक्रनाकाक्षरपर्यायषु -

चक्रनाकाक्षरं च चक्रनाकाक्षरे तदीयाकयाकाश्रयोः (परत्र) चक्षुः सम्प्रयोगे पूर्वनामानि भवन्ति । चक्रनाकाक्षरुः । अक्षरक्षुः । पक्षरक्षुः । कमलक्षुः । इत्यादीनि शास्त्राणि ।

कुमुदविश्रियः ।

कुमुदामां (परत्र) विश्रियस्ये प्रसुम्भमाने पूर्वनामानि भवन्ति । कुमुदविश्रितः । कैरविश्रितः । कुमुदविश्रम्भः । इत्यादि ।

यमुनायमकानीनजनकः सविता मठ ॥ ५१ ॥

यमुनाजनकः । यमजनकः । 'कामोजनकः । सविता । मठः कथितः ।

बाहोऽप्रस्तुरगो बाञ्जी ह्यो वुर्यस्तुरङ्गमः ।

सप्तिर्वा हरी रथ्यः—

एकदशारे । बाहवे गन्धर्वेऽप्रवार्त्तवाह । तवाऽनेकार्षं (अनि) मन्त्रनाम्—

“बाहो मुग्यं धनो बाहो वाहके बाह इत्यपि ।

बाहो मानविशेषश्च बाहो बाहुरिति सूतः ।”

‘अम्’ श्वातौ ॥ अम् । अम्पुते श्वात्नोति श्वेनामीश्वरानमित्यम् । अथवा ‘अशु भोजने’ अश्वति भक्षयति मुद्गादीमित्यशुः । “अशित्तुक्तिविरिक्तिम्ः कः” । वमात्र । “धोपस्तोष” कृति” मेद् । “उरो (रु) गच्छतीति उरगः । “ओऽ’लक्षनामपि । पूर्वमस्त्वानां नावा अम्बुविति धृतिः । नावाः हत्स्वस्व बभूव्येवंगीतो वा बाञ्जी । इत्युऽपि, बाञ्जि । तथा हेमनाम्माहावाम्—

“बाञ्जं बाञ्जस्तु पक्षेऽपि मुने निम्बनवेगयोः ।”

विनोति गच्छति बर्धते (वा) धनेन ह्यया । धुरि वर्यामे तापुर्ध्याः। “यदुगधादित्” । धुरं (रिष) गच्छति धु (तो) धीर्षि त्वरते वा ह्युत्तमः । “गमश्च” । नाम्मुपपदे गमेष संज्ञायां खौ भवति ‘असबाहेः ३ पा वः’ । धपस्वभ्यां गच्छतीति सति । “उपेत्तिवठितना” उपेर्वाति धति तत् पूते प्रववा भवन्ति । अर्धति गच्छति धनेन वास्य, ‘अर्धन् । इत्यर्धेन ह्यति । रथे तापू रथ्यः’ । गन्धर्वन्, वाच्यः वपु धोऽङ्कः अर्धनिः ६ वीतिः पीति ।

१ अनीन अर्धः । कथाऽपरत्वानां कुत्वा कर्वाहुत्त्व इति पीरायिषी कथाऽनुत्थनवा ।
 २. ११ रथो रथोका । ३ का उ व् २।१।४ का व् ४।१।८ । ५ आत्तो’व पाठः । उचितस्तु पुरंश्व
 धेनेन गच्छतीति पुरा । ६ का-म् ४।१।४०।७ धने व २।०।८ धुरं बहतीति धुरं । “धुरो महर्कौ”
 इत्यन्वयः । ९ का-म् २।६।११। १० पुरपूर्वाकाङ्गमे ‘गमश्च’ इति क इत्तङ्गमः । धोर्वीति त्वरते वेति विप्रदे
 वतिवकिप्रकारोऽन्यथा कल्पनीयः । ११ का व् ४।१।४५। १२ का व् १।०।२४। १३ का उ व्
 ५।१।८। ४ ‘अर्धं गतौ’ बाहुशकालनिन् । १५ ‘रथं बहतीति मुष्य । तद् बहति रथमुग्रात्तङ्गम्’
 इति वद् । १६ अर्धनिश्वस्त्यास्वाये प्रमाणं मृगम् । कोशान्तेऽर्धनिश्वस्त्यार्धित्वम्—“अर्धनी चार्धनि
 र्थं क्रिय’ स्तु प्रार्थनाऽर्धना’ अथ को १।१।२१। अर्धनीशब्दोऽर्थिनीनार्थान्तु सर्वसम्मतः । “वीति
 पीति शन्वोऽर्धवाये प्रमायमस्तन् ‘वीति वतिर्द्विक्रवा वाचक्यार्थ इत्यपि कथ्य को १।५।
 १९३। ‘पीति पाने उप्रवां ह वरपाने ह्ये पुगान्’ विरत् ।

सप्ताषडशो मयुखवान् ॥ ५२ ॥

अस्यशब्दस्य (स्यत्) पूर्वं यदि सप्तासि (सशब्दः) एव वर्धनामानि भवन्ति ।
 एतवाह । एतास्य । एतपुरा । एतवावी । एतवः । एतपुरः । एतपुरकूम । एतवति । एतवा ।
 एतवतिः । एतव्यः ।

५ खं विहायो वियत् श्योम गगनाकाशमम्बरम् ।
 धौर्नमोऽभ्रोऽन्तरीक्षं च-

एकशश गगने । सन्ति शून्यत्वेन शब्दते वा 'कम् । विहाति एवं विहात्या' । अत्रापि विहात्वा
 पश्चिमां मार्गं विह गच्छतीति वियत् । (अथवा नीनां पश्चिमां मार्गं गच्छति वियत्) । अन्तरेऽत्रभाष्ये—
 'वियच्छति' पिरमति वियत् । बाजुना वीरते (अवति व्यभवते वा) श्योमन् । "विभ्यवि"मभिव्यरि
 १० त्वयमुपवासा" एयामुपवासा वकाररत्न पीड गवति । एवंषाट्ठमौ मन् (इति विपूर्वकार्थेर्मन्) । गम्यते
 एवंमनेन गगनम् । क्लीबे वा । गच्छत्यनेन गगन वा । आकाशन्ते एवांशोऽत्राकाशम् । न काशते वा
 क्वाश्वती दीर्घ । अन्ते शब्दान्ते अम्बरम् । शीमन्ति पश्चिपोऽत्र शौः । क्षियाम् । नक्षति क्पाति
 सर्वमात्मना घान्तम् कामः । नभम् इत्यन्तम् नभश्च । न भावतेऽक्षम् । अन्तः अक्षाय्यत्र अन्तरीक्षम् ।
 पुषोदरादित्यम् । घाताशुम्भोऽन्तरीक्षते वा अन्तरिक्षम्, अन्तरीक्षं च । मयद्वर्षेर्मन् । वारापयः । पुष्करम् ।
 १५ विष्णुपदम् । विदिवम् । नाकम् । अनन्तम् । दुरवर्षम् । महाश (वि) कम् । देववान् ।

मेघवायुपथोऽप्यथ ॥ ५३ ॥

मंथशब्दात्त्रे बाजुशब्दात्त्रे च पथशब्दे प्रमुञ्चमाने आकाशमामानि भवन्ति । मेघपथः । मेघमार्गः ।
 मनपथा । मनमार्गः । पर्वन्पथ । पर्वन्मार्गः । मिहिरपथः । मिहिरमार्गः । नभ्राप्यथ । नभ्राप्यमार्गः ।
 तद्वित्पथ । तद्वित्पथिमार्गः । वीशमिनीपथिपथ । वीशमिनीपथिमार्गः । बाजुपथा । बाजुमार्गः ।
 २० पथारथः । पथमार्गः । अनिलपथः । अनिलमार्गः । मस्त्यथः । मन्मार्गः । समीरपथः । समीर
 मार्गः । गन्धवाहपथ । गन्धवाहमार्गः । श्वतनपथः । श्वतनमार्गः । स्यागतिपथा । स्यागतिमार्गः ।

तच्चरः खेचर-

एत आकाशे ज्यतीति तच्चरः । आकाशात्त्रे चरशब्दे प्रमुञ्चमाने विद्यावरमामानि भवन्ति ।
 तच्चरः । विहावधरः । विकचरः । श्योमचरः । नभधरः । धमनचरः । अम्बरचरः । आकाशचरः । अन्तरिक्ष
 २५ चर । मेघपथचरः । मेघमार्गचरः । बाजुपथचरः । बाजुमार्गचरः । मनपथचर । मनमार्गचर । मनामन
 पथचर । मनामनमार्गचरः । शीमूतपथचर । शीमूतमार्गचर । अन्नपथचरः । अन्नमार्गचरः । श्याहक
 पथचरः । श्याहकमार्गचरः । पर्वन्पथचरः । पर्वन्मार्गचरः । इत्यादिनामानि विद्यावरस्य भेदानि ।

तद्ग,

एत गम्यते गच्छतीति तद्गः । गगनात्त्रे "ग" शब्दे प्रमुञ्चमाने शङ्कुतनामानि भवन्ति ।
 ३० छागा । विहायोग । विक्रमः । श्वीमग । नभोग । धमनग । धम । आकाशग । अन्तरिक्षग ।

१ "कम् अक्षरारो" इत्यवयवः । सर्वं गतौ' सर्वस्वस्मिन्निति वा विभक्तः । अत्रापि क । २ उक्त-
 विग्रहे "श्रीहाह स्वाने" हावातो "वशिवाचाम्यरक्षन्ति" ४।२२। इत्यन्तु खिलं च । शिवापुक् ।
 विरोधेह हापयति धमति विमानास्ति इत्यपि बोध्यम् । "ह्व गतौ" अन्तारिक्षम् । ३ खिर भा १।२।२।
 ४ का घ ४।१।५। ५ का ठ घ ४।२।६ "गमेर्नभ" इति जुष गभात्तादेषः । ७. महाविह
 शब्दस्वाकारावाचकस्य अरकोपमवत्त्वात्प्रमासम्—"वारापथोऽन्तरीक्षं च मेघापथा च महाविहम्"
 १।२।२। शेषक ।

मेघवयगः । मेघमार्गः । इत्यादिनि शतम्भानि ।

पक्षी पत्री पतत्र्यपि ।

शकुन्तिः शकुनिर्विद्वेष पतङ्गो विधिक्रोऽप्यया ॥५४॥

सप्त पतङ्गे । पक्षाः सन्त्वस्य पक्षी । पत्राणि सन्त्वस्य पत्री । नास्य । पततीति पत्रि । त्रिप्रत्यये इदन्त । पत्राणि सन्त्वस्य पत्रत्री । नास्य । पततीति पत्रे परतौऽत्रिप्रत्यये इदन्तो वा पत्रत्रि । इत्यामुष्य भाष्यकारेण ब्राह्मणिकेन—पत्रिशब्दं पत्रिन् नकापान्तः पत्रिरिकारात्स्य स्यात्स्यात् । अमरसिंह नाममाळाबाम्—

“पत्रत्रिपत्रिपत्रगपत्रस्यत्ररथाप्यङ्गवाः ।

मगौकोबाजिबिकिरिविविष्मरपत्रत्रयः ॥”

इकापान्तं पत्रिशब्दं पठितौऽपि । शाब्दकर्त्रां दीरत्वामिना पत्रपत्रिकारात्तो निषिद्ध । १०
‘पत्रेऽत्रिः’ अन्त्या पत्रत्रि प्रत्यक्षद्विदन्तं मन्वते । एवं क्वचित्तमसि श्रीमद्भरणीर्दिना इयोर्यवन प्रमाद्यम् । शब्दानां वैभिस्यं वचते । मभसा गन्तु शक्नोति शकुन्त । शकुन्ति । एष शकुनि । एष शकुनी । शकुन्त । शकुन । शी अदन्तौ । वसीति वि । ‘भेजो वि’ । पतेन भेजेन गच्छतीति पतङ्ग । विक्विति पत्राणि विधिक्र ।

‘ बर्णागमो गणेश्वरादौ सिद्धे बयविपर्यय ।

योऽज्ञादौ विकारस्तु पर्यानासः प्रुपोदरे ॥”

सुहागम । विकिरध ।

जाङ्गलं पिष्टितं मांसं फलं पेशी च—

पक्ष मांसि । गन्वते अचते जाङ्गलं बज्जल च । पिष्टत बहिरादिभि पूर्णते पिष्टितम् । मन्वते लभाभ्यते शरीरोपचयोऽभेनेति मांसम् । ‘इषु’ बहिरादिमिक्त्वशिक्षणिय्य स । एष्य सः प्रबवो भवति । पक्षवते (पाक्षपते) देवं पक्षम् । बहिरादिभि मित्यते (पिष्टति) शरीरं पेशी । आमिषम् । इष्यम् । तरतम् । २०

तत्प्रिय ।

तस्य मांसस्य प्रिय । आनिपशब्दार्थे विवच्ये प्रयुज्यमाने राक्षसामानि भवन्ति । बाङ्गल प्रिय । पिष्टितप्रिय । मांसप्रिय । पक्षप्रियः । पेशीप्रियः । २५

यातुघानस्तथा रक्षो—

हो मातृघाने । वात्नि वाक्ना बीयन्तेऽस्मिन् यातुघान । रक्षतीति रक्ष । राक्षसः । बीयन् । रक्षार्थः । नैश्च त । नैकतेरा । नैकपेक्ष । त्रिपुष्टेऽपि (कर्तुं । अस्तः) । बीनारो नानार्थे ।

राध्यादिश्चर इष्यते ॥ ५५ ॥

१ अम को २।५।१।२ खीर भा २।५।१।२ का उ ए ४।५। रामाभमलु वातीति वि । “वातेऽद्य” इत्यत्र । ४ पतेन भेजेन गच्छतीति विद्वे लताङ्गुल कम्पनीयम् । तादृशेषाङ्गुलमात् । फलपङ्कजते इति पतङ्ग । “तुपतिम्यामङ्ग का उ ए ५।२।२ इत्यङ्गुलपङ्कज बुक्तः । तुपतिम्यामङ्ग इत्यङ्गुलपङ्कज । ५. “पुपोदरे” २।२।१७।२। का अरिक्ता । ६ “पिष्टत अचवने पिष्टति विवचते स्त वा पिष्टितम् । अपिष्टे विष उ ए ३।६।५ इत्यस्मिन् । अचवत् स । इति रामा भम । ७. अ उ ए ४।५।३ । ८ रक्षन्त्वामादिति रक्ष । “वर्षवशुम्बीऽस्तु” । “भिमार्थोऽपाराधे” इत्यन्वत् ।

रात्रिशब्दाद्ये अरशब्दे प्रमुञ्चमाने राक्षसनामानि भवन्ति । रात्रिचरः । निशाचरः । क्षयरा
चरः । रक्षनीचरः । नक्षत्ररः । बोधाचरः । इत्यादीनि शतमानि ।

मारभ्यते स्वरावराः

सुतोऽदितेस्-

५ अदितिशब्दाद्ये सुतशब्दे प्रमुञ्चमाने वैस (वैश) नामानि भवन्ति । अदितिमुतः । अदिति-
तनय । अदितिपोता । अदितिदारक । अदितिनिन्दन । अदित्यभङ्गः । अदितिस्तनयनः ।
अदित्युत्तानशयः ।

तद्धिदधन्ना सेन्द्रो षेष् सुरोऽमरः ।

२० पञ्च इषे । तद् इन्द्रोऽथ वसति इति सेन्द्रः । 'पिबु की'—'दिबु । दीभ्यन्ति क्रीडन्ति स्वर्गोऽ
प्वरीभिः छद् विखलन्ति षेष्वाः । अथा विद्म । अथवा दीभ्यति क्रीडति परमानन्दपदे
षेष्वाः । सुप्त्य राभ्ये सुतः । तथा सुरन्ति सुररा । सुर ऐरवर्षे' सुरा एवामस्तीति वा । 'अर्शवादिभ्योऽ
सु' । सुतोऽम्बिवा सुत ए पीता । न विवते अमरः । आदित्वा । विदशा । सुयनता । स्वर्गोऽमरः । षेष्वाः ।
गीर्वाणः । अमराः । मरुतः । इन्द्रशरका । निर्वाण । अस्वन्ताः । विदुषाः । विविद्यपतदः । वेष्वा-
सुवर्वाका । अमृताशनाः । अनिमिषाः । ईषतम् ।

१५ स्वर्गाः स्वर्गोऽथ नाकम्,

बालार स्वर्गे । मुनिषो बन् स्वर्गति शब्दं करोत्यत्र रात्ममभवन् । स्वर्गः । 'पिबु कीवादिषु' ।
दीभ्यन्ति क्रीडन्ति अत्र पुञ्जन्तः इति षीः । 'दिषेर्दिषिः' प्रत्ययो भवति । अतो सुप्त्य अस्मति स्वर्गः ।
'सु' भृशो गा गप्रत्ययाः । माह्वयर्कं सुप्तमत्र नाकम् । उभयम् ।

तद्वासासस्त्रिदशो मत ॥ ५६ ॥

२० तस्य स्वर्गस्य वातः तद्वासास—स्वर्गवातः । वातात्, स्वर्गवाता इत्यस्तीनि देवनामानि भवन्ति ।
उत्पत्ति

तस्य देवस्य (स्वर्गस्य च) पति उत्पत्ति । देवपतिः ऐन्द्रपति स्वर्गवातापति स्वर्गपतिः,
नाकपतिः, माकेन्द्र, इत्यादिपर्यायनामानि इन्द्रस्य भेषानि ।

अक्र इन्द्रश्च धुनासीरः शतक्रतु ।

२५ प्राचीनर्वाहिं सुप्रामा वञ्जी आखण्डलो हरिः ॥ ५७ ॥

सुप्रुर्वलस्य गोशस्य पापस्य नमुषेरपि ।

द्वत्रहा च सहस्रासौ गीबाणेभ्य पुरन्दर ॥ ५८ ॥

विद्वौजाशनाम्परोनाथो वासवो हरिवाहन ।

मरुतश्च मरुत्वोऽथ दृपा रैरावणाधिपः ॥ ५९ ॥

३० शतमन्युस्तुरापाद् च पुरुहूतश्च षोडशिकः ।

संक्रन्दनोऽथ मघवान् पुलोमारिर्मरुतसखः ॥ ६० ॥

भवस्त्रिदशे । पाठं शक्नोतीति शकः । 'स्त्रिदशिवस्त्रिदशिकश्चिपिमुदिकश्चिमिचिचन्नु-

१ 'अर्श' आरेर वे द् ५११५ । २. वा उ द् १५१५ । ३. वा उ द् ५१५ ।

४ तमिन् स्वर्गे वसतीति कर्त्तव्य । अमरवच । स्वर्गपर्यायार्थान् परम वाक्त्तये प्रमुञ्चमाने विदशनामानि
भवन्तीत्यर्थ । ५ वा उ द् २११५

स्वीनिन्वो रक्ष् । इन्दति परमैर्भयं बुको भवति इन्द्र । रक्ष् । शुन आदित्य शीति वासुत्तबोरपत्वमया
 पुत्रमेवाद्वा दीपे शुनाशीर । तासभ्रवम् । शोमनं मारीरं कडकं वा क्व स शुनाशीर । द्वी दन्वो ।
 यु क्मन्वं तासभ्रमपि । इन्द्र पदे प्रथमत्वात्सम्भो द्वितीयो इत्यो भवति । तथा च शोमना मारीर
 धरोसरा अस्य शुनावाः । शु- पूषाम् । स्वशुरवत् । शुनावीरबोरपत्वमित्येके । यतं वतषी यथा
 वत्स शतक्रतुः । प्राचीना प्राचीनमुखा बर्हिषी दर्मा मत्स स । सुपु प्रामथे नान्तः सुधामा । वज्रं विद्यते ५
 वत्स स वज्री । आकल्पयति भिनस्वरीताकाएवम् । शिवते शशीकटाद्यैर्दितिः ।

“शत्रुबलस्य गोत्रस्य पाकस्य नमुषेरपि”-

बलशत्रुर्गोत्रशत्रु- पाकशत्रुर्नमुषिशत्रु इत्यानीनि इन्द्रनामानि भवन्ति । वृषं दानवं वज्रं वा
 इतवान् ब्रह्महा । किप् । (‘किप्’ ब्रह्मभूषणप्रेपु’ किप् वरसमधीषि वस्य स सद्दत्तास । गोर्वाशानां देवाना
 मीशः (गीर्वाशेयः) । विद्वन् प्रजासु श्रीबो वत्स । प्रयोदरादित्यवद् वृद्धि । विज मेवमे वा । विज भद्रकर्मोबो
 वत्स वा (विबीबा-) । अश्वरत्ना नापोऽस्तरोनाथ । वत्सपत्वं आसस्य । हरिर्वाहनं वत्स हरियाहन- १०
 पुष्पजये शिवते प्यवते मस्तु । तात्तम् । मस्तो देवाः धन्वस्य मस्तवान् । बर्षति, नास्तम्, इया । ऐराव
 तानामधिपः (देववशाधिपः) । शत मन्वषः कृतवोऽस्य शतमन्वुः । “पर मर्षिणे” । पद् । ‘आत्वादे’
 पाः ता’ । वृते कश्चित्तमपरं प्रयुक्ते ‘वातोश्च’ शैतो’ इत् । अस्तोप दीर्षः । वादि वाठ । दुरपूर्वक-
 तुरं स्वर्षितं वाहकस्यभिभक्तवरीनिधि दुरपाट् । “वहस्तुम्वति विष् । “कारित्सा ’ कारितलोप । १५
 वैलोपः । “नहि” वृत्तिविष्वाभिरविशित्तित्तिष् कौ’ फिक्रतेषु प्रापकनरायां दीर्षः । दुरा वाठम् । दुरावाह
 निष्पद्य । तिः । “वञ्जनाम्बा” २ विष्णोपः । “इयत्” ३ व्वास्तेवाहीनां व इत्य व । “उहे वाठः पः”
 वत्स पत्नम् । रपयवात्परप्रेऽपि सस्य पत्नम् । स्वमते अविशुभ्यन्तात् । अथवा दुर वैग वृते मुरपाट् ।
 “वह” “वहस्तुम्वति” विष् पूर्ववत् । पुत्र मस्तुं द्रुत वजे मथेष्वा (वे वा) हानं मत्स पुत्रहताः । वाठमात्रोऽ
 विस्या कुशैराम्बादितत्वाद् (कौशिक) । तथा पुराणम् १६—

“वाठमात्रोऽप्य मगवानदिरवा स कुशैर्भूतः ।

तथा मस्तुति वैवेज्ञः कौशिकस्वमुपागतः ॥

कुशैर्भूतैरति वा । अरिष्ठी वृहस्पदवति सवृहस्पत्नम् । मस्तुवते पूषते नान्तो मथया ।
 “मह्ये” “ननुगावन्तम्” मह्ये कनिः प्रयवो मथति ननुगावन्तम् । पुष्ठीमत्सा (म्नो) रि पुष्ठीमादि ।
 मरतां पवनानां सजा मित्र (वं) मस्तुमन्वा । इन्द्रपवन । वृषारिः । बलपवनः । वृद्धमवा । विष्णु २५
 वज्रधर । वास्तोम्वतिः । गोपतिः । पर्वन्वाः । हरिश्वा । पूर्वदिश्यति । खपट् । गौत्रमिद् । अमपन्वा ।
 हरिमाद् । पाकशाठनः । शिवसति ।

१ शु पूषाम् अस्तुते श्वानोति ‘स्वशुर’ इति श्युपत्वा “स्वशुर” श्यो निष्पद्य । तद्वा
 श्युनावीरश्येऽपि शु शम्वा पूषार्थं इत्याशय । २ वा ए ४।१।८।१। ३ वैवेदि श्वानोति विद् ।
 “विष्णु श्वाती” श्मि । विद् श्वापञ्चमीशो मत्स स विबीबाः । प्रयोदरादिवाहोकारत्वात् । इत्यन्
 क्षम् । ४ वृहस्पदवाहरोमाधि सुवर्णानि मत्स द्र । हरि स वज्रतोऽस्तुवत् पीतकीशेवत्पथ- । इति
 शाहिहीशोऽप्रकरोऽत्रवा इरि । ५ मस्तो देवाः शास्त्वैन धन्वस्येति वावत् । ६ वा ए १।८।२।४।
 ७ वा ए १।२।१ । ८ वा ए ४।३।६ । ९ वा ए १।६।४।४। १० वैस्पृक्ष्य पा ए
 ६।१।६। ११ वा ए १।३।१।६। १२ वा ए २।१।८। १३ वा ए २।१।६। १४ वा ए
 ८।१।६। १५ वा ए ४।३।६ । १६ रत्वाकोऽप्य अभि वि २।८।०। टीकायामप्येवमेवोपलभ्यते ।
 १७ वा उ ए १।४।

कमठा ककुब् दिगाशा च दक्षकन्या तथा हरित् ।

बद् विशयाम् । कारुणे यकन्ते (नक्षत्रद्वीप) काष्ठा । क कुम्नाति किलारपति ककुप् । भास्वम् । विश्ववकाश विश् । “शक्तिवपुष् क्विविष्किहम् इति वापु । आस्तुते आशा । दक्षः प्रभापतिः तस्य कन्या दक्षकन्या । इत्यनवा हरित्” ।

तत्पर्यायपरं योज्यं प्राज्ञैः पालगजाम्बरम् ॥ ६१ ॥

काशारिनामता परं योस्यं प्राज्ञैः विद्वदिभ्यः पालगजाम्बरम् । काशापातः । ककुप्पाल । किकुपाल । काष्ठापातः । दक्षकन्यापातः । हरित्यातः । पालमपीगे दिग्गजनमानि भवन्ति । काष्ठागमः । ककुम्भगमः । दिग्गमः । काशागमः । दक्षकन्यागमः । हरिकुपमः । अम्बरशम्भुमनौ दिग्गमर नामानि भवन्ति । काष्ठाऽम्बरः । ककुब्भम्बरः । दिग्गम्बरः । आशाऽम्बरः । दक्षकन्याम्बरः । हरिदम्बरः ।

१० तथा च—

“गिरिकम्बरदुर्येषु ये वसन्ति दिग्गमराः ।

पाणिपात्रपुटाहारास्ते पान्थु परमा गतिम् ॥”

एषभिषा ह्यनयो मन्वाना शरव्यं मन्थु क्मनि क्मनि ।

पवनः पवमानश्च वायुर्वातोऽनिलो मरुद् ।

१५

समीरण्यो गन्धवाहः स्वसनश्च सदागतिः ॥ ६२ ॥

नमस्वान् मातरिश्वा च चरण्युर्जघनस्तथा ।

प्रमञ्जन—

पञ्चदश वायो । पवते बगद् पविषीक्रीति पयम । पुष् । “पूष पवने । पू । पवते पवमाम ।

“पूषवयो शलक्” ध्यानमात्रः । अग्नि १ अग्निच २ नाम्नात्पुष् । “ओ षम् । ‘आग्नी ऽत् आने’ मीऽन्त । वातोऽपि वायु । “ हुवापायी—ति उष् । वाति उर्वाऽऽस्त्रकितं वा वातु । वाति अस्त्रकितं वाति वातः । “मृगुवाहश्चमिदमिल्लुपुम्भकः । अनेन बगद् अनिति प्राशिति न निहति वा अग्निष्ठा । “निल गहने” । बुद्धकन्तवो भिषन्ते स्पशैनास्य मरुद् । तन्तम् । “मृषोऽतिः उठिऽभवः । तमस्यादीरति समीरण्याः । गन्धं वहति गन्धवहः । गन्धवाह । गन्धवाही । स्वस्त्यनेन स्वसन । तथा उर्वाकलं गतिर्वस्य च सदागति । नम आकाशमस्वास्तीति नमस्वान् । मातरि रेत स्वपति भवति नाम्नो मातरिश्चन् । मातरिश्चैव भवति १ मातरिश्वा । अथचर वाति चरे

२५

१ “कापु दीमौ” “अनिकुडि” इत्यादि २।२। वा उ उत्रेण क्वन् । २ कं वाठ कुम्नाति किलारपति । किप् । दुरीदरादित्वात्तलोपः । केनादित्वेन बहोन वा कुलितानि मानि मद्यत्रादि नस्वामिति “ककुभा इत्याकृतोऽपीति केचित् । ३ क्य वू ४।३।३।४ इत्यति नवन्ति क्मना हरिक् रिप् शनेनेव कश्चित् कुतभित् कुत्रिभवति । “दुतवहितुमिष्य इतिः इतीति । ५ कांन् वू ४।४।८ । ६ अग्निक्वरण क्वरि” इति पूर्वो लृप् । का वू १।२।३।२ इत्यभिकरणः । ७ “अनि च किक्वर्ये का वू १।४।३।८ का वू १।२।३।४।५ का वू ४।४।७।१ का उ वू १।२।११ का उ वू ४।२।७।१० का उ वू १।३ । १२ माररि क्मन्या रेता प्रतिकं यवा कर्षते, तथाऽऽप्येषे कर्षमानी वातु मातरिश्वा इत्याद्यम् । क्वरिश्वामी द्व—‘मातरि ले स्वपति इत्याह । रामाभनस्तु—‘मातरि क्मन्यां स्वपति कर्षते तमकनकस्वभात्’ इत्याह । भाष्यवत्स्वभावा द्वितेर्विश्राऽऽस्त्रात्तत्तत्कृत्प्रविधि मेन्त्रैव कुलियद्वाग । लृगर्भवैवीनपश्चात्तत्तत्कृत्कृत्स्व पुरात्प्रविद्वत्स्वत्तत्कृत्कृत्प्रवृत्तम् । “दु षीरिष गतिर्दुषी । विषवातो ‘स्वस्त्यग्नि’ शि क्मिन्यन्तो निपातः क्मन्या अणुद् च ।

२२३: 'कवमुसुरय्यत्वाद्याय. केव्याद्य शम्ना हुप्रववात्वा निपात्यन्ते । तथा च द्वित्वान्वान्त्वान्ते—

५४स्ययाऽगम्य निष्प्राग्य वां पुरो
विल्लङ्घयाऽन्मःपरिखामिनीवदाम् ।

गता इवामाप्ति कुक्ष्यात्रिपेक्षक-

अरव्युलोकाः परिकाऽन्नुषीचयाः ॥”

हु इति लौघो वाट्ठाती । लौघा वातवोऽपि म्वादी फ्स्वन्ते । अर्घतीति अयम् । ३कुक्ष-
कम्पवदम्प्याद्यधिकात्पुत्रपतनदाम् एम्वो बुर्भवति । लर्वा विद्याः प्रभनक्ति प्रभञ्जन । अर्घ्याद्य ।
पूरवत् । स्पर्शन । कमीरः । इति । महावतः । आशुगः ।

अस्य पर्पापपुत्रौ भीमाञ्जनात्मजौ ॥६३॥

अस्य पर्पापत् प्रभञ्जनाविश्रवत्परत्र पुत्रश्चो दीवते तदा भीमाञ्जनात्मनोर्नामानि भवन्ति । १०
पवनपुत्र । पवनतनव । पवमानतनव । बापुपुत्र । बापुतनव । वातपुत्र । वाततनव । अनिसपुत्रः ।
अनिसतनवः । कमीरपुत्रः । कमीरतनवः । गम्पबाहपुत्र । गम्पबाहतनव । स्वतनपुत्रः । स्वतनतनव ।
सदागतपुत्र । सदागतितनव । नमस्वत्पुत्र । नमस्वतनव । मातरिवपुत्र । मातरिवतनव ।
चरम्पुपुत्र । चरम्पुतनव । अवनपुत्र । अवनतनव । अरापुत्र । अरातनव । प्रभञ्जनपुत्र । प्रभञ्जन
तनव । भीमत्व इतुमत्तत्र नामानि वातम्पानि ।

तत्सखाऽग्नि ,

तस्य वावो क्त्वा तत्सकः । वावुशम्प्राये त्वशब्दे प्रकुम्बमाने अग्निनामानि भवन्ति ।
पवनसक । बापुसक । अनिसकसक । वातसक । मरुसक । गम्पबाहसक । कमीरसक । स्वतनसक ।
सदागतसक । नमस्वसक । मातरिवसक । चरम्पुसक । अवनसक । अरासक । प्रभञ्जनसक । पवनेष्टः ।
पवमानेष्टः । इत्यादीनि अग्नेर्नामानि शाकम्पानि ।

शिखी बह्निः पावकश्चाशुसुसक्तिः ।

हिरण्यरेता सप्तार्चिर्जातिबेदास्तनूनपात् ॥ ६४ ॥

स्वाहापतिर्हुवाश्वत्थ ज्वलनो दहनोऽनलः ।

वैश्वानरः क्षुभानुश्व रोहिताश्वो विमावसुः ॥ ६५ ॥

दृषाफपि सभागर्मो ह्यप्यवाहो हुताश्वनः ।

एकविंशतिरने । अत्र अग कुट्टिकायां गतौ । अगति वावुशशार्धे गम्प्टीस्वमिनि ।
शिक्षाऽस्तस्व शिखी । उच्यते बह्निः । “अग्निमुमितुबहित्वो नि एम्वो वाट्ठम्बो नि म्प्यवो
भवति । पुनाति पावकः । आशु शीपवति रवात् ‘आशुसुसक्तिः । “ आशो शुधिं तनिक्” । “अन

१ चरम्पुशम्प्रीत्यम्, न त्र चरेणुः । द्विलम्बायेऽपि चरम्पुशम्प्रीत्येव चरेतात् । एकलाभकम्पुटा
दित्तम् अग्निवान्द्विस्तामहिनीकादात् (३।४८१) उपहत्यते नैवान्त्व । अक्षरत्तु वैदिकोऽत्र म्प्रीत्या ।
‘चरम् चरम् गतौ अर्घ्यादी चरम् वाट्ठर्वक प्रत्ययव्ययः । तथा ‘क्याप्कन्वति’ वा सू ३।२।० । इत्तु
म्प्यवा । हुम्यपु हुम्यु, मुत्तव हुम्यु अदिशम्प्यवत्स्य चिदिः । विशेषेण ‘क्याप्कन्वति’ इत्यत्र
उक्तवैश्वानरः इत्यम् । चरम्प्वीति चरम्पुः । २. त १ श्वो १९। ३ वा सू ४।०।१९। ४ बहति
ह्यम् बहतिरिति क्युत्तरित्वात् । ५ वा उ सू ३।५ । ६ आशोऽग्निमुचितेति चारपूर्वकाशुपुः
कम्प्यात् ‘आग्निशुपुः तनरकन्वति’ वा उ सू २।१ ९ । अग्निः । आशु शीम्य, आशु मीदि वा हु
सुपु अशोवीति वा । ‘चर्ववाट्ठम् इत्’ इत्यत्र । ७ वा उ सू १।१५ ।

शोषे । अस्मन्लक्ष्मणियायोऽनम् । आद्युर्ध्वः । अशुभपदे द्योः तन्निष् प्रत्ययो भवति । हिरण्यं
 रेतोऽस्य च हिरण्यरेता । अ स्तृतिः—“अम्नेरपत्यं प्रथमं सुवर्णम्” । अस्तार्थो बस्य च सप्त
 षिः । भवति “हिरण्या, कतका रक्षा, कृष्णा, प्रमुष्वाभावाऽद्या । अतिरिक्ता बहुरूपेति सप्त
 सप्तार्थयो जिह्वाः” वाते वाते कियते वातो वातभेदत् । वाता देवा अस्माद् वा वातवेद्याः ।
 ५ तन् न पातवति तन्नुमपात् । अपि तन्मो दान्ती वा । “स्वाहा” इत्यस्य (स्वाः) पति भर्ता
 स्वाहापतिः । हुत नपदकारक्य नस्य अस्नातीति हुताशः । हुतम् आशी भोजन बस्य वा । अस्नाती-
 त्येवंशीलो पयजनः । पशतोत्येवंशीलो दहनः । अनिति प्राञ्चित्वेन अनाहः । विश्वानरत्वात्स्य
 वैश्वानरः । इत्यति लूकरोति इत्याहुः । रोहिताऽस्त्री मृगोऽस्त्री वाहनमस्य रोहितादस्यः । विना
 मूर्धनं बस्य च विमायस्तुः । श्वा धर्मः कपिर्ब्राह्म भेदरथ तदरुणत् वृषाकपि । पुराणम्—

१० “कपिर्ब्राह्मः श्रेष्ठश्च धर्मश्च पूव उच्यते ।
 तस्माद् वृषाकपिं प्राह कारयपो मां प्रसापतिः ॥
 इमिनामनाशाशाम्—

“वृषाकपिर्बाहुवेधे क्षिणेऽम्नौ च ।”

शम्नो गर्भो यस्य च शमीगर्भः । हर्मं पशतीति हर्म्यवाद् । हुतास्नातीति हुताश्रमः । बहुलाः ।
 १५ बहु । कितेतरगतिः । अर्षिष्मान् । पूज्यवाः । बहिष्कोतिः । ठपडुंभ । चित्रभातु । गृधिः । इपी-
 यीनि । दमुना । इच्छन्तर्मा । अपापितम् । वितरोत्रः । इहर्भातुः । आभयाशः । चनञ्जयः । तमोप्यः ।
 इमुना इत्येके । एमेरुति ।

तदादिसुतः,

२ अग्निवृत्तः । बहिषुत्रः । वृषाकपिवृत्तः । वृषाकपिपुत्रः । इत्यादीनि स्कन्धानामानि भवन्ति ।

सेनानीः स्कन्दश्च शिखिवाहनः ॥ ६६ ॥

कार्तिकेयो विशासदश्च कुमारः पण्डुशो गुहः ।

शक्तिमान् श्रीश्रमेदी च स्वामी श्रवणोऽश्रवः ॥ ६७ ॥

३ वादश स्कन्धे । सेना नपतीति सेनानीः । ‘स्कन्’ इतिपठदुदुदुनकिचमिदक्षिरिनितीराशामुप
 २५ त्तोऽपि” एतामुक्तोऽप्यनुपगतोऽपि माम्बनाम्मुपपदे ङिष् भवति । स्कन्दश्चरीन् स्कन्दः । स्कन्-
 शुष्कं रेतोऽस्य वा । शिली ममूरो वाहनमस्य शिखिवाहनः । इतिशानामपत्यं कार्तिकेया । दानव
 नतीबस्तेनाति इति कियोपेक्ष लूकरोति विशासः । विशासाश्रुता वा । कुमारो प्रथमारिश्वात् ।

१ अम की क्षर० भा १।१।५५ । २ तर्नबोत्वमपदाये वर्तमानत्वाद् भेरीत्यपिका
 र्वात्वेन आनेदकत्वात् । वातं वेरी वनं (शुभ्रं) वस्मात् वातं वेत्ति वेदयते वा इति व्युत्पत्तिरपि ।
 ३ तन् स्वन्नकर्म न पातवति इहतीत्यर्थः । कियु । नम्राशुमपात् इति नलोपाभावात् । तन् न पाति
 रक्षति वाते वाते किनश्वात् इति वा । वातेः शृगृत्त्वव । तन्वा उनं वाति रक्षतीति तन्नुनं पूतं
 तदस्तीति । अन्तो-नये’ इति विद् । इत्यप्यस्य । ४ इशीऽनिति कर्षते इत्यानुपिति वा ।
 ५ इशाकोऽस्य अपि पि २।१२९ । शीमपातेरोरुक्तवने । ६ अनेरा व ५।११८ ।
 ७ वा १५ ५।१।७८ । ८ स्कन् रेतोऽप्येवर्थाभिभावत् । विरहस्य स्कन्ति शुष्करेता भवतीति स्कन्-
 इत्येवकत् । इत्यपारिशा शुष्करेतस्वमागमात्लिङ्गम् । पथावप् । ९ विपुर्वात् शो तन्नुवर्ष”
 इत्यात्माद् मात्सर्यात्प्रत्ययः विशासानुपेक्षे वाता वा । विशासपति विशासश्च आनोति दानवपक्षमिति
 वा । “शानु इतानी । पथावप् ।

कुत्सितो मारोऽस्येति कुमार । पशुजानि पत्य व पशुमकः । शक्ति रक्षति देवतैर्न गुहा । नाम्मुपव
 मीशुग्रां कः । शक्तिर्विद्यतेऽस्य शक्तिमान् । क्रौञ्च पर्वत भिनतीति श्रीश्रमेदी । स्वमत्वस्य स्यामी ।
 शयणा वनम्, शरकम्, तस्मिन्नुक्त शरकजोद्धयः । गौरीपुत्र । शक्तिपाणि । तारकारि । अग्निम् ।
 बाहुतेजः । गार्ङ्गिणः । मन्त्राचारी । महासेना । महातेजा । पार्वतीनन्दनः ।

तत्पिता शङ्कर क्षम्य द्विषः स्याणुर्महेश्वरः ।

५

श्र्यम्बको पूजतिः शर्व पिनाकी प्रमथाधिप ॥ ६८ ॥

त्रिपुरारिषिञ्चासाक्षो गिरीशो नीललोहित ।

स्तेन्दुमौलिर्यज्ञारिस्त्रिनेत्रो हृपमध्वज ॥ ६९ ॥

उग्र शूली कपाली च श्रिपिपिष्टो भवो हरः ।

उमापतिर्विरूपाक्षो विश्वरूप कपर्धपि ॥ ७० ॥

१०

एकोनविंशत्यक्षरे । तस्य स्मृतस्त पिता । श सुखं करोतीति शङ्कर । शम्भवी (स्यस्मिन्)
 ति शम्भुः । 'सुभो द्विंशत्यक्षरे च । शेते प्रलयकाले अद्यत्र शिवः' । अति प्रकृत्येऽपि तिष्ठति
 स्याथुः । महाबाहो ईश्वर महेश्वर । श्रीशम्भुजानि अक्षयम् इत्यम्बक । कपाली लोचनान् अम्बक-
 भित्तमामः । पूजार्थम् उच्यते अथ तस्य पूजार्थम् इत्युक्तं तस्य वा पूजति । गुणति देवान् शर्वः ।
 " शर्वविद्वाभोना' एते कल्पमान्ता निपात्यन्ते । पिनाकमत्वस्य पिनाकी । प्रमथाया 'अधिपः प्रम
 थाधिपः । त्रिपुरासुरवारिस्त्रिपुरारिः । विशाले विलीने अधिष्ठी तस्य विज्ञासाक्षः । "उक्त्यधिष्ठी
 त्वाङ्ग' ।" गिरीशमीशो गिरीशः । कलकूटभद्रनाभोर्ल कर्ण्य लोहित स्य व नीललोहितः' । 'नीला'
 कण्ठ लोहितस्य कण्ठे इति नीललोहितः' इति पुराणम् । शैवस्यपरिची उग्रः । 'स्कास्त्रिभिषमि' ।
 शक्तिपिष्टारिषिमिदिमिदिच-पुन्द्रीस्त्रिनेत्रो रक्ष् । इन्दुमौलिमु कुटं तस्य (व) इन्दुमौलिः' ।
 पठना पशुकारखलस्यानाम् अरिः पञ्चारिः । श्रीशिवेनाम्बल भित्तमः । हृपनी कर्त्तव्यो अम्बका
 तस्य व हृपमध्वजः । कौपमूर्ति उग्र' । शङ्कामत्वस्य शूली । कपाल मनुष्यकरीदिरस्यस्य कपाली ।
 शिव पिष्टो इवा अरिपक्षी (पिष्टे) मूर्ध्नि तस्य व श्रिपिपिष्ट' । भवतीति मय' । हरवर्ध इ' ।

१५

२०

१ 'कुमार श्रीबामाम । कुमारपतीति पचाद्यच् । कौ पुषिष्वां मारवति बुधानिति वा
 विमहो बोध्यः । २ का उ छ १।१८ । इत्युत्पत्तयः । ३ स्वशम्भुत्वमिन् प्रत्ययः । 'स्वामिभौस्वने'
 वा छ ५।२।१२६ । अथवा शोभनममति रक्षतीति स्वामी । "उभमेतिर्न शीर्षभ' का उ छ १।६८
 इत्युत् प्रत्ययः । ४ शम्भवति भाववतीत्यर्थो वा । अन्तर्भावित्त्वबर्त्तोऽत्र भवति । ५ का छ ४।४।५६ ।
 ६ उक्त्यधिष्ठी शेनेर्बाहुल्यकार्त्तुश्चित्तस्य वा । शिवं करोतीति शिववति उक्तः पचाद्यच्च शिवो वा । शिवम
 स्वात्मभित्तमत्वपि विमहो बोध्यः । ७ का उ छ १।२।८ प्रमथाया दुर्गायाः । परशु 'प्रमथाः म्भुः
 पारियदाः इत्यमरादिषु प्रमथशब्दस्य शिवपर्यायत्वेन प्रतिष्ठा । दुर्गास्थेनाद्यर्त्तित्तेः प्रमथानामधिया
 इति सुबन्धम् । ९ 'राजारीनमन्त्रकता' का छ १।६।४१ । इति ५ । १० नीलं कण्ठे लोहितं अथवा
 मङ्ग पत्येति विप्रार्थम् । तदुक्तम्—'नील वेन ममाङ्गम् रणालं लोहितं त्रिया । नीललोहित इत्येव
 लोडइं पनेकीर्त्तित ॥ इति स्मृत्यै' इति मुकुटः । ११ अम को हार भा १।१।१३ । १२ का उ छ
 २।१।४ । १३ इन्दुमौली तस्येति विप्रः उरुता । १४ उच्यति कुधा समैति उग्रः । 'उच् समकार्य'
 उच् बाहुः । ततो रक्ष् । पञ्चान्तरिणः । श्रुजेन्द्रादि उ छ । १५ श्रिपिपिष्टशम्भुवीराद्यद्वोराज्ञानेन
 श्रिपिपिष्टोः । १६ मन्त्राव भवति कल्पते इत्यर्थः ।

उमाशा पति उमापतिः । विरुगम्बहिल्लव विरुपाक्षः । विरेयेयु कृत् वल्ल व विदयकृपा । कपदोऽ
 सक्तव कपदी । कपदो कपदुः । कं शिरः पिपतीति कपः । झौकादिको व । झपिउम्भाद्-ईशान ।
 शशिरोत्तरः । यशुपतिः । शम्भुः । गिरिराजः । शोच्यः । सर्वकः । शिपुसम्भः । भूतेशः । परमेस्वरः ।
 शम्भुपरियु । श्वाभरम्भकः । श्वा । शामदेवः । शामर्षी । श्वीमन्त्रेण । शङ्करेशः । शीमः । भयः ।

५ इतिवाचा । शृपाङ्कः ।

भागीरथी त्रिपथगा जाह्नवी हिमवत्सुता ।

मन्दाकिनी—

पञ्च गङ्गाणाम् । यगीरथेन राजाऽऽकारित्वाधरवाण्यं वा भागीरथी । त्रिभिः पथिभि
 र्गन्धति त्रिपथगा^१ । त्रिमागीणा च । बहुना पीता शोभेति त्वन्म जाह्नवी । अहोरोत्त वा जाह्नवी ।
 १० हिमवतो हिमाशतल सुता हिमवत्सुता । मन्दाका मन्दा गविरत्स्वरसा^२ मन्दाकिनी । सुतारि^३ ।
 त्रिपथुपरी । त्रिद्वरा । त्रिदशदीर्घिका । त्रिसोता । भीष्मत् । सुतनिम्नगा ।

धुपर्थायधुनी

आकाशगुम्बतो (वा परव) नदीपथयेषु गङ्गानामानि भवन्ति । अक्षोतस्त्रिनी । विहावी
 धुनी । विपस्त्रिभ्युः । श्वीमन्त्रेण^४ । नभोनदी । यमननिम्नगा । अश्वत्थपथा । बोनदी । आकाशगुम्बी ।
 १५ अन्तरीक्षहिरेण । मेघपथवरिद् । वायुपथवरिणी । हस्तादीनि शतम्भानि ।

गङ्गानदीद्वरः ॥ ७१ ॥

भागीरथ्यादिगुम्बत (परव) ईद्वरपथयेषु हरनामानि भवन्ति । भागीरथीद्वरः । त्रिपथ
 गाथिपः । जाह्नवीपतिः । हिमवत्सुतास्वामी । मन्दाकिनीनाथ^५ । हस्तादीनि शतम्भानि ।

विधिवेधा विधाता च हुडिणोऽप्रभतुर्मुख^६ ।

२० पदूमपर्याययोनिश्च पितामहविरञ्जितौ ॥७२॥

हिरण्यगर्भः स्रष्टा च प्रभापतिस्तहस्रपाद् ।

प्रज्ञात्मभूरनन्तात्मा कः

अक्षरं प्रकथि । विचरि^७ स्रष्टि विधि । विधते वा विधिः । 'उपलभे इः क्' ।^८ विचरि
 स्रष्टि बोधाः । "सर्वबाहुम्बोऽन्त १" विच विधाने ।^९ विचरति चारयति श्रुतानीति विधाता ।
 २५ हुडित्यसुरेभ्यो हुडिण्यः । न बायेत्यः । चत्वारि मुक्तानि वक्त्राण्यन्त चतुर्मुख^{१०} । "पद्मपर्याययोनिः"^{११}—
 पद्मपर्यायशब्दात् प्योनिशब्दे प्रमुम्भमात्ते बाहुनामानि भवन्ति । तामरछयोनिः । अमलबोनिः ।
 नलिनयोनिः । पद्मयोनिः । लीलबोनिः । अर्लीलबोनिः । सारस्वतबोनिः । पुष्करिण्यः । महीत्य
 स्रष्टा । अरविन्त्रबोनिः । शलपत्रबोनिः । पुष्करबोनिः । हस्तबोनिः शतम्भानि । हस्तम्भारतो लौक-
 पिठ्यां पिता पितामहः । आत्मनो श्रुतानि विरिक्त्ये पुत्रकृ करोति विरिञ्जितः । विरिञ्जः । विरिञ्चिरथ ।

१ त्रिवाचा पथां उमाहारकिपथं तेन गन्धवीति वा । इत्थं च पूर्व उमाहारद्विषी इत्ये तत्र
 उमाताम्बुविधातेन त्रिपथकम्बुस्थाभ्रपथकम्बुं धुपर्थां भवति । गंगावाशिपत्रगमिते मात्तोष्ठं पञ्चनम्
 'विद्यो तारवते मस्तान् नागास्तारवतेऽप्यन्तः । विधि तारवते देवलोतेन त्रिपथगा स्मृता ॥' १ मन्
 मकिशु गन्धु शीलेमस्था इति वा । "अहं कुटिकायां मतो । चित् । दीप् । मन्वीतकिरै मन्वाकशब्द
 स्व मन्वगुण्ये प्रमाये^{१२} गम् । ३ विच विधाने । द्वारादिः । सर्वं वायुन्व इत् किन्त् च । ४ वा ५
 ६५/७ । ५ वा ७ व ३१५९।

हिरण्यं गर्भे यस्य हिरण्यं गर्भो वा यस्य हिरण्यगर्भः । पुराणम्—

“हिरण्यगर्भमममघत्तप्राणहृत्मुक्ते तथा ।

तत्र यद्ये स्वयं ब्रह्मा स्वयम्भूर्लोकविभुषः ॥”

सृष्टीत्येवशीला स्मृता । प्रजानां पतिः प्रजापतिः । पद् यतो । पद् एतौ । पदन्ते गम्बन्ते (गम्बन्ति) माशिनः तान् पद्यमानान् बभूवुः चरणा एव प्रयुञ्जते । “पातोद्व हैतो” इत्य् । अस्वोप शीर्षं । पादि वा । पाद्वन्तीति पादः । ह्रिष् ष । कारितव्या कारितलोपः । वैश्वीः । पाद् । एवम् पादो बल ए सृष्ट्यप्याद् । ब्रह्मिन् बभूवन्ते चराचरान्ब्रह्म ब्रह्म । उभयम् । इदं ब्रह्म । अर्ष ब्रह्मा । अर्षवा ब्रह्मिन् ब्रह्मानि यस्मिन्निधि ब्रह्म । ब्रह्मे मन् प्रत्ययो भवति अन्व इकासात् पूर्वम् । आत्मना भवति आत्मन्म् । न ब्रह्मो विद्यते बल सौजन्तः, अनन्तो विनाशरहित आत्मा यस्य सः अनन्तात्मा । कावतीति कः । परमेष्ठी । सुरस्येष्टः । शतानम् । स्वयम्भूः । बगल्लोः । शतपृथिः । स्वविरः ।

तत्पुत्रोऽथ नारद ॥७३॥

तस्य पुत्रस्तत्पुत्रः । ब्रह्मणः शम्वात् (परत्र) पुत्रस्यै मनुस्मृतौ नारदनामानि भवन्ति । विधिपुत्रः । वैश्वपुत्रः । विद्यापुत्रः । विरिञ्चिपुत्रः । इन्द्रिपुत्रः । अन्नपुत्रः । चतस्रु कपुत्रः । पद्म योनिपुत्रः । वितामहपुत्र । हिरण्यगर्भपुत्र । प्रजापतिपुत्रः । वसरास्तुत्र । ब्रह्मपुत्र । आत्मभूतुत् । अनन्तात्मपुत्र । इत्यादीनि ज्ञातव्यानि ।

कृष्णो दामोदरो विष्णुरुपेन्द्रः पुरुषोत्तमः ।
 केशवश्च हृषीकेश आर्क्षी नारायणो हरिः ॥ ७४ ॥
 केशी मधुर्बलिर्बाणो हिरण्यकशिपुर्ध्रुवः ।
 तदादिब्रह्मन् श्रौरिः पद्मनामोऽप्यथोऽस्रजः ॥७५॥
 गोविन्दो वासुदेवश्च—

एकहिरण्यकिरावयो । कर्ष्यरीन् कृष्णवर्णत्वाद्वा कृष्णः । “इष्किपिन्को नक् । दाम उद्वरे यस्य ए दामोद्वः । कृष्णत्वम् बाणो हि वापसात्वात्मा बन्धोऽभूत् । वैश्वेति ज्ञानोति विष्णु । वृषियिम्ना यन्वत् ॥ उपगतमिन्द्रपेन्द्र । इन्द्र उपगतोऽश्रुत्वाद् वा उपेन्द्रः । पुत्रेण तत्तम पुरुषोत्तमः । केशा कन्त्यस्य केशवः । हृषीकाशामिन्द्रिवाप्यमीशो बलित्वाद् हृषीकेशः । शाङ्ग धनु रक्षस्य बाणोः । नारा अन्न अन्नं यस्य नारायणः । कस्तुतिः” —

“आवो नारद इति श्रोत्र्य आवो वै नरस्तुतवा ।
 अघ्नं तस्य ताः पूर्वं तेन नारायणः स्मृतः ॥”

१ 'पुराणम्' इत्यारम्भ 'श्लोक विभुषः' इत्यन्तम् अभिधानचिन्तामणिटीकायाम् २।१२७। उपलभ्यते । २. का सू ३।२। ३. का सू ३।१८८। ४. 'कर्षवात्स्यो मन्' का उ सू ४।२।८। ५. 'वै शम्भे वैश्वनिष्कृत्वेन ब्रह्मधि कावतीति क इति विग्रहः । "कच दीप्ती" कचते वा । 'अन्त्येभ्योऽपि ह्रस्वते वा सू ३।२।१ १। एतन्वार्तिकेन क । ६. का उ सू २।१२। ७. बाणकृष्णो हि बणोऽद्या तन्वास्मन्निवारणाय कश्चिद्विशेषे ब्रह्म इति पौराणिकी कथा "कृष्णम्" इति पदेन समाख्याते ८. का उ सू २।११ ९. नाराणोऽभ्युपै नारम् तदघ्नं यस्य मरुद् विद्यत्पुत्रप्राणवार्तं तन्वं नारुद् तद्वपते जानाति वा आश्रयति प्रवर्तवति वा 'नारायणः' इत्यपि श्रुत्यतिरिक्तम् । १०. मत्तुर्नृति २।१ । तुवोवचरयो "४।१। वरस्यान्नमूर्धन् इति पाठो लभ्यते ।

नरस्वापस्य वा । नरानवते इति वाच्येन नरावखोऽपि । इत्यथ हरिः । श्रेयाः सन्त्यस्य केऽपी ।

मन्यते कनेः मयु । मनिबनिनमा मपबठनाकाभ' एषामुत्पस्यो भवति मपबठनाकाभ यथावत्कन
मावेष्टा भवन्ति । 'बल बहल च । बलतीति बलिः । 'इ' उर्ध्वपाठस्य । कन्थते वापाः । तत्रादि
सूदन । तदादीनां केऽवादीनां घटनो नाशक्यान्त्रिः । केऽपी मयुः बलिः वाक्यः हरिश्चक्रशिपुः मुरः

५ एव शब्देभ्यः परावारिशब्दे मनुबवमाने नारावठनामानि भवन्ति । केऽपि वैरी । केऽवरतिः । केऽवमित्रः ।
कशिद्रिद् । केऽशिघ्रतलः । मयुवैरी । मयुवरतिः । मयुमित्रः । मयुरिः । मयुद्रिद् । मयुठपलः । मयुरिपुः ।

बलिवैरी । बन्वरतिः । बन्वमित्रः । बलिद्रिद् । बलिठपल । बलिरिपुः । बाशवैरी । बाशारातिः । बाशा
मित्रः । बाशारिः । बाशद्रिद् । बाशठपलः । बाशरिपुः । हिरण्यकशिपुद्रिद् । हिरण्यकशिपुठपलः ।

हिरण्यकशिपुरिपुः । मुरवैरी । मुरारिः । मुरारातिः । मुरद्रिद् । मुरठपलः । मुररिपुः । मयुशयुः । बाव
शयुः । मयुसूदनः । बलिघनः । बलिघन्यनः । बावसूदनः । हिरण्यकशिपुघनः । केऽशिघ्नः । इत्यादि

१० पर्यायनामानि । शूखस्त्रादिपुरुषतत्त्वापरत्वम्, शौरिः । शौरिर्बा । पर्दं नागत्वस्य पद्यनामः ।
'उंशानां नामिः । अथोच्चारणं कितेन्द्रियाणां जायते प्रत्यक्षीभवति अथोक्ताः' । गां भुवं विन्दति
शोविन्दः । बभूवैरस्वापस्य घातुदेवः । 'भृकुण्डः । भीवत्साङ्गः । भीपति । पीतवावा । विष्कूलेन । विष्क-
स्तः । मुकुण्डः । वरविषयः । प्रपयच्छिः । वैकुण्डः । बलशयनः । रवाङ्गवाणिः । शायार्हः । ऋष्युवपः ।

१५ श्वाकपि । अन्वुतः । इन्द्रावरजः । 'बभ्रुः । विष्वरथना । वनमात्मी । घनाठनः । किना । शम्भुः ।
इत्याद्युक्तम् ।

लक्ष्मीः श्रीगौमिनीन्दिरा ।

जत्वारः मिनाम् । शब्द दर्शनाकाङ्क्षयोः । जज्वरति दर्शयति पुष्पकर्माद्यं वनमिति लक्ष्मीः ।

'लक्ष्मोऽन्वयः' इत्यादीरूपयो भवति मोऽन्वयः । भङ् भिन् (तेषाम्) । पुष्पकृत् भयतीति
५ श्रीः । बभिमिच्छिमिभुमुक्तां किपुर्धीर्भ एस्या किपुःप्रवयो भवति र्धीर्भ स्वरस्य यैवम् । गां मिनो
तीति गोमिनी' । इत्यति परमेत्वर्त्यमुक्ता भवति इन्दिरा । कमला । पद्मा । पद्मबावा । हरिमिना ।

घोरिवदनया । माया । मा । वा' । ई । आ । एमा । रीता । बला (जला) । गर्भरी । अग्निबाऽपि ।

तत्पतिः शैलमूम्यादिघरदचक्रघरस्तथा ॥ ७६ ॥

तथाः पतिस्तत्पतिः । तपनीपतिः । भीपतिः । गोमिनीपतिः । इन्द्रपति । इत्यादीनि हरि

१५ नामानि लुः । शैलमूम्यादिघरः । परंतपरः । शैलकः । इरीश्वरः । अन्नकषरः । गृह्णकः । सानुम
द्वरः । गिरिघरः । नगघरः । शिरोऽन्नघरः । मूमिघर । मूबर' । मूमिघरः । गच्छीघरः । मेदिनीघरः ।

१ मन्यते कनेः कान्थेन' इति शेषः । २. का उ ए १।८ । ३. का उ ए १।१५ ।

४. का ए २।१।४ । इतिः । ८ । ५. अथ कृतमद्यमैश्वर्यं ज्ञानं येन, अथो न लोक्ते बाह इति
वा विमहोऽधिकोऽन्यत्र । ६ मन्थुऽन्वयः शब्दस्य 'विष्णु' पर्यायत्वे कल्पपुरवि प्रमाद्यम्- मन्थुकेष्टा

कीदृशीरा वीमगमो वरापरः । १।१।७ । ७ बभ्रुःशब्दस्य नारावकापेऽपि प्रमाद्यम् । "विष्णो
नकुले विष्णो बभ्रु स्वातिङ्गुले विष्णु" १।१।१७ । ८. का उ ए १।१५ । ९. का उ ए

२।१३ । १० "गोमिनी" शब्दस्य लक्ष्म्ये प्रमाद्यं मूयम् । अन्नकषविमहोऽपि चित्तम् । मलने वीरुक्ता
मिनिवत्त्वे वीरि गोवासिकायै तस्य मलिनी कीयान्तर्यंवाद्यः । ११. वा, ई अ एतां लक्ष्म्ये प्रमाद्यम्-

"लक्ष्मी क्त्वा एता वा मा ता बी कमलेन्द्रि अग्नि वि १।१५ । 'वा' इत्यत्र ई अ इति
प्लव । लक्ष्म्याश्च भर्भरी विष्णुशक्ति घोराम्बिमानुयी । इति तन्वीकायाम् ।

महीचर । बराचर । बसुन्बराचर । बाजीचर । क्वाचारः । बसुमठीचरः । विरवम्मराचरः । घननीचर । परलीचर । क्वाचारः । परिबीचर । क्षितिचरः । कुचर (प्रः) । कुम्भनीचर । इलाचर । उर्वीचर । उर्वीचर । गोचर । क्वाचीचरः । इत्यादीनि इरेनामानि वाचमानि । तथा चक्रचरोऽपि ।

तत्पुत्रो मन्मथः कामः सूर्यकाराति (कारि) रनन्यजः ।

कायपर्यापरहितो मदनो मकरध्वजः ॥ ७७ ॥

५

पद् कामे । तत्पुत्रः । क्वापुत्र । दामोदरपुत्र । विष्णुपुत्रः । उपेन्द्रतनवः । पुक्योत्तमसुतः । केचपुत्र । हृषीकेशपुत्र । हृषीकेशतनव । शक्तिनन्वः । नाराचणोदर । हरिश्चन्द्र । गोविन्दसुतः । इमानि मदनस्य पर्यायनामानि वाचमानि । मन्वाति चित्तं मन्मथ । कामयते क्व (घनेन) कामः । *सूर्यकारातिः । मनसोऽन्वयमात्रेण वाचते मन्मथजः । कायपर्यापरहितः । विदेहः । अक्रव । अन्नङ्ग । अन्नपचना । अन्नपु । अन्नहननः । अन्नोत्पन्नः । अन्नूर्ध्वः । इत्यादि (रीत्यपि तस्य) पर्यायनामानि । जन १०
मदवतीति मदन । मकरो ध्वजे सत्य स मकरध्वजः । प्रयुज् । मनसिच । तद्वल्यकम्पा । अङ्गुल । पम्पेयुः । भीमन्दनः । हृषीकेशः । मधुसूतः ।

शिलीमुखः शुरो घाणो मार्गणो रोपण कण ।

इपु काण्ड शुरप्र च नाराच तोमर खग ॥ ७८ ॥

हाचर शयो । शिलीख क्वापाम मुञ्च सत्य ३शिलीमुखः । शू हिंसायाम् । शुक्यस्यनेनेति १५
शरः । * पु ति सहायां प पमत्यनः । क्वाति 'बाबा' । 'ब्रह्मनाम्ब' पत्र । मार्गति अन्वेषति
मार्गणः । रोपते रोहे निरुन्वते रोपणः । क्वाति *कणः । इप गती । इत्यते गम्यते शत्रुतन्मुखमिति
'इपु । क्वात्सिम्पति हिन्सीति वा इपु । "इपिद्विविधिरिद्विद्विद्विपुम् क्वा । काम्यते रिपुपचार
' काण्डम् । उमभम् । क्वति गिनति ' शुरप्रम् । नर् नरसमूहम् क्वातीति ' नाराचम् । लोप्यते
रक्षाप्यते तोमरम् ३ । क्वाकाच ग्वातीति क्वाः । क्वापत्र । चिचपुत्रः । विशिख । क्वाकम् । २०
कदम्बोऽपि । सावक । मद्र । पुष्यः । रोप । गार्स्यपणः । * क्वा । यस्तिः । भस्तिः ।

१ विदेहे चित्तस्थाने मन इत्यपाठो बोध्य । मनस इलोपार्थे पुत्रोदरादिगणपाठावात्ता
पि तस्य कार्य । क्षीरस्वामिरामाभमौ द्व मनसं मत् शेतना । मन्वातीति मञ्च । पचायच् । मत्प्रयेत्
नाशा मप 'मन्मथ इत्यादिद्वः । २ कन्दोभङ्गमवाप्यूर्ध्वकारिरिति पाठो बोध्य । शूर्ध्वको नाम कश्चिद्
दानवच्छत्य नाशकारिवात्काम शूर्ध्वकारिः । तदुक्तम्- क्वभि चि २।१२२ । 'पुण्याम्बलेपुचापात्वा
प्यती शम्बरसूर्ध्वको । ३ शिली नाम गन्धपद् । 'केजुवा' इति लोके फलत । ४ का ख ४।१।१६ ।
५ क्वाति शम्भान्ते पुत्रोऽस्मिन्निति पूर्वो विग्रहः । ६ का ख ४।१।१९ । ७ क्वाति शम्भान्ते
क्वा । पचायच् । ८ इपति गन्धति शत्रुतन्मुखमिति वा । ९ का उ ख १।१ । १० क्वति
दीप्यते काण्ड इति रामाभम । क्वी दीप्ती । कादिम्ब किच्' उ १।२ । इति क्वा । अन्नातिक्वस्येत्
पचादीर्धम् । अन्वरक्षेत्पु क्विप्रये 'क्यु कास्वी क्वावातोः ए एव प्रत्ययः । क्वात्वनेनाहठः काण्ड इति
हैमचन्द्रः । क्वा शब्दे इत्यनो क्वा । ११ शुरं दीप्येन प्राति ग्वातीति शुरप्रम् इत्यपि । शुरार्थे लोई
प्राति ग्वाति वा । १२ मात्माचामतीति रामाभमः । मरमञ्जतीति नराधी, नराप्यास्तुत्स्यो नाराच इति
हैमचन्द्रः । १३ 'दु गतो' वीचः । तीतीति ती । चिच् । चित्तेऽनेनेति मरः । पुति सहायां प । तीकाठी
मरप्रयेति तोमर इत्यमरः । १४ खदर्भावाः । तदुक्तं कश्यपुकोशे १।५।२६ । 'चिचर्ष' पत्रवाह
चिचपुत्रा शर लवः । इति ।

कामुकं घन्व चाप च धर्मं कोदण्डकं धनु ।
शिलीमुखादेरसनम्-

पद् धनुषि । कर्मणे शुभुववसदृशाव प्रभवतीति 'कामु कम् । दक्षिण मारुत्यनेन 'घन्वन् ।
५ घन्वन्तम् घन्वम् । अपरत्र वेद्योर्विभ्ररुत्थापम् । उभयम् । परति 'धर्मम् । धर्मं च । कुत्र घन्वन्तमापय' ।
कोदण्डनेन 'कोदण्डम् । शुभुवधार्थं घन्वते अर्पयति धारयति वा धनुः । उभयम् । उखादी दक्षन्तीति
धनुः (नृः) । "अपिचमिदनिधनिवधित्तिलिर्धिम्य ऊः" । शिलीमुखादेरसनम् । शिलीमुखासन ।
शरासनः । मार्गशासनः । रोपशासनः । कृशासनः । ह्यासनः । काण्डसनः । सुरासनः । नाराशासनः ।
तोमरासनः ।

तस्कोटिमटनीं विदुः ॥ ७६ ॥

१० तस्य धनुषः कोटिमप्रभागम् । कामु क्कोटिः । घन्वकोटिः । चापकोटिः । काण्डकोटिः ।
धनुष्कोटिः । शिलीमुखासनकोटिः । शरासनकोटिः । बाशासनकोटिः । रोपशासनकोटिः । मार्गशासन
कोटिः । ह्यादिक्कोटनीति कल्पते । अरति गण्डति भूमिमटनि । ह्याम् । अटनी । श्री स्त्रियाम् ।
पुष्य सुमनसं फुल्लं लतान्तं प्रसवोवृगामी ।
प्रघनं कुसुमं ज्ञेयम्-

१५ पद् (अन्) पुष्य । पुष्यति विक्रति पुष्यम् । सुषु मन्वन्तं आभिः सुमनसा । ज्योत्स्वदुष्ये ।
"भिकला विहारो" । फल् । फलति स्म फलः । फुल्लं वा । गत्वर्धाङ्कर्मकं लः । 'आरुपुष्पाद्य' ।
इति नेर् । अनुपवर्गाद्युत्पत्तिरुत्पत्तिरुत्पत्तिः । निघातकारस्व लत्वम् । "अरुत्पत्तिरुत्पत्तिरुत्पत्तिरुत्पत्तिः
उत्पत्तिः । ति । रेकः । लताया अन्तं पठितं लतान्तम् । प्रद् (व) ठे प्रसवम् । उरुगण्डति प्राहुर्म
२० इति उवृगामीः । भिर्बं प्रयुगे प्रसूतम् । लं लतं च । एता उभयम् । कौ शोमीं लते 'कुसुमम् ।
सुमं च । ज्ञेयं ज्ञातव्यम् ।

तदाद्यलक्षरः स्मरः ॥ ८० ॥

पुष्परवापयो (त परवा) अणवन्ति तथा बाणवन्तिपिपि स्मरनामानि भवन्ति ।
पुष्पेणुः । पुष्पबाणः । पुष्पशिलीमुखः । पुष्पशराः । पुष्पमार्गलः । पुष्परीपकाः । पुष्पकाण्डः । पुष्पकण्डः ।
पुष्पसुराण्डः । पुष्पनाराणः । पुष्पतोमरः । सुमनःशुभ्रः । सुमशिलीमुखः । सुमनोनाराणः । लतान्तेणुः ।

१ कर्मण उक्त्वा वा ए ५।१।२ ३ । इति प्रभवत्वर्थे उक्त्वा । टिलोपः । २ वनं ज्ञाने
पुरीत्यादिः । वन्द्यत्ववः । बाहुनामनेर्वात्त्वाम्प्रावतीत्यर्थः । बालवर्जितुरोप इ दक्षति चाभ्यमभयत्सनेने
इत्यर्था बोध्य । शीराणां वनबाणवर्जनप्रधानत्वाद् धनुषः । अन्वति गण्डति चन्वेति शीरत्वाभिरामाभय
देमन्त्र्याः । कनिन्प्रत्ययः । ३ परतो रउत्पानप्रठन्त्वानित्यर्थः । मनिन्प्रत्ययः । अणायत्तपरमंशुम्
एव धनुर्वाचित्से मेरिनीं प्रमाणम्— 'वर्माङ्गो पुष्य आचारे स्वभावीपमयोः कृती । अर्द्धितीवनिपन्त्र्याये ता
धनुर्वधतोमे ॥ मास्त्र १६ रत्नी ॥ ४ बाहुलकारणप्रत्ययः । रामाभयलु 'कुट अन्तमापयण'
कोरती विपरमाह । न इव श्रयः । पुरीदरादिरुत्पत्तिश्च ६ । नदि तीवः । नवते भवेति देमन्त्र्यः ।
५ शब्दे कीर्त्तितः कौः । कौ शब्दावमानो दण्डोऽनुष्येऽप्यन्त्र । ५ वा उ ए १।१.१ । ६ सुप्रीं
मन् आभिरिति सुट्ट । ७ वा ल् ४।६।२। ८ वा ए ५।१।१.१ । ९ वा नु ४।१।२।५। १ वा
ए ५।१।१.६ । ११ कुन्वति कुट्टम् । 'कुम लक्षेणट शिवादि । "कुसुमभीमरेता वा उ ए
४।१ ६ । इन्दुमन्त्र्यः । इति रामाभय ।

अतान्तकाण्ड । अतान्तमुद्र । अतान्तनाराच । अतान्ततीमर । अतान्तमार्गश । अतान्तरोपश । अतान्तकश ।
 अतान्तपु । अतान्तकाण्ड । अतान्तमुद्र । अतान्तनाराच । अतान्ततीमर । अतान्तमार्गश । अतान्तरोपश । अतान्तकश ।
 अतान्तकाण्ड । अतान्तमुद्र । अतान्तनाराच । अतान्ततीमर । अतान्तमार्गश । अतान्तरोपश । अतान्तकश ।
 अतान्तकाण्ड । अतान्तमुद्र । अतान्तनाराच । अतान्ततीमर । अतान्तमार्गश । अतान्तरोपश । अतान्तकश ।
 अतान्तकाण्ड । अतान्तमुद्र । अतान्तनाराच । अतान्ततीमर । अतान्तमार्गश । अतान्तरोपश । अतान्तकश ।
 अतान्तकाण्ड । अतान्तमुद्र । अतान्तनाराच । अतान्ततीमर । अतान्तमार्गश । अतान्तरोपश । अतान्तकश ।
 अतान्तकाण्ड । अतान्तमुद्र । अतान्तनाराच । अतान्ततीमर । अतान्तमार्गश । अतान्तरोपश । अतान्तकश ।
 अतान्तकाण्ड । अतान्तमुद्र । अतान्तनाराच । अतान्ततीमर । अतान्तमार्गश । अतान्तरोपश । अतान्तकश ।
 अतान्तकाण्ड । अतान्तमुद्र । अतान्तनाराच । अतान्ततीमर । अतान्तमार्गश । अतान्तरोपश । अतान्तकश ।
 अतान्तकाण्ड । अतान्तमुद्र । अतान्तनाराच । अतान्ततीमर । अतान्तमार्गश । अतान्तरोपश । अतान्तकश ।

स्वान्तमास्वनित चिच चेतोऽन्तःकरण मन ।

हृदय विशिखाऽकृतम्-

न च चिते । 'स्वम स्वम चरु शब्दे । आहूर्त्तः । स्वनति स्व आस्वनति स्व इति
 स्वान्तम् आत्मान्तम् । 'गाल्या १' निहा क । "आ १ इत्यन्तत्वरत्तुयाऽन्तान्तम्" एव च विभाषयेद् १५
 भवति । वेद । पद्यो २ । मनीरुन्नाणे पुटि । मनोऽपे भुभिषारी" त्वादिना च वेद । कपि
 तत्त्वकथयेऽपि परत्वात्पूर्वोक्तयोः परीकथिषिषलवान् इति वचनात् । अनेन सूत्रेणानेन विद्वत्त्वा
 भवति । मनोऽभिषानेऽपि परत्वादयमेव विधिर्भवति । चेतति चिचम् । अतति जानाति अनेनात्मा
 चेतम् चान्तम् । अन्तः निधय त्रिपतेऽनेन अन्तःकरणम् । मनते बुभतेऽनेन चान्तम् मनस् ।
 बुभत्वाऽपे इरति हृदयम् । 'हृजो दीऽन्तः' । दान्त च हृद । विगतं (ता नष्टं) शिल् (जा) २०
 बन्व क्त्विशिलम् । आ अन्तः कृतं आकृतं (आकृतम्) । तथा आहवाहस्वाम् —
 जत्वाकृतेनाकारयेति मानसम् ।

मारस्त्वप्रोद्भवो मतः ॥ ८१ ॥

तत्र चित्ते उद्भवो मारो मतः कथित । स्वात्तःकथनः । स्वात्तः । आस्वनितः । चित्त
 तन्म । चित्तः । चेतःकथनः । चेतोः । अन्तःकरणतन्म । हृदयतन्म । हृदयः । विशिखतन्म । २१
 विशिखः । आहूर्त्तःकथनः । इत्यादीनि कथनेनामानि ज्ञातव्यानि ।

मीर्षी बीषा गुणो गध्या ज्या-

पद् गुणे । मूर्षति दिनसन्ध्या म्वा । तथाकथ्य गूळस्व विहारो मीर्षी । अनुजया बीर्षतीति

< का सू ४।१।४। २ का सू ४।१।१०। ३ का सू ४।१।४। पद्योपवाया
 बुटि पागुण् "ति पूर्वो वृत्तम् । ४ का सू २।१।४। ५ का सू ४।१।११। ६ आस्वनितमित्त्वत्र
 मनोऽपेऽपि परत्वात् "आ कथ्यन्तरे" ति वेद । आहूर्त्तःकथनाभावे हृत्त्वान्तमित्त्वत्र "भुभिषारी" त्वादिनेद्
 मतिषेव । तेन स्वात्तमित्त्वैकभय कथम् । आहूर्त्तःकथने हृत्त्वान्तितमात्वात्तमित्त्वुभयमित्त्वात्तत्र ।
 ० अन्तःकरणमतिदुःखिपूर्वायेत्याः क. इति का ४।१।११। सूत्रेण कानार्थवात्पूर्वमने कः । ८ अन्तः
 कथ्यत्वाऽत्राचिहरणशक्तिप्रधानरेकान्तात्त्विकान्तो निधय इति बुभत्वात्तं गुणा । अन्तर्गतं वरप्यम्
 वरप्यमामन्तर्गतं वेति बुभत्वात्तं चोप्या । ९ का उ सू २।११। १० विशिखतन्म हृदयार्थे न किम
 प्यत्र प्रमाद्युपलभ्यम् । अधोमुद्रपुष्करिणाकारत्वाद्दृष्टवत्त्व विशारदितत्त्वं कथयित्त्वेनम् ।

जीवा । गुण्यते अमरकतेऽनेन गुणः । पुति । गोम्यो विता गम्या । जीवतेऽनवा ज्यत्^१ । वायुजन्म । हृषा ।

अलिर्भृङ्गः शिलीगुच्छ ।

अमर पदपदो ज्ञेयो द्विरेफम् मधुव्रतः ॥ ८२ ॥

अमरं सूत्रं । अस्ति मधुव्रतः पुष्पवातीः अस्ति^२ । मधुना विभक्त्यामानं सूत्रं ।^३ सू

५ सूत्राङ्गानि एतेऽङ्गप्रत्ययान्ता निपात्यन्ते । शिलीगुच्छश्च शिवालयश्च वा मूलमस्य शिलीगुच्छः । अमर-
रीतिरिति निष्पत्त्या अमरः । शक्यत्वात् शक्युप्रसवनात् अकारस्य औपो मवति । आशिश्यात्
नकारस्य औपोः । उच्चारौ 'अमु चक्षणे' । अमरीति अमरः । 'वेदि' चरित्ठिप्रमिवादिभ्योऽऽत् ।
पदं पानि ज्ञेया अस्य पदपदं । द्वौ रेफौ तस्य द्विरेफः^४ । मधु मवति भुक्ते मधुव्रतः । मधुकर ।
पुष्पलिङ्ग । इन्द्रिन्द्रः । पदपरस्यः । पददिग्म । चद्ररेफः । अलम् । रोचन् । वेरवाम् ।

१० मीर्ष्यादिप्रान्तमन्यादिकन्दर्पस्यैज्ञव अनुः ।

ह्योर्विकार पेक्षकम् । अस्तिमीर्षी (कम्) । सूक्ष्मीर्षी (कम्) । शिलीगुच्छमीर्षी (कम्) ।
अमरमीर्षी (कम्) । पदपदमीर्षी (कम्) द्विरेफमीर्षी (कम्) । मधुव्रतमीर्षी (कम्) । अस्तिमीर्षा (कम्) ।
सूक्ष्मीर्षा (कम्) । शिलीगुच्छमीर्षा (कम्) । अमरमीर्षा (कम्) । पदपदमीर्षा (कम्) । द्विरेफमीर्षा (कम्) ।
मधुव्रतमीर्षा (कम्) । अस्तिगुच्छः (शम्) । सूक्ष्मगुच्छः (शम्) । शिलीगुच्छगुच्छः (शम्) । अमरगुच्छः (कम्) ।
१५ पदपदगुच्छः (शम्) । द्विरेफगुच्छः (शम्) । मधुव्रतगुच्छः (शम्) । अस्तिभ्या (कम्) । सूक्ष्मभ्या (कम्) ।
द्विरेफभ्या (कम्) । मधुव्रतभ्या (कम्) । इत्यादीनि कन्दर्पशिलीगुच्छ (अनु) नामानि ज्ञेयानि ।

हेतिरज्ञाप्युर्ध्वं शस्त्रम्-

२ अकारः शस्त्रे । द्वितीति अना हेतिः । शिवाम् । वातिहेतिर्विभूतवध^१ । एत
किप्रत्ययान्ता निपात्यन्ते । अस्ते द्विन्पतेऽनेनेति अस्त्रम् । आशुपतेऽनेन आशुधम् । उभयम् ।
२ शस्त्रहेऽनेन शस्त्रम् ।^२ 'नीलापशुभुक्त्यद्वयविविधमिहपतर्पणानां करो' भूत् । अमात्र । 'न्यञ्जनम्'^३
इति तपरगमनम् । मनु अन्वैरप्रतिपेनाभावात् द्विनि प्रत्यये इडागमः कर्षं भवति । आगमशास्त्रमनित्यमिति
बन्धनाद् शशुषातोः द्विनि प्रत्यये इद् न भवति । 'कुर्ष'^४ पञ्च - ति वापकारेण (इ) ।

पुष्पाद्यस्त्रं स्मरो मत ॥ ८३ ॥

पुष्पवर्धित अस्त्रपवयित् शरपवयित् तथा चापवर्धितेषु स्मरवामानि भवन्ति । पुष्प

१ गोम्यो वायेन्वी द्विरेत्वर्थः । २ विनाति जीवतेऽनवा । 'ज्या वदोऽनी' । 'अन्वेष्यपि
इतत इति क' । ३ अल भूपवारी । सर्वनाद्गुण इत् । ४ का उ १।४८। ५ का ए इ ।
६ काठमीष्यार्या नीपलम्बम् । ७ अमरपरे रेफप्रत्ययान्ताद् द्विरेफः । ८ कन्दर्पस्य अनुरेक्षकम् । इशुपद
निर्मितम् । अत एव काम इशुपनेत्युच्यते । मीर्ष्यादयः शब्दा अस्ते तस्य अस्तिः अस्तिपर्वत आरौ पर्येहरी
तद्बनुरिति बन्धुमुत्पाठार्थं । अस्मिन्नर्थे बन्धुरिरोपलतवा अस्तिमीर्षीकम् नक्ष्मीर्षीकम् इत्यादि
रीत्यायां वयस्यम् । बन्धुतलु मीर्ष्यादिभोक्तृमत्स्यादिरिति पाठौ भुक्त । तत्र पदार्थबोद्धव्येण तापु संतप्यत ।
अस्यादिः कन्दर्पस्य मीर्ष्यादि बन्धुव्य देव्यवम् त्वर्थं । तदुक्तम्— 'मीर्षी रोलम्बमाहा बन्धुव्य विशिष्या
काशुना पुष्पवेतो इति वाहित्ववर्षेण । शैलेया तु मयाभुत्पाठानुगामिनी । ९ 'हि गती इदी च' ।
इत् इदुपसिपिगिगिगाले बोध्या । शल्यार्थे 'इत् रितावाम् इन्वतेऽनयति द्वयकम् । १ का ए
४।१।०३ । ११ वा ए ४।४।९१। न्यञ्जनमस्त्र परकषं नपेत्' । १२ वा ए १।१।२१। इति वकारस्य
परगमनम् । १३ वा ए ४।१।३१।

हेति । पुण्याक । पुण्यापुष । पुण्यशक । सुमनोहेति । सुमनोऽक । सुमनमापुष । सुमनरक ।
सतान्तहेति । सतान्ताक । सतान्तापुष । सतान्तरक । प्रथमाक । प्रथमापुष । प्रथमरक । उद्ग
महेति । उद्गमापुष । उद्गमशक । प्रसूनहेति । प्रसूनक । प्रसूनपुष । प्रसूनरक । कुसुमहेति ।
कुसुमाक । कुसुमापुष । कुसुमरक । इत्यादिकानि नामानि शक्यानि ।

पञ्च पठाका केतुश्च चिह्नं तद्वैजयन्तपि ।

५

पद्म पठाकायाम । पद्मते (ति) ध्रुवते ध्यजाः । तथाभ्ररसिहे—“पद्ममस्त्रियाम् ।
पद्मिभ्य । पठाकाश्चे पञ्च इत्यन्व । पद्मते क्षिप्यते वातेन पठाका । बलाकादवः—“बलाकापिनाक
पठाकाश्रवामाकशलाकाः एते अक्षरबान्ता निपात्यन्ते । पठाका च । क्षिपाम् । क्षीयते ऐम्भतेन केतुः ।
“केतुश्रवणं—“केतुस्तन्वात्पुत्रीशेषदुपहृत्तबीनावप” एते द्वन्द्वबान्ता निपात्यन्ते । चह परिक्रमन्ते ।
चहवति (अनेन) चिह्नम् । चिह्नपतेऽनया वैजयन्ती । चयन्ती च । क्षीयो । वैजयन्ता । चयन्त ।

१०

‘तचदन्तो ज्ञपाद्यादिः श्रममोर्विघ्नकर’ स्मर ॥ ८४ ॥

मयपञ्च । मयपठाक । मयकेतु । मयचिह्न । मयवैजयन्ति । पडवीशपञ्च । पडवीश
पठाक । पडवीशकेतु । पडवीशचिह्न । पडवीशवैजयन्ति । मरपञ्च । मरपठाक । मरकेतु ।
मरचिह्न । मरवैजयन्ति । अनिमियपञ्च । अनिमियपठाक । अनिमियकेतु । अनिमियचिह्न ।
अनिमियवैजयन्ति । मिनियपञ्च । मिनियपठाक । मिनियकेतु । मिनियचिह्न । मिनियवैजयन्ति ।
मीनपञ्च । मीनकेतु । मीनचिह्न । मीनवैजयन्ति । पाठीनपञ्च । पाठीनपठाक । पाठीनकेतु । पाठीनचिह्न ।
पाठीनवैजयन्ति । श्रमोर्विघ्नकरः । इत्येवमस्मरानि शक्यानि ।

१५

कौशेयकासिनिस्त्रिसकृपायां करबालक ।

तरवारिर्मण्डलाग्र खङ्गनामावलिं विदु ॥ ८५ ॥

पथा चह । कुषी अथ कौशेयक* । कौशेय । अन्वते क्षिप्येऽसि । निष्कान्तक्षिप्यो- २०
दुक्षिम्बो निक्षिप्य । वाताभ्यान्तः । शूद्र इत्यु अन्वते वाचत कृपाया । ‘कृपे काय । करे बलत
करयाक । करयाक । तरति (तर) अथमान वारि पनेति निष्कन्वा तरयति । मण्डल बहुनामं
अथ तन्मण्डलाग्रम् । कण्डवि परमार्थानेन चङ्ग । लण्डेगच् । स्त्रीना । ऋषि । चन्द्रहातः ।

अक्षीहिणी बलानीक वाहिनी साधनं चम् ।

अग्निनी पृतना सेना सैन्य ठण्डो बरुधिनी ॥ ८६ ॥

२५

हावरा सेनानाम् । अग्नादी रवानामुहिनी अक्षीहिणी । “अक्षीहिणी” अक्षीहिणी । “अक्षीहिणी” अक्षीहिणी ।
अथवा चालनेन साप्यते भाव्यकर्ता श्रीमदमरकीर्तना । अग्ना आती । अस्तुते व्यानोदीति अथ । *शु

१ “अथ गती” । पठाक्यम् । २. अथ को २।८ १।३ का उ १।४ । ४ का उ
१।२। ५. विजयते विजयन्ता विजयप्राणी पुष्यः । क्षीयादिको मज्जस्सव । मत्त्वान्वादेश ।
विजयन्तस्य पठाका वैजयन्तीति । ६ ते ते अथगर्जाया घन्त बल अग्रादिर्मानुषायभारी पत्य
ईशशलाया शम्भुपिन्करस्य अरः नामः । वेऽपि अरप्यर्थात् । तथाच मयपथेत्यादि । • कुलकुलि
प्रीतान्वा भाऽश्वलाकारेण पा ५ ४।२। १। इति अङ्गायें टकम् । ८. कृपां मुदति कृपाया हावपि ।
९ का उ ५ ५।२। १ “बल वेदने” अन्वादितायाः । बलनं बला वेदनम् । करे बालो बल करेण
अन्वते बोधयन्त्यन्व । ११ का उ ५ ५।५। १२ का ५ ६ १।२। १३ का उ ५ ५।५।

वदिहनिमनिष्कन्तिश्रियन्वः सः स प्रत्ययः । कुर्योभ^१य । "पटो क^२धे" कर्त्तृप । ^३क्यवदीने स ।
अत्र इति बाध । ऊन ऊह । ऊहो विद्यते यस्मा सा ऊहिनी । असाखामूहिनी अशौहिणी । 'तमा
वात्समीपनोयुवादे' अन्वार्थः समासस्य अन्ते समासस्य समीप नकारस्य पूर्वपदत्वात् निमिषात्
(परस्य) शो मयति वा । इदानीम् अर्वाशियीप्रमाद्य ऋवते । यन्नाखम्—

५ "एको रथो गजस्रैको नराः पञ्च पदावयः ।
प्रपञ्च दुरगास्तथैः पत्तिरित्त्वमिषीयते ॥
पत्त्यगैस्त्रिगुणैः स्रैः क्रमादास्या पयोत्तरम् ।
सेनागुक्तं गुप्तमगणौ वाहिनीं पृथना चमूः ॥
अनीकिनी"

१ पटेस्त्रिगुणं सेनागुक्तम् । गजा ३ रथाः ३ अस्त्राः ९ पदावयः १५ इति सेनागुक्तम् । गजा
१ रथा ९ अस्त्रा २७ पदावयः ४५ इति गुप्तम् । गजाः २७, रथाः २७ अस्त्राः ८१ पदावयः १२५
इति गज । गजाः ८१ रथाः ८१ अस्त्राः २४३ पदावयः ४५ इति वाहिनी । गजाः २४३ रथाः २४३,
अस्त्राः ७२९ पदावयः १२१५, इति पृथना । गजा ७२९, रथाः ७२९ अस्त्रा २१८७ पदावय ३६४५
इति चमू । गजाः २१८७, रथाः २१८७ अस्त्राः ६५६१ पदावय १९३५ इत्यनीकिनी । कुर्यानी
१५ किन्प्योऽशौहिणी । गजाः २१/७ रथाः २१८७ अस्त्राः ६५६१ पदावयः १९३५ । वक्तव्ये
तद्वचोति परभूमि चमू । उभयम् । अनिति प्राप्तिर्त्वंलनेनः न नीक्ये पराभव वा अनीचम् । वाहा
अस्त्राः उन्वत्सा वाहिनी । घाण्ते (अनेन) घाणन्म् । पठन् शत्रून् अमति मस्ते चमू । 'कृपि
पमितनिषनिषिषिर्वाङ्गिन्व ऊ । चमुद्य । अवाः उन्वत्सा अविनी । नावर्द्ध पिपिर्त्ति पृथना ।
अशौः तिनोति वन्नाति सना । 'तिनोतेर्नः । सेनायाः स्वार्थे षण्ठि ऐम् । बाम्पति वन्व । वरुयो रथ
२० गुप्तिरस्यस्या वरुचिनी । पठाकिनी । चमूम् । अनीकिनी । गूढ । उन्वम् ।

कदन समर युद्ध सयुगं करुह रणम् ।
सग्राम सम्प्रायासी संयदाहुर्महाहवम् ॥ ८७ ॥

२५ एकारश्च मुद्दे । कथते कदनम् । वयिवति प्रविधिकला भवत्पत्र नरा समरम् । युध्वाटे-
(त्रा) विभियुंठम् । धरा वनुचन्ते मिश्रत्वत्र संयुगम् । कलं मयुरं वास्यं हन्त्वत्र कलहः । खन्ति
दुम्भुभवेऽत्र रणम् । संभवन्ते वत्सान्वनेनेति संप्रामः^१ । पुति । संपरेति मुत्सुत्र सम्प्रायायः भरा अवनन्ते
क्षिपन्तेऽत्र आश्रिताः । स्त्रीबोः । वक्तव्येऽत्र तावत् संयत् । महारिषालो आहवा^२ महाहव । तम् आहुः

१ का ख ३।१।६ । का ख ३।८।१ ३ 'क्यवदीने वा । का क ५
२५६ ख । ४ प्रथमः श्लोको महाभारत उपलभ्यते । तस्वीप्लम्बिष्य द्वितीयं प्लाने पठ्यत्सुलोक्त्वेन ।
"वस्तत्र नोपलभ्यते । तत्र एको रथः" इति श्लोकानन्तरम् — "पठिन्नु गिगुषामेतामाहु सेनागुक्तं
चुवा । भीषि सेनागुक्तान्को गुप्त इत्यभिधीयते ॥ तत्रो गुप्ता गजो नाम वाहिनी द्व गणाश्चन । स्मृता
स्त्रिषस्य वाहिन्वा पृथनेति विषयश्चैः ॥ चमूस्त पृथनस्तिस्रस्तिस्रभयवन्नीकिनी । अनीकिनीं पशुगुणां
प्राहुः सेनागुक्तं चुवाः ॥ इति । श्लो १९ १७.१८ । ५ अगि चि २।४।१। ६ का उ ख १।३।
७ का उ ख १।३। ८ गू'शब्दस्य सेनावेत्यत्र प्रमाद्यं मुक्तम् । ९ "क्य वैस्तव्ये" । कथते
विसृष्टपथंनेनास्मिन्वा । कथं प्रविचरन्व वा ह्युत् । १० तत्र ग्राम मुद्दे । तत्र ग्रामकन्तेनेति । हेमचन्द्रः ।
तद्ग्रामं वृद्गम इति रामायम् । ११ अमुचन्ते वीहारीभ्येलाहव ।

वृषति । आनीषतम् । अम्बम् । प्रथनम् । प्रविशारणम् । मृषम् । आत्कथनम् । सखनम् । समीकम् ।
कनीकम् । विषयः । धनुदातः । अम्बागम् । संस्तोत्रि (ट) । समिति । समित् । इन्द्रम् ।
अम्बर्दः । संगरा ।

गवो मतङ्गवो हस्ती वारणोऽनेकपः फरी ।
दन्तो स्तम्भरम' कुम्भी विरदेममितङ्गमा' ॥ ८८ ॥
शुण्डालः सामजो नागो मातङ्ग पुष्करी द्विपः ।
करण् सिन्धुर'-

५

विशक्तिभिः । गवति मापति वाद्यः । अम् । मतङ्गवेषैर्वातो मतङ्गव । 'समीपद्वयन्ते
कनई' ३ । इत्यो विपतेऽस्य हस्ती । "आपो तु वन्तहस्ताभ्यां कराकचैव इनेव हि" । वास्वति पगन्
शब्दं वास्य । न एवेन विस्वनद्वयः । करोऽस्यस्य करित । इदन्तोऽपि करि । दन्वो विपतेऽस्य १०
दन्वी । स्वामे वृषे एते स्तम्भरमा । 'स्तम्भरवर्जो रमिबर्जो' लप् । कुम्भी विपतेऽस्य
कुम्भी । इी रवी वस्य द्विपः । एति गच्छति शत्रुमुलमितीमा । 'इत्वा रम्भ' गच्छन्वो भवति
स च दम्भ । मित गच्छतीति मितङ्गमः । "अगरप्" लप्रत्ययः । 'इत्वा इपोमोन्त' । शुण्डां लति
एदातीति, शुण्डाल' । धान्नः सामनेदकभाव' सामका । नगे पर्वते भवो नागः । मन्वते मनेन
मातङ्गः । पुष्कर विपतेऽस्य पुष्करो । दाम्नां विपति द्विपः । करोति कारं करोसु । 'इन्द्रभ्रमोसु' १५
आम्बागोष्ठु प्रत्ययो भवति । स्वन्दते खपति मव सिन्धुर' । इत्वावत् । पत्नी' ११ । वीसु । वारिदु ।

तेषु यन्ता याता निपाद्यपि ॥ ८९ ॥

गवो हस्तिपः । गच्छतीति यन्ता । गवोति याता । निषीदति इत्सेंयतीसो निपादी ।
गच्छन्ता । गबवाता । हस्तिवन्ता । हस्तिवाता । श्वानीनि कल्पन्वापि । अपिशब्दात्—आधारक' ।
इतिप' । इत्वारोहः । गवाबीज । महामात्र' ।

२०

नागाधारि' कण्ठी' (पिठ) रवा मृगैन्द्र' केसरी हरि ।

यत्नात् सिद्धे । नागारिः । गवरिपुः । मतङ्गवैरी । हरिद्विद् । गारुडवैरी । अनेकपस्यन' ।
वरिपि रमिद्वैरी । स्वनेपस्यपि । कश्चिद्व्यवृते ईदृश पाठा । कुम्भिवैरी । इमवैरी । मतङ्गशत्रुः ।
शुण्डावरिपु । धामबाधो । नागारि' । पुष्करिपिपुः । द्विपवैरी । करोसुरिपु । विष्णुरवैरी । इत्यादीनि
प्रांशनामानि विद्वत् कल्पन्वापि । कण्ठे रवो अनिर्वाय कस्यौरथ' ।

५

१ गवति मापति सर्वति वा गवा । २ का ए ५११/११ ३ वा मू २११/१५ इति ।
४ का ए ५११/१५ ५ का ठ ए २१२/१ ६ का मू ५११/५५ ७ का ए ५११/२१
८ शुण्डालकलेवपि । प्राशित्वादातो कल्पन्वात्साम् या ए ५१२/१६ इति मत्स्यवर्जो लक्ष्मणप ।
९ धामवैरी हि मीवन्त । कस्वरं च क्वाहृष्य इति को वदा अमपन् । यदाभाहृष्य कनारे कर्मान्ति ।
गोष्ठुया क्वा कश्चमर्माता । का ए धामका शत्रुवन्त । इति कृत्ति । प्रनापान्तस्मिन् मूदन ।
कलेकुराकम् विविर्वाशन् कर्वा । कम्पा एव वास्त्याकमजा इति । १० का ठ मू ।।
११ स्वन्वारोपार्जस्वाश्ववति मरमिपवर्धित्वतीव । १२ अत्र कन्वदुर्धोर १५१/४४१ प्रनापन्—
'करो क्वाक क्वा क्वा क्वा क्वा क्वा । इति । १३ इन्द्रा मनुमिवाञ्च कश्चिद्वि पान् प्रतिमानि ।
कल्पन्वो क्वाश्ववित्केवरात इकार ईकारभ विवेक ।

“वर्षागमो गबेन्द्रासौ सिंहे षण्विपर्ययः ।
पोडरासौ विचारस्तु वयानारा वृषोदरे ॥”

इत्यनेन एकारत्व ईकारः । मृगायां अणुप्रधानां मध्ये इत्त्वं सूत्रेण । केशराः स्तम्भेशाः
स्तम्भस्व केशरी । क्रमप्राप्ते इति इति । पञ्चानन । इर्षय । नञ्उपुष । मृगपरिपुः । सिंह ।

५

व्याघ्रदचमूरं शार्दूलः—

वचो व्याघ्रे । व्याधिप्रति प्राशान् उगादत्ते इत्याम् । चमति इति पश्यत् चमूरः । परान्
शृणोति हिनस्ति शार्दूलः । द्वीपौ । पुष्करीकः । उष्णुः । चित्रकाय । मृगारिः ।

श्रमोऽप्रापदोऽष्टपात् ॥ ६० ॥

वचोऽप्रापदे । शृणोति हिनस्ति श्रमः । “शृणोति शिर्षात्कञ्चित्कञ्चित्-भोजम्” । शर्दी

१० पदान्यस्य अष्टापत् । शर्दी पात्वा क्त्वात्तो अष्टपात् ।

क्रोडो वराहो दंष्ट्री च घृष्टि पोत्री च मूकरः ।

क्रोडो (पट्) शूकरे । पत्न्यां संक्रमति क्रोडः । वरानास्ति वराहः । दंष्ट्रा स्तम्भस्व दंष्ट्री ।
पर्यधीति घृष्टिः । घृष्टिश्च । पूट पवने । पू । मी । पूट पवने वा । क्रे । उभयवन्दी । पूवतेऽनेमेति पोत्रीम्
“इत्थंशूकरयोः पुषः इत् । वनाप्र । नाम्बन्तुषः । डि त्तु । पोत्रमस्तस्य पोत्री । घृष्टे मधुरा
१५ पत्नानि, स्वयति वर्षेति वा गीनत्येन सूक्तः । शूकरश्च । दम्भताम्य । क्रोडः । किर । किरिश्च ।

उष्ट्रो मयः शृखलिकः कर्ममः शीघ्रगासुकः ॥ ६१ ॥

पशोष्ट्रे । उष्णते दक्षते मरौ उष्ट्रः । “उर्षवाष्ट्रम् इत्” । मयते गम्बुति मयः । मयति
इत्येके । शृङ्गलं कन्धनमस्य शृङ्गलक्षिकः । कं शिरो रमते उभयवन्तीति कर्ममः । कर्ममश्च । शीघ्र
गम्बुतीति शीघ्रगासुकः । वासेरकः । शीर्षकः । मीषी । रवकः । पू मण्डो (भूपक) ।

२०

कौलेयकः सारमेयो मण्डलश्चापुरोगतिः ।

विह्वपो ग्रामशार्दूल कुम्भकुरो रात्रिनागरः ॥ ०२ ॥

मय सारमेये । कुम्भे पशै भव कौलेयः (वकः) । वरमावा कर्मस्य सारमेयः । मण्डं ज्ञाति
मण्डलः । चारादीन् स्वयति गम्बुति इवा । श्वानोऽन्तोऽन्वि । पुरो गम्बुति पुरोगतिः । “विह्वपां शरीरं

१ ‘पुषोऽप्रापद’ इति शा घ २।२।१७१। कारिका । २ प्राशान् इत्यनेनेता
वाग्वान्यत्र । ३ वदवा शारवतीति शार् । त्रिप । वृक्षे इति वृक्षः । अन्तर्भावितश्चिबर्षो वृक्षः । शार्
वातो वृक्षभेति विमर् । ४ का उ घ ३।१२। ५ “कुम्भ वनस्थे” । क्रोडर्न फलत घोऽन्वात्तीति क्रोडः ।
“कर्मं व्यापय” इति रामायणम् । ६ वरमाहस्तीति वर व्याहारी नपेति वा पुरोवरादित्वात् । ७ का घ
४६।१२। ८ कुम्भं मयं करोतीति । शूकोऽन्वयश्च शूकरः वररोमत्वात् । शूकं राति वा । शू इतिपनि
करोति वा । ९ वधि इत्युक्ति कर्मश्चिबर्षादन मयभूमि वा इति उष्ट्रः । ‘उर्षवाष्ट्रम् इत्’ इति का उ
४।१२। एते दुर्गतिश्च — ‘पशु वान्ती । वतीति उष्ट्रः कर्ममः । कर्म मूलमस्तस्य उभयवारणं मियावना
त्यर्थं च’ । इत्याह । १ का उ घ २।१९। ११ मीनात्पदीन् मयः । ‘मीम् हिवायाम्’ । पचापय ।
इति वा । १२ शृङ्गलक्षिकः कन्धनं कर्ममे पा घ ५।१७९। इति कन् । येन शृङ्गलक्षक इति वापु ।
‘तु तु शृङ्गलक्षकः काठमेव ग्रात्याहमन्थैः । इति अमि धि । १३ “कुम्भकुम्भिमीमान्” श्वान्त्पलद्धारैपु’
पा घ ४।२।९१। इति श्वाने वकन् । १४ त्रिपया रत्नवा विवर्तीति विमर्ः सुवचः । विदवा शरीरं
वातीत्यपि सम्भवति ।

पति रक्षति विहाय । प्रामाण्यां शास्त्राणां प्रामाण्याद्भूत । कुक् शब्दं करोतीति कुक्कुरः । कुक् शब्दे । कुक्कुरश्च । रात्रीं चामर्षिं रात्रिजागरः । लेखः । पुष्कणः । भयणः । मृगणः । शास्त्राद्भूत ।

इमं चाष्टापदं स्वर्णं कनकमर्जुनकाञ्चनम् ।

सुवर्णं हिरण्यं भर्मं जातरूपं च हाटकम् ॥ ६३ ॥

तपनीयं कलाघौर्तं कार्तम्यरश्मिलोद्भवम् ।

पञ्चदश स्वर्णं । द्वितीति कर्षतेऽनेन हेमन् । नान्तम् । अन्त इमं च । अस्तु कोट्युपपत्तिं प्रति दास्य अष्टापदम् । “अथना संशयान्” इति शेषः । शोभनी कर्षोऽस्य स्वर्णम् । उकारलोपः । अथवा तमासे कर्षस्व वा बहोपमाद्भूः । यथा पद्मार्जो मन्त्रः । कनति गीयते कनकम् । ‘कनिचनिम्बामकः’ । कनी दीतिनास्तिगतिषु । अर्षं स्वर्षं अर्षने । अर्षतीत्यर्जुनम् । ‘अर्षकृत्पुत्रपति’ शर्षीर्षिभ्य उनाः । अर्षति शोभां बन्धति काञ्चनम् । शोभनी कर्षो बलं सुवर्णम् । उभयम् । पुर्वं विहिते हिरण्यम् । अथवा कोहाक् स्वर्णो । शीपने हिरण्यम् । हो हिरण्यं अथवा प्रथमो भवति हिरण्येश्वरश्च । अथपि कर्षते नान्तम् भर्मन् । अन्तं च भर्मम् । वार्तं रत्नं बलं जातरूपम् । इति । तथा च कश्चित्कवेः— ‘असङ्गस्यहोऽपि जातरूपस्यह ।’ इति हाटकम् । इदं दीर्घं । अग्निना तप्यते तपनीयम् । कला वाचति गच्छति कलाघौर्तम् । कृतवराहरे भव कार्तम्यरश्मिः । शिखायाः पाशापाटुद्भवो यस्य शिलोद्भवम् । शतकुम्भम् । गात्रे भव । कम्बुम् । चामीकम् । महारक्तम् । कनकम् । कम्बम् । कम्बुनरम् । कल्याणम् । गिरिक । अन्तपुत्रश्च ।

रूप्यं रजतं गुल्फिका-

त्रयो रूप्ये । रूप्यते कना मुप्यतेऽनेन रूप्यम् । कन रक्षति रजतम् । रूप्यत हेमा रक्तं वा । गुह रक्षायाम् । गुहति रक्षति रूप्यत रूप्यशाद् गुल्फिका । गुल्फिका च । कलावातम् । वात् । सिन्धुम् । पूर्वर्षम् । कर्षणम् । रक्षेत् ।

गुल्फियं मौक्तिकं तथा ॥ ६४ ॥

हो मौक्तिकं । गुल्फिया कलादिबानोपकरणव्यवहारविशेषाद्वातम् गुल्फिकम् । मुक्तानां समूहो मौक्तिकम् । त्पूर्वर्षे रक्षन् ।

विषं वस्तु वसु द्रव्यं स्वार्थं गं द्रविष्यं धनम्-

कस्त्यन

इशं वने । विन्दति पुष्पकृतं विषम् । वाच्येन व्युत्पत्तिं विन्दतन्परकीर्तिना । ‘विन्दुं हास । विद् । विषते एव मुप्यते (एव) विषम् । निद्राका । ‘नितराविता’ शकलावमार्शभोगेयु’ किलमिति

१ कुक् इति शब्दं कुरति उच्चारयतीति कियः । एतन्मन्त्रात्कस्त्यनः । यथा कोकते उच्चारयन्मार्शभोगे कुक् । “कुक् आशाने” । शिपः । कुरति शब्दात् कुर । कुक् चात्रो कुरथेति विग्रहः । २ वा सू ३।३।२५ । ३ का उ सू ३।४ । ४ अन्तते पुष्पेर्जुनम् । ५ का उ सू २।६ । ६ का उ सू ३।३ । ७ अहलकल्पमित्यर्थः । अथवा प्रशस्तं बतं बाल्यम् । प्रशंठानां कल्पप्रथमः । ८ मुदत्तमुनिव्याजे ध्या । ९ हाटककृतप्रथमव्याद् वा हाटकम् । १० कला मुदत्तकृतिका बीजा गता वाचति गच्छति वा रक्षामिति कलाघौर्तम् । ११ रूप्यं कल्पविद्यायाम् । अन्तः । अथा अत् । १२ का सू ३।३।२५ ।

निपातः । निपातस्यैव न भवति । 'दास्व' 'च' एते नो न भवति । वसति कुक्षमनेन यस्तु । कर्मि^१ मनिबनिबतिहि-यश्च' एन्मन्नुन् प्रत्ययो भवति । वसति कुक्षमनेन वस्तु । 'पय्य' विषतिहिनिमनि ऋषीन्द्रिकन्द्रिबनिष्ठाशिम्यश्च' एस्य एकादशस्य उ प्रत्ययो भवति । द्रुष्यते गन्वते द्रुष्यम् । परं स्यति अन्तं नवति अथवा पुष्यं स्वनति स्वः^२ स्वम् । उभयम् । पुष्यकृतमिषति अयम् । गुणान् राति ३ ।

५ 'राते'ऽः । क्षीरो । द्रुवत गन्वते द्रुषियम् । एवाति भारयति धारत्य धनम् । कष्ट गती । कष्टतोत्पेयं शीतं कस्वरम् । 'कृषिपिषिपाठीशुल्बाश्रमा' च कस्वरः । शुम् । धारम् । स्वापेयम् । अक्षयम् । रिकम् । हिरम् । विभः ।

तत्पतिं प्राहुः कुबेरं चकपिकूलम् ॥ ६५ ॥

वैधवण राश्ररत्नमुत्तराश्रापतिं तथा ।

अलकानिलय श्रीढ घनपयापदायकम् ॥ ६६ ॥

एत कुबेरे । एतव पतिः तत्पतिः तं कुबेरं प्राहुः^१ वन्ति । वितपतिः । कमुपतिः । कस्तपतिः । अभ्यपति । स्वपतिः । अर्षपति । रा(रे)पतिः । द्रविषापति । घनपति । कस्वरपतिः । इत्यादिपर्यायानामानि कुबेरस्य शतमानि । कुष्ठितो वेरो देह कुम्भलायस्य उ कुबेरः । पिङ्गलोकनेकत्वादेकपिङ्गलः । विभक्तोऽप्रत्ययश्चि शिवादित्वात् । काशेरो वैधवणा । राश्रां वद्याश्रां राभा राश्रराश्रः । उत्तराश्रायां पतिः उत्तराश्रापतिः । अलका निलयो एव नत्य अलकानिलस्य । भिर्षं इत्ये श्रीढः । घनपर्यायपदायकः । घनदायकः । घनम् । विल्लावकः । विल्लः । वस्तुदावकः । वस्तुदा । इत्यदावकः । इत्यदाः । स्वदावकः । स्वदाः । ईदायकः । ईदाः । द्रविषादायकः । द्रविषारः । कस्वरदायकः । कस्वरदाः ।

राष्ट्र जनपदो निर्गो जनान्तो विषय स्मृत ॥

पय कनपदे । राजते राष्ट्रम् । तथा च सोमनीतो— 'पशुघाम्यहिरण्यसंपदा राजते शोमते इति राष्ट्रम्'^१ । बनी प्राणुभाषे । कन् । जायते अक्षिप्तमन्त्रे प्रयुज्यते । 'जातोश्' ईतो' इन् प्रत्ययः । प्रत्ययः हीर्ष । जानिरिति षतम् । अनिबन्धोश्च' इत्यः । पनि जातम् । जनवन्ति प्रजां जनमिति जना । 'अन्' पचादिभ्य 'अन्' प्रत्यय । 'कारितस्वाना' ' ' कारितक्रीप' । पर गती । पन् । कनैर्बर्णाभिम लक्ष्यौ पद्यते गन्वते प्राप्यते घाम्नापत इति जनपदः । अन् पचादेः^२ अन् प्रत्ययः । कनपद इति जातः । तथा च सोमनीतो— 'अनस्य वणाभमजसुष्यस्य द्रव्यात्वत्तेषां स्वानमिति जनपदः' । निर्गन्वते अग्निपिषि विषय' । निर्गो^३ ईरोऽचिकरया इति इत्यवः । ईराष्ट्रमन्त्र— निर्गन्वते अग्निपिषि निर्गन्वी गिरि । बनावामन्ता निकटं जतामन्तः । पितृ कन्वने । 'आत्वादे' ए ता ति क्त्वि । विपिबन्धि अग्निपिषि विषय । पुषि संज्ञायां 'पा' नाम्य गुणः । 'ए' अन् तथा । च सोमनीतो— विपिबन्धुमन्त्रानेन स्वामिनः सद्यनि गमात् नृबाजिनरथ सिनोति बन्नातीति विषयः ।

पू पुरा नगर श्वष पञ्चन पुष्टभेदनम् ॥ ६७ ॥

१ का वू ४।६।१ १। २ का उ वू १।२०।३ का उ वू १।५। ४ षोऽन्त कर्मणि । कस्तपयः । 'मन शम्भे' इत्यप्रथमो वा । ५ का उ वू २।२। ६ का वू ४।३।१०। ७ जन षु १।८ का वू ३।२।१ । ८ का वू ३।३।१०। ९ का वू ४।२।१८। १० का वू ३।३।१०। ११ का वू ३।३।१०। १२ पञ्चने क्विपानाम पुषि संज्ञायां पा इति कर्मणि कस्तपया पप्रत्ययो वा वसत्यः । न तु पचादप्य् उच्य कर्त्तरि विधानात् । १३ जन षु ५। १४ दे श ५।१।१३। १५ का वू ३।८।२। १६ का वू ४।५।१६। १७ का वू ४।५। १८ का वू ३।२।२। १९ जन षु ३।

पद् (पञ्च) नगरे । प पालनपुरवायोः । पू । ऋ । पृषादीन्नेचशिक्षा पूः । "किन्नाचिपुधुर्धि
 नाचाम्" ऋप् । "उरोष्ठपौपपत्स च उर् । पुर् वातम् । "नामिनीवोर० पूः । वेक्षोप" । षि ।
 'अङ्गनाच" विलोपः । "रेष्ठौषिर्बर्नीयाः रत्न विलोपः । पूः । अस्तः । पुर् पुटी च । इदन्तोऽपि
 पुरिः । नगाः सन्त्यत्र ग्राम्बन्ध नस्त्वन्न वा मगरम् । ङ्गिनि । नगरी च । नानादिर्वैशागतानां
 वशिर्वा भाष्यानि पठन्त्यत्र पठनम् । पठन् च । अत्र स्मृतिभेः—

"पठन् अङ्गनाच्यं घोटकैर्नौमिरेव वा ।
 नौमिरेव तु यद्गन्ध पठन् तत्रचष्टते ॥"

पुटा वावा भिष्यतेऽत्र पुटमेव नम् । क्त्विनि । अषिडानम् । निगम् । द्रष्टु । स्वानीयम् ।

वक्ष्य लपनमास्यं च घटन मुखमाननम् ।

पम्पुक्ते । वच परिमापये । ठन्वतेऽनेन वक्ष्यम् । 'खर्वाद्यन्वा' इत् । र्त् लप् कल्प अनावां १०
 वाधि । सन्वतेऽनेन खपतम् । बुद् । अत्यतेऽभिधास्यम् । ' इत्यङ्गुटो बुद्ध निधि अच् । वद अनावां
 वाधि । उच्यतेऽनेन वदम् । महति मुञ्चति स्तोत्रेण वा मुञ्चम् । लम्बते वा मुञ्चम् । उषादी । मुञ्च
 बुद्ध लक्ष्म्याम् । पौराधिक्यवादिन् । मुञ्चति अभावितापनेनेति मुञ्चम् । मुञ्चेः '३ ऋ मुञ्चिन्' ।
 मुञ्चः कः प्रपद्यो भवति चातीमुञ्चिन् । इकर उधारसार्थः । आ अमिति श्चक्षिपनेन आसनम् । मुञ्चम् ।

भवणं भोत्र भवश्चापि कर्णं चैव भ्रुतिं विदुः ॥ ६८ ॥

पद् ऋवै । भूयतेऽनेन अयजम् । भूयतेऽनेन भोत्रम् । क्त्विन् । गृहोत्पनेन तान्तम् अयः ।
 क्त्विनि । करोति शम्भवादानं कर्णम् । कर्णंयति वा कर्णः । किञ्च कर्णमिरे । भूयतेऽनवा भ्रुतिः ।
 भ्रितम् । विदुः क्यवन्ति ।

इरासि चसुर्नयन इग्निर्त्रं विस्रोधनम् ।

अत नैषे । इरवतेऽनया इक् । तासम्पान्तः । अन्वाप्ता । अरजुते प्पान्तोत्पनेनात्मा पटाग्नि २०
 पानिति अस्ति । "अशिकुपिम्वा तिक्" । अप्य इरवाकृत तान्तम् अन्तुः । " अयवविचक्षिषीव
 तमिचनिन्व उक्" । नीवते वित्त विपयेषु अनेन नयनम् । इरवते प्रकटायांनया इग्निः । नीवतेऽनेन
 इरवं लेखम् । उभयम् । विरोधैव लोभ्यते अन्तौस्वतेऽनेन विस्रोधनम् । अक्त्वि । तारका । न्योति ।

कृत्वासं केकरापाङ्गं विभ्रमस्तस्य वीकृतम् ॥ ६९ ॥

तत्र नेत्रस्य वीकृते पद् (पञ्च) । कटवतीति 'कृत्वासम् । उभयम् । क (शिरसि) २५

१ का ए ४१११०१ २ का ए १३५१४१ । अङ्कमस्वीत्यम् । ३ का ए ११८१२४ इति
 दीर्घ । ४ का ए ४१११०४ ५ का ए २१११४८ ६ का ए २१११६१ ७ 'नगपन्तु
 पाण्डुस्यभेति' पा ए ४१२११ ८ वार्तिकेन मत्वपीवो रा । अथवा मर्त् चादौरीत्यादिभ्योऽप्रत्ययः
 शस्य स्ये च । ८ का उ ए ४११११९ आस्यस्वतेऽन्वादिना प्रत्ययभेति । १० 'इत्यङ्गुटो-
 म्वापि इति का एवम् । ४१५ । २१ वीकीकृतमवाभुत्सङ्गन्तु पाणिनीयम् ११११९१ । ११ लम्बतेऽ
 कदापि कशादिष्वनेनेत्यपि । 'रिच्छनेमुद्' षोदासः उ अच् स च ङिच् मुडागमभेत्स्यच्च । मुदि
 तानि खानोत्रिवाच्यत्वेत्क' इति खीर त्या । १२ का० उ ए १११५१ १३ वीकीकृतमिह करोतेरीत्या
 दिभ्यो अन्ववा । कीर्ति शम्भवादानं चिप्यते कीर्ति शम्भोऽस्तिमिति वा क्रिति शरीरे मुञ्चमिति वा ।
 १४ का उ ए ११५०१ १५ का उ ए २१४५१ १६ अट्टितिशिर्षिऽङ्गिदी वच अट्ट गण्यमसति
 अन्तोति वैति रामाश्रमः । अट्ट आदिपतीति खीरत्वा ।

अपि चिषेपं चिपतीति (कर्णतोति) केकरः । न पाति कामिनमपाङ्ग १ । उमरम् । पित्रमर्षं पित्रमम् । विद्वत्स्य भावो विद्वत्तम् ।

दन्तवासोऽधरोऽप्योष्ठे घर्णितो दक्षनच्छब्दः ।

५ वा । श्रीशान्ता । शरितावधरी वा । अधरोऽप्योष्ठमात्रे वर्तते । उपति परति उपस्तीद्वयमोष्ठः । उप्यते तीक्ष्णशारेद्यौष्टी वा । घर्णितः कथितः । दशनस्य धरो २ दशनच्छब्दः ।

शिरोधरो गलो ग्रीवा कण्ठश्च घमनी घम ॥ १०० ॥

१० पद् गणे । शिरो वर्ति शिरोधरः । शिरोधरा च । गलति भोजनं गल्ल । पद्याति गिरति वा ग्रीवा । उद्यादीं गुण्ये गद्यातीति ग्रीवा । शर्बविद्याग्रीवाः ५ एते कण्ठपान्ता निपात्यन्ते । कथति कथ्ठः । कथ्ठः ५ अस्मात्कृत्सवी भवति । घमः लौबो बल्ल । घमतेऽनवा घमतिः । इदन्त । शिवामी । घमनी । घमति घमः । मन्वा । क्वपरा ।

दोर्दोपा च सुखो बाहु-

१५ अन्धरो बाही । दम्बते विनीयते पराज्नेन द्योः । शन्तम् । 'दमेर्दोम् । द्युवति शुभ वा इति द्योपा । आदन्त । क्वययः । म क्यवते । युक्तेज्ज्नेन भुञ्ज । निपातनात् क्वयोः क्वत्स्य न भवति । नामिन इत्त शुद्धम न भवति । सुबन्तुष्वी पाठितोगवो इत्स्मिन्घर्षे निपातनात् । भुञ्जा च । बहलनेनेति बाहुः । 'बहिल्लि' (रहि) तस्मि पश्चिम् उच् । प्रकीर्ण ।

पाभिर्इस्त करस्तथा ।

२० मयो इस्ते । पद्यावते म्बहरत्सनेन पाभिः । 'अभिरम्भतिरशिपश्चिम् एव इत् भवति । इते इस्तः । ' इवेत् । कीर्ते क्षिप्यतेज्नेन क्वत् । शयः । शम् १ इत्यन्तः । पञ्चशाखाः ।

प्राहुर्बाहुधिरौऽसदच-

बाहुशिरसो अस्त इति तथा प्राहुः क्वपन्ति । अस्तते भारेद्योस्त २ । क्वम्बध ।

इस्तशाखा कराङ्गुलिः ॥ १०१ ॥

२५ श्री अद्गुल्याय । इत्यस्य शाखा इव इस्तशाखा । आङ्गुलानादिर्कर्मार्थि अङ्गुलि गच्छति अङ्गुलम् । जीवन्तीवे । अङ्गुली । कराङ्गुलिः १ कराङ्गुलिः । एवमङ्गुलम् । अङ्गुली ।

नासा घ्राणम्-

१ अपाङ्गुलीयपाङ्गु । 'अपि गतो' । अच् । २ 'अर्धो भवा' इत्यारम्भे वर्तते इत्यर्धे क्षीर स्वामिमाध्यमभ्रौद्वितम् । तत्राभ्ये श्रीशारतो ष्ट इत्यमरोऽङ्गुलपदस्य प्नाक्याहपन् 'श्रीशान्ता शरितावधरी इति वाक्यमन्वामुवरणेनाश्रीदृश्वमप्रत्ययमिति विभेकः । ३ इत्यास्तशाख्येऽनेनेति उदाशयः । पु ति लंकारां यः । ४ वा उ व् २।२।१ का उ न् १।४।१ इ का उ व् २।१।१।७ वा व् ४।१।१।८ का उ व् १।१ । ९ वा उ व् ४।१।१ का उ व् ४।१।१ नुमुवा इत्यमिदमित्युभ्यस्ता इति पूर्णं द्बन्तम् । ११ अत्र प्रमाद्यम्— 'पाठि' शयः शमी इत्त' इत्यमरमाता । 'पञ्चशाखा शय शम् इति अभि क्षि । १२ अस्तते उमाहम्बत इत्यर्थाः । 'अत्त लम् बाते । अत्त पानुभुवादिः । बडा 'अम् गर्ता' अमति अम्बते वा अत्त । श्रीशारिक क्वत्स्यव । १३ अद्गुल इत्यत्र अङ्गुल वा उ व् १।४।८ इत्यङ्गुलातोऽङ्गुलस्यव । अङ्गुलिशब्दे तु अद्बन्तिन्वाङ्गुलीति वा उ ३।१ । इत्यङ्गुलिः शयः । धियमी । अद्गुली इत्यरि ।

ह्री नासिकायाम् । नास्ये शब्दावते नास्यतेऽनवा वा नासा^१ । नेरना^२ च । क्लिप्तवनेन प्राण्यम् । इषीवे । सिद्धनी । नासिका । बीषा ।

उरो वक्षः

ह्री मुक्काम्ये । अयंते गन्वते उरः^३ । * 'अरुंस्व' अस्मादहनुःश्रवणो भवति अस्व उरावैशो भवति । अ गतौ । अस्व पाठो प्रबोधा । वक्षि बायी वक्षः । 'वपेः' वीऽन्तश्च' अस्मादहनः प्रवर्णो भवति वीऽन्ता । अकार उष्णारथायः । 'ववर्गस्व कि' । निमिषादि' ह्यादिना पत्व च ।

कुक्षि स्यामठरीदरम् ।

प्रयो बठरे । कुपति (कुप्याति) निष्कर्त्स्वाराह' कुक्षिः । पुनि । कुक्षम् । इषीवे । अयति अठरम् । अयवा कठ वीषोऽन् बाहु । उषादौ निपातोऽस्ति । उनति क्लेदवत्साराहमुदरम् । एते उभयम् । पिषण्डम् । हुन्दम् ।

स्तनः पयोधरकुक्षी वक्षोश्च इति षण्ठित ॥ १०२ ॥

पत्वारः कुक्षी । क्लृप्त बाहोः स्तनः । पयो धरतीति पयोधर' । कौचते स्त्री मृप मानेऽन् कुप्यते मरुनिन आकुलीक्रियते वा कुष्णः । पूषध । वक्षि बायी वक्षोश्चः । उरसिद्धः । वक्षोश्चः ।

कटिर्नितम्बं श्रोणी च जघन-

चत्वारः कट्याम् । कटपते वस्त्रैरापह्यापते कटि' । क्वी । क्वः । क्वम् । नितगमतिशयेन तन्वते अरुंस्व' नितम्ब । आधीवते कामिभिः श्रोत्र । नराशिलादीम् श्रोणी । 'वन्तोऽपि भाशिः' । शिवामी । शोषी । इत्ति चित्तमिति जघनम् । 'इनेर्बभम्' । पकारात् काशीपदम् । कलत्रम् । कलत्रम् । जघनम् । ककुपती । धारोहः । कटीरम् । विक्रस्थानकम् । स्थानपदाभावेऽपि विक्रम् । कलत्रं च ।

जानु जुहुं च ।

ह्री वावा । गन्धु वावते जानुः^४ । 'कुत्रापादिमित्त्वदिताम्पूहवनिजनिषरिचठिम्ब उष्' । वहाति 'जहुः । अटीनान् । बह्वा ० ।

चलन चरण पादं क्रमोऽहिष पद विदु' ॥ १०३ ॥

१ 'शास्त्र शब्दे । नात् प्रात् । अच् पन् वा । २ नेरमतेऽन्त्र वमुपहण्यम् । ३ अयंते गन्वते बहोनेति शेष । अयवा उरश्च वक्षार्यः क्ववकारिः । उरस्यति वक्षमावते उरः । क्विप् । ४ का उ सू ४।६।५ का उम् ४।६।२। ६ का सू ३।६।५। चवर्गस्व किरतवर्णे । इति पूर्वो सूत्रम् । ७ का सू १।८।२५। 'निमिषात्प्रववक्षिकारागमरय त' पत्वम्' इति पूर्वो सूत्रम् । = "कुप निष्कर्त्से" 'अशिकुपिन्मा ठिक्' का उ सू ६।५।८ "स्तन गती शब्दे स्वन्ति क्वचपति वीषनोडकम् । स्वन्वते क्वन्ति जानुवैर्वा स्तन इत्यन्त्र । १ वरतीति चरः । पचापच् । पववी चर पवोधर । इति वीष्णम् । टीकोक्तविषये द्व कर्मन्वयि पवोधार इति स्यात् । ११ तम्ब गतौ" नितम्बति क्वन्तीति निम्बं तन्वते क्रानुवै । निम्बं ताम्बति सुल्लम्बवर्त्तिना नितम्ब इति रामाभम् । १२ भूयते किङ्किणिष्णनिरत्र "भु मयञ्च" वीषाणिङी षिः । इति हेमचन्द्र । शौद्यु चर्पाते" शौद्यति विविधशरीरावपवै तद्वापीमवतीति शौद्यि । चर्चवान्म्य इन् "ति रामाभम् । १३ का उ सू २।१७। १४ वावतेऽनेनापुष्पानदि जानुरिति हेमचन्द्रः । १५ का उ सू २।१। २६ नात्र कोपात्स्वप्मात्कमुपहण्यम् । १७ वचपि जानोरव माण्डुकात् बह्वा बह्वावचनयोः धम्बिर्वाजुरिति मेघ । तथापि बह्वावामीनाद् मेरादिवचनवा बाहु पवर्षी बह्वाहुप्यम् । तत्र मेदल्लु न विस्मयन्तः ।

धेनुकलामे शिशुवस्त्रे स्फीकृत^१ स्फीराभ्यः कल्पते ।

स्तमित जलद तथा ॥ १०५ ॥

जलाये मेने मेवानां शब्दे स्तमितं कल्पते । सत्यते स्तमितम् ।

स्वन्दने चीत्कृतं मन्त्रे मट च हुङ्कृत तथा ।

स्वन्दने स्वशब्दे चीत्कृतं कल्पते । मन्त्रे मटे च हुङ्कृतं कल्पते । हु मन्त्रे हु परिपठने

हु कर्त्वं हुङ्कृतं ते भयादौ राजवीज्यम् । कुलमे हु निलना । अनिच्छावाम हु हु मुञ्च ।

सीत्कृतं मणितं फामे—

कामे कर्त्तव्ययोग्यताशब्दे सीत्कृतं मणितम् । सीत्कृत्यते चीत्कृतम् । मण्यते मणितम् ।

खन्कृतं शृङ्खलायुधे ॥ १०६ ॥

शृङ्खलायुधे खन्कृतम् । मुगमम् ।

मञ्जीरफ तुलाकोटिर्नूपुरं—

मयः कोणां चरणाभरणं । मञ्जि वीजम् । मञ्ज्याकार्यति चित्तं मञ्जीरम् । मयया मम्बु मपुर मीरवधि मञ्जीरम् । तुलाकोटेर्बहुला कोटिरिव तुलाकोटिः । कोमति नीतीति नूपुरम्^२ । शिञ्जिनी । पादकटकम् । हृषकम् । पदाङ्गदम् । कक्षापो नानामै ।

तत्र ससृतम् ।

तत्र तस्मिन् मञ्जीरफ तन्त्रे ससृतं कल्पते ।

झाङ्कृतं घाय मरुति—

मरुति बावो तन्त्रे झाङ्कृतं कल्पते ।

झेङ्कृतं क्रीडास्यो ॥ १०७ ॥

क्रीडाम इत्यथ क्रीडास्यो तयोः क्रीडास्योः झेङ्कृतस्यो मठः कथितः । तथा च नामरत्निह —

‘निपाद्यपमगान्धारपद्ममप्यमपैवता ।

पन्चमश्लेषमी सप्त छन्द्रीकण्ठोत्थिताः स्वराः ॥

तथा च भरतनाटके—

‘‘पद्मं मय्यां भुवते गावस्त्वपममापिय ।

आम्बाबिकं तु गान्धारं क्रीडां कल्पति मप्यमम् ॥

पुष्पसाधारण्ये कस्य पिकः कृञ्जति पञ्चमम् ।

येवतं हृषते बावो निपाद्यं वृ हते गजः ॥

मासाकण्ठमुरस्तास्तुत्रिहादन्त्यांश्च संशृण्वन् ।

पद्म्यं संभायते यस्मात्तस्मात्पद्म इति स्मृतं ॥

१ नभप्रवृत्ता गौ धनु शिशुवस्त्रे इतिशाबदः कलमल्लयो शब्दः स्फीकृतमुच्यते इति शब्दार्थः । टीकाकारस्य तु गौवस्त्रशब्दे स्फीकृतमित्येव प्रतिभाति । अत्र क्रीडाशब्दप्रयोगाभावात्कवि-प्रयोगादर्शनाच्च मूलशब्दार्थांस्तुल्यवचनेन शरदम् । २ दुर्गा दुर्गवा वा क्रीडवति । कुत्र प्रस्थापने पुरादिः । अत्र इः । वडा दुर्गाकारः काश्चिदमस्त्विति रामायणम् । ३ मुक्ता मूषते वा नृः । ए सृजने । म्पि । मुक्ति पुरति नूपुरम् । पुर अमगमने । इत्युपवर्ति कः । ४ शब्दमेवमपद्माद् यस्मात्तरोक्तमन्त्रशब्दमर्त् स्वत्वेर्त्त च.इ । ५ अम को १।०।१ । ६ ‘‘पद्मं’’ इत्यारम्भे ‘‘इति स्मृतः’’ इत्यन्तः तथा च भरतनाटके इत्येव टीकाप्रामुख्यतः पाठः ‘निपाद्यपमगान्धार’ — इति धीरस्वामिभाष्येऽपि उच्यते ।

प्रतीत सस्तुतं लम्ब हटं परिधित स्मृतम् ।

५६ स्तुते । प्रतीयते प्रतीतम् । स्तुञ् स्तुञी । स्तु । "भ्रातृदेशे ष षा । स्तुः सम्पूर्व । सम्पूर्वकारेण स्तुतं स्त सस्तुतम् । लम्बते स्म लम्बम् । परिधीयते स्म परिधितम् । स्तयति स्म स्मृतम् ।

संस्पृष्टं दशमीस्य च परसु च मृतं विदुः ॥ १०८ ॥

५ चत्वारो मृते । वृत्तिहते स्म संस्पृष्टः । सम्पूर्वकस्तिवृत्तिः । दशमी तिष्ठतीति दश-
मीस्यः । तथा च—

"प्रथमे ज्ञायते चिन्ता द्वितीये द्रष्टुमिच्छति ।

तृतीये वीचनि-रवासस्यदुर्गे भवति श्वरम् ॥

पञ्चमे दशमे गात्र पप्ते मुक्तं न रोचते ।

सप्तमे स्थान्महामूर्च्छा अमत्तत्वमपाहृते ॥

नवमे प्राणसन्धेहो दशमे मुक्यतेऽसुभिः ।

पतेर्वर्गैः समाम्नन्तो जीवस्तत्त्वं न पश्यति ॥

१० दशानां पृथगी दशमी तत्र तिष्ठतीति वा दशमीस्यः । परागता षतबोऽत्र परास्तुः । भिद्यते स्म
मृतं विदुः कथयति ।

१५ खेदो द्वेषोऽप्यमर्षश्च कृत्स्नोपक्रोधमन्यथ ।

१५ अम क्रोधे । खिद परिभाते । द्वारौ खिन्ति । दैन्ये श्वादिपाठात् क्रिभ्ये (लः खेदः)

'खेदः । भावे षञ् प्रत्ययः । द्विप् अघोषो अघादौ । द्वेषश्च द्वेषेण । मृथ तितिक्षावाम । क्रुरौ । शक

मृथ धमावाम् । दिवावा विमायित् । मृथ तद्वन् भारी परस्मैपदी । अमर्षश्च अमर्षः । कृप कुप स्य रोपे ।

२० रोपय कृत् । सपदाशित्वाद्भवे विषयः । क्रोधनं क्रोपः । क्रोधनं क्रोषः । मन हाने । मन्वते मन्वुः ।

"अनिमनिदक्ति-भो पु" । एभ्यो बुभ्रवी भवति । उपाशित्वाघोरमादिशो न भवति ।

हर्षं प्रमोदं प्रमदो मुक्तोपानन्दमुत्सवः ॥१०६॥

अम हर्षे । हर्षं हर्षः । प्रहर्षश्च । प्रमोदनं प्रमोदः । मदी हर्षे । प्रमदनं प्रमदः । "प्रमदः

प्रथमीर्हर्षे प्रथमीक्यपदमीमिरेरु भवति हर्षार्थे । मोदनं मुक्त्वात् खिनाम् । प्रम द्वौ । तीपयं

तीप । आनन्दनम् आनन्दः । पु वि । दुनादि समुदा । उत्कथनम् उत्सवः । प्रीतिः । उत्कर्षः । उत्सवः ।

२५ कृपाञ्जुकम्पानुक्रोशोऽहन्तोक्तिः कृशा दया ।

२५ पत्त्वावाम् । अय कृपावाम् । क्यर्षं कृपा । "वाञ्जुकम्पिदादि-भ्योऽह्" इत्यञ् । "क्योः

तन्प्रसारणम्" इति परसूत्रेणाह उभ्यतार्षं च । स्वमते अय कृपानाम् इति श्रापकत् उभ्यतारणम् ।

"स्त्रिवामावा । अञ्जुकम्पनमनुकम्प्या । अञ्जुक्रोशस्त्वनेन अञ्जुक्रोशः । पुषि । न हन्तीति अहन्तोक्तिः ।

करोति विषादं चिच किन्ति वा कदवा । उवादी हुक्त्वात् अह्ये । भिद्यते कदवा । "अह्येह्यप्रमिवात्

१ द्वेषपयि खेदपात्रिभन्तीवः । अहपदार्थायल्लु "शोकं ह्यह् शीघ्रं खेदः" इति

अभि चि । क्रोधपदार्थायल्लु — "क्रोशोवाऽमपरोक्षप्रतिषा इत्युभौ स्त्रिवी" इत्यमरः । २ मन्वते त्वा

स्वत्वेति शेषः । ३ वा उ छ ४।१।४ का छ ४।१।७।५ उद्वच्यस्त्वौत्वाद्ये पनावाम्—

'उद्वचो वाद्वचिद्व मदी च अन्वपावक' । इति मेदि को वा ष ३२ लौ । ६ का छ

४।१।८। ७ 'क्योः उभ्यतार्षं च' वा गय छ ३।१।१ ४।८ कद्वचमत्तम स्वमतम् । पाणिन्यादि

सूत्रं परमतम् । ९ का उ छ २।१ ।

विन्म उन एम्प उनः मन्वयो भवति । दहनं द्या । दह इत्यगतिविद्यादानेषु । भिदाद्यद् ।

श्रेष्ठयो विपणा प्रज्ञा मनीषा धीस्तथाऽऽद्य ॥ ११० ॥

पद् बुद्धौ । श इत्यव्ययम् । मोहः । त मुष्काति शमवति इति शोभुयो^१ । शुष्कौत्वना
विपणा^२ । प्रज्ञानं प्रज्ञा^३ । मनुते जानात्वना मनीषा । मनत इषा मनीषा वा । 'इल'हाङ्गल्यो
रीये मनत्स्य इत्यनेन अन्वयत्वादेर्लोपः । अन् सलोपश्च । अकाराधिकारात्सोकोपश्चाप्यत्र सन्नायः । ५
शुष्कौ चिन्तानाम् । प्मानं धीः । सम्प्रदाशित्वाङ्गात्के क्त्^४ । प्मानो सम्प्रसारणम् 'अनेनेक सम्प्रसारण
दीर्घत्वं च । प्र ति । 'रेकलोर्वित्वनोश्च । आशेते तिप्ति लर्बमश्राशयः । तथा-प्रेक्षा । प्रतिभा ।
बुद्धिः । मति । मेधा । सकृत् । संविति । उपलब्धि ।

प्राज्ञमेधाविनौ विद्वानमिरूपो विचक्षणः ।

पण्डित सूरिराचार्या याम्नी नैयायिकः स्मृत ॥ १११ ॥

इश विदुषि । प्रज्ञानात् ति प्रज्ञ । प्रज्ञाशित्वाद्यद् प्राज्ञः । मन्वात्स्वय मेधावी । माया
मेधासन्नो विन्' आधिकारात्सर्वे एषेते विभ पवा विभायिता । शेषेभ्यो मनुषिभ्यत् । मस्तिमान् । बुद्धिमान् ।
विन् शमे । विद् । वेदि जानातीति विद्वान् । बतमाने श । शतृद् । ' 'अन्वि अन्वि' । 'वेते
'शतुर्बन्तु' । शतृद् स्वाने बन्तु । वपादेशात्सङ्घटनन्ति इति बधनात् बवो शतृद्बन्तानेन सार्धंवात्
कत्वात् 'अर्त्तोश्च' 'पपेतेकस्वरत्वात्तमिहवर्दी अनेनैकस्वरत्वात्प्यत इह न भवति । विद्वन् संज्ञातम् । १५
'सि । ' सम्प्रसारणोपचाना दीर्घ । विदुषो-पि । अमिगतं रूप येनामिहयः । रूपं निष्ठा ।

'कोविद्यानां स्वरो रूपं नारीरूपं पतिप्रदा ।

विद्या रूपं कुरूपाणां क्षमा रूपं तपस्विनाम् ।'

अथ वागुक्तिपूवः । विविध पन्थ विचक्षण्यः । नन्दादेडु । योजनः । 'रपु शत्वम् ।
विचक्षण्यो विद्वान् इत्यनेन विचक्षण इति नियतः । निघातत्व कर्त्तं स्वार्थेण न भवति । पण्डा बुद्धि । २०
पण्डा वक्राताऽस्तेति पण्डितः । 'तारकितारिरशनालवातेऽयं इत्यन् । " इवर्थाप्य आचार
लोपा । ति । रेक । पूरु प्राक्षिगर्भमिषोपने । घते बुद्धि सृष्टि । भूस्वमित्थि क्रि एम्प क्रिस्व
यो भवति । को सम्पदर्थ । ' आचर्यते आचारायः । 'अरेराकि वागुरी । तथा शोचम्- 'इत्
नमिनीतिशास्त्रे -

"पञ्चाधाररतो नित्यं मूढाचारविहर्मीः ।

अतुर्बशास्य सङ्घस्य य स आचाराय इत्यर्थे ॥"

१ शेते इति शेषोः । विष् । तम्पुष्पातीति, मूळविभुवारित्वात्क । गारादिर्दीपु ।
शमे कर्त्ता एवाऽन्वावलोपे उगितभेति दीपि शशाभेति शेमुषीति की स्वा । 'विप शम्भे' ।
इवदीति । धी स्वा । ३ मन्वतेऽनकेपम्पव । ४ का ऋ पूर्वा २८ सू । ५ प्मापते-नवा
धीतिवम्पव । ६ 'तन्वशाम्भि विष् का ऋ उ ८ ५ सू । का ऋ मा १५८ सू ।
- का ऋ २।१।६३। ८ का सू । १।१।१। अथ तुर्गुति । ९ 'अनेमाने शतृन्तशाव
प्रथमेवाधिकार्यामम्भितयोः । का सू ४।१।२। ११ 'अन्विचर्या' वगति का सू १।२।
३। १ 'अशेते'पिचररत्स्य का सू १।१।१२। १३ 'शतुर्बन्तु' । का सू ४।१।४।
१४ का सू ४।१।४। १५ का सू । १०।१।१६ का सू २।१।४। १७ का ऋ सू
५ ८ । १८ का सू २।१।४। १९ का उ सू ३।५। २० का सू ४।२।१८ । २१ मीतिगा
१५ रथा ।

प्रशस्ता वागस्तन्व वाग्मी । न्वाये विचारे त्रिभुक्तौ नैपार्थिकः । पीठः । सम्भवार्थः ।
विपश्चित् । वृक्षः । आनरूपः । वृन् । मनीषी । ह । दोषह । कोविदः । प्रहृष्टः । सुधीः । हृष्टी । वृष्टिः ।
कविः । अन्तः । विशारदः । संव्यासान् । मठिमान् ।

पाणिपयो बुध सम्य सद संसत्समोषित ।

५ पद् वभापुरुषे । परिपदि वभावां नव पाणिपयः । वृष् । बुध अथगमने । बोधतीति
बुधः । वभावां वापुः सम्यः । कुशलो बोधो शिष्य सापुदभ्यते । सर्वति उचितो योग्य सत्त्वचितः ।
ससत्त्वचितः समोषितः । वभाब्ध् । वभास्वारः । वामाधिकः ।

परिपत्तमाश्वानपती—

१ नव वभावाम् । परिपत्तन्वत्सवां परिपत् । वृष भाम्यत्वां वभा । आत्मन्वात्स्वीयतेऽ
मिन् आस्थामम् ।

(^१अधिपति राज्ञः)पतिः—आस्थानं तथा ^२स्वादिपर्यायनामतोऽधिपति पतिरित्वादिपर्याय
शब्देषु सखु राज्ञो नामानि भवन्ति । परिपत्तपति । परिपत्तपतिः । वभाधिपति । वभापति । आस्था
नाधिपति । आस्थानपति ।

राजसूयो नृपकृत् ॥ ११२ ॥

१५ मन्वत्सेत्वरप्रजावां (प्रजाये) द्वौ । पुत्रु अधिपथे । पु । ^३वात्वा व । राजन्पुत्रः
पञ्चा तोल्यो राज्ञा स्वते वा वस्मिन्निति राजसूय । ^४राजसूवरथ । ^५पुण्यप्रवपान्तो निपातः ।
रुपायां गतां कृत् नृपकृत् । वभा च त्पुत्रो—

‘गोसधे सुरभि इत्याद्राजसूये तु भुमुञ्जम् ।
अश्वमेधे ह्यर्वा इत्यात् पौण्डरीके च इत्तनम् ॥’

विष्टर मन्त्रिक्रापीठमासन्दीमासन विन्दु ।

२० पडावधे । स्तुन् आश्वदावने । विन्दुः । विष्टरं विष्टरः । त्वर^६वृद्धगमिप्रशाम् । कृत् ।
नाम्बन्तुका । ^७मिन्दुकाठः । वडावां तत्त्व फलम् । ^८तर्गत्य परवर्गाद्वर्गाः । मन्त्रके पार्थिते
मन्त्रिक्रा । वेठतीति पीठम् । पुत्रोदरादित्वादीर्ष । आत्मन्वात्स्वीयति विष्टरत्वामासन्दी । आस्वते

१ अथ प्रमादम् अग्नि वि ३।५। ‘विद्वान् सुधीः कविविपश्चित्तन्ववर्जाः सा प्रास्तका
कृत्विष्टरभिरूपपीठा । मेधाविश्रोविदविशारदस्त्रिदोषहाः प्राञ्जगिडतमनीषिपुत्रप्रमुखाः ॥ अन्तो
विपश्चित्तन्ववान् वन् इति । २ अधिपती राज्ञा इति प्रतीकमाभित्य आश्वमादर्शनादर्शं मूल
पदाद्य इति न अमितम् । पुत्रापरराययोर्मन्त्रे अश्वमादेशरावम्भात् पङ्कचरत्नैः स्वतन्त्रपादत्वा
भावात् अथ राजवर्षानत्वात्परत्वात् । एवं च वभाप्रहृष्टं न तद्विपते राजसूयपेश्याय-रीकावदुपि
शयवचनमित्येव युक्तं भाषि । ३ का वृ २०।१।२। ४ अ वृ ४।१।४। ५ त्पुत्रो’ इत्युक्तम् ।
परमविश्रुत रक्षाको वशस्त्रिके वा ७ क ३ रक्षो ३ उपलभ्यते । ६ का वृ ४।५।४।
७ का वृ ३।५।४। ८ या वृ २।१।१०। ९ ‘आश उपवेशने’ । अश्वपाः पा उ वृ
३।६। इति द्रष्टव्यो भवति अमागमदित्त्वं च । इत्यादौ । वभा वीठम्—‘स्वात् वेधावनमासन्दी
इति ३।२।८। अग्नि वि ।

उपविश्यते ऽरिमन्ताममम् । 'हृन्वपुरोऽन्वत्रापि च' पुद् । विदुः क्यवन्ति ।

विष्टप भुवन लोको जगत्—

पत्वारो वगति । 'विष्टन्यत्र विष्टपम्' । भूतानि मन्त्रयध्माद्रुचनम् । लोभन लोभः । गन्धर्वीश्वेवर्णैश्च जगत् । "५ सुतिमोर्दे च" सिष् । गमो रिर्चनम् । अन्वसमकारलोप । 'कवर्गस्य कवर्गः' गत्व व । अ गम् बाठम् । 'पञ्चमो । दीर्घ । '५ ममनतनगमां षी' पञ्चमलोप । ५
धात् ष् । 'बावीस्तोऽन्त पातुचन्धे वीऽन्त । शैलौप । शिः । नपु लक्षम् ।

तस्य पतिजिन ॥ ११३ ॥

तस्य भुवनस्य पतिजित् कथ्यते । अनेकभगवद्गहनम्यवनप्रायसाद्दत्त् कर्मारसीन् धवतीति जिजिः । 'इष्टयश्चिह्नपित्तो नष्ट । विष्टपतिः । अगत्पतिः । इत्यादीनि क्तिन्स्य पर्वाप्तनामानिञाठम्भानि । १०

वर्षीयान् हृषमो ज्यायान् पुष्टाय प्रजापति ।

एखाद् (फ) फार्यपो मद्वा गाँतमो नामिञोऽग्र ॥११४॥

ह्रात् हृषमे । अतिशयन दृढो वर्षीयान् । "१ मिसस्वित्स्वित्स्वीकृत्पुल्लगुञ्जदृढमदीर्घं ह्रन्तारकारां श्रयस्त्वर्गर्हिर्गर्पित्तुश्रापिहृत्वा" । हृषेण अहिहालदृष्टोक्तमेतन् भातीति 'हृषम । 'हृषिहृषित्त्वा यत्' । आम्नामभा प्रत्ययी भवति ष ष कञ् । अयमेयां मन्थे प्रहृष्टो हृष्टः प्रशान्तो वा ज्यायान् । "दृढस्य ष ष ह्य" हृष्टशब्दस्य अ्यादेशो भवति । पू पालनपूरणयो । पूराति पालकतीति पुद् । "१ इपिपुविभिदिपिनुदिपिन्स्य कुः एस्या कुपत्ययो भवति । अस्मिन्नस्मिन्न अय" । इदमाऽत्रावो यथ परमिभिः 'ततोऽया' निपात्यन्ते इति कथनात् । (आदा भव आघाः) प्रशान्तम् इन्द्रधरणेन्द्रचक्रत्वादीनां पति स्वामी प्रजापति । इय इष्टानाम् । बाह्यपते लोके पश्यताम् । तथा चार्पे महापुराण— २०

"अहृन्नाथ तद्भूर्णां रससमहया मृणाम् ।

इष्टाङ्कुरित्यभूदयो जगताममिसम्मतः ॥"

कारय अतिवते च पातीति फार्यपो । तथा च महापुराण—

'कारयमित्युच्यते तजः फार्यपस्मस्य पालनात् ।

इ इतीति मद्वा ।

१ का ए ४५५१२२ = 'अन्वस्तार मत्तिनाते' सम् का षी तथा भाष्य एवीरन्वन्थे म द् वापिनिपातुराते । ३ विष्टन्यत्रेति यमाभमः । विष्टन्यस्मिन् बोधात्रीका इति हेमचन्द्र । ४ का नू ४४५१० = । ५ का ए ३३३१३ । ६ का ए ४५५५५७ का नू ४१११५५ = का नू ४१११३ । ७ का नू ४१११३१ । शैलींती'पुत्रस्य इति पूर्णं न्यम् । १० का उ नू ३१५१३ । ११ पा नू ६४११५७ । १२ हृषेण भातीति विभेदे आर्षोऽन्वत्तमे क । भा ईमी । अति पराम्भुतमिति विभेदे 'अपिपुविभिदिपिनुदिपिन्स्य कुः एस्या कुपत्ययो भवति । अस्मिन्नस्मिन्न अय" । इय उच्यते । १३ का उ नू ३११३ । १४ हे म ४४५५१३ । १५ का उ नू ३१३ । १६ अत्र अघ्यशब्दो न लघ्यशब्दः । तेनाडी भव आघ इति पुन प्रतिपाति । १७ का नू ६५१३४३ = इष्टायाम् फा (रजारागम्) अतीति इष्टाद् । अत एवकार । तत्र म्नायमाह— अनाप्यति कति

“आत्मनि मोक्षे ज्ञाने बृष्टौ ताते च भरतराजस्य ।

ब्रह्मति गीः प्रगीता न चापरो विद्यते ब्रह्मा ॥”

अतः परो ब्रह्मा नास्ति । गौतमो योत्रोऽत्राण्ड् गौतम । अर्थे महापुराणे—

“गौः स्वर्गः स प्रकृष्टात्मा गौतमोऽभिमतः सदात्म् ।

स तस्माद्वागतो देशो गौतमश्चुटिमन्वभूत् ॥”

नामेर्भातो नामिजः । अत्रे बातोऽप्रज्ञः । अत्रहत्वात् ।

सन्मतिर्महतिर्वीरो महावीरोऽन्त्यकादयपयः ।

नाशान्वयो यर्बमानो यत्तीर्थमिह साम्प्रतम् ॥ ११५ ॥

स्वी ठमोर्जीमा मतिर्वस्व व सम्मति । महापुराणे—

“तस्सन्देहे गते ताभ्यां चरणार्थ्यां च मच्छितः ।

अस्वावि सम्मतिर्वेषो भाषीति समुदाहृतः ॥”

(महते पूर्यते इति महति) । मही पूजा मत्स्य व महति । विशिष्टाम् इन्द्राचतुर्भाषिनीम्
ईम् अन्तरङ्गी समवतरयानन्तपद्मप्रयत्नब्रह्मणा कर्त्तुं यत्नायै इति वीर । वीर इति नाम कस्माद्वाचम् ।
अन्नाभिषेके चाक्षुषरीरदर्शनादाशुद्धिञ्चैरिन्द्रस्य सामर्थ्यंभाषनार्थं पाशाङ्गुणेन मेरुधंवासनादिन्द्रेण
वीरनाम कृतम् । महोऽवासी वीरः महावीरः । तथा च इत्यप्रतिष्ठावभाष्ये—

कुमारप्रले आमरकीर्तीकायां क्रीडतः सङ्गमदेशेन विमानस्त्रयनाङ्गकस्यो (बो)द्वनार्थं
महाफटाटोपोपेतं मयानकं सर्परूपं विकृत्य बृष्टो वेष्टितः । भगवोस्तस्मान्मस्तच्छविपाद्व्यासं
कृत्वा बृष्टादुत्थीय । ततस्तेन महावीर इति नाम कृतम् । अन्त्यं कास्यं तेन पातीति अन्त्यका
दयपयः । ततः परस्तीर्थकरो नास्ति । नापीश्वरो वत्स व नाथाश्वयः । तथा च—

“चत्वारः पुरुब्रह्मणा जिन्यूवा धर्मात्मस्ते पुन

नेमिभीमुनिमुमती इच्छित्त वीरोऽत्र नाथाश्वय ॥

शेषाः सप्तदशामिष्य जिनवरा इन्वाङ्गुर्बोदूवा

मोद्यन्मोहविमारातैरुतिपुष्पाः सङ्गस्य सन्तु जियै ॥

एव तमन्ताद् अत्र परमातिशयमातं मानं केवलज्ञान यन्वातो यर्बमानः ।

‘वष्टिमागुरिरल्लोपमवाप्योरुपसर्गयोः ।

आप यैव हस्तानां यथा वाचा निरा विरा ॥”

इत्यवश्वत्सवाकारतोय । तथा अतिथि प्रवचनेदी—भगवतो हि गर्भावतामदी विषे
आदिचिनिर्मितां विशिष्टां पूजां यत्नइति स्वन् च अतिहृदयार्थिर्क इत्या यर्बमान इति नाम कृतम् । इह
अस्मिन् पञ्चमकाले यस्य तीर्थं यत्तीर्थम् साम्प्रतम् अपुना कर्तव्यं ।

सर्वज्ञो वीतरागोऽहन् क्वली धर्मवक्रसृत् ।

तीर्थङ्करस्तीर्थकरस्तीर्थकृद्विष्णुवाक्यपतिः ॥ ११६ ॥

नच विनेत्रे । डा अत्रबोधने । हा । स्वर्गज्ञः । सर्वं जानाति वेदोति सर्वज्ञ । “आतो”ऽनुप
गोत्सक अन्त्यय । किं नव्यथ मोक्षवर्त्म इति नव्यभूतवाच्यं आलोका । विशिष्टा ई सा प्रति इतः प्राती
रागो मत्स्य व वीतराग । अरिहिननाशबोधनन (स्या) भाषाव परिप्राप्तानन्तचतुर्बलस्वरुगः क्व इत्यनिर्मिता

मतिशयवतो पूषामहतीति कर्हन् । पाविष्यन्नमनस्तत्रानादिषुश्रुत्य विभूत्याप यत्येति वाऽहन् । त्रिकाल
 केवलज्ञानमस्यस्य वेदवह्नी । चिनमर्मच्छ्रुत् स्रस्वारसुक्त तीर्थकृत्प्रे निराचारतया विचारकाले गगने गच्छन्
 सर्वबीजदयासुषुप्तं रत्नमयमापुत्रविशेष विगर्ति तद्विष्णुमवतीति धर्मश्चक्रमुत् । तीर्थं ब्राह्मणशुक्राक्षं करोतीति
 तीर्थकृत् । तर्प्यं करोतीति तीर्थकृत् । दिव्यवाचाभक्ति दिव्यवापपति । तथा श्रीकृत्—

‘यस्सर्वात्महितं न बहसहितं न स्पन्वितोऽहम्
 नो वाञ्छ्याकथितं न दोषम छिनं न श्वासकुरुकर्मम् ।
 शान्तामर्षिष सम पशुगणै संकथित कथिमि
 रतश्च सप्तभिद्ः प्रनष्टयिपदः पायाद्पूर्वं वच ॥’

चैल निवसत पासश्रीरमम्बरमशुक्रम् ।

वह् बरो । चित्तवते कस्यतऽनेन सेखं चैल व । निवसत्वेन निवसत्तं विवसन क्तं च ।
 वसतेऽनेनाङ्ग पास । क्तम् । चिनोति तपार्जवति सारतां श्रीरम् । श्रीर व । अन्वते गच्छति शोभा-
 मनेन अम्बरम् । उभक्त् । अश्रुत् कस्यति अशुक्रम् । श्रुते । कर्पय्म् । आम्ब्रादनम् । वक्षम् । विचयः ।
 पटः पटम्, पटी । पौठः । प्राषर । प्राषार । सम्मानं च ।

वस्त्राद्यन्तः दिगाद्यादिसङ्घितो ह्युपमेदधर ।

वस्त्रादव वस्त्रार्थाया अन्ते दिगाद्यौ विवरवाया आदौ सत्य तस्सङ्घितो ह्युपमेदधर । वस्त्रादिकं
 नाम अन्ते दिगारिकं नाम आदौ वचा—दिकवत् । दिगाद्या । दिव्यस्तः । दिगम्बर । दिगंशुक्रः ।
 दिव्यश्च । काशापेल । काशानिबन्धन । काशावाता । काशाश्रीर । काशाग्नर । काशशुक्रः । काशावन्न ।
 ककुपेला । ककुम्भिकतन । ककुम्भावा । ककुम्भीर । ककुम्बर । ककुम्बशुक्रः । ककुम्बश्च । काशापेला ।
 काशानिबन्धन । काशावाता । काशाश्रीर । काशाग्नर । काशशुक्रः । काशावन्न । दक्षकन्यात्वेतः ।
 दक्षकन्यावाता । दक्षकन्याश्रीर । दक्षकन्याग्नरः । दक्षकन्याशुक्रः । दक्षकन्यावन्न । हरिश्चैतः । हरिश्चि-
 वन् । हरिवाता । हरिशीर । हरिदम्बरः । हरिदंशुक्रः । हरिदश्च । इत्यादीनि ह्युपमेदधरानामानि
 शातमानि ।

कुङ्कुम शशिर रक्तम्—

प्रवः कुङ्कुमे । कान्धते वने कुङ्कुमम् । शशिर आशरखे । स्पष्टि कथियम् । “विमिदधि
 मभिश्चिश्चिशुयिन्व किर । रक्षयतेऽनेन रक्तम्” ।

कस्तूरी मृगनामिशम् ॥ ११७ ॥

श्री मृगमे । के कृतते कस्तूरी । मृगनामेर्भावम् मृगनामिशम् । मृगनामीशं च ।

कर्पूर घनसारं च हिमं सेषेत पुण्यवान् ।

ह्यु सामर्थ्ये । कस्तूते कर्पूर । “ह्युपेत्पुण्यवः । ‘माम्बन्धुकाः ।’ ह्युपे रीतः कपम,

१ कुङ्कुमे आशरखे कुङ्कुमम् । कुङ्कु आदाने । कुङ्कुशोऽनु म् च” भी उ इति उमक्
 प्रवयो मृगनामश्च । इति रामाश्रमम् । कु शोटीति श्रीरत्नाभी । २ का उ १।२ । ३ तथा श्रीकृत्
 मेदिन्याम् वा व रक्षी ४६ । ‘रक्षीऽनु रणे मोन्वादि रक्षिते लोहिते त्रियु । क्तीक्यु कुङ्कुमे वात्रे
 प्राचोनामस्तकेऽप्युचि ७’ इति । ४ क शिरति कृतते मण्डलशार्बलेन मन्वते इत्यर्थः । विक्रतति तौगम्भम
 स्या इति ह्यी एवा । “कठ गतौ” कथति गच्छति गन्थीऽप्या इति रामाश्रमम् । “श्वश्रुतिश्चादिभ्य उठो
 लथी” पा उ ४ । इत्यम् । पृथोरपवित्वापुर् गोपवित्वाप्नीन् च । ५ “अर्बिहृदिमठियिश्चा
 दिभ्य उठोली” इति का उ ३।६ ॥ ६ नाम्बन्धवोवापुर्विक्रयवोपुर्वा” का ह् ३।१।१ ।
 ७ का ह् ३।१।१७।

वत्यम् । उद्यारयो हि बहुसम् तेन-

१ कश्चित्प्रकृतिः कश्चिदप्रकृतिः कश्चिद्विभाषा कश्चिदन्यदेव ।
विश्वविधानं यद्गुणा समीक्ष्य क्तुर्विधं बाहुल्यं वदन्ति ॥”

पनस्वेव तारोऽस्य घनसात् । हि गतो । हिनोतीति हिमम्^२ । ३ हन्विपुषिदवापूहिभो

५ मक् । चन्द्रसंज्ञः । शिवाग्रः । हिमबभूवुः ।

समालम्भोऽङ्गरागम् प्रसाधनविलेपनम् ॥ ११८ ॥

वत्पारा रणे । सम्पद् प्रकारेणान्यत्वे ५ समाह्वयम् । अङ्गत्वं रागोऽङ्गत्वात् । प्रत्येव
वाच्ये मण्डित प्रसाधनम् । विशिष्यते विलेपनम् ।

भूषणामरश रूप्यम्-

१० त्रय आभरणे । वसि मूय अलङ्क रे । भूष्यते मण्डितेनेन भूषणम् । आ समन्ताद् भ्रिषते शोभा
कार्यतेऽनेन आभरणम् । रोचते रूप्यम् । अलङ्कारः । परिष्कारः । मण्डनम् ।

मारुच्यं मालागुणस्रजम् ।

वत्पारः पुष्पमालावाम् । मातृव भ्रम्यम् । आदर्शकारित्वात्त्वय् । मारुच्यते धर्मते माला ।
अपवा मां क्षामि पुष्पावत्र माला । भ्रिषाम् । गुणवीति शुभा । “नामुपवधप्रकृता” कः । सुच्यते

११ अक् । “अरिभग्^२वपुस्तगिति” ताडुः ।

मेखला रसना फाञ्ची ।

त्रय आभरणम् । मेखनस्य लं दत्त मां लाटीति निरुक्तिः । मिनोति प्रविपति कामिचितमिति
वा मेखला । रसति शब्दं करोतीति रसना । एव कन्तौ (शब्दे) धीभोऽव पाठः । भोजी शोभा
कचति(काञ्चते) वपनातीति फाञ्चि । झिषामीः । फाञ्चो । तन्त्री । फाञ्चाः । कचिद्व्यञ्जम् । धारणम् ।

२ शिञ्जिनी च ।

हेमपयावस्रजम् ॥ ११९ ॥

हेमशशास्त्रशब्दे प्रमुञ्जमाने मेखलापर्यायनामानि भवन्ति । हेमस्रजम् । अश्यावस्रजम् ।
सर्लस्रजम् । कनकस्रजम् । अर्जुनस्रजम् । काञ्चनस्रजम् । हिरण्यस्रजम् । चातकस्रजम् । शतकुम्भस्रजम् ।
हाटकस्रजम् । कसौतस्रजम् । तपनीवस्रजम् । काठंस्वरस्रजम् । इत्यादीनि कृतम्यानि ।

श्रीषीबिम्ब फटीस्रज मानस्यमिवाहितम् ।

त्रय पट्टस्ये । श्रीष्याः कट्याः बिम्बं मण्ड्यादकं भोजोविम्बम् । फटी स्रजपति वेद्यतीति

१ या व १।१।१४९। अत्र कारिकाकरोच पठितः । २ हिनोति गण्डवीर्यार्थः । क्यू रत्नास्रज
तनस्यभावात् । इति आठ्ठमिति रामाग्रम् । ३ का ठ १।५५। ४ आह्वयते विलिप्यते इत्यर्थः ।
५ का व ४।२।५१। ६ का व ४।३।७३। ७ मूलं गतिं लाटीति वृषीदरादिस्त्रान्मेखलाति रामाग्रम् ।
मुहुः स्तलातीति हेमचन्द्रः । मीवते प्रविप्यते इति धी त्वा । मित्र सप्तम्यैश्च २।३।१।७। कर क० ।
८ अमुते क्विमि अरनाति कामिचितं वेति रामाग्रम् हेमचन्द्रो । अरोरम् इति नूरशारेणम् । ९ नाचि
दीतिवचनयो । “तर्जवाटुन्व इत् १ शिञ्जिनी नूपुरम् । मेखलावपये तत्पाठोऽनुक्तः । तदुक्तम्—
‘नूपुरन्द तुलाकोटि पावत कचकाङ्गरे । मञ्जरीं इवक शिञ्जिनी—अभि वि १।३३ ।

कटीसूत्रम् । मानं प्रमाणीभूतं सूत्रयतीति मानसूत्रम् । केचिद् रागस्यं पठन्ति पट्टसूत्रं च ।

मदिरां मधमैरेयं क्षीघ्रं कादम्बरीमिराम ॥ १२० ॥

प्रसभां वारुणीं हालां मधुवार्णं सुरां विदुः ।

एकान्तम मये । माचक्ष्यन्वा मदिरा । मधिशा च । मघतेऽनेन मघम् । “यमिकरिगदी”
 त्वनुपयोगे” । इरायां प्रामचीमात्रम् चापु ऐरेयेम् । शेरतेऽनेन क्षीघ्रः । “क्षीघ्रो युक्” । क्षीघ्रो(भो)रिन्देके ५
 पठित्वात् शिघ्रप्रकृतेः^१ क इति झल्लत् । अथवा पीतेऽत्र बना शते शिघ्र । उभयम् । ताशम्ब ।
 कुलितं नीलमम्बरं पत्य व कदम्बरो क्लृपेव । तन्मेषं मित्रा कादम्बरी । कुलितमम्बरे वात्यनवा वा
 कादम्बरी । पति परिभ्राज्जन्वना इरा । आरामाश्रीत्स्वनवा प्रसभा । आदन्तः । कल्पत्वापर्यं वारुणी ।
 च इति कर्त्तव्यमनवा हाला । शिवयाम् । मधु वारयतीति मधुवारा । मुचति सते मध सुपा । तथा
 द्विच्छानभाभ्ये— ‘अतिप्रज्ञापभावेन समुद्रमघनाभिष्काक्षिता सुरैः सुराः ।’ १

‘अहमीकौस्तुमपारिजातकसुरा धन्वन्तरिभ्रम्भरा

गात्रं कामधुषाः सुरभरगजो रम्मादिदेवाङ्गना ॥

अथः सतमुखाः सुभा हरिषतुः सङ्गो विपं चाम्बुवेः

ररनानीति अतुर्दरा प्रविदिन कुर्वन्तु तं मङ्गलम् ॥

विदुः कचवन्ति । मधुः । आद्य । परिशुवा । स्वादुरवा । गुण्डा । गन्धीतमा । माधवक । १५
 माधवः । कर्त्तुं कर्त्तवा । कर्त्त, कर्त्तवा । परिशुत् । तान्तं शिवयाम् । ताशम्बदत्त ।^२ वारुणः । कापि
 शासनम् । मूढीकम् । माष्ठीकम् ।

शुण्डामव -

मघविशेषो इति । शुण्ड(न)न्ति वृत्ति गन्धन्त्वनवा शुण्ड (न्) ते पन्तुमगिराम्भते वा शुण्डा^३ ।

क्षीघ्रो । शुण्डः । आद्यते मनपति मदम् आसयः । पुति । २०

तद्विषयायी शौण्डो गघेत मघपः ॥ १२१ ॥

इति अन्वयात् । शुण्डायां मघे मघा शौण्डः^४ । मघं विषति पाययतीति वा मघपः ।

सक्तोऽस्यघृतपानेषु विषित्रा शब्दपद्मति ।

अथी मघासले । अद्येयु एतेषु सक्तः अद्यसक्तः । घृतसक्तः । पानेषु सक्तः पानसक्तः । विषित्रा नाना
 प्रकाय शब्दानां पद्मतिः । अथिः शुण्डपद्यतिर्भवति । अद्यशीण्डः । अद्यघृतः । अद्यकित्तन । ततयो २५
 शौण्डैः । स्वात्त अथि पद्म पथित कुशल, पथित निपुय त्वेत्वादि शौण्डादिराहृतिवत् ।

सर्पिर्ह्यङ्गवीनाज्य-

सिर्वा ठर्विषि । अत वातवः कर्त्तव्यनेम घान्तं सयः । कशीये । अर्धिशुषिषिषिषुसपि
 क्षादिक्षिर्वा इति । सङ्गु गली । को गलीरस्य विकारो ह्यङ्गवीनम् । इ^५ ह्यङ्गवीनं अस्तनदिन
 गोरोहे अङ्गवम् । ठलं च— ३०

‘तत्तु ह्यङ्गवीनं पद्मो गोगोरोहोद्भवं घृतम् ।

१ का सू ४।२।१।१।२ का उ सू २।१।१। ३ क्षीघुरिति इत्योऽनुबन्धन पाठा ।
 ४ शुण्डा हाला वारुण प्रकृता वाचणी सुरा । अथि षि १।५।१। ५ शुण्डाशब्दो मदिरावाची
 पानमदस्वानमपि । उदुक्तम्—‘शुण्डा हाला वारुण्य’ अथि षि १।५।१। ‘शुण्डा पानमदस्वानम्’
 अथि षि १।५। ६ शुण्डायां मदिरापानागारे मघ इति रामाभन । शुण्डा मदिराऽस्त्यस्येति क्वा
 त्वादिवाच्य इति हैमकाऽ । ७ पाठ्य २।१।४ । ८ का उ सू २।१। ९ अथ को २।१।२।

तथा पाशावरमहाभिषेके—

“आमुः पीयूषकुण्डे” स्मृतिमयि स्तनिभिः श्रेयुषीषस्त्रिभुवन्दे
मैधासस्यान्बुवाहैर्वरकञ्जतरमिने प्ररत्नाधिदेवैः ।

निष्पृष्टीर्ग्राग्रपेयप्रधुरमधुरिमरतेहधूमोऽपि मेयां

कुर्मो ह्येषहवीनैः स्नपनमपनय ध्यान्तमानोर्धितस्य ॥

बीषते चिष्वते पित्तमतेनाग्रयम् । तथा क्षीरत्वानिनि—“आ अञ्जनीयमाज्यम्” ।

‘आञ्जूर्वादिभ्योः संश्रयाम्’ इत्यम् । पुतम् । आभसः । सृष्टम् । वाक्यम् । इतिः ।

दुग्धं क्षीराऽमृतं पय ॥१२२॥

अत्वारो दुग्धेः दुह प्रारूढे । दुग्धते दुग्धम् । पत्स्व भवने । क्षीरीष्यम् । परवते क्षीरम् ।

पतेः क्विप् ईत्मात्रः । ‘गमहनबनेस्तुपवालोप’ । ‘अक्षीषेणशिरं प्रथमः कः’ । “शक्तिपति
पठेनां च फलम् । क्’पूर्वबोधे च । ‘अम्भनमत्व’ । तथाक्षी विष्णु इत्यु विंशतानाम् । अक्षीवीति
क्षीरम् । क्षीरीश्रेयसभीरगम्भीरा एते ईत्प्रत्ययान्ता निपात्यन्ते । न क्षिपतेऽनेन अमृतम् ।
अत्रगमरकारित्वात् । पीषते वा ठरठत्प्रत्ययः । अयुन् । ऊबल्यम् । स्तनम् । पीयूष पद्व्यं च ।

उदग्निन्मथितं तक्र कालज्ञेय पिबवु गुरु ।

अत्वारल्लङ्के । उदग्नेन स्ववति कथति अहम्बिहत् । तात्कालज्ञेयमभ्यः । मथते (स्म)

मथितं भोज्यं च । तद्वति इत्वं गन्धति तक्रम् । उभयम् । “तक्रं विभागमिन्न तु केवलं मथितं
स्मृतम्” इति बन्वन्ति । कतरयां गर्गदो भवं कालज्ञेयं पियेतु गुरुः । तत्कालोर्न गरिष्ठम् ।
अरिष्ठम् । इत्याहृतम् ।

प्राप्यो वयो दज्ञानेहा पूष यौवनक विदुः ॥ १२३ ॥

धारुण्य यौवनं च

अथौ तावत्प्य । प्रकृतैश्च परलोकनेत्यनेन प्रायः पुक्ति । ताव्योऽपि प्रवत् । वयत

वयोः । इशति पुन्वति शोमुत्वं वरा । न ईहते^{११} वेहते अनेहा । अनेहतीन्तरतीमङ्गित^{१२} एतेऽन्
प्रत्ययान्ता निपात्यन्ते । ईह वेहावाम् । पूरी अत्वारने दिवादी आत्मनेपदी । अत्रन्तानां प्राक् वृ(ञ्)टीया
परस्मैपदी । पूषति कश्चित् पूषति कश्चित् । इत् सुरायपक्षवा वा । “कारित् अरितलौपः । उभयवा
पूरि वातम् । पूषति स्म पूष्यैः । निष्ठाञ् । आन्तशास्त्रपूर्वशतस्यपक्षकारणेनन्ताः इत्यनेन
पूष्यैति निपाठः । पूनो भावो यौवनम् । त्वात्वं कः । यौवनकम् । ‘पुषादिष्वात्प्रानेष्’ । इत्यौ । उदग्णस्य

१ वा ए ३।१।१ १। वारिष्ठम् । २ वा उ ए ३।३१ । ३ वा ए
३।३।४। ४ वा ए ३।८। ५ का ए ३।८।२०। ६ वा क पू ए २५६।
७ ‘अम्भजनमत्वर परं कर्षं नदेत्’ का उ ३।१।२। ८ वा उ ए ३।४८। ९ अत्र
प्राकारयोऽनेहोऽन्ताभरवारी वरीवायका । पूर्वपूर्वका स्त्री अत्वारो यौवनकतावत्प्रवतीवनातीति वय ।
एवं वा क्त उ वप्ये इति वस्तु जुक्तम् । १ प्रत्येय शरीरत्व कमेयावते गन्धति इति हे च । ११
शरीरत्व कमेय विवञ्चि क्व वाक्याशीनि इवन्ते दशा इति ईनः । १२ नाहन्ति मायपुक्ति वाहन्ते
नायप्यन्ते वेति रामाश्रम । नम्बान एव च इति तापुः । १३ वा उ ए ३।१।२ १४ वा उ
३।१।४ १५ का ए ३।१।१ । १६ हे श ३।१।३०। पुषादेरच् इति घञ्म् ।

भाष्यस्वास्थ्यम् । भाष्यार्थे वच् । बुना भावो बोधनम् ।

अन्त्यो याद्वीन स्यविरो मत ।

बरो हृदये । अन्ते भवोऽस्त्यः । हृदे नियुक्तो वाद्वीन १ । तिष्ठतीति स्यविरो २ । गति भङ्गात्मकः कथितः । प्रवृत्तः । यातवामः । दशमीत्यः । बरन् । बरठः । बीर्यः । हृदः ।

वंशोऽन्वयोऽन्वयाय स्यादाज्ञायः संतति कुलम् ॥ १२४ ॥

यद् वंशे । उच्यते काम्ये वनेन वंश ३ । पु ति । अन्वयते अन्वित्वात्प्रत्ययः ४ । अन्वयेन पत्यमत्राण्यवधाय । आन्वावते आज्ञायः ५ । अम् अम्बक् प्रकारेण ङीति क्तिस्तारवतीति संतति ६ । अन्वयनेन वा अन्वतिः । कु (को) लति सर्वं अन्वयत्र कुलम् । उभयम् । गौत्रम् । अभिजन ।

ओषो वर्गश्च सन्तान

त्रयं समूहे (वंशस्यान्वातरवगमिरे) । ओषते ओषः । वृषते विधातीति पुषक् क्विते १ । धर्ष । अन्वये सन्तानः । विकरः । निघ्नः । निवहः । विठरः । वत्रः । पुत्रः । समूहः । अन्वयः । समुद्वः । समुदावः । वार्धः । सूयः । निकुरम्बः । कदम्बम् । पूगः । राशि । वषः । समवावः । मण्डलम् । अन्वयाणम् । वासम् । स्तोमः । वृहः ।

कान्यमेव कथिस्थितिः ।

दो काव्य । कथेर्मात्रं काव्यम् । तथा च वशस्तिरुक्—

“दुःखनानां८ विनोवाय बुभामो मतिजन्मन ।

मध्यस्थानां न मौनाय मन्ये काव्यमिदम्भवेत् ॥”

कवीनां स्थितिः कथिस्थितिः ।

पश्चिर्गं प्रारम्भे भीमदमरकीर्तिना—

इतो मरालभक्राङ्ग

मयो हंते । चित् इति अन्वयति चात्मत्वा इति गन्धति वा हंसा । हंतेः ता । मर मरुत्तं वमलनश्चित्तवागमिर्चि गन्धतीति मरालः । अन्वयति चात्मत्वा इति वा मय चक्राङ्गः । मानसोका । इवेत्पद्म ।

ईसवाहः सनातन ॥ १२४ ॥

इसवाह इति प्रसूयमाने इन्द्रो नामानि मयति । ईसवाहः । मरालवाहः । अन्वयः २५ वाहः । इत्यादीनि वाक्यानि ।

मयूरो बर्हिष ककी शिखी प्राणुपिफस्तथा ॥

नीलकण्ठः कलापी च शिखण्डी—

अथा मयूरे । मया रीति मयूरः । मीनाति वाऽपीन् मयूरः । उषादो । मीम् । ईशाणम् । मयूरे

१ अत्राम्बलमार्थं नोपलब्धम् । २ बौध्नमतिरुक् तिष्ठतीति इ च । अभिरशिष्टिरेत्यादि वा उ १।५३ इति किरणवधो पुगागमो इत्यन्व च । ३ “वश कान्तौ” मम् । मुम् । अन्वये अन्वयेऽनेनेति लामी । ४ अन्वयेति अन्वीवते । अन्वयः । इय् गतो । अच् । इत्यन्व ५ अत्र प्रमाद्यम्—“आन्वावः कुल आगमे उपवेशे इति ईम । १।१।११ । ६ अन्वयते अन्वयित्वास्तारवतीति रामाधम । ७ अय ऊच्यते । अय विठके । म्यङ्कवादिवाद् इत्यय । ८ या १ इतो २५।९ का उ हू ४।५ इत्यय इतिमतिरुक्शिशिःपैत्य तः । इति ।

इति मयूरः । 'मन्त्रे' करो सौ' । बर्हमत्सास्ति वही । "फल'बर्हाम्नामिनम्' । क्वा वापी अल्लवत्
केकी । शिलाश्लस्य शिखो । प्राहुपि वर्षाकाले प्रमुक्तः प्राहुपिक । नीसं कथ्ये सत् स गोशकयट ।
कलापोऽस्यस्य कलापी । शिलाश्लोऽस्यस्य शिलाश्लयी । मचलाकी । तपोश्न । शिखावत् । इयाम
कण्ठ । चन्द्रकी । शुक्रापाङ्ग ।

५

सत्यतिर्गुहः ॥ १२६ ॥

तस्य पविश्यात्पतिर्गुह कार्तिकेन । मयूरशब्दात् पतिशब्दे प्रमुखमाने कार्तिकेयपर्यायनामानि
भवन्ति । मयूरपति । बर्हिषपति । कृष्णपति । शिल्पिपतिः । प्राहुपिकपतिः । नीसकण्ठपतिः । कलापि
पति । शिलाश्लिपति । इत्यादीनि शातम्भानि ।

घरटा वारली हसा-

१०

बभौ इतभार्थायाम् । बर् विशिष्टमदति गच्छति घरटा । बरकत्स नार्ना वारली । त्वायेऽधि ।
बरला च । इतीति ईसी ।

कोक ईहामृगो घृकः ।

आश्रापिक कोकते आश्वते कोकः । ईहा मृगेष्वस्य ईहामृगः । ईरा मृगवते वा ईहामृगः । कुक
घृक आदाने । बर्कते घृकः । अरम्भसा ।

१५

हरिणो मृगश्च पूषत-

बभौ मृगे । गीतेन द्विपते हरिणा । म्बापैमु ण्वते मृगः । पर्वति तिचति मूषेच पूषतः ।
वात्तोऽपि पूषत् । एष्यः । कुरङ्ग । कुरङ्गम । घारङ्गः । अरव । रिख । अम्परव । वः । म्बु । वाट
प्रमी । शम्बर । शम्भ । इम्भारार । कम्भारोऽपि ।

तदङ्गः सर्वरीकर ॥ १२७ ॥

२०

हरिणपर्यायद्वयपत्ति प्रमुख्यमाने चन्द्रत्व नामानि भवन्ति । हरिणाङ्गः । मृगाङ्गः । पूषताङ्गः ।
इत्यादीनि शातम्भानि ।

पद्मगोऽहिर्विपधरो लेलिहानो भुजङ्गम ॥

नागोऽगौ फल्बी सर्प-

२५

नव तरे । पद्मर्षा न गच्छतीति पद्मगः । नप्रायान्वाहित्वत्पौषलक्षणात् । अश्वत् (वेड)
हि । 'महि'कम्भोर्नतोपभ नतोपः । विपं बरति विपधरः । सिरोऽेति लेलिहानः । भुजान्वा
गच्छति भुजङ्गम । न गच्छतीति नाग । उरवा गच्छतीत्युदग । 'उरं विहानरो कर्षिणी च' ।
उरो विहापसोऽप्यपदयोगमस संज्ञायां सो भवति सौभ उरविणी कपावत्संभवत् । कलाश्लस्य फलो ।

१ का उ ए १।४७ । २ पा ५।२।१२२ बार्तिकम्— कलाश्लोऽम्नामिनम् । ३ ईहवा
महता'वासनं मृगवते आलेटीकितवते इत्यम्भत्र । ४ बर्कतेऽम्नामिनाश्वते इत्योति वा इका । ५ रामाभ
मस्तु— 'पूषता विन्दवी किन्दुघटशलक्षणात्स्य पूषत । अर्यं आपत्त'त्याह । पूषती किन्दुषिच इति
हो स्वा । ६ पद्य पठितं कथा स्यात्तथा गच्छतीति रामाभमः । सर्वपद्मयोऽिति बार्तिकेन च । ७ वा
उ ए १।४। किन्दुष्यवो नसौपभ । अहि गतौ । अइति वेगन गच्छति । / मूरं लेटीस्यर्षशीला लेलिहानः ।
शिरोऽपिद्वयगतात्— 'ताप्शीऽम्भत्रवोभवनशक्तिु चानघ' पा ए ३।२।१२३ इति चानघ् । ९ भुजं
कीटियेन गच्छति भुज इव गच्छति वेत्यम्भ । गमस' का ए ४।३।४५ इति । विहङ्गुदङ्ग
भुजङ्गाश्च का ए ४।३।४८ इति कश्चि च च भुजङ्गमा भुजङ्ग इति । १० नगे पर्वते भवो नाग ।
अथवा न गच्छतीतिना न क्माः नाग इत्यम्भ । ११ का ए ४।३।४९ ।

वर्षति गच्छति वर्षीः । पूवाङ्कः । मुक्ताः । आशीविषः । अत्री । व्यासः । वसेत्यप । कुम्भस्त्री । गृन्पात् ।
 शिरसन । अमुःभवाः । काकोपर । दर्शिकर । दीर्घपुत्र । इन्द्ररक्ष । विलेश्य । भोगी । विमरा ।
 पचनाशन । गोकर्षः । कुम्भीनस । ककुषी । यत्रण । मुक्कमुक् । इष्टमुति ।

तद्वैरी चिनतात्मज ॥ १२७ ॥

तस्य पद्मगम्य श्रीरी शङ्कु चिनतारमञ्ज गदह । पद्मगिरी । अहिरिपुः । विद्यपरायतिः ।
 वेपिहानरिपु । मुक्कशुभुः । नागकिट् । मुक्कशुभल । कश्चिडिड् । कर्ण्डत् । कर्षिपी । इत्यादीनि
 गदहनानानि श्चु ।

मुपर्णा गरुडस्तास्या गरुडमान् शकुनीश्वर ।

इन्द्रविन्मन्त्रपूतात्मा वैनतेयो धिपाद्य ॥ १२८ ॥

नभ गच्छे । शोभन स्वराज्यं पञ्चमस्य सुपया । तथा च—“मुपर्णा” हेमपदात्तात् । वीर १०
 विहायता गता । गरुडपूर्व । गरुडि पक्षैर्धयेते गरुडः ।

वर्णागमो गवेन्द्रादौ सिद्ध वाद्यविषयम् ।

पोङ्गादौ विकारस्तु चपनाराः प्रपोदरे ॥

इत्यनेन श्लोकन गदह्यम्भ्य तथास्य लाप । लक्ष्ये गरुडः । गच्छम् । तुष्टयास्यै साक्ष्यम् ।
 गदह पदा लक्ष्ये गरुडमात् । शकुनीना विद्वानामीश्वर स्वामी द्राकुनीश्वर । इन्द्रं क्लिप्तान् १५
 इन्द्रमित्त । मन्त्रेषू पूत पविष आत्मना पत्य त मन्त्रपूतात्मा । चिनताया अन्त्यं चिनतेयम् । विप
 धयतीति विपक्षाय । आम्परनन्दन । विद्यारण्यः । पद्मगाशन । नागान्तकम् ।

खमिन्द्रिय ह्वाक च भो (सो) सोऽस्य फरक्य विदुः ।

पक्षिन्द्रिये । स्वर्गमीषा लनति विचारयतीति कम् ३ । इन्द्र्यात्मनो लिङ्गमिन्द्रियम् ५ ।
 ह्वापति इयं प्राप्नोति विपक्षु शब्दपरंस्तरकम्प्ये ह्वापीकम् । शब्दोत्पन्नेन शब्दम् भ्रोत २०
 गालम्बादिः । अस्याति विपक्षं प्राप्नोति कम्पम् । क्रियते मनोऽनेन विपक्षेण करणम् । शब्दं
 [विपक्षि] । कम्पकम् ६ ।

पुण्य माग्य च सुकृत भागवयं च मस्कृतम् ॥१२९॥

पञ्च पुण्ये । पुण्य शोभे । पुण्यति शोभने पक्षे वा पुण्यम् । पञ्चपुण्यम् १ । भगवत्यैश्वर्या
 धरिड [कारणम्] भागम् । भाग्येण माग्यम् । भागापचम् १ । सुकृत क्रिये सुकृतम् । २५

एश्वरस्य समग्रस्य धर्मस्य यशसः शिवः ।

वैराग्यस्याच मोक्षस्य पण्या भग इति स्मृतिः ॥'

१ वी स्व भा १।१।२९ । २ मा नू २ । १७२ । अत्र कारिकाकल्पक पठितः ।
 ३ लक्ष्ये लक्ष्यदिशिवादिमानस्य लक्ष्येणशब्दार्थानात्, अत्र । लक्ष्येण शब्दपारयं । इत्यत्र इत्यत्र ।
 ४ इन्द्रियमिन्द्रियमिन्द्रियदिना पक्ष । पक्ष्यम् । ५ तात्पर्यभातरशब्द कर्षेन्द्रियवाचकम् । एतन्मोक्षशब्द
 मन्त्रिषवाची हीत्र पठितम् । तदुक्तम्—“ह्वापीकम् कर्षं सोऽत्तं य विपक्षिणम् अ वि
 क्षात् मन्त्रिये निम्नगारय इत्यपर ३।३।२११ । ६ नाश्यात्प्रायश्चित्तशब्दम् । क्लिष्टप्रमाधान
 प्रसारस्तु—कर्मिण सुहायकमभ्ययम् तस्य कर्णं वाचनमिन्द्रियमिति । ७ पुण्यतीति पुण्य । “पुण्यं शुभे
 कर्मणि । इगुपञ्चति कः । पुण्यमर्हति पुण्यम् । तदर्थेति । पा म् ५।१।१७ । इति म् । पुनाति
 पक्षे वेत्सन्वत् । ८ का उ म् ३।४ । ९ श्लोकोऽयं विद्युपुराणस्यैतनीश्वरिणितः अत्र को
 ची र्वा भाष्ये १।१।११ ।

अगस्तेर्दं भाग भागमेव भागधेयम् । नामरूपभागेभ्यो धेवाः ११ । छठमीधेनेन कियत् (स्य) सत्छठम् ।

अघमंहश्च दुरित पाप्मा पापं च किञ्चिपम् ।

शुभिनं फलिल क्षेनो दुष्कृतम्

- ५ इश पापे । न वहाति प्राञ्जिनम् अघम् १ । अहति गच्छति नरकादिभ्रमनेन अ हः । घान्तम् । दुरितम् २ । दुर् लौकोऽयं वदु । पाति द्रुगतेर्वांरति पाप्मा । पु ठि । 'दर्बधादुभ्यो मन् । पाति द्रुगते वांरति पापम् । * पातेः वः' । निन्दत्येन कन्वते सुदुर्मदुह किरति उरुति वा किञ्चिपम् । 'किञ्चिपा' म्बिषी' एतो िपञ्चवात्सो निपात्येते । इवक्तेःपनीवतेऽनेन शुभिनम् ३ । क्तवति कञ्चितम् । क्तोरिक्तः । एति गच्छति [द्रुलम्] अनेन पम । घान्तम् । दुष्कृते स्म दुष्कृतम् । तमः । कल्पम् । १० कल्पम् । अशुभम् । प्रतिक्लृप्तम् । पङ्क्तम् । किञ्चम् । मत्त । क्तोरिक्तः ।

उजयी जिनः ॥ १३० ॥

तस्य पापस्य बपी तदुजयी । अघबपी । दुरितबपी । पापबपी । इत्यादीनि कित्स्य नामानि भवन्ति ।

सर्वनं सद्य भवन चिष्यं वेस्माद्य मन्दिरम् ।

गह निकेतनागार निश्चान्तं निवृत्त गृहम् ॥ १३२ ॥

- १५ वसत्यावसवावास स्थानं धामास्पदं पदम् ।

निकाय निलय पस्यं घरञ्च विदुरालयम् ॥ १३३ ॥

वदुर्गिश्चिपंहे । अना तीदस्यत्र सवन्तम् । ङीवे । तीदन्ति सुभं गच्छन्त्यत्र सद्य । 'तर्ब

- धादुभ्यो मन् प्रावेड । भवति शूतान्त्र भवन्तम् । भिप शब्दे । हेवेहि शब्द करीत्यत्र चिष्ययम् । 'चिष्येर्बहु' प्रसबो भवति । विदुरन्त्र वेहम् । गान्तम् । माघन्ति अना अत्र मन्विरम् । ङी २० ङीब । मन्विरा । गेह लीवा निवारयपद्मयोः । गहति शीतवातावपादिकं निवारयतीति वेहम् । पहाति वा गेहम् । 'गेहे ' लक्' । सुभं निश्चिन्ति बानन्त्यत्र निश्चैतन्तम् । अङ्गुति गच्छन्त्यत्र आगारम् । अमारं च । निशाम्यन्त्यत्र निशान्तम् । निमित्तं आम्नाघते निवृत्तम् । एहकाति नरेणोपाहितं वर्तं गृहम् । वरुनं वसति । आनस्यत्र अना आनस्यम् । आ घान्तादुभ्यतेऽत्रावासा । रवीवते अनेनात्र स्थानम् । दवाति अनादि धाम । नात्तम् । अरस्तं च आनम् । ङीवे । आस्य(प)घतेऽत्रास्पदम् ११ । पयतं गम्यते पदम् । निष्ठावतेऽपी निकायः । १२ शरीरनिवातयोः कभाहेः पञ् । निहोयते आभिष्यते(अत्र) निष्ठायम् । पति लीषी निवाते । अना पसन्ति अघन्त्यत्र पस्ययम् १३ । वती वाते वापु वदयम् । वती

१ पा घ् ५।५।१५ त्वातिङ्म् २ अरवते गच्छति दानादिनाम् । अघि गर्ती । पचापञ् । आत्मशास्त्रानित्यन्त्रास शुम् । ३ द्रुघमित्तं गमनमनेनेति रामाभमः । ४ वा उ घ् २।५।५।६ किञ्चिपाप्यपिपी का उ घ् १।२।३। ६ इवो वर्त्ते । वजे किञ्चितीमञ् । दृष्यते शुभिनमित्सपि । ७ कञ्चवति अघवति दुष्कृतमिति शेष । ८ वा उ घ् ५।२८। ९ वा उ घ् ३।९ । १ 'तिमिबिदिमदिमन्चिचमिबिदिदिदिदुगिन्च' क्रिः पा उ घ् १।२।३ । ११ का घ् ५।२।३ । इति नि'शब्द गेह इति निपातः । १२ वा अङ्गुति अदपत वाप बाहुक अरज्यवः । अघि गता आदुर्वः । नवीपध । १३ निशावा अन्तोत्रैस्त्वन्त्र । निशावाग् अन्ते गम्यते रयेति रामा भम । 'अम गती । ७- । १४ 'आस्य प्रविशाम' पा घ् ५।५।१५। इति शुभ । १६ का घ् ५।५।१५। १६ अरस्तावन्ति अदुपीभवन्त्यत्र पदम् । 'स्तै शब्दवचनयोः ।

कासे सामु 'बलवमिति भीमाम । शीर्षते हिस्वते शीलापत्र शरणम् । क्राहीविते बनेनात्राक्षय । पुति ।
चिन्तुः कथयन्ति । पुरम् । कुलम् । संस्थापः ।

खेयं खात च परिखा

ब्रह्मः परिखायाम् । कनु अक्षराख्ये । कन् । अन्वते खेयम् । "आत्सुनोरिच " ब्रह्मपयो
नकास्येकारः । "अक्षर्याहचर्ये ए" अक्षर्येकार्योरेकारः । अन्वते [स्म] खातम् । परिखावते परिखा । ५

वप्र स्याद् भुक्तिद्विमम् ।

द्वी प्राकारे । शुक्लादिक बगस्यत्र वप्रम् । पूत्यां कुट्टिमं भूक्तिद्विमम् । बहभूमिकम् ।
भूक्तिद्विमम् ।

प्राकारं परिधि साल

बनौ हुने । प्रकुर्वन्ति तमिति प्राकारः । 'अक्षरि च' कारके लशायाम्' पम् । परि १०
समन्ताद् भीषते परिधिः । इषति क्नुकराति स्वनगल्पयंत शालं सालं च ।

प्रतोली गोपुराकृतिः ॥ १३४ ॥

द्वी विष्टितायाम् । प्रविशन् अन- प्रतोस्त्यते परिमीयतेऽत्र प्रतोली । गोप्यते रक्षते गोपुरं
कसाहति गोपुराकृतिः ।

प्रास्ताक्षरीषहर्म्याणि

प्रथ तीषे । प्रास्ताक्षरीष च हर्म्यं च प्रास्ताक्षरीषहर्म्याणि । प्रतीदस्वस्मिन्नप्यनमनांतीति १५
प्रास्ताक्ष । 'अक्षरि च' कारके लशायाम्' । शुभायां सिन्धवां भव 'क्षीषम् । अन्करान् इरति
हर्म्यम्' ।

निर्न्यूहो मत्तवारण ।

द्वी अग्राभये । निर्न्यूहते निर्न्यूहः । मत्ता प्रमादिन पठन्ती कारन्तेऽनेन मत्तवारणः । २०

घातायन मत्तालम्बम्

द्वी गणाद्ये । घातायनं मार्गो घातायनम् । उभयम् । मत्तमीक्षम् आलम्बन मत्तालम्बम् ।
बालनन । बालम् ।

आलम्ब्यसुखमासनम् ॥ १३५ ॥

राशामवग्रामे द्वी । आलम्बन्य अलम्बनस्य सुखम् आलम्ब्यसुखम् । सुखेनसवते आसनम् । २१

सम सधर्यं सभाषिं सट्पन्न महश्च सट्प ।

तुष्यः सधर्मन्पत्र तुला कसोपमा विषा ॥ १३६ ॥

१ अपरि मूले बलवशब्दा नास्ति तथापि पाठमेवम् 'निशान्तबलवशब्दम्' १।२।१।
इत्यमरे बलवशब्दपदान्द वीकाहृता तदपि विद्येतिम् । २ का लू ४।२।२। ३ का लू १।२।२।
४ प्रप्रियते इति कर्मणि पत् । "ति रामाभम । ५. का लू ४।५।४। ६ परिदो भीषते वेष्कने
नगरमनेनति रामाभम' । ७ इत्यत्रात् द्वे अन्वते लाला । 'कल गतो' । बन् । ८ पुष्कारन्तु गोपुरं
भय्यद्वितम् । कसाहृतिरिवाहृतिर्षत्याकलहृतीषर्यं । ९ का लू ४।२।४। १० सुषवा क्षिप्तः सधः ।
शेदेऽण् । ११ इरति मनाति हर्म्यमित्यम्बन । प्रास्ताक्षरीषहर्म्याणामत्राविशेषलपाराशनम् । परं तद्विशेषोपा
न विन्मर्त्तम् । तदुच्यते 'हर्म्यादि' चरितं चत् प्रास्ताक्षरीषहर्म्याणाम् । तीषीऽप्यी चकतप्रनम्
। ११ । इत्यमरे ।

१ एकाग्र समागैः समानं मातीति समा । समानं सदस्यो वसोऽन्व सद्यण । समाना
 शक्तिः अत्य सद्यसि । समान इव हरवते सद्यसः । १ समानान्यपीभ' सद्-प्रत्यय । शस्य च
 पत्वम् । 'अने च कस्ते' परस कत्वम् । 'अवयोगे' च । समान इव हरवते सद्यसुः । "समानान्वपीभ
 यद्-प्रत्यय । अमात्र' । अनुस्वरपत्वाद्गुणनिधयः । अनुस्वरत्वाप्रदाशो पठ्यते । 'दद्' 'दस' इति समानस्य
 समास । समान इव हरवत सद्यस् । समानान्वपीभ जिर् । दृष्टया उम्मित्युक्त्याः । सम नो
 यमो बस्य सधर्मः । समानं रूपं बस्य त सकल्प' । कम्नामगोभरपानवशबोवपयसु "ति
 समानस्य सादेश । वीक्षणं मुखा । १ वीक्षेण' अद्-प्रत्यय । आंकारत्वाकारम् । अपति कस्ता ।
 उपमा । विधा । प्रत्ययः । प्रकारः । प्रथम । मभिभः । प्रकारः ।

विन्मान्यो विद्यमानश्च गुरुस्थानाम्युजाननाः ।

सिंहादीनि च पर्यायमुपमानेषु योजयेत् ॥ १३७ ॥

योजयेत् बोधयेत् । पर्यायं विशेषकम् उपमानेषु । वित्तम् । वित्तवर्धः । विरस
 शक्तिः । विरसद्यः । विरसद्यः । विरसद्यः । वित्तुः । वित्तवर्धः । वित्तवर्धः । वित्तवर्धः । वित्तवर्धः ।
 अनेन प्रकारेण मास्यविद्यमानगुरुस्थानाम्युजाननविहादिरास्य उपमानेषु प्रबोधनीयाः ।

व्यपदेशो निम्न व्याज पद व्यतिकरश्छलम् ।

छद्य

स्य वैतथे । व्यपदेश्यं व्यपदेशः । पुंति । निर् व्यतिकरेण भाति निम्नम् । व्यपदेशे व्याजः ।
 पुंति । पद्यते गन्वते वैतथेन पद्यम् । व्यतिकरश्च व्यतिकरः । क्वचित् । छलम् । क्वचित् । क्वचित् ।
 छद्य' । नात्तम् । द्वीपम् । वैतथम् । क्वचित् । क्वचित् । उपाधि । मियम् । क्वचित्' ।

वृष्टान्तमुत्प्रेक्षा अम्बुमन्य च निर्णयेत् ॥ १३८ ॥

श्री वार्तावाम् । वृष्टस्य चरितस्त्वान्ती वृष्टान्त । उत्प्रेक्षा च उत्प्रेक्षा । वार्ता । प्रवृत्तिः । उत्प्रेक्षा ।

१ अत्र समास्य सत्त्वान्ता नव समाने । वृष्टाकक्षोपमा विधा इति अन्तरत्वात्प्रायामिति
 पार्थक्येन कथमपि लक्षणाऽभिप्रायेण तदाह । क्वचित् इति पठ्यते । परम्पु वृष्टार्थविभाषास्योऽप्युक्तः ।
 एवं च प्रबोधश्च इति कथमप्यम् । अग्निभाषाठे तु "उपमाप्रिभा" इत्यनन्तवचनमात्राचक्रेण सति "एकाग्र
 इति सङ्गच्छते । २ प्रकारे परे समानस्य सादेशविधावकथनानामात्मनानं मातीति विग्रहमित्यय ।
 सम वैतथ्ये समति वैतथ्यम् करोतीति सम । समः समत्व वैतथ्यं करोत्येव । पचाद्यच् । ३ 'कर्मन्पु
 पम ने स्वबादो दशस्य सन्तो च' का सू ४।३।७५। अत्र इति । ४ का सू ३।५।४।५ का क
 रू २।५।५ । ५ समानान्वपीभ इति कथमप्यम् इति वार्तिकस्तेष्वप्युक्तम् । २।५ । काश्चिदावाम् ।
 आत्मन्पुस्तु नैतादृशमुपलभ्यम् । इतिरपीदृशी काप्रिय नास्ति । आशिकावां वीक्षीतवचनताम्येऽपि प्रत्य
 वत्त्वत्वात् नास्ति । ७ 'व्यपदेश्ये समानस्य च का सू ४।१।१५। का सू ४।१।७५।
 इति । ८ "वोतिर्बनपत्राभिनामिनामगोषकमत्मानं बंधवोवचनकम्पु इति पा सू ६।३।८५।
 १ वाचनिकं नैतत्, अनुस्वीयमानामिति वापिठमिति प्रतिभाति । ११ व्यपदेश्यते व्यपदेशोऽप्युक्त
 तावत्प्यम् । १२ किं नितरां तद्विष भाति निम्नम् इत्यन्वयः । १३ व्यपदेश्ये विधिनिष्ठे अनेन व्याजः । "अत्र
 यतिकरेणवते" । पञ् । १४ व्यपदेश्ये विधिनिष्ठे वस्तुत्वमनेति वा । वृत्तौ वृत्तये । क्वचित् प्रत्ययः । १५ वृत्तये
 कथमनेन क्वम् । मनिन् । इत्यः । 'वृत्त व्यपदेश्ये' । पुरादि । १६ वृत्त शस्योऽप्यम् । १७ वृत्तान्त
 वान्ती गवेषवीर्षात्त्वात् समाभिर्ल्लेपेति रामाभ्रम् ।

प्रातः पूगं समाजदय समूहं सन्ततिर्व्रजं ।
 व्यूहो निकायो निङ्करो निङ्करम्ब फदम्बकम् ॥ १३६ ॥
 ओषं समुदयं सङ्घं महात समितिस्तति ।
 निचय प्रधर पङ्क्तिं

विशक्तिस्मृत् । इत्येति द्वादशति प्रातः^१ । पूगपते पूगते वा पूग^२ । संश्लेषे समाज^३ । पन् ।
 ननुपते सम्बन्धोऽस्मिन् समूहः । सतम्पते सन्तति । तत्रन्त्यत्र व्रजः । उभयम् । विश्लेषण उच्यते व्यूहः ।
 निचयपतेऽपि निकाय । फावम् । निङ्करोति निङ्करः । समन्ताभिङ्कुरन्ति वदन्ति (विदुन्ति) निङ्करम्ब ।
 कुञ्जितम् अङ्गते कदम्बम् । स्वार्थे के कदम्बकम् । इति क्लीब । उच्यते ओष^४ । "भद्रकवादीनां इत्यपि ।
 समुदीरयन्त्येव समुदयः । समुदायश्च । सङ्घन्त्येऽपि सङ्घश्च । सङ्घन्त्ये संघातः ।
 इत्येते । इत्यु गतो समुपूषः । समपन समितिः । स्तिषां छि । तनन् छति । निचयपतेऽपि निचयः ।
 उच्यते । प्रचय । सङ्घयः । प्रक्षिप्तं प्रकृतः । पथि विलारवचने । पथ । इदमुच्यन्तानां चातूनां नत्तौती
 नास्तीति । पथन पङ्क्तिः । स्तिषां छि ।

पूनां समजो व्रज ॥ १४० ॥

पूनां व्रज समूह समजः कथ्यते । व्रज क्षेत्रम् । अत्र समूहं । समजन समजः । "समुदीरय
 पूगु" अन् ।

समीपाम्यासमासभ्रमम्पख सन्निधिं विदुः ।
 अधिदू च निकटमवलग्नमनन्तरम् ॥ १४१ ॥

नत्र समीप । समानोति समीपम्^१ । अन्नुपत्य चास्यत् अभ्यासः । पन् । आतद्यत् एव
 व्यासधम् । अर्धं गतो वाचने च । अर्धं अभिपूर्वम् । अन्न्ति स्म अभ्ययत्कः निश्रयः । समीप्युम्^२ ।
 नेद । दार ३ एव च दक्षरतकारवोर्नत्वम् । 'रधः । -यातानंकाररथ सत्वम् । १ तत्रगस्य निश्र
 मत्व शस्त्रम् । सन्निधीयते सन्निधिः । अ(न)विदुःनोतीति सन्निधिरुम् । 'दुनातर्धोर्षश्च' ३ दुनोतेरङ् प्रपयो
 भवति दीर्घः । दृट् उपधाप । निकटति निकटम् । (नि)नाम्नि कटोऽर्थेति च निङ्कटः । कट् कर्पाऽन्तरापी ।
 भवत्तगति (स) अन्तरम् । न अन्तरम् अन्तरम् । वतीदन् । समपानम् । आरात् । तद्वरम् । उच्यते

१ अन्तान्तरनर्धरुम्हे मातारयो विशतिशुभ्या प्रपुत्रपन्ते । प्रोषो वर्गम् तन्मान इति
 बंशम्यावान्तरवर्गमेव इति प्रथम् । परन्तु एष्वहरे प्रयोगतादृशमपि दृश्यते । २ 'सूत्र वर्य' । आतद्
 प्रवच । अन्त्येन तु उच्यते एकस्मिन् शब्दे निषण्ण इति मुञ्चमिभ इति स्यन्ताद्भ्रमपम् । प्रातप्यमौरिति
 निर्देशाद् दीप । ३ पूगपते शशिरश्चन मन्वते पूगन जनतनुनात् शशिमर्धेन निर्वास्यत वा पूगः ।
 'क्षारुत्तद्विभं विदुः' । उ च १२४ इति पूट् पूटो वा विदु ग श्यप । पूगपते पूगतापुत्से पनि पूटपि
 स्वानिचरत्वेन स्यन्तास्कुत्त दुम्भाप्यम् । ४ नत्र गतिज्ञेयत्वा । पत्र । ५ 'कुर् एतन्ते । वाटु
 लशश्वन् । अन्वोथे निङ्कुरम् इत्यपि । ६ आन्पूर्वाद्भवत्पन् । उर विउर् । ७ वा ए
 ४।१।५७ । ८ तन उदपूर्वक इत्ये गता 'एवात्तु' । अति तमुच्य । पनि तमुदापः । ९ तमुदा
 गद्यमर्धवत्वा वा ए ४।१।६४ इति इत्यन्प्रपयो पादुशब्धः । १० वा ए १५१ । ११ तमुदा
 आरीऽभिधिति विपद समाप्त । अन्तरमात्मन् । इत्यन्तरवर्गोऽपि इत्ये रतीशत् । उच्यतेगद-वच
 मपि समीपम् । १२ वा ए १५१।६७ । १३ वा ए १।३। २। १४ वा ए १।४। १५
 १५ "तत्रगन्ध परवगाद्वच वा ए ३।८। १६ वा उ ए ६ ।

श्टम् । आशयम् । तद्विक्रम् । आशयम् ।

जित्या हलिईल सीर लाङ्गलम्

पञ्च हले । त्रि त्रये । त्रि । बीवते क्षिरया । 'बवतेईली क्यवेव क्वप् । पातो'स्तीऽत्त
पानुवन्ते । "श्रित्रयामाना" । हलति हलि । मद्दल हलिम्भते । भूमि हलति भिल्लति हळम् ।

५ लीयते बभ्यते बरववा सीरम् । लङ्गति भूमि गच्छति छाङ्गलम् ।

उत्करो बल ।

हलपर्यायः करपययिषु बलभद्रनामानि भवन्ति । त्रित्वाकर । हलिफट । हलफट । सीरकरः ।
शाङ्गलफट । हलपाकिः । हत्यादीनि शातम्यानि ।

रघतीदयितो नीलवसन केन्द्रभाग्रज ॥ १४२ ॥

१० बरो बलभद्र । रेवत्या रघितो भर्वा रघतीव्यिता । नीलं कृष्यं वर्णं बहनं यत्नं च
नीलवसनः । 'कशवत्यामब' केन्द्रभाग्रज । कालिन्दीकर्षणः । बल । प्रत्यम्भनः ।

अर्जुन फान्गुनो क्षिप्यु पवेतभाजो कपिष्वज्ज ।

गाण्डीवी कार्मुकी सव्यसाधी मध्यमपाण्डव ॥ १४३ ॥

वृषसेनः सुनिमोक्षो देत्यारि शक्रनन्दन ।

१५ कर्णशूली किरीटी च शब्दमेदो घनभ्रजय ॥ १४४ ॥

धम-शर्तुने । धर्मं तत्रं धर्ममे । कवति (कोर्तिम्) कर्तुंनः । "शुक्रपृष्य भूमिषार्थं विम्भ उतः
कल नियती । कलतीति फाल्गुण । पिशुनफाल्गुनी एतौ उतप्रयवाशो निपात्येते । कवतीत्येवं
शीलो क्षिप्यु । 'विमुक्तोः स्तुप्' । स्तेवा वाचिनो यत्नं च ह्येतेयाजी । कपिर्वािनरो क्यवे यत्नं च
कपिष्वज्ज । गां नीलतीत्येवशीलो गाण्डीवी । काशु कं पनुस्तीभन्त्य कार्मुकी । उभ्ये ताचयतीति
२० लभ्यन्ताधी । मत्स्यमथावा पाण्डवः मध्यमपाण्डवः । बुधिविरभीमवो वधरेवनकुलवोर्नभ्येशुनः
तेन मध्यमपाण्डव क्वप्यते । पूर्वं तिनोति क्प्यातीति वृषसेना । सुनिमु भ्यते शक्रुभि सुनिमोक्षः । दुःशा
क्यन्नात् । देवस्यादि शशुर्देत्यादि । शक्रस्यश्रम्य नन्दनं शाकलमन्तः कर्तुंनः क्वप्यते । यमस्तं पुत्री
युधिष्ठिर । वावीभीन । इन्द्रमार्तुनः पश्चिमीकुमारवोर्नकुलवधरेवौ पुत्री । अक्षयमेवं छत् । कर्णे यत्नं
विद्यते वत्यावा कर्णशूली । किरीटं शोकरं विद्यते न्यावौ किरीटी । शब्दमेदोऽह्यत्नं शाब्दमेदो ।

१ का ए ४।१।२६ । अत्र तुर्गवृत्ति । २ का ए ४।१।३ । ३ का ए २।४।४६ ।
४ का ट ए २।६ । ५ का ट ए २।६१ । 'कल नियती' उतप्रयवो गौऽत्तध ।
कलति कर्मविश्रियते इत्यर्थः । ६ का ए ४।४।१८ । ७ गां बीववतीति वीष्यम् । विराट्सागरे
पाण्डवाशुक्रानाम भीष्मकर्तृकवाक्यमण्डोऽर्जुनद्वारादक्षयस्य महाभारतवैक्यवात् । कश्चिच्छुः गाण्डीव
गाण्डीवमिति कर्तुंनपशुवो नाम उच्यन्तास्तीति गाण्डीवी इति मत्स्यर्षीय इत् । उतुच अन्त्यकोपे—
गाण्डीवी गाण्डीवोऽक्षिनाम् । गाण्डीवी गाण्डीवोऽप्यञ्जी इति १।५।४४ । शूरो गाण्डीवीऽप्यल्ल गाण्डी
प्रन्धिरत्वास्तीति गाण्डीवम् । गाण्डीववगात्वशानाम् पा ए ५।२।२१ । इति मत्स्यर्षीवो वः ।
उच्यन्तास्तीति मत्स्यर्षीय इत् । ८ क्प्येन वामपाशिनोऽपि उच्यते वाषान् वर्यतीति क्वप्यन्ताधी ।

केचित् शम्भवेदीति पठन्ति नत्वपि स्वात् । चि वये । वनपूर्वः । वनं विसृजान् धनञ्जयः । 'नामि
न । नामन्त गुरा' । "ए'मन्" । "इत्वा'योर्मन्तः" । वनञ्जयेति कौर्णामामिचानमपि शतम्भम् ।
त कचम्भूत १ शम्भवेदी । अथा परं कोऽपि नास्ति । पाण्डवनाम निषेध स्वनाम कथितमस्ति ।

कुलस्त्रीचक्रयोर्वैरी वायुपुत्रो वृकोदर ।

कुर्वेरी । कीचकवेरी । कुलघ्न । कीचकशत्रु । कुदरिपुः । कीचकरिपुः । अनिलगत ।
पचनात्मक । इत्यादीनि भीमस्य वर्षाननामानि ज्ञातव्यानि । वृकोऽप्यप्यथा उदर उदरं यस्य च वृकोदरः ।

समवर्ती यम फालः कृतान्तो मृत्युरन्तकः ॥ १४५ ॥

पद् यमे । सर्वेषु यम प्रथमं वर्तते समवर्ती । नन्तः । रिपौ मित्रे च सम वर्तते इति वा । यम
यति निष्कृष्टि प्रभा यमा । ममलबालकाश्रम । कलपति कन्तु विनाशहेतुत्वेन फालः । कृतोऽन्तो
विनाशो येन च कृतस्तः । भिन्नवर्जनेति मृत्यु । मुषिदूषो बुक्युक्ता" । अन्त करोतीति अन्तकः । १०
शमनः । प्रेतपतिः । वितृपतिः । कीनाशः । विवस्वतः । आश्लिष्टीशेदरः । भर्माशः । दण्डपरः । हरिः ।
वृद्धिवापतिः । भाङ्गवेव ।

तदात्मजो जातरिपुः कौन्तयो भरतान्वय ।

कौरव्यो राज्यकमाऽसौ सोमवशो युधिष्ठिर ॥ १४६ ॥

सत युधिष्ठिरे । तस्य पत्न्यत्नमस्तदात्मजः । समवर्तिपुत्र । समोदर । कृतान्तोत्त । १५
मृत्युनन्दन । अन्तकदारक । इत्यादीनि युधिष्ठिरवर्षाननामानि ज्ञातव्यानि । वात्स्य स्वगोप्रसन्न रिपुः
'जातरिपुः । कुम्भा कल्प्य पुमान् कौरव्यः । भरतोऽन्वयोऽस्य भरतान्वयः । कुरीरपत्न्यं
पुमान् कौरव्यः । राजभिरिन्द्रैर्वन्दित पूज्यते राज्यकमा । 'तर्षात्रम्यो मन' । राजकामा अति
केचित्तन्ति । सोमो वंशोऽस्य सोमवशः । युधि वशमे तिष्ठतीति युधिष्ठिरः ।

श्वेतार्जुनो युधिः श्वेतो बलस्र सितपाण्डुरम् ।

शुक्लाशदात घवल पाण्डु शुभ्र शशिस्रमम् ॥ १४७ ॥

श्वेतोऽस्य श्वेत । श्वेततं श्वेत । अन्वितेऽर्जुन । शश्रतीति युधिः । शुभ्र शोच ।
श्वेतोऽस्य श्वेत । अश्वदाश्वति अश्वलस्र । बलस्रम् । तिनीति बन्धाति(मन)सित । पण्डते याति
मनोऽत्र पाण्डुरः । अश्वदा'नारा'शुपाण्डुम्बोः पाण्डवत्वमस्वास्तीति पाण्डुरः । पाण्डु । पाण्डुरः । शश्रति
मनोऽस्मिन् शुक्लाः । शुक्र गतौ । अश्वदाश्वते शीघ्रते अश्वदात । श्वति घवलः । पण्डते याति २५

१ 'नामि तुभ्यश्चिवाचितिदिमिहहा सजामान्' का सू ४।३।४४ । २ का सू
२।५।१ । ३ का सू १।२।१२ । ४ का सू ४।१।२२ । ५ वनपञ्चवात्स्य कश्चिद्भृश्वरभवेत्ता
मास्तीर्ष्यः । ६ वृको भीमजठरान्ति त उदरे यत्कश्चि । ७ कलायतीप्यस्य ययाने काश्रमतीति
वत्कम्भम् । / का उ सू २।३५ । ४ अन्तकृतोऽन्तवपति अन्तवस्यन्तक इति वाचन् ।
१० कौरान्तरप्रमाशाभाहाभारतादिकपाठवादात् महाकश्चिन्महाराज 'अजातरिपु इतिपुत्रोऽत्र सुत ।
म वाता रिपौ न्येति युधिष्ठिरस्य 'अजातशत्रु' इति संज्ञा । तनुकम्— सजातशत्रु शम्भारिर्षर्मपुत्रो
युधिष्ठिरः' । अमि चि ३।३ । ११ का उ सू ४।२८ । १२ शिवता चर्च । म्वादि प्राप्ता ।
पञ्चापच । १३ अन्विते उदरपण्डते वने । १४ शुभ्रशुभ्रलस्रशुनां धर्षतश्चहलीयस्य साकात्रुमवधिदम् ।
शश्रति निर्मलीमदति शुचि । शुभ्र वीला । क । १५ श्वेद् गतौ । श्वेतो गण्डति
नीलादिबर्षाकिमुदत्वम् । 'श्रमाभ्यामितन्' । पा उ सू ३।१३ । इत्त् । १६ अश्वदाश्वति अश्व-
लस्रवते वा अश्वकश्रदिश्या उदरपण्डतेति । अथि भगुरिरिक्ताप इत्यस्त्वोपपद्ये । १७ अश्वदाश्व एव ।
द्वेषु शोचने । अर्माश्रि सः । १८ पुनोऽस्यशोभाम् इति हैमपञ्च । वाशति मनोऽत्र । पाउ गतिशुद्धयो ।
कल्प्य इत्यश्रवतीति रामाश्रम ।

मनोऽस्मिन् पाण्डु १ । शोभते शुभ्रः । शशिन इव प्रभा यस्य शशिप्रमम् । गौरः । हरिश्च ।

कृष्णं नीलासितं कालम्

वत्वार कृष्णे । कर्णान् कर्पति^२ कृष्णः । नीलति नीलम्^३ । उभयम् । न क्तिम् अक्षितम् ।

१ कुलनालाति कालम् । कालमिति वा मन^४ काल । मेघकम् । रवामलम् । रवामं च । पालाशम्^५ ।

४ हरित् । शिनि^६कण्ठान् इति दुर्गा ।

धूमं धूम्रमक्षिप्रम् ।

विशिष्ट^७ कृष्णे त्रय । धूनाति धूमः । धूतोत्पत्तिभक्तिति रागं धूमः । धूमलरश्च । अक्षि
वत्प्रभा यस्य धो^८क्षिप्रम् ।

तमोऽन्वकार विमिरं ध्वान्त संतमस तमम् ॥ १४८ ॥

१ ताम्यति मन्वीमवति चन्द्ररश्च तमः । धान्तम् । क्लीब । अन्व इष्टधुपथात् करोतीति धा^९च
कारम् । विमृते ध्वान्वाचतेनेन विमिरम् । कात्याये च्चन्वते ध्वान्तम् । घञ् । तमक मकारेश तमः
सन्तमसम् । ताम्यतीति तममित्यदन्तम् । क्लीब । अन्वतमम् । अन्वतमम् । तमिसम् । भूदाया ।
भूदायम् । विगन्वत् ।

सोहित रक्तमाताम्र पाटल विश्वदारुणम् ।

१४ पट् रक्त । रोहति वायते शोभाऽत्र सोहिता । रक्तते रक्तम्^{१०} । आताम्रते काट्प्रवत्
कथेषु आताम्र । पाटयतीति पाटलः । पाटयलः । विशीवते विश्वत् । श्व^{११}कृति इवर्ष
(ति वाऽ) कणः ।

पीतं गौर हरिद्रामम्

२ हरिद्रारक्तवर्षे त्रयः । पीतं मनोऽनेन पीतम्^{१२} । गाते गच्छति वर्षकियोपं गौरा^{१३} ।
तथा च नाममात्रायाम्^{१४} - 'गौरः श्वेतेऽन्या पीते विशुद्धं च^{१५}द्रमस्यपि । विश्वक'^{१६} । हरिद्रावत् आभा
लुपिर्वस्व हरिद्रामः ।

पालाशं हरितं हरित् ॥१४९॥ -

हरिद्रवर्षे त्रयः । पलाशस्य कर्णस्यायं पालाशः । पलाश दरवाह^{१७} - 'राक्षसे । विशुक्
यस्य पलाशाख्या । हरित्यपि^{१८} । हरति पितं हरितम् । हरित् ।

१ पश्यते लुबते पाण्डु । 'पोर्दीर्घश्च इति डु । इति ईमचन्त्र । २ कर्पति मन इति
रामाभ्रम् । दुर्दीर्घस्येति मक । ३ श्चोत्त कर्षे । नाम्नुपपेति वा ए कः । ४ कालमिति मन
इत्यन्वय । ५ अर्षं पाडांङन न मुह । 'पालाशं हरितं हरित्' इति पदस्य शीराशामभे द्रष्टव्यः । ६ कृष्ण
निभित्तर्जां ते दून्मूलकशष्पविकि वैशिष्ट्यार्थं । तत्तम - 'धूम्रधूमका कृष्णलांदिते इत्यमरः । १।५।१९ ।

कान्ताम्रदेशान्ति तमवी विभित्तमनिवेशात्तद्वाद - 'कास्तरे पश्यते इति । तर्बरीगदरतथा च्चम्पद
प्राश्रमिति ईमचन्त्र । ८ अर्षा इति रक्त प्रभा विशुक्कण्य इति वनकम् । विशुक् च तत्रपम श्वेत
विशिष्टमनि मथ । तत्रैव पाटलम् । तदुत्तम - श्वेतवत्पाण्डु पाटला इत्यमरः । ९ 'इह भीरुश्चमनि
या भाषे । १० रक्तवत्ता वा । पा उ गु १ । १ । इतीन्त् शञ्च च वा । ११ रञ्जति यत्र रम्यते रम
वा रगमित्यप्ये वा १२ पाषणे कर्णान् पाण्डु । शोद् पान । दि । इत्यपि । १३ गूढे उनु^{१४}धे मनाऽस्मिन्
गा । १४ मनी उग्रमनं । पाटले इत्युग्रादिमूलक श्वेतविकित । गूढते मीः । इति ईमचन्त्र । 'मद
मरुत्तेपमः । १५ अन्व न । १६ शी का ५२ ।

हरिणी लोहिनी शोणी गौरी श्येनी पिङ्गवर्षपि ।

पद् रक्तवर्षे । "श्वेतैतहरितलोहितेभक्तो नः" अनेन ईश्वरने उकारस्य नकारस्य । हरिणी ।
 तथा च इत्यानुषे । "शुक्राभा हरिणी स्मृता ।" हरिता च । रोहित्वायते शोभाञ्ज लोहित । रक्तवीरक्यम् ।
 श्वेतैतहरितलोहितेभक्तो नः" अनेन ईश्वरकारस्य च नकार । लोहिनी जाता । इत्यानुषे ।—

“अपाङ्गुसुमत्कारा लोहिनी परिकीर्तिता”

शोणते शोणी । गते गौर । नरात्पिशाणीः । गौरी । रवायते गन्धति भिन्न श्येनी ।

इत्यानुष — “श्येनी कुमुदपत्राभा ।” श्येना च । पेशति पिङ्ग । ईश्वरने पिङ्गङ्गी ।

सारङ्गी श्वरी फरली फल्मापी नीलापिञ्जरी ॥१५०॥

पद् पद् वर्षे । सारयति गन्धति [बहुवचान्] सारङ्गः । ईश्वरने सारङ्गी । श्वरति
 पालि वरान् श्वर श्वरकदच । ईश्वरने श्वरपी । कालनति कालः । ईश्वरने काली । कलनति वरान्
 फल्मापी । ईः फल्मापी । नीला गन्ध । नीलापि नीलम् । ईश्वरने नीली । पिङ्गति पिङ्गरा ।
 ईश्वरने पिङ्गरी ।

पराग मधु किञ्चनक मकरन्द च कौसुमम् ।

पद् कुमुदरंशो । पर मकरंमयते सम्भास्ते पुष्पेय परागा । उभयम् । मन्वते सम्भास्वते
 पुष्पेय मधु । उभयम् । कि च्छति किञ्चनकम् । मधुमते मधुपते पुष्पनेन मकरम्बम् । कुमु
 त्वेव कौसुमम् ।

उपचाराद्रज पांशुरेणुधुलीदध योजयेत् ॥१५१॥

क्तारो धूमाम् । रंज रागे । रक्तयनेन रजः । “उपिरंकिष्टम्बो वषट्” । मज्ज मज्ज पशि-
 नाशने । पंशुते पांशुः । “हरिहरितपिपिथिम् उष् । रीक् स्तो । रीषते रेणुः । रामारीनुम्बो ”
 मु” । धूत इतीति हरि वा धूतिः । उपचारात् पुष्पस्य । धूमनभाणुः । पुष्परेणुः । लतामधुपि ।
 मकरन्दः । मधुरेणुः । इत्यादौनि पुष्परसो नामानि कृतभ्यानि ।

कलङ्कावधमलिन किञ्चनक सस्य लाञ्छनम्

निबोधमधम पद् मलीममपि त्यजेत् ॥१५२॥

१ अथ पद् लोहिनीशोणी श्वरी लक्ष्मणवर्षपिपिथिपे इति कल्पम्, न द्व रक्तवर्षे । लक्ष्मणवर्षे
 मेश तथा—हरिणी शुक्राभा लोहिनी वराङ्गुसुमत्कारा शोणी कोकनरम्बुकिः, गौरी हरितामर श्येनी
 कुमुदपत्राभा पिङ्गरी पीतरका । २ श्वेतैतहरितभरितरोहिताङ्ग वरान्तो नः ई श २।४।१६ । ३ श्येनी
 कुमुदपत्राभा शुक्राभा हरिणी स्मृता । वराङ्गुसुमत्कारा शोहिणी परिकीर्तिता । इति पूजा श्लोकः ।
 ३ इत्यानु ४।५३।४ इत्या ४।५३ । ५ इत्या ४।५३ । ६ अथ पद् लोहिनीशोणीश्वरी लक्ष्मणवर्षपिपिथिपे
 वर्षपिपिथिपे इति कल्पम् । लक्ष्मणे तथा—सारङ्गीश्वरीफल्मापीपिपिथिपे । काली नीलापिपिथिपे ।
 पिङ्गरी पीतरका । ७ अथ परागकिञ्चनकमकरन्दो पुष्परसोमधको मधुमकरन्दशश्वो पुष्परसवाचको, कीदृश
 शम्भस्तम्भवाचकः, इति विवेकः । ८ परागव्यति परसुत्कर्षमपि इति विषयः सत्ता ।
 ९ किञ्चनकवति 'जल धारणारे' । बाहुलकात् । किञ्चनकवति कधीमवति इति छी त्वा ।
 १ मकरमपि घटि कामवनफलान्नकारम् । 'शो अथलक्षणे' । का । मकरमपि क्वचित् वनातीति वा ।
 'अदि कल्पने' । कल्पम् । शम्भवाचि । इति समाप्तम् । ११ का उ द ४।५१ । १० का उ
 द १।१।१६ का उ द २।० ।

यश्च क्वचिद् । क्वचिदे लक्षणेन क्वचिद् १ । न वर्यं उमीधीनम् अक्वचम् २ । मन्वते वायतेऽपयशी-
 ऽनेन मङ्गिनम् । किं कुरिस्तं, क्वचिदि किञ्चिन्कम् । क्वचिदि परं नात्तम् क्वचम् । साम्प्रत्येऽनेन
 साम्प्रत्यम् । निजुप्ये निजोद्यम् ३ । नम पूर्वो वाच ४ । न वषाटीत्यधमः । "वर्मतीभाभीभाषणाः" ।
 पम्पते पङ्गम् । मणिना क्वचैव मन्वते ५ परिभाषीकृतं मङ्गीमसः । तं त्यजेत् स्युवच ।

अनोदाहरणं कीर्ति साधुवार्द यद्यो विदुः ।

वर्षा गुणावलिं स्याति

५
 अत यशसि । क्वानां शोकानामुदाहरणं वनेन लोकेनोदाहरणं वा अनोदाहरणम् । इत्
 वंशम् । इत्—"वुरादिभ" । इत् । इत् कारिते इत् । किर्ति वातः । नामिनोर्वा । कीर्ति वातम् ।
 कीर्तनं कीर्तिः । "कीर्तीषोः शिञ्च" चिञ्चनः । कारितलोप । त्रिषु म्ङ्ङनेषु क्वचिदेषु स्ववाटीशानां मन्वे
 १० एकम्ङ्ङनलोपः । एकम्ङ्ङकारो गुण्यते । वि । रेङ् । धातूनां क्त्वुप्यवार्ता वारः साधुवार्द ।
 कुशलो वीर्यो हितरथ वायुवन्वते । यश्च क्वच्यविति । इत्यते यशः । "वर्षा शिञ्च" अस्माद्वन्
 प्रवो भवति च च क्वचत् । क्वच शिः । इकार ठञ्कारकार्यः । क्वचि धातुवनेन वर्यः । गुणानामवशि
 भेषि गुणावलिः । क्वचयते क्वचति । श्लोकः । अमिञ्च । उमाकवा ।

अवधानं तु साहसम् ॥१५३॥

१५
 वाहसे ही । क्वचिपतेऽवधानम् । क्वचदार्त्तं च । वाहसे १३ साहसम् ।

प्रेष्यादेशनिदेशानियोगां शासनं तथा ।

वधादेशे । प्रेष्यते इति प्रेष्य । आ समन्ताद् विद्यतीत्यादेशः १३ । निदिरपते निदिरशीषि वा
 निदृशा । आवातातीत्याह १४ । निजुप्ये निजोद्यम् । शास्त्रे प्रतिपाद्ये शासनम् । शास्त्र
 क्लृयिषी ।

२०
 सन्देश प्रिययोः

श्रीपुत्रयोः मुक्तवार्तायां सन्देशः । अन्दिशति १ सन्देशः । अमरचिदानामसाक्षारम् १५-
 'सन्देशवाग्वाचिकं स्यात् ।'

वार्ता प्रवृत्ति किञ्चदन्त्यपि ॥१५४॥

वयो नवीनवार्तायाम् । वृत्तिश्लोकवृत्तं विद्यतेऽस्या वार्ता । १६ मतामहाऽर्थावृत्तयोश्च

१ क्व इत्याद्यमपि क्वचिदि ईनितां गमयतीत्यन्वयः । २. न वरिद्धं वीर्यमित्त्ववचं गर्ह्यम् ।
 "अपचपन्ववार्तागर्ह्यवपिद्यजानिरीभ्यु" इति वत् । ३ मात्र प्रमाणात्परमुपलम्प्यम् । निजुप्यत्
 निक्षपनं श्रवते क्वचिद्विनीऽनेनेति करणे पञ् । क्वचिद्विनीं यश्चाशमविद्विज्जन्वदर्शनात् । ४ क्व
 उ व् १५३ । ५ पम्पते तुःकममेन । पञ्चि क्वचिद्विनीं विल्लारि वा । अर्धं चि म् ।
 ६ 'मन्वी क्वमी परिमाद्यं । पुंलि लकारां पः । यद्वा मसाऽप्यस्तीति ववीस्त्वस्तमित्ते
 रवादिना मन्वर्षीव ईवत् प्रत्ययः । यीकावविमहभिन्त्यः । तत्र मसिमत् इत्यापतेः । ७ वा व्
 १५३ । ८ कीर्तीषोः शिञ्चि निदेशात् इतः काप्ति इत् । ९ "नामिनोर्वाऽनुषु रीमङ्ङने
 वा व् १५३ । १ क्व व् ५५।८९ । ११ क्व उ व् ५६ । १२ क्वचि वते मन् वारुम् ।
 १३ आवाहनम् आदिरवते वेति विग्रहः । १४ आनापि आवाहते आरुन् वेति विग्रहः । १५ अन्दिशते
 इति क्वचि पत्र स्यात् । १६ अम् वी १।१।२० । १७ वा व् ५।२।१ ।

स्वीकृत्यै चार्थं च । प्रवर्तते करोऽनवा प्रवृत्तिः । त्विवा । किं कुतित वरस्य किंवदन्ती ।
 वृत्तान्तः । ज्येष्ठः ।

कठोर कठिनं स्तब्धं कर्कशं परुष दृढम् ।

परु दृढे । कठति हृष्येश कीवति कठोरः^१ । कठति कठिनः । स्तम्भीति स्त स्तब्धः । कठ
 कठोऽनवा वपुः । कर्कति करोति निर्दल्प कर्कशः । परुष्यति कुप्यतीति परुषः^२ । कुप कुप क्व दीपे । ५
 दृ दृ इति दृढो । दृवति स्त दृढः । “परिहृदशौ प्रमुक्तमयीः । मूरः । क्वत्ताः । कटः । पम्बः ।
 निष्पुः । कठः । मूर्धिमत् । मूर्धम् । प्रवृत्तम् । प्रौढम् । एषितम् । सर्वं विपु ।

अश्लीलं काहल फल्गु

निस्तारे वचति वच । म श्लीयते न श्लिष्यते स्तां वित्तम् अश्लीलम्^३ । वचनम् । कं
 शिरः आ समन्ताद् दक्षति अशोममान करोतीति काहलम्^४ । लोहलज्ज । तुह वीजः । पज्ज निष्पती । १०
 फल्गति फल्गु^५ । रण्डवकुंभस्युष्मस्युष्मिपुष्पुलपव ।

कोमल मृदु पद्मसम् ॥ १५५ ॥

वचः कोमलो । कौ पुषिष्वा महते कोमलम् । मूर बोदे । मूरनातीति मृदु^६ । विशति
 पेशम्^७ । सुकुमारः । मृदुलम् ।

प्रत्यग्रं साम्प्रतं नर्घ्यं नव नूतनमग्निमम् ।

परु मशीने । प्रवप्रगति प्रत्यग्रम्^८ । सम्प्रति भर्षं साम्प्रतम् । नूतये नग्घम्^९ । नौति
 मयम्^{१०} । नूतये नूतनम्^{११} । ज्ये नवम् अग्निमम्^{१२} । पुष्पादिभ्य इमन्वा । अग्निमम् ।

१ कौश्लि वाच । किष्पुर्वाद् वदेरीडादिको म्न् प्रत्यय भव्यन्तः । गोरादित्वाच्चीप् ।
 इति रामाभम । २ कठिकिम्भाभीरः का ठ ए ४१३० । कठ कुष्कुवीकने । ३ वशि-
 भाणुरित्कौपमित्परस्कोपो मलपलेति दीकौडकिम्भमिवः । रामाभमश्च— पिपति पूरति कर्ल
 बुद्धि करोति । पु पास्तनपूरणयोः । पुनरि इत्यादिमा उ ए २७५ । ठपच् । इत्याह ।
 पूषति पूरति पर कोपेनेति हैमचन्द्रः । ४ का ए ४१२१५ । ५ न भियं शातीति
 अस्तौलम् । कज्जया । कविडकादित्वाक्कालम् । इति रामाभमः । म भोरत्वास्तीति विष्पादित्वायम्
 लवीवी कः । ६ काहलौऽवृत्तवागिति हैमचन्द्रः । ७ कठति विशीरिति इत्यम्बः । ८ का ठ ए
 ११९ । इत्युप्रवय गध । ९ कौ पुषिष्वा महते चारवति भियम् इत्यर्षः । मल मल्ल चारो
 पचापन् । परमेध कुमल इत्येव विष्पति । वल्लुल्लु 'कोमल' शब्दस्य सिद्धिः प्रकाशस्यरेखैव साधनीया ।
 कौटीति कोमल इति विश्वोऽभिधानचिन्तामणौ । कामते ज्ये इत्यन्वः । १० मृषते इति कर्मणि कु
 प्रययो म्वायः । ११ विश्वेऽभ्येद्येन सर्वं करोतीति श्रीशार्दिकोऽलम् । रामाभमश्च— पिश समानी
 पेशन पेश समारिचिचता लोऽन्यास्तीति विष्पादित्वाक्कालम् इत्याह । पेशशब्दस्य वचासौ मुल्य
 कोमलासौ गौड । तनुळम्— 'इधे चतुरपेशचपत्रः घृत्तान उष्णम् इत्यमरः । २१ । १९ ।
 दक्षलु पेशकः ।' इति अग्नि चि ३५८ । १० अम गती । कः । प्रतिनवमप्रमलेति क्षीरसामि
 रामाभमी । प्रतिगठमप्रमनेनेति हैमचन्द्रः । ११ ए उ स्तवने । अथो प् । १४ नूषते नवम् ।
 अरोदप् । एव कर्मणि विपद्यो बुळ । १५ नवमेव नूतनम् । 'नवस्य नूतवैशक्यनूतनप्लाभ प्रयत्ना
 वा ३४१ । इति तनप् प्रत्ययी प्रारवेशः । इत्यम् । १६ म्पादिपम्भाडिडमप् वा इति डिमप् ।
 मात्र पुष्पादिभ्यः इमम् तल मावधर्मबोर्विबानात् पुष्पासौ पाठाभावात् । क्वपि । अग्निमन् इत्य
 निप्ररुपापते ।

गूनम् । तर्धे त्रिषु ।

पुराणं चठरं शीर्षं प्राक्त्तनं सुचिरन्तनम् ॥ १५६ ॥

पञ्च पुराणेषु । पुरा भवम् पुराणम् । चठ इति शीर्षोऽयं पाठः । चठतीति चठरम्^१ । शीर्षे शीर्षम् । प्राक् पूर्वं भवम् प्राक्त्तनम् । सुष्ठु चिरं भवं सुचिरन्तनम् । प्रथनम् । प्रथनम् ।

सो रे ईं हो इयामन्त्रे

एते शम्भा आमन्त्रणार्थं वर्तन्ते । सू उतायाम् । सोः^२ । रेपु अगस्तौ । रे । इनु इतिगस्त्यौ । ई । हु दागे । हो । हि गतौ । हे ।

कश्चित् किञ्चन संख्ये ।

कश्चेदर्थे^३ हो शब्दो वर्तते । अक्षिरोपानिधाने किञ्चनशब्दो अत्रगन्तव्यः । तथा शोक्म्—
१० 'किम् सर्वविधमव्ययतासिञ्चनौ ।' कश्चित् । कश्चन । कौचित् । कौचन । केचित् । केचन इत्यादि ।
किञ्चिं कश्चित् कश्चन इत्यादि । कश्चित् किञ्चित् । किञ्चन । इत्यादि ।

'प्राक्त्तनेऽङ्गाय' मपदि^४

शीर्षार्थे त्रयः शम्भा वर्तन्ते ।

निषेधे मा न खण्वलम् ॥ १५७ ॥

निषेधे चत्वारः शम्भा वर्तन्ते ।

उच्चैरुच्चार्य च तुङ्गमुच्चमुभयतमुच्छ्रितम् ।

पद् शीर्षे । उच्चैरुक्ते उच्चैस्त् । अन्वयः । उच्च च उच्चं च उच्चोच्चार्यम् । तुङ्गति वैर्ष्यमाहते
तुङ्गम् । उच्चैरुक्ते उच्चम् । उन्नमस्तु उन्नतम् । उच्चैरुक्ते उच्छ्रितम् । प्राणु^५ उच्चम् । उच्चम्
शीर्षम् । आस्त च ।

नीच न्यगात्तनं कुञ्जं नीचैर्हृस्व नयेत्परम् ॥ १५८ ॥

पद् इत्ये । निचोक्ते नीचम् । न्यगात्तनं न्यग् । आत्तन्यते आत्तनम् । नीति व्याधि कुञ्जः ।

१ वयपि चठशब्दो शीर्षे प्रतिद्वो चठरशब्दत्पदे तथापि कश्चिच्चठरशब्दोऽपि शीर्षे
पठितस्तथाशयेनाह—चठरीति चठरमिति । बहुषुम्—'चठर कुचिह्वरवो अने त १।५५१ ।
२ भाटीति नीह् । डीघप्रत्ययः । तथा—नो भार्गव । रिशातीति रे । चिच् । तथा रे वेगा । ईं
हो णि पुषकृतम्नोपनहनमुष्मम् । परस्मै मात्कादौ 'हो' इत्यकार एव तन्मोचने प्रयुज्यते । ईं
पुरोतीति ईंही । तथा ईंही विद्म सले । हिनीति ईं । हि गता हृद्वी । चिच् । तथा ई
हेरम् । ३ अक्षिरोपार्थे इत्याशयः । ४ इति प्राक् । 'प्रा कुस्तावा गतौ' । बाहुल्यकारणम् ।
अकार इत् । त चाठौ सखी प्रत्ययश्च । ५ आह्वनम् आह्वानं 'इनुद् अवनवने' । परम् । पूर्वो-
दरादित्याद् बन्धवः । ६ अयमप्ये उपदि । 'पद् गतौ' । इन् । पूर्वोदरात्तात्पमोऽन्वयोः । ७ तुङ्गति
वैर्ष्यं पाठवतीति । परम् । कुञ्जम् । ८ उन्नमति च उन्नतम् । ९ उच्चं अथते उच्छ्रितम् ।
१ मन्त्रुते वैर्ष्यं प्राणु । 'अनुद् व्याती' । ११ निष्प्रधानो लक्ष्मीं चिनोतीति । १२ इति रामाभम् ।
निम्नमहति नीचैरुत्पल्य वा । अर्थां आदित्याहृत् । अन्वयानां ममात्र शिखीप । १३ मात्र प्रमाण
मुपलम्बम् । १३ नीति व्याधिशिष्येणं त्रुते एचवति । नी पृथिव्याम् उच्चति श्रुत्तभवति । 'उच्च आशये ।
अच् । शम्भ्यादि । कु ईपद् उच्चमादौवमल वेति रामाभम् ।

म्युग्धरश्च । निधीयते नीचैस् । इवति इत्थ ।

अमा सह सर्गं साकं माईं सत्रा सजू नमा ।

अथो वाचं । अमति अमा^१ । सह इति गच्छति स्नेह । सह मिनोति समम् । सह अकृति गच्छति साकम् । सह अयम् स्वायम् । सह त्रायते सखा । बुपी मीवितेवनयो । बुप् सपूर्व । सह बुपत सजू । किन्च वेलोपा । ति । म्युग् ^२ । ठिलोप । अमति समा^३ । सह मन्ति बर्तते अतपी वादी वा । स्त्रीबहुले ।

सर्वदा सतत नित्य अश्रवदात्यन्तिक सदा ॥१५६॥

पद नित्ये । सर्वस्मिन् काठे सखदा । काठे किं^४ सर्ववदेकायमेव एव वा । अतन्वतेऽम् सततं अततम् च । निपच्छति नित्यम्^५ । श्रवतीति दादयत् । अत्यन्ते भवमात्यन्तिकम् । अदा इति निपात । सर्वशब्दात्परो दापत्त्वो भवति सर्वस्य समाश्च । सर्वस्मिन् काठे सदा । अना अन्^६ अदातनम् । भुक्त्वा । शास्त्रम् । शारवतिकम् । अनस्वरम् । अविनस्वरम् । सर्वे भियु ।

वियोगं मदनावस्था विरह पल्लक विदु ।

पत्वारो विरहे । विबोद्धं वियोग । मन्त्रस्य अन्वयत्वावस्था मदनावस्था । विरह्यं विरहः । मत्त मत्त वाच्ये । मत्तत्पाने कचिल्ल इति पठन्ति । पत्सत पत्तः । स्वार्थे क्-पश्चका ।

प्रेमाभिलापमालम्ब्य राग स्नेहमथ परम् ॥१६०॥

पद्य स्नेहे । प्रियस्य ग.व कर्म वा प्रेमा । पिय^१ स्थिरेति प्रादेशः । अभिलाषते पुमिहापः । लय श्लेषश्चरीजनयोः । आलम्बते आलम्ब्यम्^२ । "अक्रिष्टिपत्तान्वाप्" । रम्ब रागे । इन्वु । रम्बन् रागाः । भावेषुम् । "रन्भार्भक्करशयोः" पद्यमशोयः । अस्वी दीर्घ । "अबो कगी पुट् पाठु बचयोः । बडागकार" । प्र ति । रेफः । अयवा रम्बतन्नेन राग । "अम्बनाम्ब" । करण धन् । प्र "येर्भाबक्रलबीः पद्यमशोय । अस्वी दीर्घः । अबो अभाविति बडागकार । सिद्धते स्महा ।

संहित संहित युक्त सपूहं समृतं धृतम् ।

मस्कृतं समयेन च प्रादुरन्वीतमन्वितम् ॥१६१॥

१ न माति सह मायिनामनेकवाग्मेयता न गच्छति । अश्रवः । अश्रवयो वा । २ अम्बनाप का ख २।१।४८ । ३ "अभी अमी परिमाण । अम वाशुः । पपाचच् । अममिति मान्दम रूपम् । अहार्भकमीकम् । लृट्भिष्" अमा शब्दो बर्णवाचको न तु अहापवाचक । अतुल्यम्— हावतीऽप्री शरत्तमा इत्यमरः । अतोऽपुमिषधे एतत्त्व प्रामाथ्यं चिन्त्यम् । सह मन्ति अतयो याकामिति विप्रशान्ति बर्णवाचकप्रमाशम् एव अङ्गच्छतं । तत्रैव अतृता महमानात् । ४ का ख २।१।१८ । ५ अतु विस्तारे" । का । अतो वा शिवलभोः इति मसोपः । ६ एवमेतु के नियमिति वा निशब्दात्पु । निवच्छति निवर्त भवतीत्यर्थः । ७ अत शशतीति बन्तु पुणम् । शश लुप्तगवौ । बाहुलकादभ्यु । ८ अनालनादिशब्दानां विशम्भनिष्पानां मथोक्तश्रवशदिस्यदश्रवनात्पार्यतया शीकृत्वोपिर्न सपृच्छते । ९ मत्तत्पत्ताश्रवशोर्बिहार्थत्वे प्रमाणात्परं नीपलम्बम् । १ पा ख १।४।१५७ । इति प्रादेशः । इमनिश्च्यस्य । पृष्ठादिभ्य इमनिष्वा इति । ११ आलम्बशब्दस्य लगात्वे बोधात्पर संवादी नोपलम्बः । १२ का ख ४।२।११ । १३ का ख ४।१।१६ । १४ का ख ४।१।१६ । १५ का ख ४।१।१९ ।

२४ वरिते । वंहीवते संहितम् । सहितम् ।

“सुम्पेदधरयमा हृत्ये तुम्भाममसोरपि ।

समो वा हिसवतयोर्मांसस्य पथि सुहृत्पथोः॥”

वीर्यं पुच्छम् । पूषी सम्पके । पूष् । सम्पृच्छति स्म सम्पूच्छम् । “अथर्वाङ्मन्त्रं” इति

५ कर्तरि लृट्प्रथमा । “अर्वाङ्मन्त्रोः”—यत्न कः । तन्निष्पद्यते स्म सम्पूच्छम् । वीर्यस्य पुच्छम् । तस्मिन्पठे स्म संस्पृच्छम् । अन्वेषते स्म सम्पेषतम् । अन्वीक्यते स्म अन्वीकृतम् । अन्वितम् ।

वर्तमाना सरणि पन्था मार्गः प्रधरसम्परी ।

सप्त मार्गैः । वर्तन्ते प्रतिपद्यन्ते वना येन क्त् धरमै । नात्तम् । ‘वर्तमानान्यो मन्’ । अथर्ववृत्ति
अवति अर्वाङ्मन्त्रे नान्तोऽप्या । अरत्नवत् सरणिः । वृत्तात्मनः । सुचित्प्रतिपत्तम् । द्वौ ।
१ पतन्ति गन्धन्ति अनेन पन्थाः । नात्तः । इत्यन्तोऽपि । पथि । पथ । पथान । पन्थ इत्यपि । एते पु सि ।
मार्गानं मार्गपन्थनेन वा मार्गः । पु सि । प्रथ्येकं अरत्ननेनेति प्रधरः । अथर्ववृत्तेनेति सञ्चरः ।
पद्विः । एकपरी । वर्तन्ते । अयनम् । पदवी । पथा । निगमः ।

त्रिमार्गानामगा गङ्गा

मार्गपूर्व विराधे प्रुण्वमाने गङ्गानामानि भवन्ति । विवर्त्ता । ध्वन्ना । विवर्त्ति । विपया ।

१५ विपयरा । विवर्त्तः ।

षापो गोमण्डलं वध ॥१६२॥

वधी गवां स्थाने । षोण्ठे गावोऽत्र षोपा । यवां मन्थकम् षोमण्डलम् । गावो ।
१६ मन्थक मन्थः । गोकुलम् । षोण्ठम् ।

शृङ्गो हरतिहरिनीबहरिस्तिर्यक्च शृङ्गिगच्छः ।

२ पथ महिपादिषु । परं शृणाति हिनत्तीति शृङ्गः । (म्) । श्रिपु । इम् । हारो । इ हरति
पूर्वः । हरति अर्धमतेषुर्धं क्लृप्तगार्धं हरति बहति हरतिहरिः । “हरतेह तिनायवोः” पशौ । इत्ययः ।
नान्दन्तशृङ्गाः । नार्धं स्वामिन हरतीति शृङ्गायहरिः । “हरतेह तिनायवोः पशौ” । तिरोऽन्वयतीति

१ वहीवते इति विमर्शो न पुच्छ । सम्पूर्वस्व हाङ्प्रथामार्धवत्त्वात्सुतार्धमतीति ।
अत्रा अन्वीवते एव संहितम् । सम्पूर्वपथः अन्वये वात्रो विरिति अविशेण । २. १।१।१४
का ए । ३. पुच्छतं स्म पुच्छम् । ४ का ए ४।१।४ । ५ का ए ४।१।५ । ६ का उ
ए ४।२८ । ७. अर्वाङ्मन्त्रे सन्तत गच्छति क्वीऽत्र अन्था । “अथ साहस्यमने” । “अनिलस्य
पथ” का उ ए ३।५९ । इति अनिलस्यः तकारस्य अकारश्च । “अधि क्वं पथिक्कानाम् । अतेर्धं
शेति क्वनिम् अन्थावेषः । इति रत्नात्मनः । ८. पत्तु पठने । पतेत्यथेतीति षोऽन्तावेषेति
अन्थावेषः । पथन्तेऽनेन । पथ गती । पथन्तेऽनेन । पथे गती । पथिमथिम्यामिनि । इति
रत्नात्मनः । ९. मन्थते विवृणीभ्यतं पारै । मन्थ श्रुदौ । मन्थ् । इति । कुल प । मार्गते
इति वा । ‘मार्गं अन्वेषय’ । १० वाक्ये अन्थावन्ते इत्यत्र ‘वायु शब्द’ । ११ ‘शृङ्गपञ्चाङ्गुतनि’
का उ ए १।४।४ । शृङ्गिगच्छाम् । अङ्गप्रत्यये निपाता । शृङ्ग गवादीनां विद्यापमिति तथैव
दुर्गाः । लठ ‘अङ्गमत्स्यस्तीति क्वं अविद्वीऽत्र । एवं इति महिपादिर्हंसा संगच्छते । अथमात्रे विद्याप
मेवार्धं स्यात् । १२ का ए ४।३।२९ । १३ नात्र नाधारण्युं हरतीत्ययम् ।

त्यस्यः' । गृह्यातीति गृह्यम् । 'गृह्यगृह्यगृह्यानि' एतेऽङ्गभ्यवात्वा निपात्यन्ते । गृह्यानि कियन्ते येषां ते गृह्यिणः ।

गौर्दचतुष्पात्पशु

नयो^२ गवि । पूर्वा गच्छतीति गौः । चत्वारः पादा यत्वागौ चतुष्पात् । स्वरा इति लोभो पाठ । स्वराते [बाभटे] इति पशुः । ^१अन्यथादत्तः—'अन्यथादत्त' इति पशुना गतदत्तं कुतश्च ननु सुपशुवेषु ननु कुतश्चात्तुङ्गाद्वचनः एते शब्दा कुतश्चान्ता निपात्यन्ते ।

तत्र महिषी नाम देहिका ॥१६३॥

इी महिष्याम् । तत्र तस्मिन् महिषे^४ महिषः । नशादित्वादीः । महिषी । शिक्षित उपजीवते तुष्पेन देहिका^१ ।

कृता नदीप्णो निष्णात कृशली निपुण पट्ट ।

१०

स्रुण्ण प्रकीणः प्रगल्भ फोषिदम् विशारद ॥१६४॥

एकादश कुराले । प्रशस्तं कृतं कर्मास्य कृती । नर्था ज्ञातीति नदीप्ण । 'निनदीप्णा^१ ज्ञाते-कौशले' इति पठ्यम् । नितरां लज्जाति स्म शुभित्वमानोति स्म निष्णात । कुक्षित रश्चि कुराल । अयना कुरान् काति कुरालः । निपुणतीति निपुणः । शौभनकर्मत्वात् । पठति बाना तीति पट्टः । स्रुण्णति स्म स्रुण्णम् । शुरिर् लण्येयत् । प्रगल्भ शीघ्रात् प्रकीणः इति लुक्कार्थं परित्यज्य निपुणे ष्टा । तथा—

' निरुद्धा उक्त्या कैश्चित्सामर्थ्यादभिधानत् ।
क्रियतेऽद्यतनै कैश्चित्तैर्मिनीष स्वराक्षितः ॥'

प्रगल्भते प्रगल्भम् । गल्भ बाध्यम् । इी वेति तदभिप्रायमिति निरुद्धा क्वते फोषिद् । विरोधेन पापं शूनाति विशारदः । क्षेत्रवः । हठश्लः । द्रुतमुक्ताः । कृत्वर्थाः । रसः । षिषिवाः । २०

विदग्भश्चतसुर

इी चतुरे । विदग्भते^१ विदग्भः । पुनपाद्यान् चठते भाचते चतुः ।
पूर्तश्चाद्वकृन् कितवः सठः ।

१ 'तिर्वन्ध' इत्यकारान्तापाठमित्यम् । अन्त्यवाग्नेऽन्तत्वात् "तिरत्तत्तिर्वन्धोप" इति तिक्विश शक्ति अकारान्तस्यैव मुक्त्वम् । अकारान्तस्ये प्राशाद्यप्ये एकाकारोन्तेन मूले कृदीभङ्गम् । न चाका रान्तत्विर्वन्धोप कनाऽङ्गभ्यवात्कारेण पर्ययेऽभिमतः । तदुक्तम्—'प्युत्तिर्वन्धोरि अ वि ञर८१ । २ सामन्त्यविरोधार्थत्वाद्दिवा पर्यायस्वामावात्त्वो गतीति पाठश्चित् । गोशब्दः पशुविरोधे चक्षुर्विरोधिः । अशुभ्यादेऽप्युशब्दोः लर्णपशुवाचकत्वात्पर्यायत्वमिति विरोधः । ३ का उ ६० १।१५ । ४ "महिर् इक्षी" । महते बर्षते वा विद्यालक्षणात्वात् । औपविक्रियम् । प्रागमशाल स्वानिस्तथाप्युम् । इत्यन्त्यम् । ५ भाष कोपा-तरतवाद् । ६ पा सू ८।१।८१ । ७ अत्र पूर्वार्थे अन्वालोच्छ्वोचने १६ कारिकाटीकावायेवमुपलभ्यते निरुद्धाद्यया कश्चित्त्वामर्थ्यादभिधानत् इति । उपरार्थस्तु न स्रुण्णपाठ । ८ कौषि प्रतिपादयति वमार्दि कौषिदः । कुवातोर्विन् । वेतीति विदः । इत्यु- यति कः । आदिदः । अयवा कवि वेदे विदा यस्येते रामाभमः । ९ विरोधेन शौर्वोऽप्य- मल्लो वा विशारदः । इति हैमबन्तः । विविष्यो विपरीतो वा शारदः इति रामा । १० विरोधेन मेवविच इति स्म विदग्भः ।

अत्वारो घूर्ते । घूर्ति स्म दिनस्ति स्म घदाभार घूर्ते । घाट् ऋतीति घाट्कुट् ।
कित्वाऽस्तस्येति कित्वा । शठवतीति शठः । श्वात्रिनः । कुशकः । कायंतिः । वासिः । कंस-
तिः । गृहकः । माशापी । मायी ।

अपि नागरिको ह्यय

अपि कुत्रापि श्रेयः प्राप्तव्यः । नगरे भवति नागरिकः ।

गोत्रसंज्ञाङ्गनाम सत् ॥१६५॥

अत्वारो नाम्नि । गवा बाभ्या स्वाभारेण प्रायते रक्षति पाञ्चति गोत्रम्^१ । उभान् उभ्या^२ ।
अद् अ नाम अ समाहारत्वादेश्चचनम् । अङ्गपते लक्षते अङ्गम् । नमनम् नाम^३ ।

मुग्धो मूढो जडो नेढो मूको मूर्खश्च कपूचद ।

अन मूर्खे । अर्माङ्गयेषु मुग्धति संशयं प्राप्नोतीति मुग्धः । मुग् वैचित्ये । मुग्धति स्म मूखः ।
गन्धर्वेत्यादिना कः । हो टः^४ । । उर्ध्व । उ टो लोपः । तिः । रेकः । अहति म पुष्पं गच्छति^५ ।
जङ्घः । अस्मभः । न ईश्वते न स्मृते केनापि^६ नेष्टः । मूर् बभूवे । मूर्ते मूकः ।^७ मूकादन - मूकमूक
अर्नकपुष्पकमूकमूका^८ स्ते अन्त्यबान्ता निपात्यन्ते । मुग् वैचित्ये । मुग्धति कामेषु मूकः । मुग्^९
मूर्च । कुशिलत्वं वदति कडङ्गः । विषयः । वासिः । वासिः । वासः ।^{१०} अह्वरः । अशिः ।
^{११} नासीकः । पयुः ।

स देवानां प्रियोऽप्राप्तो मन्द

अयो मन्दः । देवानां प्रिय^१ । अमि (नि)ष्ट इत्यर्थः । न प्राक् अप्राप्तः । अप्येषु मन्दते
स्वपित्तेति मन्दः ।

१ कुग्ना परतीति कीर्त्यतिः । तेन परतीति उक्त् । २ धूर्तत्वाम्बार्ह इत्यर्थः ।
३ बभूमा अाभारेण अ स्वरत्वं स्य रक्षते । नामादपि स्वातुकराचारवर्षीत्यामामानं प्रतिष्ठा-
यति । रामाभमस्तुद्गृध्वते श्वापते उपायते इति स्पृन्तिमाह । "गुर् शब्दे" । ४ तदुक्तम्—
नडा म्बाप्यठना नाम इस्तावेभार्षयुजना इति । अम को ३।३।३३ । ५ अङ्गुवतेऽनेनेति शेषः ।
ना ना अनाङ्गिनी भवति । ६ नमनं मागेत्यङ्गुठम् । भावे यनि प्रज्ञामायक दन्तनामशब्दगणुत्वापत्तेः ।
अन म्बा अम्बाते ग्नायो उर्यतेऽभिधायत्पुंयोऽनेनेति विभक्त्याम्ब । नामन् लीमन् इति निपा-
यित्वा । ७ अय मुरादीनां वा का ए २।३।४६ । इति उरारस्य अकारः । ८ "लक्ष्मस्य पञ्चवर्गा-
उरारं का ए ३।८।५। इति परस्य इः । ९ "उ दलोतीदीर्घभाषयावाः" । का ए ३।८।५। इति
रर्थादो दीर्घः । १० अङ्गति लीनी म भवति । उरारीरेण्य अट इति इमचन्द्रः । ११ गेहशब्दः कोया-
न्त नीपकम्बनः । एहमूक्तोऽजटमूकशब्दो वा बाह्युतिप्रभितार्थे क्त-वते । तुल्यम्—"एहमूक्तम्
बह्वु गीतुमशिति । इति । अम को ३।३।४८ । "एहमूकोत्वावाङ्भुवी अभि वि ३।१९।
या। प्राति अटमूक्त इति क्तः सम्भाषने । अहविशयवाचक्येऽपि तस्य सामान्याभिधायणं अह-
वरीय अनेहय रो वा अपिः अर्थः सामान्याभिधायणं प्रयोगः । १२ का उ ए २।५८ । १३
का उ ए २।१०। १४ नाम अम्बान्तरमुक्तपम । १५ अत्रापि नाप्यममशब्दम् । १६ अनादे-
वाचकपदः ३।५४ । अम्बान्तम् । तुल्यम्—नालीशोऽह शरे नप नासीकं पचनस्ये इति । १७
देवानां प्रिय इति अ मूर्ते" वा ३।३।२१ । अम्बा अङ्गु इति वा एते ।

घीनामधर्जित* ॥ १६६ ॥

धीवर्जित । बुद्धिवर्जित । प्रतिभावर्जित । श्लाघवर्जित । मनीषावर्जित । विपय्यावर्जित ।
मतिवर्जित । संख्यावर्जित । इत्यादीनि घूर्णनामानि भवन्ति ।

पाष्टिका कलम शालित्रीहिः स्तम्भकरिस्तथा ।

वत्पारः शालिमेह । पश्चिमपेश पच्यन्ते पाष्टिका* । पश्चिमपेशेत्याभा इत्यर्थः ।
कलमति पुष्टिमनेन कलमः । शालते पान्थेयु शालि । अथवा शालिना अमरेण युतं शालि । बह्वि
वर्षेण मीहिः ।* स्तम्भकरिः ।

वत्स* शङ्खकरिर्जातः पोठन् पद्दक्षनः स्मृत ॥ १६७ ॥

वत्सो वत्से । मातरमनीत्यर्थं वदति वत्सः । शङ्ख करोतीति शङ्खकरिः । (१) । "छान्द
*शङ्खोरिति" श्रीहिबल्लयोवपवक्ष्यानाम् । पद् दन्ता मत्स्य स पोठद् । "छमासे दन्तवशपात्तु
पय उत्वं शपोर्दौ" पद् दक्षना मत्स्य स पद्दक्षनः ।

श्रीपङ्कीरो गर्जित* स्तम्भो मानी चाह्युत्सृतः ।

उद्ग्रीव उद्गरो हस्तः

नव गर्जिते । शोषतीति शोषणीः । "शङ्खशोषण्य इत्" । गर्जोऽकारः संजातोऽयं
गर्जित । शारङ्गविद्वर्तनाल्लंभादेऽर्थे इत्पु । छान्दसे स स्तम्भः । मान् पूषादित्तवयो गर्जो विद्यते
अस्य मानी । अहम् अहकारीऽस्तस्य चाह्यु । "उर्गाऽशुभम्यो गु" । उद्गम्यते रूपेण उद्गत* । उद्
कर्णा मीमा मत्स्य स उद्ग्रीवः । उद्गति गर्जेशान्त्म् उद्गत् । इत्येते हस्तः ।

नीषदश्च पिशुनोऽधम ॥१६८॥

नवो दुर्बने । नित्यं पापं चिनोति नीषः* । मेघो पिशति मेघो पेशवति वा पिशुना । तासम् ।
पिनाधि वा पिशुना । "पिशुनकाशुनो" मन्पूर्वो वाच् । न द्वावतिर्यधमः । "वर्मणीमाश्रीत्ता
धमा" । दुबन । कुम्भ । कर्णवप । शोषमाहो । द्विभिः ।

शौरैकागारिकस्तेनास्तस्कर* प्रतिरोधकः ।

निशाचरो गृहनरो हैरिकः प्रणिभिदश्च स ॥१६९॥

*नव नीरे । नीरवतीति नीरोः । स्वार्थेऽपि नीरप्य । एकागारं प्रवाहनमस्यैकागारिकाः ।

१ पश्चिकाः पश्चिमपेश पच्यन्ते" वा ५।१।९ । इति कन् प्रत्ययो रात्रशम्भलोपध ।
२ छान्द करोतीति लम्भकरि । "इ लम्भशङ्खोः" । का सू ५।१।५५ । इति कन् इत्यन्व । ३
का सू ५।१।२५ । ४ का उ सू ३।४।८ । ५ "उर्गाऽशुभम्यो गु" इति ई श ३।२।१७ । ६
उत्कम्भ इति गच्छति दिनलिङ्ग वा उद्गत इति हैमचन्द्रः । ७ इत्याप्येऽपुं शब्दो गठः । एव न्यवतीति
विप्र उक्तः । अथ पिशुनावाऽपुणेन विप्रहमेतः । निपूर्वध्विनीयेर्वाङ्गुलाङ्गुलः । उपकर्णादीर्षध ।
अन्वध द्व विह्वलमद्यतीति विप्रहः । ८ मिश्रलेफनेयेन दक्षपति द्वुषिपिशिमिभिन्वः फिद्" उ सू
३।५।५ । इत्युत्प । पिशुनवति अपिशुनति वा । "अपिशवति अण्डवतीति नीषः इति हैमचन्द्रः ।
९ का उ सू २।५।१ । १० का उ सू १।५।१ । १ नीराप्यो निशाचरान्ताः पर्य नीरे । गृहम
रादधः प्रणिभन्तात्त्वयो गुप्तचरे । इति पाठ उचिठः । तदुक्तम्- हैरिको गृहपुष्पाः प्रणिभिः"-
अभि वि ३।१।२० ।

स्तेनवति स्थावति वा स्तेनः^१ । उभयम् । त्ववति पत्रम्^२ क्षयं नवति त्वरकः । "ततोः" कर ।
 अपवा कृन् लृप्^३ । त्वन्नीतीति त्वरकः^४ । त्वाद्यङ् । नाम्नन्तुष्वाः । वृद्धिलात्त्वं लङात् । प्रविश्वदि
 मार्गं प्रतिरोधकः । निशा चरतीति निशाघरः । गृन्^५चासौ नरः गृह्णन् । शिनोति परराध् सप्यति
 हेरिः । अर्थेण निवर्तं गुप्तो चीरते शिवते वा प्रपिधिः । इत्सुः^६ । परस्त्वप्ती । मल्लिगुणः ।
 १ मीषकः । प्रतिमीषकः । —

प्रस्तरोपलपापाणदपद्भस्तु शिखा घनः ।

प्रस्तुरास्यास्त्वादवति "प्रस्तरः । काठिम्बग्रपलाति "उपलम् । उभयम् । पिनडि ल्भं
 "पापाम् । पापानम् । इत्यादि लृप्^७वति द्विपते आश्रिते वा कार्यम् इत्यत् । शिखान् । इषाति "घातुः ।
 शिनोति त्वन्नीतीति^८ शिखा । शिखी च^९ । शिखान् । इन्वते^{१०} घनः । अग्रन् । प्राक् । पुलकम्^{११} ।

तत्र आतमयो लोहम्

दो लोहे । तत्र तस्मिन् पाषाणे वातम् उन्नयन् तत्रजातम् । प्रस्तरीन्नयः । उपलीदुनयः ।
 वात्स्यम् । इपदुन्नय । शिलोन्नयः । पनोन्नयः । इत्यादि लोहममानि भवन्ति । अन्ते सर्वत्रिकार
 घान्तम् अय । कुनाति ल्वं लोहम् ।

घातङ्गम् नयेत्परम् ॥ १७० ॥

तत्र पाषाणे उन्नयानि शुभयानमानि भवन्ति ।

क्षामं घान्तं कृशं क्षीसं हीन जीर्णं च वैरिणाम् ।
 शीर्षाविसानं दून च

नव इष्टे । क्षावति स्म क्षामम् । शामति स्यात्सम् । कृशम् । क्षीष्म् । हीनम् ।

१ "स्तेन चीरे" । चुपडि । पचाद्यङ् । २ का उ ए १।३ । ३ "त्वापायस्तामन्त-
 कारवदुवाहर्दिवाभिनानिशप्रमाभाक्षिकवृ नान्नीकिंतिपिडिबिबक्षिमडिजेमवहापन्वरक-स्र्स्वात्तु च"
 का ए ४।१।२ । इति कृष्णप्रत्ययः । ४ इत्सुम्पठयः प्रतिमापकस्ताभौरपर्षावा म तु
 गुप्तचरपर्षावा । गुप्तचरपर्षावास्तु-वर्षावर्षः । अतसर्षः । मन्त्रिद् । चरः । कार्ष्णिना । सशः ।
 चारः । ५ "लृप् लृप्^७वते" । पचाद्यङ् । ६ अथवा पलतीति पठः । शोः शम्भेः पलो भोपल ।
 ७ "पिप् लृप्^७वते" । बाहुलकादानच् । पृषोदरादितादिकारत्वाद्वात् । "पप शप् प्रथे च" ।
 इत्यथेति षम् । पपत्थेनेति । अचरतीत्यण । "अच शप्" । अच् । पापघातावकथेति शिष्योऽप्य
 न्यत्र प्रथम् । ८ "इणते युच् इत्यथे" ति तात् । ९ "घातुल वैरिणम्" अमि पि । "घातुर्मन्-
 शिखाघनेरैरिण्डु विरोधत्" अम को । इत्यादिकोपप्रमाद्यत् सामान्यप्रस्तरपवपिऽत्वं पाठोऽनुक्त ।
 १ शिनोतीति तास्त्वशिखादूर्नं क्षयितुक्तमन्ते । "शो त्वन्नीते" । तत्र स्वर्तविति रूपम् । त्वन्नी-
 तीत्यर्थः । तत्र शिखेति निपातो बाहुलकारौचादिकायैव स्थायाति । रामाभ्रमदिभ्युत्पतिकरैश्च "शिल
 उम्भे" शिलतीति शिखा । इत्युत्पेति क इत्युत् । तत्रास्तरत्त्वं सुवीभिर्बिचारणीयम् । १ उदुम्बरस्याच
 शिखी शिखा चापि शिखि इव । इति कल्पद्रुकोपवासवभौषोऽलकम् । १२ "पूर्तो पतिभ" का ए
 ४।५।५ । इन्तेरत्र पनादेशम् । १३ तदुक्तम्—"पुलकः कृमिमेरे स्वान्मशिदोपे शिखात्परे । गवान्निपिष्ये
 रोमान्ने गल्पकैरिवास्तयो । नि को का व ११९ ।

धीर्यं स शीर्यम् । धीर्यं स शीर्यम् । अथस्वते अथसाधनम् । वृक्षे स वृक्षं च । हे रामेन्द्र
 तव वैरिणां शत्रूणां मन्त्र इति प्रबोधिनीयम् ।

धीर्यं शीर्यं च पौरुषे ॥१७१॥

वचः पौरुषे । धीरस्व भावो धीर्यम् । शूरस्व भावः शीर्यम् । पुरुषस्व भाव पौरुषम् ।
 मुष्कारं मन्त्र इत्यम्माहारम् ।

क्षिप्रान्धुमहस्वर धीघ्न सहसा झटिति द्रुतम् ।

तूर्णं ज्वरं स्वदो रहो रयो वेगन्तरो लघुः ॥१७२॥

पौष्ट्यं वेगे । क्षिप्रति^५ निरस्वति क्षिप्रम् । रक्ष्ण्यप उणा^१ शतम् । अन्तुते आशु ।
 वृषापावीति उष् । मन्त्रति महति वा मन्त्रधुः^२ । इति मात्स्यम्यपम् अरम् । अदन्तं च अरम् । शेते
 कारे शीघ्र (क्षिप्र) ति आलोति वा शीघ्रम् । सते सहसा^३ । अन्धम् । अरति संघातीमन्त्रति
 इत्यन्धमन्त्रम् । झटिति । इति स द्रुतम् । त्वरते स तूर्णम् । ज्वरं ज्वरः । शु गतौ । स्वन्दते
 स्वन्द^४ । “स्वदो ज्वरः” इति ठाणुः । रक्ष्ण्यपेन रक्षः । रते रीषाति वाऽनेन रयः । बीज (विष्य) ते
 वेगाः । तत्त्वमेत त्वरः । १ सर्वान्धुमोऽन्धुः । लघुते मूर्ति लघुः । रविगः । गतिपथनो ज्वरो धर्म
 वचनं आशुशीघ्रत्वं इत्यर्थमेतः ।

उदागतिप्रस्तावाहार—

साधीयोऽत्यर्थमस्यन्त नितान्त सुष्ठु धै मृधम् ।

सु मृधे । ठाणुन्वो रित साधोय^१ । ईप्सु । अतिक्रान्तोऽयं वेलां मात्राम् अन्तं च
 अत्यर्थम् । अत्यस्तम् । अतिभेत्तम् । अतिमार्त्तं च । निगम्यति स नितान्तम् । सुष्ठोति सुष्ठु ।

१ अत्रावतानमिमा अष्टावपि शब्दा विरोधनिष्पात्तेन कुन्तुमिति विरोधमप्याहारं हे
 रामेन्द्र तव वैरिणां कुन्तं ज्वरं मन्त्रम् । एवं शान्तं कुशमित्सापपि मौञ्जम् । अत्रावतानशब्दस्य भावस्तु
 इत्यात्वात् तव वैरिणामवतान गच्छो भवत्विति विशेषः । अथस्वतेऽवतानमिति टीकोक्तविग्रहस्तदङ्गत्वं ।
 अथपूर्वस्य “धौऽन्त कर्मणि” इत्यस्य भावस्तदि अन्तौवते इति रूपम्, मत्ववत्येते इति । कर्त्तरि क्ति विभाषी
 अन्तस्वतीति परस्मैपदमेव । नापि कुन्तौऽवतानशब्द । कऽन्तये “अवर्तित” इति रूपस्यैव लर्भावमाव-
 त्वात् । तस्मादावतानवतेऽवतानो वा अत्रावतानमिति विग्रहो युक्तः । २. क्रोधान्तरपमाश्रयी अन्वहाप्य
 धैर्वादिशब्दानां परस्परकर्मिदात्म्यवर्तनार्त्वेऽपि बलवामान्तरविषयता यवः पौरुषे इत्युक्तम् । ३ गतिव
 चनो ज्वरो धर्मवचनं आशुशीघ्रत्वं इत्यर्थमेतस्य कत्वमापत्वात् विग्रहावस्थाऽन्ता नव शीघ्राये
 ववाप्यो लप्यन्तारक्य वेगार्थे इति सुवचम् । “श्राक् क्षयेऽह्वाव अश्निति” एतत्तद्देवात्स्य शीघ्रायेतया पाठे
 कर्त्तव्येऽपि पृषगस्य पाठो अश्निति शब्दपुनरवतिवच शेषः । ४ क्षिप्रति विक्रान्तमिति शेषः । ५ “दृ मस्वो
 शुद्धौ” । बाहुल्यकारणः । मरिक्कनशीरिति तुम् । स्वीरिति ललोपा । मन्त्रति कासात्पत्त्वे मन्त्रधुः । ६ “यद्
 मन्त्रो । अत्रा प्रत्ययः पश्चात् सत्त्वति । “धौऽन्तकर्मणि” । अत्रामन्त्रो हि । विमदपत्यप्रतिरूपकमाका
 उन्तमन्त्रम् ? उदाहरणम्—“तव वा विरिषीत् न क्रिषामिरवादि” । ७. “अन्त वृद्धते” । औणादिक
 इति । ८ वा ए ५।१।१५ स्वयर्थेऽपि नलोपो दीर्घमात्रम् । स्वन्दन् स्वद इति भावविग्रहो
 न्यायः । ९ “धौ विभो भयवचनयोः । १० वा ए ५ ५।१५ । ११ अतिशयेन ठाणु वाटं वा
 वाच्यम् इति । ठाणुन्वो रित इति टीकोक्तविग्रहस्तु न लङ्गच्छते । अतिशयार्थं ईप्सो विषमात् । वाच्य
 इति मूलोक्तवत्त्वं उच्यतेन रित इति पुनिराहोऽपि तथैव ।

‘अप्युपका-अप्यु दुष्टं दुष्टं इति मित्तु गतु, शङ्कु वतु इत्यादयः । नै अम्यवम् । विमर्ति सुशम् ।

स्फुटं सामु सुलु स्पष्ट विद्मद् पुष्कलामलौ ॥१७३॥

स्त निर्मते । स्वरत्यभिशाबोऽप्याद् ‘स्फुटम् । साप्यतीति सामु । सुलुतीति सुलु ।
 ल्यक्ते स्म स्पष्टम् । विगति चिते विरायम् । पुष्पातीति पुष्कलम् । नमत्तमित्त् अमलम् ।

५ प्रकाशम् । प्रकटम् ।

विप्राश्चर्यामृतं घोषं विस्मयं कौतुकोऽप्यहो ।

पद् कौतुके । विम् कवने । विनोतीति वित्रम् । आचरतीत्याश्चर्यम् । पारत्न्यादि
 त्वास्तुट् । सू लघावात् । अद् पूर्वः । अद् विस्मितो भवत्यत्र अमृतः । ‘अदि मुनी इव’ । औघटे इति
 घोषम् । विष्णीवते इति वि मयः । कुट्टक्य भाव कौटुकम् । अहो लोका अश्चर्यम् इति
 १० प्रबोक्तोवम् ।

अभियोगोद्यमोद्योगा उत्साहो विक्रमो मत् ॥१७४॥

पञ्चोद्यमे । अभिबोक्तम् अभियोगः । अद् उपरमे । पम् उद्पूर्वः । ‘पुत्रादेश्च’ -इत् ।
 ‘अस्योप’ -दीर्घः । उद्यमि इति वातम् । ‘भानुभवानी’ इत्याः । उद्यमि वातम् । उद्यमनमुद्यमः ।
 भावे पम् । ‘आदित्यत्वं’ २ । उद्योवनम् उद्योग । उत्सहनमुत्साहः । विक्रमशं विक्रमः ।

रहोऽनुरहसोपांशु रहस्यं च मित्ति कः ।

बलार एकान्ते । रहति अचति क्ना लङ् । अत्र घान्तं एङ् । क्लीदे । अम्यम् ५ । अनुगतं
 एङ् अनुरहसम् । ‘अन्ववण्ठेभ्यो एङ्’ । उपारतुते अम्यवतुवत्त्वं कर्पाशुः । रहति भवं एङ्स्थम् ।
 कः पुमान् मित्ति विदारणति । मण्डलम् । एकान्तम् । निःशकाङ्म् । उपहूम् । विभनम् ।
 विविक्तम् । क्नामित्कम् ।

कीनाशः कृपणो लुम्बो घृष्नुर्दीनोऽमिहापुकः ॥ १७५ ॥

पद् कृपणे । लोमेन क्लिष्टरति बाण्यते ‘कोनाशः । की बाणी याचकानां भागवति विनाश
 तीति कीनाश । कल्पते रक्षित म द् राद् कृपणः । लुम्बति स्म लुम्बः । एङ्घति एङ्घः । घृष्नुरित्त्वपि
 खत् । लोमेन घोषते शोभते (शोभते क्वचि) दीनः । दीङ् दने । कश्चित् इति पठन्ति । लप
 कान्तो । अभिपूर्व । अभिलषतत्त्वेपशोऽन्ते अभिहापुकः । ‘अक्रमयमहनूपूर्त्त्वाङ्घतपरसुकम्’ ।

२०

१ अ उ ए ११५ । इति कुप्रत्यया । २. यथाती शब्दत्वा किचित्पूर्वः । अस्पृशीति
 मृग वा । ‘अस्य अद् अय पठने’ । विवादि । इत्युपति कः । अशिरवात्तभक्तिवत्त्वं । ३. लुब्धतीति
 कर्तृविमहो न्यायः, मत्प्रपारानका एव पमि लोड इत्यापयेः । अनेत्युपपेति क । ४. ‘अत लङ्घे’ ।
 बाहुलकाद् । लुब्धशब्दो नानार्थे । तदुक्तम्— ‘निदिबवास्नाऽतङ्घारे विहासाऽनुरवे लुग्’ । अम् को
 १।१।१२५ । ५. ‘चित्र विमोहरणे’ । चित्रवतीति चित्रम् । पञ्चापः । इत्यन्यत्र । ६. अ इति
 क्वचित्पुमिनीवते इति विप्रहोऽन्वत्र । ‘आधर्ममनिले’ इति इत् । ७. का उ ए ५१२५ । ८. औपशब्द
 आभवायि । तदुक्तम्— ‘औपशब्दं प्रेयं प्रस्तेऽपुतेपि च’ अने उ २।१६२ । ९. का ए १।२।११ ।
 १०. का ए १।१।५ । ११. का ए १।१।६५ । १२. अ उ १।१।५५ । हतीनी लोमः । १३. का ए
 १।१।११ । अत्र वावादिभूति २९।१४ फ्रिन् विवावने । ‘अनोतीचोपवावा क्न् लोपम लो नाम्
 च’ पा उ ए ५।१६१ । १५. का ए ५।१।३५ ।

अर्थः । क्रियमान । मितम्यक् । सुत् । सुत्तः । स्त्रीष । सुत् । वराकथ ।

पाशनीत सितो बद्ध सपानीतो नियन्त्रितः ।

नियामितः शृङ्खलितः पिनद्ध पाशितो रिपुः ॥ १७६ ॥

नब बद्धे । पाश नीतः पाशनीतः । धीयते स्म सितः । बन्धते स्म बद्धः । सर्वा प्रतिज्ञा नीतः प्रापितः सन्धानीतः । नियन्त्रं यथात्मकं नियन्त्रितः । नियामो पातोऽयं नियामितः । शृङ्खला यथाऽप्येति शृङ्खलितः । तारविद्यानिर्दरनादितश्च । पिनद्धते स्म पिनद्धः । पाशः संवातोऽयं पाशितः । क रिपुः शत्रुः ।

कान्त च कमान कर्जं कमनीयं मनोहरम् ।

अमिरामं र(रा)मणीयं रम्य सौम्य च सुन्दरम् ॥ १७७ ॥

दश बरिष्ठे (अतिदुन्दरे) । काम्बते काम्बतम् । काम्बते कमानम् । कमानयते इत्येवंशीलं कम्बम् । काम्बते काम्बपते कमानियम् । "कम्बानीयौ" । मनोहरति मनोहरम् । मनोहारी । मनोरमम् । अमिरामकम् अमिरामम् । रमयत्य (वाप) हितं रमणीयम् । रम्यते रम्यम् । सोमस्य भाषा सौम्यम् । सुन्द लोभोऽयं दुन्दुलि सुष्ठु नन्वपति इति निरुक्त्वा सुन्दरम् ।

चारु द्रक्ष्यं च रुचिरं प्रशस्तं हृद्यचन्दुरम् ।

दर्शनाय मनोर्हं च

अथो मनोरे । अरुति नेत्राय च आरु । शिन्वते दुग्धतेऽनेन द्रक्ष्यः । रोचते सर्वेभ्यो रुचिरम् । प्रशस्तते स्म प्रशस्तम् । हृद्यस्य त्रियम् हृद्यम् । चितं वनाति चन्दुरम् । रम्यते दर्शनीयम् । मनो वामातीति मनोर्हम् ।

चित्तपर्यायहारि च ॥१७८॥

चित्तहारि । मनोहारि । इत्यादीनि मनोहरमामानि शाल्भ्यानि ।

अवश्याय तुषार च प्रालेय तुहिन हिमम् ।

नीहारम्

पद् हिमे । अवश्यायते अवश्यायः । "दिहितिहिरिशिपरिवसिन्म्यपतीत्तराऽर्ता च" अत्रत्यम् । तुषन्त्यनेन तुषारः । प्रलवादागतं प्रालेयम् । तोहन्त्यर्षति तुहिनम् । तुषिर् अर्धेनि । हिनोति वर्धते क्वमनेन हिमम् । निहिनते नीहाराः । मिहिका । पूमिका । हेरनाम् ।

१ का ए ३।७।९ । २. अश्याय हितमिति चिप्रहो पुः । तस्मै हितमिति अणुर्धन्वाप्यु ।

मूले कन्द्रीयशुभोपवामकाय रमणीयमेव रामणीयम् इति स्वाधिकीऽपुषि कार्यः । ३ सोमस्य भाष इति चिप्रहोऽपुषु । "अतिरुच्योपे प्रकाटीमूले भाषः इति शिञ्जान्ताद् सोम्य इत्यस्य सोमत्वमित्येव वापतेः । अत्रः सोमो वेवताऽप्येति अणुपतिः 'सोमाद् रन्वत्' । इति रन्वत् । अथवा सोम इव सोमः । उरुधनुर्बर्धतिस्वात्प्यत् इति रामाप्रमः । ४ पुष्पं त्रिभते आत्रिष्ठे । तुषन्तोर्णु । पृषोप्यत्स्वान्तुम् । सुष्ठु उन्वति आदीकरोति चितं वा । सुष्ठुर्वात् "उन्दी कलेदने" उन्वतातोर्वाहुल्यदरः । उन्वन्त्या दिव्यात्परकाम् । इति रामाप्रमः । ५ नेत्रं मनो वेति शेषः । 'चित्तं चातिहृदने । 'चित्तये रथोरभाषा' उ ए ३।१९ । इति क्तः । उन्वताया अश्यायः । ६ का ए ३।२ । ३८ । ७. प्रलीक्यते पदायां अथैति प्रलये दिमाचक्ष । तस्यागात् प्रालेयम् । अणु । अश्यायित्वपुस्तकानां चारेणिव पा ५ । ७।३।२ । इति यारेतिचारेण ।

तत्कर विद्धि मृगाङ्ग रोहिणीपतिम् ॥ १७६ ॥

तस्य करस्तत्करस्तम् । हिमशङ्खालकरशब्दे प्रमुख्यमाने चन्द्रनामानि भवन्ति । अक्षरबाधकर । द्व्यारकरः । प्राशेषकरः । द्विदिनकरः । हिमकरः । नीहारकरः । मृगाङ्गः । रोहिण्योपतिः । अश्वी नामानि विद्धि वानीहि ।

पुष्पार्गं समर प्राहुः

द्वौ प्रथानपुत्रौ । पुनर्विचाधी मागः श्रेष्ठः पुष्पार्गः । चरुपाथी नरः समरः । प्राहुः कृतवन्ति ।

तिलक च विशेषकम् ।

ललाटिका ललामापि पूर्वार्धे तथा द्रुमम् ॥१८०॥

पट् तिलके । तिलकाकृतिः तिलकः । तिलकीति तिलकम् । विशिष्टन्येति विशेषः । स्वार्थे कः । विशेषकम् । लक्ष्यते ललाटम् । के मत्स्ये ललाटिका । लक्ष्यते ललामा । पूर्वं बाह्यतीति पूर्वार्धः । द्रुमति इति गच्छति द्रुमः । क्त्वात्पठम् । चित्रकम् ।

अञ्जनं कञ्जदलं नाग गन्धपाटलमारुणम् ।

पट् कञ्जशे । कञ्जशेऽनेनेत्यञ्जतम् । कृपति मेघवैरूप्य कञ्जकम् । न शोभाम् अगति गच्छति नागम् । यत्रति शोभना मापति शम्भम् । पाटलाया इत् पटलम् । क्च्छति गच्छति शोभाम् आरुणम् ।

सारं परिधि वृक्षं च

नमः प्रकारे । वरति गच्छति कञ्जान्तरं सारः । परिधीते वैद्यपते अनेन परिधि वृषोति नमस्मान्धारपति वृक्षम् ।

कुम्भ्यां स्त्रीं सारणीं विदुः ॥१८१॥

नमः पानीवनिर्यमनमार्गे । कुम्भे परे वायुः कुम्भ्या । लुगति वैरुणमापिञ्जति स्त्री । वल्कनया सारणी । तां विदुः कचवन्ति वनम्बवन्नमो माप्यक्तारी अमरकोशाचार्यार्ष ।

वारोऽवसर्पं प्रपिभिर्निगूढपुरुषश्चर ।

पट् वारे । वरति शत्रुमन्त्रो वारः । अवसर्पति अवसर्प । अवसर्पश्च । प्रप्येष

१ अत्र तिलकविशेषके टीकोक्तमाप्तपत्रचित्रके च ललाटकृतिलकाङ्गारयोः । तदुक्तम्—“तिलके तमाप्तपत्रचित्रपुष्पविशेषकाः । अग्नि चि ३।११० । ललाटिका पत्रकम्बुल्ल-ललाटमूलशम् । तदुक्तम्—‘पत्रपारुवा ललाटिका’ अग्नि चि ३।११९ । ललामा द्व लीमन्तामे भक्त् मखीभिरिव धर्ममाद्य एनादिकृतमूलकम् । तदुक्तम्—‘पुरीम्बलं ललामकम्’ अग्नि चि ३।११९ । पूर्वार्धाद्द्रुमबोद्ध कोषान्तरे पाठो नोपलब्धः । २ पट् कञ्जशे । इवविचारकम् । कञ्जकञ्जशे क्तानाथी । नागकपाटलाकाया श्रीहृदकोलादिरम्बकलोहितरक्तविशेषमाचका । तदुक्तम्—कनेकार्थं वरुषे—‘नागो मठज्ज्जे त्वे पुन्नागे नायकेतरे’ ३।१४ । ‘पाटलन्द कुम्भस्सैवरुणी’ ३।० १ । ‘अनकोऽन्ववर्षी’ । कन्धा एते कुपे कुपे नि कन्धाऽन्वकारागो ३।१९८ । ३ अरुणमेव वाचयम् । ४ इहृदम्बस्व वाद्यार्थे कोषान्तरलवादी नोपलब्धः । ५ अत्र हाविति वक्तव्यम् । श्रीशम्भोश्च कुम्भा वाच्यो श्रीशिवशोचकः, वल्लभाः । ६ पूर्वमुक्तेऽपि विहावसाङ्गन्यायेन वारोऽन्वैऽन्याजपि शब्दाम् लुक्कित्तीति । ७ वरति शत्रुमन्त्रो वरः वरेत् । तव स्वार्थिकोऽङ् । वर इव वारः ।

नितरां गुह्यो भीमते प्रणिधिः । निगूढरक्षाधौ पुष्यः निगूढपुरुषः । अरतीति अर । स्वराः । १ बर्षार्थं बर्षाः । मन्त्रशरत्च ।

तद्दानुक्त सहस्राक्ष

तस्मात् पूर्वोक्तस्यात् परं बान् इति प्रयुज्यमाने सहस्राक्षनामानि भवन्ति । निगूढ पुरुषवान् । अरवान् इत्यादीनि शतभ्यानि ।

सत्यार्थे सूनृतं श्वतम् ॥१८२॥

त्वार्थे हो । सु सुप् श्वतं त्वं सूनृतम् । पूरोदराग्नित्वात्प्रनाम । श्वद्व्यति गन्धति अन् अयमत्र ऋतम् । तथा चामरकोषे—“सत्यं तथ्यमूर्तं सम्यक् ।”

निस्तल घतुलं वृक्षम्

बभो वृक्षे । निर्गतं तलं प्रतिष्ठाप्य निस्तलम् । अथवा निर्गतं तलादधीभागान्निस्तलम् । १० मूनी न तिष्ठति वा । बर्तते अमति घर्तुलम् । वृक्षते अ वृक्षम् । त्वं त्रियु ।

स्पष्टुट विपमोन्नतम् ।

विपमोन्नते ऋष्यपुत्रम् । स्थापयत्वालमनो विपमोन्नतत्वे स्पष्टुटम् । प्राय क्लीबे ।

दीर्घं प्रांशु

हो दीर्घे । इत्यादि दीर्घम् । मारुते म्वाप्नीतीति प्रांशु । १५

त्रिशाल च बहुलं पृथुलं पृथु ॥१८३॥

चत्वारो विलीयै । विलार विराति विशा^६लम् । बहुन् कातीति बहुलम् । मन्ते बर्षते पृथुलम् । गुणमात्रहर्षलं । पर्वते पृथुः । इहत् । उचः । गुः । विलीयै ।

उन्वय दारुणं तिग्मं घोर तीघ्रोग्रमुत्फटम् ।

अ घोरे । उन्वयस्त्वणम्* । पूरोदरादित्वात्घे लः । दारुवति दारुणम् । त्रिदिवतीति तिग्मम् । पुरति घोरम् । तीवति तीघ्रम् । तीव त्वीत्ये रक् । उन्वति उन्मम् । उन्वत्पते उन्वत्पते । प्रतिमन्मम् । भीमम् । अमानम् । आभीहम् । भीषणम् । भीष्मम् । भैरवम् । २०

घोतलं तिमिरं याथ मन्द विद्धि विलम्बितम् ॥ १८४ ॥

१ बर्षार्थे बर्षा अर्थे प्रयाजनं बर्षो जाति प्रतिक्षिर्वा बत्वेति तदर्थे । २. अम की० १।७।२२। ३ बहुलत्वं मरुत्परीक्षीर्यमेद । दीर्घविकृत्याचरशब्दा पर्वावा । प्रंशुल्लुप्तः । तदुक्तम्—‘रीपमापत्तम् अम की १।१।७ । ४ दृ विदारण’ । बाहुलात्प्राक् । इत्यादि ह्रस्वत्वमिति दीर्घ । ५ प्रश्ना अशर्षीत्स्येति । ६ विश प्रवेशे । बाहुलात्प्राक् । रामाभमानु—‘शालपद्मद्वयी इति वा लृक्षेण विशयाप्यात्प्रभवमाह । ७ उन्वयतीति उन्वयम् । पूरोदरादित्वात्परीक्ष इति पाठोऽत्र मुक्तः । “यत्त शम्भे” । अथ । उन्वयण्यधो बलुतः एवार्थकः, न तु दास्यार्थकः । तस्यो मुद्रबर्षो भवति तत्तानाम् । अत्र उद्देश्यत्वात्प्राक्प्राह । ८ त्रिदिवतीति समार्थकत्वात् न मुक्तम् । तिग्म निशाने । निशान तिक्तीकरणम् । तेजवतीति तिग्मम् । अन्वत्पते । ९. ‘पुर भीमा र्थशब्दयोः । भोरवतीति घोरम् । अन्वत्पते । १० उन्वति मुक्ता अन्वयते उन्मम् । उच अमानम् । विवादिः । ‘श्वद्वेय’ इत्यादिना रक् गभान्तादेशः ।

पद्य कार्ष्णिज्ये (निम्बे) । शीतं ज्ञाति मन्दो भवति कार्ष्णि शीतज्ञम् । तावति स्वधर्म
मिच्छति तिमिरम्^१ । क्षिति तिमिरं वा पाठः । क्या भवं याद्यम् । मन्वते मन्वम् । विज्ञम्कते
अ विज्ञम्पितम् । यिद्धि ज्ञानीधि ।

स्वभावः प्रकृति श्रील निसर्गो विस्वसो निज* ।

५ पद्य स्वभावे निजे । स्वा स्वकीयो भाषा स्वभावः । प्रकृत्य प्रकृतिः । शीतवते शीतवति
वा शीतम् । निजम्कते निसर्गः । विरक्तिरिति यिद्धयस^२ । विरवात्तर्य । विभग्माः ।

योग्या गुब्बनिकाऽभ्यास*

वनीऽभ्यासे । बुब्बते घोम्या^३ । गुब्बते सुरिंशं गुणनिका^४ । अन्नजनमभ्यासाः ।

स्यावमीहृत्सं सुदुर्मदुः ॥ १८५ ॥

१ सुदुमुदुर्भारं वार स्यात् भवेत् । अमीभ्याम् । अमीद्यम् । अमीद्यम् । अमिदुसमीहते
वा अमीह्यम्^५ । नितरात् ।

मृपालीक मुषा मोषम्

वत्वारो^६ऽऽतीके । मूषते वृते नारकं मुष्ममेन मुषा । आदन्तमन्ववम् । अक्षति स्वत्वाङ्ग
(स्वर्ग)धिवात्पति अक्षीकम् । मुष्मति स्ववति निमित्त मुषा । आदन्तमन्ववम् । मुष्मतेऽप चित्तं मोषम् ।

विफर्लं वितर्षं वृषा ।

१५ निम्बकवचने वषा । विगत फलं विफळम् । विगतं तथा कर्षं फलात् वितर्षम् । वृषो
त्वाङ्गाववति गुब्बार् वृषा । अन्नवम् ।

विधुर ध्यसनं कर्षं कृष्णं गहनमुदरेत् ॥ १८६ ॥

२० पद्य कषटे । कषटेन विधुनीति शरीर विधुरम् । मन्वते अनेन ध्यसनम् । कष्यते
(कषति) कषटम् । इषोति क्षिपति दु सेन कृष्णम्^७ । गाहते गहनम् । उदरेत् नितरेत् ।

समस्तं सकल सर्वं कृत्स्न विषं तथाऽखिलम् ।

पद्य समस्ते । समस्ते एकीकरोति समस्तम् । समं प्रस्ते समम् । समानं कष्यतीति
^१ सकलम् । वरति समम् । इच्छति वैधवति आन्तोति कृत्स्नम् । विद्यति विद्यति कर्षं यिद्धवम् ।
माति विषं शल्पमस्वाखिलम् । निश्चित य ।

१ "तिमि आदीनामे" । तिम्बति आदीनवति तिमिरः । विज्ञम्कते च न कर्षार्थं इव
शीतः सुदुर्भारितश्च भवति । २ विरक्तशब्दस्य प्रकृत्यर्थे प्रमाणात्तरं नास्ति । एवं विरवातो विभग्मोऽपि ।
विरक्तशब्दाभ्यासकानामपि आकरणादत्यहम् । अतोऽप विभ्यपि मूषातीके एव प्रमाकम् । ३ वीये
चित्तिकाप्ये ज्ञानीति बोधवा 'तव ताडु' रिति वदन्त्यत्र । ४ गुब्बते गुणना । कुरादिषिकृताद् मापे
भ्यासकप्येति युज् । तर्षं स्वार्थे क । गुब्बनैव गुब्बनिका । ५ अमिदुसीति अमीद्यम् । "कषु तेवने" ।
वातुवकाद्बुः । अन्नेषामनीति वीर्षः । इति रामाभय । ६ अत्र मुषाऽक्षीकशब्दो वक्ष्यमाणो वित्तव
शब्दश्चाद्यवशात्कः । मुषामीषशब्दो विकृतशब्दाशब्दो च वक्ष्यमाणो अर्षवाचका इति विवेकोऽ-
त्यत्र । उदुष्ममरे—'मुषा मिष्या च वितर्षे' १।१।१५ । 'अक्षीक स्वभिष्यते' १।१।१२ । 'वीर्यं
निरर्षम्' १।१।८१ । अर्षके इ वृषा मुषा' १।१।४ । "वित्तव लक्ष्यते वषा १।८।२१ । इति ।
७. कर्षति इच्छति वैति क्षी स्वा । ८ समस्ते एव समस्तम् । "अमु रोपणे" । कर्षीक कः ।
९ उदुष्मप्रमत्स एव समम् । १ एव अस्वामिर्षते लक्षम् ।

शुक्ल विकल खण्ड शन्क लेश लघु विदु ॥ १८७ ॥

पद् लघु । शक्नोति कामे शकलम् । शन्कं च । शिखा क्ता परमात् लु विकलम् ।
 लघुभ्ये क्त्वात् । शिखते लेशः । शिख विन्दु गती । “अर्द्धरि च अरक उजात्मा” । रीति शब्दं
 करोति श्लेषः । शिखुः कपयति । अर्थम् । मेमः । वामि । अतम्पूर्वम् । दत्त च ।

मर्म कोप च

ई मर्मणि । प्रियतेऽनेन मम । नान्तम् । कुप्यते कोपम् ५

कलाह परिवादं छलं नयेत् ।

करोद्य इत्यत्र कलाहः । परिवहनं परियाद् । कलवती (लघ्वे)ति छलम् ।

शोणित लोहित रक्तं रुधिर सतजासुजम् ॥ १८८ ॥

पद् रुधरे । शोण्यते कर्षति श्वीऽनेन शोणितम् । लालम् । रोहति रेहे बाधते लोहितम् । १०
 रक्तं रक्तम् । रुधिरं रुधिरम् । अत्राद् अत्रात्वात् सतजम् । अर्यते क्षिप्यते अर्यत् ।

सन्वतानासतासन्नाह कन्यापतिर्वरः ।

वमः (पत्नार) कन्वते । कन्वन्ते एव सन्वतम् । न आरतम् अनातरतम् । न कस्यपीत्यर्थशील
 मज्जन्तम् । अन्त्रहम् । कन्यापतिवत् नश्यति इति प्रयीकनीकम् ।

उद्धाह परिणयनं विवाहश्च निषेधनम् ॥ १८९ ॥

पत्नारो विवाहः । उद्धहनं उद्धाहः । परिलोयते परिणयनम् । विवाहते विवाहः ।
 निषेधयते निषेधनम् । १५

शुपिग विवरं रन्ध्र छिद्रम्

पत्नारिच्छते । शुप्यति क्लमश्च “शुपियम् । उप्युपीति च । विप्रियते मूमपमनेन विवरम् ।
 रणति बाधेन रण्यति दिनसि प्राणिन वा रण्यम् । क्षिपते क्त्वा छिद्रम् । कुवरम् । विलम् । निर्म २०
 वनम् । रोच्यम् । रण्यम् । वया । शुपि ।

गता च गह्वरम् ।

गतायां ही । पतित प्राञ्चिनं मिरति गता । गतः । गृहीति गह्वरम् ।

क्ष्वन्न रम्य च पाताल जरफ यान्त्यमेघस ॥ १९० ॥

क्ष्वन्नारो मरुके । रवत कर्षते शोपरि चरता शब्दा स्वभिर्भन्तं वा म्मन्नम् । रतायां भवं २५
 रस्यम् । पतन्त्यमिन् पातालम् । नराः काकश्यच अरकः । नारकः । पुति । अमघस बुद्धिरिवा

१ शिख अङ्गीभावे” । शिखादि । तनी धर्मविज्ञानमर्थाऽनुप्यम् । २ वा लु
 ४।५।४ । ३ लुहते क्षिपते लघुः । क्षुरोत् । रीकानविमर्यु न लघुनार्पाऽभिवायो । ४ कोप
 शब्दः पहीवाचका मदिम्बां लम्बने । पेशनीं ममत्पानत्पमापुर्वे लम्बतम् । अत उचारणम् कोपाऽपि
 मर्मैत्यमुन्नेवम् । तनुकम्- बीयोऽञ्जी कुह्यते पात्रे दिम्बे लक्ष्मिपानम् । शक्तिरौपेऽर्षतहाते पन्पा
 शब्दादित्तद्गुदे । पा वग ६।५ “तिमिदविमदिमन्दिश्चिश्चिश्चिश्चिगुपिन्व क्रि” वा उ १।२३ ।
 शुपिरत्वालीति विमरे तु “उप्युपिनुप्यमथी र” वा लु ५।२।१ ७ । इति र । प्यन्वरये दन्त्यादिरवम् ।
 उप्युपीति वा गुपे इत्यत्र एव पाठः । क्ष्वरन्त्यापि इत्यत्रैव परात् ।

सम्प्रसारिभरहितो यास्ति गच्छति वरकम् । निरकः शुक्ति ।

अदम्र भूरि भूपिष्टं बहिष्ठं बहुलं बहु ।

प्रभुर नैकमानन्त्यं प्रान्य प्राभूतपुष्कलम् ॥ १६१ ॥

इन्द्रो प्रभूतिः । न दम्रमदम्रम् । भवति प्राभूतमत्र भूतिः भूतिश्च । अतिशय्य बहु भूपिष्टम् ।
५ "भरो लोको भू च बरो" "उत्स" विस्फुटि" भूरादेशो विद्वान्मभः । अतिशयेन बहुलो बहिष्ठः । भवति
प्राभुष बहुलम् । प्रभुरिति प्रभुरम् । न एतं नैकम् । अनन्तस्य भाव आनन्त्यम् । प्राभूते प्रभूत-
बीयते-नैन वा प्राभूयम् । प्राभवति एव प्राभूतम् । प्रभूतं च । पुष्कति पुष्कलम् । पुष्क च । पुष्कम् । पुष्कम् ।
मवो भावश्च सप्तारः सप्तरणं च संसृतिः ।

उरवद्भतुरो धीरस्त्यजेन्मन्मात्रव खवम् ॥ १६२ ॥

१० क्यो लंकारे । भवतीति भाष्यः । भवतीति भाष्यः । "वा ज्वलामिद्विद्विषो षः । संसृति
अस्मिन् संसृताः । संसिषत् अस्मिन् संसरणम् । उरवो संसृतिः । जनवतीति जन्म । आभ-
तीति आभयम् । भवति चतुष्टया ममति (अत्र) जयः ।

ऊर्जस्पूर्जस्वी उरस्वी तेजस्वी च मनस्वपि ।

१५ उरस्वरा (पञ्च) तेजोबुद्धयौ । उर ऊर्जा वाऽस्वस्तेति ऊर्जस्वी । तूर्जोऽस्वास्तीति
उर्जस्वी । उरोऽस्वास्तीति उरस्वी । तेजोऽस्वास्तीति तेजस्वी । मनोऽस्वास्तीति मनस्वी ।

मास्वरो मासुरः सूरः प्रवीरः सुमटो मठः ॥ १६३ ॥

पञ्च सुभटः । भाष्ये इत्येवंशीतो भास्वराः । मासुराः । भिदिः मातिर्भा सुरः । सुरवति
शूराः । शूरीर विद्यान्तो । प्रवीरवते प्रवीरः । सुभट मठः सुमटः । विद्यान्तः ।

तनुभ्रं वर्म कवचमाहृतिर्भाषणवारणम् ।

२० पञ्च कवच । तनु शरीरं प्राक्ते रक्षति तनुभ्रम् । इत्येत्यञ्च वर्म । कवचे कवचे शरीरम्
धनेन कवचम् । आवरणमारहृतिः । बाधानो बाधेन निषेधनं धाप्यवारणम् ।

कूर्पासं कञ्चुकम् ।

२५ की कञ्चुके । क्येति शोभा कूर्पासम् । कर्पासं च । कञ्चुके कञ्चुके कञ्चुकम् ।

उग्रमास्तपशोऽम्भवारणम् ॥ १६४ ॥

३५ भवरक्षक । कर्पासो वाक्वतीति उग्रम् । क्ति । क्वच क्वच । भातपात् प्राक्ते आतपत्रम् ।
उग्रस्य भारवत् सञ्चवारणम् । सञ्चकन ।

केस्यं शिरोऊर्ध्वं पाठ कथं शिङ्करसीहयेत् ।

पञ्च केस्यः । के मल्लके येते केस्यः । शिरीषे रोहति शिरोऊर्ध्वः । कञ्चुके समिवते पाठः ।
मल्लके शीवते कञ्चति वा कञ्चः । शीवते वस्त्रेन शिङ्कुराः । शिङ्कुराः । मूलकाः । शिरोकिञ्च ।

१ पा सु १५११५८ । २ पा सु १५११५९ । ३ मनीरति प्रभुरम् । सुर लोके ।
कुपदनिः शिरीषेतिपाठः । शृणुषेति का । मल्लं कुपराः प्रभुरमिति वा यमोभयम् । ४ प्राक्ते कञ्चते
"कञ्चु कञ्चुस्वादी" अन्तेः संज्ञामिति कञ्च । कञ्चुवा प्रवीरते "ज्ज मयिषोऽम्भयोः" कञ्च । शीभाषो
नेति टीकाशयः । ५ का सु २१११५३ । इति च । ६ "कपिपिडिभासीशस्त्राममहा" च का सु
१५११५४ । इति च । ७ का सु १५११५१ ।

हृदि १ । कुन्दाहा ।

चूडापात्र च धम्मिष्ठल कवरी केसवन्धनम् ॥ १६५ ॥

चत्वारः केसवन्धने । पुत्र लघोदने । "कुपदेरच" इत् । नामिनो^१ गुण्य । लोदनं चूडा ।
 'ऊन^२चूरीदमृगवतिम् इनन्तेम् लहायाम्' अद् प्रत्यय । कारित्तोप । निपातनाद् उपपात्रा
 इत्यत्वम् । इत्य इत्वम् । चूडाना^३ शिलाया पाशः कर्णनं चूडापात्र । धम्मिः लोत्रः । धम्मन्ते केसा ५
 वन्धन्ते धम्मिष्ठा । कं मस्तकं हृद्योति कवरो नवादित्वादी । कवरी । इत्यन्तोऽपि कवरी । अत्यन्तो वा
 कवरा । केसस्य कर्णनं केसावन्धनम् । वेणी । प्रेक्षी । शीषा च

उररीकृतमप्युरीकृतमङ्गीकृत तथा ।

अङ्गीकारे । उररीप्रमतीना इमा एव उपातो वा भवति । तथाहि—उरी उररी अङ्गी-
 कृत्यो विस्तारे च । आभुतम् । प्रतिपातम् । उपगतम् । १०

अस्तुकारोऽम्पुपगमे

अम्पुपगमे अङ्गीकारे अस्तुकारे कथ्यते । अस्तु करोतीति (कश्चम्) अस्तुकारे । 'अम्प्यश्' १
 अश् प्रत्यय । अस्तोप हृदि । अम्बनम् । 'अनागदात्पूर्वाकारे' । मकारागमः ।

सत्यङ्कारे पणार्पणे ॥ १६६ ॥

सत्यापणे अर्थं करोतीति सत्यङ्कारे । १५

सौहार्दं सौहृदं हार्दं सौहृद्यं सत्यसौरमम् ।

मैत्री मैत्रियेकाक्षर्यं सहाय्यं संगत मतम् ॥ १६७ ॥

दश (एकदश) अक्षरे । सुहृदां भावः सौहार्दम् । सौहृदम् । हार्दम् । सौहृद्यमेकमेव
 वाच्यम् । एकवर्णः सत्यम् । सुरत्येर्दं (मेरिदि) सौरमम् । मित्रत्व भावो मैत्री । मैत्र्या निपुण्यो
 मैत्रियेकः । न कीर्यति अक्षर्यम् । सहाधी (य) ते सहाय्यम् । संगमनम् सङ्गतम् । २०

क्षेम कल्प्याणामुभय भ्रयो मद्र च मङ्गलम् ।

मातृक मधिक मर्ष्यं पञ्चोवसीयं त्रिषं तथा ॥ १६८ ॥

दश (एकदश) अक्षराणि । शिद्योति क्लेशान् क्षेमम् । कथ्यते प्रापते कल्प्याणम् । कर्म
 गीहकर्मनिधि वा कल्प्याणम् । मद्रश्च मद्रत्वं भ्रियस् । तावत् । अदत्ते ह्यारते दुष्ठीमवस्थने मद्रम् ।
 न पार्यं गालपतीति मङ्गलम् । भवनशीलं मातृकम् । 'यत्कर्मयमहन्युपभूत्याकाशपतपदाशुक्ल' । प्रशस्तो २५
 भवौऽवशास्तीति मधिकम् । पुण्यकृतो भवितव्यं भवति मद्रम् । दश शान्त्यय कवीवः इष्योवसीयः ।
 त्वोवसीयत् च । त्वतो 'वसीयत्' । शीघ्रते तद्व्यक्तिवते दुष्कर्मनेन शिद्यम् । मातृकविद्यायां श्रीमद्भर
 कोटीनां शिष्य मद्रम् ।

१ हृदिशब्दो भङ्गुरवाची । तदुक्तम्—“हृदिनं मङ्गुर भुममरालं विष्णुस्मिन्
 अत्रि चि १।११ । अक्षराणां मङ्गुरकृतोऽपि हृदिशब्दप्रयोगः । २ वा ए १।२।११ ।
 ३ वा ए १।५।२ । ४ वा ए ४।५।२२ । अत्र दुर्गति ऊनचुपरीदमृगवतिम् इनन्तेऽपी दी
 पात्र वचनम् इत्यवस्था । ५ अस्तुकारणमस्तुकार । ६ वा ए ४।१।१ । ७ अम्बनमस्वरं परवर्णं
 नक्षे वा ए १।१।२१ । ८ वा ए ४।१।२१ । ९ अक्षरस्य कर्णं अस्तुङ्कारे । माते वम् । क्तु
 विमर्शकोऽस्तुङ्कारः । १० वा ए ४।४।१४ । ११ वा ए २।१।४१ । हृदिः १७ ।

वक्ता वाचस्पतिर्यत्र भोता शकस्तथापि तौ ।
शब्दपारायणस्यान्तं न गतौ तत्र के वपम् ॥ १६६ ॥

अत्र एतौकस्य सुगमभाषणा ।

तथापि किञ्चित् कस्मैचित् प्रतिबोधाय छिद्यत्म् ।
धोचयेत्किपदुक्त्रिणो मार्गश्च सह याति किम् ॥ २०० ॥

तथापि मत्वा पनम्बकविना दृष्टितं कश्चिद्यम् कस्मैचित् प्रतिबोधाय ज्ञानाय । उक्तिर्धोचयेत् शाययेत् । मार्गश्च किं सह याति गच्छति अपि तु न गच्छति ।

प्रमाणमफलङ्कस्य पूज्यपादस्य लक्षणम् ।
द्विःसन्धानकवे क्त्वर्थ्यं रत्नत्रयमपश्चिमम् ॥ २०१ ॥

एतद्व्ययमपश्चिमं गभीरमपूर्वं वर्तते ।

क्त्वर्थेर्नञ्जस्येय सत्कवीनां शिरोमणेः ।
प्रमाणं नाममालेति श्लोकाणां हि शतद्वयम् ॥ २०२ ॥

पनम्बकस्य कवेः सत्कवीनां शिरोमणः इति अमुना प्रकारेण इत्वं नाममात्रा श्लोकाणां शतद्वयं २ प्रमाणमस्ति ।

ब्रह्मार्थं समुपेत्य वेदनिनदभ्यासात् तुपाराचल-
स्थानस्थावरमीश्वर मुरनदीभ्यासात् तथा केशवम् ।
अप्यभ्योनिधिश्चायिनं जलनिधिष्वानोपदंशद्द्वौ
पूत्कुर्वन्ति पनञ्जयस्य च मिया शब्दाः समुत्पीडिता ॥२०३॥

श्लो लोका पनम्बकस्य च भिन्ना कृत्वा शब्दाः समुत्पीडिता अमरप्रकारेण पीडिताः
२० पूत्कुर्वन्ति । किं कृत्वा पूर्वं वेदनिनदभ्यासात् मियात् ब्रह्मार्थं समुपेत्य शप्य ईश्वरं तुपाराचलस्थान
स्थावरं मुरनदीभ्यासात् प्राप्य केशवं श्रीविष्णुं किं विशिष्टं अप्यभ्योनिधिश्चायिनं जलनिधिष्वानोप-
देशात् समुपेत्य तुगमोऽत्र श्लोकाः ।

इति महापण्डितश्रीमत्सरकीर्तिना त्रैविद्येन
श्रीसेम्बुर्बरोत्सन्नेन शब्दशेषसा कृतायां
पनञ्जयनाममात्रायां प्रथमं अण्डं
व्याख्यातम्

श्रीमद्भक्तप्रियकविविरचिता

अनेकार्थ नाममाला

—•—

जिनेन्द्र पूज्यपाद च चैलाचार्य शिवायनम् ।

अर्हन्तं शिरसा नत्वाऽनेकार्थं विष्णोऽम्पद्म् ॥ १ ॥

गम्भीर रुचिर चित्रं विस्तीर्णार्थप्रसाधकम् ॥

श्राव्यं मनास् प्रवक्ष्यामि कवीनां हितकाम्यया ॥ २ ॥

गम्भीर रुचिरं मनोह्रं चित्रं विस्तीर्णार्थप्रसाधकम् । पुगमम्पाख्याऽस्ति ।

अर्हत्पिनाकिनी श्रेष्ठम्

शाम्भू इति द्विवचनार्थं पदम् ।

जिनामहं चयागतौ ।

जिनी कथ्येते ।

वेदसूर्या विमर्त्यन्ती

वेदश्च सूर्यश्च पदसूर्यां विपस्वन्ती सूर्या कथ्येते ।

विष्णुर्ह्रीं वृषार्कणी ॥ ३ ॥

विष्णुठाविन्द्रगोविन्दौ जनन्तौ शेषशार्ङ्गिणी ॥

शेषश्च वरखेटः, शार्ङ्गो च विष्णुः शेषशार्ङ्गिणी ।

जीमूतौ तु करिक्रीडौ पर्यन्तौ शक्रवारिदौ ॥ ४ ॥

भनमम्मसि भन्तारे

भनमसि भान्तारे भनम् ।

भुवन विष्टपेऽर्हसि ।

पुगमम्पाक्यम् ।

१ शं भन्ताः भवतीति शम्भुः । इन्द्रवज्रः । केदारमहाबाषी च । तदुक्तम्—“शम्भुः
स्वाह् ममशिवभोरर्हवपि च केदारः । इति वि सो भा व ९ । इमे च—“शम्भुः काः शिवः
शिवे । २१९ । इति च । २ विष्णुः, अतिबृहत् क्लृप्तः इत्येतेष्वपि भिनः । तदुक्तम्—“भिनस्त्वदिति
बुद्धेऽपिबृहत्क्लृप्तवरीभित्तु” वि सो भा व ८ । इमे—“जिनीर्हृदुदविष्णुः २।२९९ । ३
विपस्वान् शेषसूर्यौ भने त ३।११० । अथ शेषशम्भुपातालम्भुनेऽपि शेषश ३ एव युक्तः ।
४ भान्तिभ । तदुक्तम्—“वृषार्कणिवारिदौ शिवेऽर्हसि च” भने त ४।२१६ । ५ भनवधिरभनन्तार्थः ।
भनन्तः केदारः शेषः पुगममनवर्षा शिवु इति मेरिनी । ६ श्रीमूतौ वातमेभुदे । वीरकः शी भुतिरः”
इति भने तं । ७ पर्यन्तौ शेषशार्ङ्गिणी । तदुक्तम्—“पर्यन्तौ शेषशार्ङ्गिणी भनदम्भुः
शक्रवौ इति मेरिभ्याम् ।

धृतं सर्पिषि पानीये विषं शालाहले जले ॥ ५ ॥
 तन्वं दारेषु श्रय्यायां न्योतिमक्षुषि तारके ।
 धवले सुन्दरे रामो धामो धन्ने मनोहरे ॥ ६ ॥
 नसत्र मन्दिरे चिष्णयम्

५

क्षेपि शब्दं करोत्यत्र मनो चिष्णयम् । नपुंसकम् । विष शब्दे ।
 धसने गगनेऽम्बरम् ।
 धसने गगने अम्बरं वर्तते । अन्धं शब्दं राति ददातीति अम्बरम् ।

परिधौ पादपे साल

१

परिधौ पादपे सालो वर्तते । तां सरणो षातीति सालः ।
 'सालः शत्रवरो बृहन्मात्रप्राकरयोरपि' इति हेमः ।

सिन्धु स्रोतसि योपिति ॥ ७ ॥

स्रोतसि योपिति सिन्धुः । तन्दी सिन्धुः ।

सारस झङ्गनी घूर्णे

सरति तद्वगे नवः सारसः ।

५१

केतन दीधितौ पञ्जे ।

केतन्ति ज्ञानस्वरूपं केतनम् । तथा च—
 "हृदये निमग्णं चिह्ने मन्दिरे केतनं विदुः ।"

मयूख कीलके दीप्ती

मयवे बिलारं पातीति मयूखः ।

२०

पतङ्ग झलमे रषी ॥ ८ ॥

पततीति पतङ्गः । पतु गवा ।

अञ्जन कञ्जले नाग

कञ्जले नागे अञ्जतो वर्तते । अन्तु इति अञ्जलकामित्तु । विक्रमेण अञ्जते प्रक्री-
 ढित्वन अञ्जनः ।

२४

सारङ्ग पृपते गञ्ज ।

सरतीति सारङ्गः ।

सरलः प्रगुण इक्षे

श्वरुत्वारमरक्तः ।

पुन्नाग सन्नरे तरी ॥ ९ ॥

३

पुनाभावा माग भेदः ।

१ अत न २२३। ० पूर्ववत् तु अस्तेन द्वेषेण कथितं मयत् इति विवेकः ।

३ गण्डर्वि विनमद्य ज्ञानं कञ्जोऽपि विनमद्यकलेन प्रवृत्तः । ४ ता/ इत्तम्, बल्लभति । सरती-वत्स्य
 स्थानं ता वतीति पुनम् । ५ 'पुन्नागसु विनाशले । प्रातीत्यं नरभे' पापुनाग इत्यम्बरे । इति मेदिनी ।

पाञ्चजन्योष्णले शो

पञ्चको पाठान्ते भव पाञ्चजन्यः ।

सम्पुं शो मत्तज्ञे ।

कम्पुं शो कम्पुं कम्पुं कम्पुं । कम्पुं वा कम्पुं कम्पुं उष्णान्पाञ्चजन्ये नकारागमः ।

सम्पुं शो कम्पुं कम्पुं

कम्पुं शो कम्पुं कम्पुं कम्पुं । कम्पुं शो कम्पुं कम्पुं ।

सम्पुं शो कम्पुं कम्पुं ॥ १० ॥

सम्पुं शो कम्पुं कम्पुं ।

अद्रिर्गिरियनस्पत्यो

गिरिश्च बनरगिश्च गि (बनरगि) तयोर्गिरियनस्पत्योः । कति आशाशमियद्रिः ।

शिशुरी तरुमूधयो

शिशुरी तरुमूधयो ।

गजा चन्द्रमहापत्यो ।

गजा इति राज्ञा ।

द्विजो दसनचिप्रयो ॥ ११ ॥

द्विजो दसनचिप्रः ।

मोषामरगियो रम्मा

मोषामरगियो रम्मा ।

फदती ष्वजमोषयो ।

फदती ष्वजमोषयो ।

अशोक गुमनस्तयो

अशोक गुमनस्तयो ।

गुमना सुरपुष्पयो ॥ १० ॥

गुमना सुरपुष्पयो । गुमना सुरपुष्पयो ।

मुक्ताश्वनयोष्णः

मुक्ताश्वनयोष्णः ।

भूरि भूय गुबणयो ।

भूरि भूय गुबणयो ।

पानापदग्ययो रीरम

पानापदग्ययो रीरम ।

पयः सलिलदुग्धयोः ॥ १३ ॥

पीयते पयः ।

कालप्रकर्षयोः काष्ठा

कालश्च घृत्वादिलक्ष्य ।

“स्वस्मे नरे सुखासीने भावस्त्वन्देत खोचनम् ।
सम्यग्त्रिरात्तमो भागस्तुटिरित्यभिधीयते ॥”

अथवा— “सर्पस्य प्रयत्नेन क्षिप्तस्य पततोऽम्बरात् ।
द्वियथं पापदृश्वानं कालः स (च) घृत्निः स्मृतः ॥”

प्रथमं प्रकर्षता उक्ता इति वा । कालश्च प्रकर्षश्च कालप्रकर्षो तयोः कालप्रकर्षयोः काष्ठा
१ कल्पते । कारते भाष्ये काष्ठा । इन्तौऽम्ब ।

कोटिः सम्प्राप्रकर्षयोः ।

कुर्याति कोटिः ।

“क्षिपती पञ्चसहस्रां क्षिपती छद्वा च कोटिरपि क्षिपती ।
औत्रार्योन्नतमनसां रत्नवर्ती बभ्रुमती क्षिपती ॥”

रन्ध्रसंश्लेषयो सन्धि

उन्वानं सन्धिः ।

‘सन्धिर्योनीं सुरद्रायां नाग्नेऽङ्गो रथेयमेवयोः’ इति ईमी ।

सिघ्रुर्नदमसुद्रयोः ॥ १४ ॥

म्यन्दते सिग्धुः ।

निषेचदुःखयोवाभा

कथनं (वाचनं) याभा । पाचु मलिपाते ।

म्यामोहो मूर्खमौढयोः ।

व्यामुद्यते म्यामोहः ।

क्रीपीनाकारयोर्गुह्यम्

गुह्यते गुह्यम् । गुह्यं लक्ष्यं । “गुह्यमुपस्य रहस्ये च” इति ईमी ।

क्रीलालं रुधिराम्मसो ॥ १५ ॥

क्रीलां लातीति क्रीलात्तम् । “क्रीलालं रुधिरं नीलं” इति ईमी ।

मूष्यसत्कारयोरर्थः

अर्थेन पूरयतेऽनेनेत्यर्थः । “मूष्यनाथ भन् । इत्यन्तारादेशेन वा ‘म्यङ्कनादीनां ह्यथ प’ ।

जाम्यं धेन्टकुलीनयोः ।

१ अने च २१२५७ । २ व्यामोहस्य मूष्यार्थे मूष्यं गुह्यम् । ३ अने च २१३५८ ।

४ क्रीलां व्याजानलति वात्यति । क्रीलं पर्वतपर्वती । इति बले विप्रः । रुधिरार्थे तु टीकोटः । ५ अने

न ३१६८३ । ६ वा सू ४१५१९ । ७ अ सू ४१६१२ ।

भेद्यकुलीनयोर्जात्यः । बाल्या भवो जात्य ।

मेघवत्सरयोरब्दः

अनतीति अद्भ्यः । कुन्दाय^१—“कुन्दाइन्द्रमन्त्राः । “अद्भ्यः संवत्सर मेघे मुस्तके गिरिमिषपि^२ ।”

ताभ्यो ह्यगरुत्मतोः ॥ १६ ॥

५

वृषस्वात्म्य ताभ्यो । पुंलि ।

स्तम्भतास्युणयोः स्तम्भ

स्तम्भ इति लोभोऽयं बाह्व ।

चर्चा चिन्ताचित्तकपो^३ ।

पर्यसं चर्चा ।

हरकीलकयो स्यापु

तिष्ठतीति स्यापुः ।

स्वैर स्वच्छन्दमन्दयोः ॥ १७ ॥

स्वत्य ईः स्वैरः । ^१स्वस्वात् ऐक्यैरेरिषोरपि बर्हस्पत्यम् । तथा चात्तद्वारे—

“स्वैरं विहरति स्वैरं शते स्वैरं च अल्पति ।

मिथुरेकाः सुतो लोक राजपौरमयोचितः ॥”

“स्वैरा मन्वे स्वतन्त्रे च” इति ईमी^४ ।

शङ्खः सङ्कीर्णविषरे पलालामौ च फीलक ।

सस्यायाम्

शं श्यति श्रुते वा “शङ्खु” ।

काननोद्भूते मङ्गी दावो दवोऽपि च ॥ १८ ॥

१०

१५

२०

२५

३०

काननोद्भूते यङ्गी दावो दवोऽपि च । दुनेतीति दवः । दायः । वा^५ अन्तादिदुनीशुभो वा ।

फीनाशः कृपस्ये मृत्यु कृतान्ते पिषिताञ्जिनि ।

तथा पुण्यजनान् प्राहुः सजनान् राक्षसानपि ॥१६॥

लोमेन क्षितरवते वाप्यते फीनाशः । ताक्षम्यः ।

विरोचनो रभौ चन्द्रे वज्रुयनी हुताशने ।

विरोचते इत्येवंशीतो विरोचनः ।

ईसो नारायण्ये अघ्ने यथावदथ सितच्छद्रे ॥ २० ॥

इतीति इस्तः ।

सोमभन्द्रोऽमृतं सोमः सोमो राजा युगादिम् ।

सोमः प्रतानिनीमेदः सोमपोऽगस्त्यदिग्पतिः ॥ २१ ॥

१ का उ ए ३१५ इति अद्भ्यः । २ घने उ २।२२५ । ३ ‘स्वत्वेरेरिषीरिषु’ का क ए ३८।४ घने उ २।४८२ । ४- शङ्खेऽस्मात् शङ्खः । ‘शक्ति शङ्खायाम् । श्रीशा रिङ्क उः । ५ का ए ४।२।५ इति अद्भ्यः “शङ्खु उरताये” ।

पुम् अभिवये । अनेन सर्वेषां वाचनिका ज्ञातव्या ।

अजो विधिरमो विष्णुरज अम्भुरध्वन्तमः ।

अजस्रैर्वापिको व्रीहिरनो रामपितामहः ॥ २२ ॥

म जायते मीत्यद्यते अजः ।

शुद्धेऽनुपहते बह्वौ ब्राह्मणे सविषोत्तमे ।

आवादेऽध्यात्मसविधौ ब्रह्मधर्म्ये धुचिर्मतः ॥ २३ ॥

मताः कथिताः । एतेष्वर्थेषु शुभियम् । शोचति वनो इहसग्रेऽथ शुष्निः । तथा च वय-

स्तिसाकव्याख्याम्—

“न स्त्रीमिः सङ्गतो यस्य सर्वद्वन्द्वविवर्जितः ।

तं शुचिं सर्वदा प्राहुः मार्तण्डं च हुतारानमिति ॥

अर्षोऽभिषेयरैवस्तुप्रयोअतनिवृत्तिषु ।

अर्षशब्दः पठ्यते । अभिवेदश्च शब्दो वाचकः शुद्धमन्त्रे वीष्वाधर्म्यं च वाच्यः अभि-
वेदश्च कथ्यते । च सुवर्णम् । वस्तु—अस्यादिसौवितादिर्वा । गैरिकाण्वितं (विष्णुं च) वस्तु । प्रवीर्यं
कार्यम् । निवृत्तिषु मुक्तिः । वाह्य । च गती । अस्ति इत्यर्थः ।

भावः पदार्थचेष्टात्मसत्तामिप्रायजन्मसु ॥ २४ ॥

एतेष्वर्थेषु भावः पठ्यते । भवतीति भावः । ‘वा’ अन्तादिविदुनीशुचौ च ।

प्रायो भूमोपमातर्ष्यप्रभृत्यननिवृत्तिषु ।

एतेष्वर्थेषु प्रायाः शब्दः ।

अन्तः पदार्थसामीप्यधर्मसत्त्वव्यतीतिषु ॥ २५ ॥

एतेष्वर्थेषु अन्तः ।

अज्ञो घृते वरूपाङ्गे नयनादौ विमीतक ।

घृते वरूपाङ्गे रवपकावधे नयनादौ विमीतके पतनानाम् अज्ञो वर्तते ।

सारः श्रेष्ठे बले विधे कोशे अलचरे स्थिरे ॥ २६ ॥

श्रेष्ठे बले विधे कोशे कोशे वा पाठः । अज्ञापठे, स्थिरे लारो वर्तते । अस्मिन्नेति सारः ।

३“वहसामस्त्ववीर्य” इति परस्मैप पम् । स्वमते “अस्मिन्नेति च कारके लंकाराम्” इति वम् । “सारो

मज्जस्थियंशरायोः बल श्रेष्ठे च” इति ईमी ।

वाचि वारि पशौ भूमौ विन्नि छोमिन् रवौ दिवि ।

विन्निसे दीधिति वृष्टावेकादशसु गौर्मतः ॥ २७ ॥

पूर्वा गच्छतीति गी । गमेर्बोः ।

चन्द्रे ध्रुवे यमे विष्णौ वासवे द्युरे ह्ये ।

सूगेन्द्रे वानरे वायी वसुस्तपि हरिः स्मृतः ॥ २८ ॥

हत्तीति हरिः ।

पथे करिकरप्रान्ते व्योम्नि खङ्गफलं गदे ।

वाद्यमाण्डमुखे तीर्थे जले पुष्करमष्टसु ॥ २६ ॥

पुष्पातीति पुष्करम् ।

शृङ्गाराद्री कपापाद्री वृताद्री च त्रिपे जले ।

निर्वासि पारद् रागे धीर्येऽपि रम इष्यते ॥ ३० ॥

शृङ्गापदौ-

“शृङ्गारहास्यकुरुणारौद्रधीरमयानकाः ।

बीमत्साऽऽहुतशान्ताश्च नम नाट्ये रसाः स्मृताः ॥”

कपापादौ—विष्णुमन्त्रमण्डकृपापयु । वृतादौ—दुग्धदधिपूततैलकवयेऽमुदरेषु ।

त्रिपे जले त्रिपेति वृष्टरुचिरुपे पारदे रागे, धीर्येऽपि रम इष्यते ।

तीर्थे प्रमथने पात्र लघ्वाम्नापे विदावरे ।

पुष्पारण्ये जलोत्तारे महासत्ये महासुनी ॥ ३१ ॥

स्तेष्वप्येव तीर्थम् ।

घातु पञ्चसु लोहेषु क्षरीरस्य रसादिषु ।

पृथिव्यादिष्वहृत्के च स्वभाष प्रकृतावपि ॥ ३२ ॥

पञ्चसु लोहेषु सप्तर्षिरज्ज्वालीतिशोभ्येयु । क्षरीरस्य रसादिषु रसात्स्नान्धेरीऽस्तिमन्मृष्टेषु ।

पृथिव्यादिष्वहृत्के च पृथिव्यतेजोनासु (वनस्पति) षु स्वभाषे वावपित्तरलोभ्यादिषु एतेष्वप्येव घातुः पठ्यते । इपातीति घातुः ।

प्रधानशृङ्गलाङ्गुलमूपापुण्ड्रप्रमाथना ।

श्वजलस्मत्तरङ्गेषु ललामो नवसु स्मृतः ॥ ३३ ॥

एतेष्वप्येव शब्दनामः । ललामन् ।

आकृतावसरे रूपं प्राक्षणादिषु आविषु ।

मान्दानुलेपने च च वर्णं पद्सु निगद्यते ॥ ३४ ॥

आकृती शब्दे स्ते शब्दराक्षिषु नाक्षिषु मान्दानुलेपने च वर्णोऽनिगद्यते ।

अक्षरादाबुदाघादौ पद्भ्यादौ निस्थने स्वरः ।

एतेष्वप्येव स्वरः कथ्यते । अक्षरादौ—अ वा इ ई उ ऊ, ऋ ॠ, ए, ऐ, ओ, औ ।

उदात्तादौ—“उच्चैरुपमन्वमान उदात्तः” नीचैरुदात्तात् “उपहृत्या स्वरितः” । पद्भ्यादौ—

“निपाद्यपभगा भारपद्भ्यमभ्यमचभताः ।

पञ्चसरश्चस्पती स्मत् तन्त्रिकण्ठोच्चिताः स्वराः ॥”

निस्थने शब्दे ।

मङ्गलाचारमिद्वान्तकालेषु समयः स्मृतः ॥ ३५ ॥

कथ्यते समयः ।

१ तरति तीर्थेति वाञ्छेन तीर्थम् । २ लल विलासे । ३ लक्ष्मीरमेधात् ललतीति ललामः ।

४ ‘वर्णं शब्दे । वर्णवति कथ्यते वा वर्णं । चन कर्मणि अत्रा कर्तरि । ५ लारस्य नू. २ । ६ अम को १।०।१ ।

तन्त्रं प्रधाने सिद्धान्ते सैन्ये तन्ती परिच्छेदे ।

तन्त्रेण भुक्तान्ते शब्दा धरेनेति तन्त्रम् । अत्रत्यम् ।

सत्त्वमोक्षसि सत्तायास्तसाहे स्वेभिः वन्तुषु ॥ २६ ॥

एतेष्वेषु सत्त्वम् ।

रूपादौ तन्तुषु व्यायामप्रधाने नये गुणः ।

गुणवतीति गुणाः ।

१ ज्ञानधारित्रमोक्षात्मभ्रुतिषु प्रह्ववाग्वरा ॥ ३७ ॥

वरा विशिष्टा ।

अवकाशे क्षणे बन्ने बहियोगि व्यतिक्रमे ।

मध्येऽन्तःकरणे रात्रे विद्येपे रहितेऽन्तरम् ॥ ३८ ॥

एतेष्वेषु अन्तरम् ।

हेतौ निदर्शने प्रपने भुतौ कण्ठसमीकृतौ ।

ज्ञानन्तर्येऽधिकारार्थे माङ्गल्ये चाय इष्यते ॥ ३९ ॥

इष्यते कथ्यते । अथ एतेषु ।

हेतावेवंप्रकारादौ व्यपच्छेदे विपर्यये ।

प्रादुर्भावे समाप्तौ च इतिशब्दः प्रकीर्तितः ॥ ४० ॥

प्रकीर्तितः कथित इतिशब्दः एतेष्वेषु । इत्युक्तौ । इ । एति एतन्नादिकर्मव्यमिति ।

“इति” इत्युपलि मधुसिन्धो बन्धत्” इत्यनेनेतिशब्दवत् । इति चात्तम् । प्रव ति । “अन्तः”

“वाच” तिज्ञोपा ।

धर्मो धनुष्यहिंसादातुस्यादादावये नये ।

द्रव्यक्रियाश्रये विषे जीवास्तौ दारुवैकृते ॥ ४१ ॥

एतेष्वेषु धर्मः । बलीति धर्मः ।

मूर्तिमत्सु पदार्थेषु संसारिण्यपि पुद्गलाः ।

एतेष्वेषु पुद्गलाः ।

अकर्मकर्मनोकर्मजातिभेदेषु वर्गणा ॥ ४२ ॥

(अकर्मं पुराणतत्त्वम्) कर्म-जानापरत्वादि नोकर्म-शरीरादि । जातिगोचरि । एतेषु वर्णना

कृते ।

एश्वर्यस्यासमग्रस्य वीर्यस्य यक्षसः भ्रियः ।

वैरान्यस्याबबोधस्य वण्णां भग इति स्मृतः ॥ ४३ ॥

भगवत्स्मिन्निति १ भगा ।

प्राहुः कैवल्यमार्हन्त्ये विविक्ते निर्वृतामपि ।

१ काठकोशस्य पुद्गलं कर्म नोपलभ्यम् । २ का द् २।१।४ । ३ पूर्वन्ते पुनः पुनः कल्पकर्म इति पुरा । गलन्ति विहीनन्ते गलाः । पुरश्च ते गलाश्च पुद्गलाः । पुरीश्वरादित्याश्रय इ । ४ भगवते

तेष्वन्ते चावति वा भगा ।

केवलत्व भावः कौयस्यम् ।

सृष्टिः केवलबोवादाविष्टासौ नियतौ भ्रियाम् ॥ ४४ ॥

काम्भनं लक्ष्मिः ।

अनेकान्ते च विघाडी स्याद्विपात भुते क्वचित् ।

स्यात् सनेत् एतेष्वनेषु निपाताः ।

५

म^१ङ्कारको धर्मचन्द्रस्तत्पट्टे धर्ममूषणः ।

तत्र देवेन्द्रकीर्तिं श्रीङ्गुण्चन्द्रस्तत् परम् ॥ १ ॥

धर्मचन्द्रस्ततो ज्ञानसागरस्तत्पदेऽमभत् ।

सेन पुस्तकमेतदि दत्त (लोकाहितेऽख्या) ॥ २ ॥

इति

धनञ्जयनाममाला सटीका समाप्ता

१ स्यात् इत्याकारको निपात एतेष्वनेषु इति सम्बन्धः । २ इतः परं मुद्रितपुस्तकेष्वधिक्यं पाठ उपलभ्यते लघुभा-- 'दर्शनादी मखी एनं मन्त्रः शलै प्रसेत्सति ॥४५॥ परमात्मा त्रिभिः किवृष पर मेऽप्यर्हंवादिषु । किवृषाः किवृषभिरवावाभमर्हत्किवृषभिरवामरि ॥४६॥ अर्हत्किवृषभिरि द्वावप्यर्हंकिवृषाभिरवामरि । अर्हंवादीनिः श्रुतः शरवोत्तममङ्गलान् ॥४७॥ इति । ३ अत्रस्तु द्विद्वीयात्किवृषित्वात्पदेः त च शीघ्रत इत्यंशः संशयः ।

अनेकार्थ निघण्टु

गम्भीरान् वधिराशिचक्रान् विस्तीर्णार्थप्रसाधनान् । कण्ठधम्बान् प्रवक्ष्यामि कवीनां हितकाम्यया ॥१॥
 वारिवाग्नूरधिमवटोषु पञ्चसिस्वर्णधारिषु । नवतन्त्रेषु मेवाची गोक्षय्यमुपलक्षयेत् ॥२॥
 कः प्रजापतिवद्विष्टो को वायुरभिधीयते । कः क्षयः स्वर्णमाष्यासि क इत्यात्मा मतः स्वचित् ॥३॥
 ससिन्धुं कमिति श्रेयं तिरः कमिति बोध्यते । वैशानमिमियानाहुर्मत्स्यामिमियास्तथा ॥४॥
 मग्निरथ वद्विषः चैव वृत्तः कुक्कुट एव च । सिद्धिभोग्निहिताः सप्तः पुषुकरच मत्तः सिद्धौ ॥५॥
 हंसो नारायणः प्रोक्तः स्वचिद्धंतो दिवाकरः । अस्वराचापि स्मृतौ हंसो हंसराचापि सिद्धिपथः ॥६॥
 सारसस्तारसिनेन्दो पतम्यपि च सारसः । राधाऽपि नृपतिर्ज्ञेयो राजा भोक्तो निलाकरः ॥७॥
 विभाकमुर्हुताश्वः स्याच्छ्वेतच्छ्वः स्वचिद्धुकेत् । हिमाराति स्मृतौ वज्रि हिमारातिश्च भास्करः ॥८॥
 वनज्जयदोऽग्निर्याव्यतो पार्श्वराचापि वनज्जयः । भीमस्तवच मत्तः पार्श्वौ वीरवटो विद्वतः स्मृतः ॥९॥
 अग्निविरोधनः प्रोक्तो भास्करस्तु विरोधनः । विरोधनश्च चन्द्रः स्यात्स्वचिद्धंतो विरोधनः ॥१०॥
 पाण्डवदन्धः स्वचिद्धिः स्वचिच्छ्वेतो निवधते । कम्बुश्च पतितः प्रह्लुः कम्बुरिष्टश्च कुञ्जराः ॥११॥
 भास्करोऽग्निः समुद्रिष्टः लङ्काधुरापि स्वचित् । पतङ्गो चित्तङ्गु श्रेयः पतङ्गः सलजः स्मृतः ॥१२॥
 कौशिको वैवराजः स्यात्पुष्कराचापि कौशिकः । धम्मजुर्द्वेषा च विष्णुश्च धम्मजुश्चैव महेश्वरः ॥१३॥
 नृपकेतुर्मत्तः सङ्गुः कर्कः कील इहोच्यते । जम्बुकी वरवो श्रेयः सुपालश्चापि जम्बुकाः ॥१४॥
 अर्कः इच्छस्तु मयवान् वमौमूर्कः उच्यते । मन्थी राहुश्च वज्रश्च प्रहो मन्थी निवच्यते ॥१५॥
 केतवी रमन्थी श्रेयाः केतवश्च महाम्बजाः । तमोनृपः लङ्काधुराग्निरचापि प्रकीर्यते ॥१६॥
 मयुजाः किरवा श्रेया मयुजाश्चापि कीलकाः । सप्तविस्तवः प्रोक्तः सप्तान्ये च्छ्वयाः स्वचित् ॥१७॥
 वसवः क्षीरा उक्ता देवाश्च वसवो मताः । मत्तं विष्णुमित्युक्तं येषु विषयं मत्तं स्वचित् ॥१८॥
 वासोऽम्बरमिति क्यत्तमम्बरं च नमोऽथकम् । वयः तच्छिन्नमुद्भिर्धं पयः क्षीरं मत्तं स्वचित् ॥१९॥
 शिबं पत्नीममुद्भिर्धं शिबं श्रेयः शिबं पुष्यम् । शिबं व्योमपत्तं प्राहुः शिबं भेधं प्रचक्षते ॥२०॥
 सरं वलं विजालीयात्स्वचिद्धैव विष्णुः करम् । स्यात्तं धाम्नुः सिद्धिं स्वचिद्धैव महारवः ॥२१॥
 कुम्भं तमः समान्यतं कुम्भश्चाधोऽसत्तथा । जम्बुतं क्षीरमित्युक्तं स्वचिद्धैव समुद्रकम् ॥२२॥
 अर्कं च सखिर्धं प्रोक्तं मृतमङ्गुः शर्बः तथा । तोर्धं वृत्तमिति प्रोक्तं वृत्तं सपिः स्वचिद्धुकेत् ॥२३॥
 पालीयं च विषं प्रोक्तं स्वचिद्धासङ्गुं विषम् । हुस्तिङ्गस्तः कः प्रोक्तः करो हुस्तः प्रचक्षते ॥२४॥
 कीलार्कं वधिरः प्रोक्तं तीरं चैव प्रचक्षते । नृपनं तच्छिबं प्रोक्तं आकाशं नृपनं स्मृतम् ॥२५॥
 प्रवालं कोमलं शर्बं कोमलं स्वचिद्धैवकम् । सवर्धं च स्मृतं तोर्धं सवर्धं वेदम च्छ्वयते ॥२६॥
 तोर्धं सपति वक्षितं विक्रयं तपः निगच्छते । संवरं च कर्कं प्रोक्तं संवरः पर्वतो जयेत् ॥२७॥
 संवरश्चाऽनुरः क्यत्तो यो विधर्ति रतां प्रियाम् । स्वराज्यन्मास्विकं प्राहुरिवा चाम्बरवेकताम् ॥२८॥
 पत्नीं चन्द्रेरिकां प्राहुरिवा लक्ष्मस्तां मता । अशितिः नृषिणी श्रेया वैवमताऽशितिः स्वचित् ॥२९॥
 जम्बुका धार्वी परिस्पन्ता त्विद्धुविषश्च निवच्यते । नृपो वर्यः स्वचिद्धैवो पथामपि पतिषु च ॥३०॥
 नृवा कर्मश्च पतितो नृवा भोक्तः सतक्युः । रौहिणेयो वक्तः प्रोक्तो रौहिणेयो नृवाः स्वचित् ॥३१॥
 वल्लभैवो मत्तः श्रेयो नावो वा श्रेयः उच्यते । रामस्तु कर्मिणी श्रेयो रामो वाञ्छरविः स्वचित् ॥३२॥
 रामश्च धुक्को वर्यो रामश्च क्षत्रनाशनः । वराहः केजवा क्यत्तो वराहो वर्यः स्वचित् ॥३३॥
 वराहः सक्करो श्रेयो विष्णुर्मयो हरिस्तथा । अजाराऽल्परोचो श्रेयाश्चिद्धैवश्चाप्यथो मत्तः ॥३४॥
 अथ पद्मश्च विष्णुस्तो तथावो ब्रह्मकैवली । क्षरीरकः स्मृतो रोपः पुष्यश्चापि क्षरीरकाः ॥३५॥

शयं पुच्छरमश्वं च भायतासाधमेव च । कर्णं ममाः समाख्यातं कर्णं रोषं प्रचक्षते ॥३६॥
 कं चानन्तमिति प्रोक्तमन्तं च कर्णं स्वचित् । विष्णुः स्वचित्चरन्तः स्यान्नागवचनस्त उच्यते ॥३७॥
 प्रजापतिः स्मृतो राजा ब्रह्मा चापि प्रजापतिः । प्रजापतिः स्मृतः क्षता क्षता च चर उच्यते ॥३८॥
 वामः पयोपटः प्रोक्तो वामः स्याद्ब्रह्मिणं हरः । वामरश्च भवनः प्रोक्तो वामरश्च प्रतिशूकके ॥३९॥
 आगौषो घोषको ज्ञेयः स्वचित्चरानोपको ज्ञेयः । उररथाः स्मृताः समाख्यातः स्यान्मन्त्रुः स्मृतस्तथा ॥४०॥
 वासरस्तु स्मृतो नागो वासरो विषसो मत्तः । विमाश्वर्गुणिसा ज्ञेया दम्पर्वश्च स्वचित्मत्तः ॥४१॥
 शर्वयो राज्ञयः प्रोक्ताः शर्वर्षश्च रिचधो मत्ताः । सार्धं परमिति प्रोक्तं सार्धं सार्धं विगद्यते ॥४२॥
 स्वः स्वगत्य मत्तं नाम स्वः शुक्लं स्वचित्कुर्यते । स्व ज्ञात्वा चैव निर्विष्टः स्वः प्रोक्तो गृह्णुमिकः ॥४३॥
 कद्रुश्चन्द्रनीचिहोवहो मत्तः शास्त्रेणैव ना कद्रुप् । कद्रुम्पृष्टुः प्रोक्तो ज्ञेयास्तु कद्रुधो विद्यः ॥४४॥
 श्वयं वेद्यं समुद्दिष्टं श्वयं रोमं प्रचक्षते । श्वरश्चस्तु ज्ञेयो ज्ञेयो ज्ञेयो ज्ञेयो ज्ञेयो ॥४५॥
 प्रासादो मण्डपः प्रोक्तो विहारश्चापि कथ्यते । धर्मं धर्मं विजातीयार्थं धर्मं विपुलमुच्यते ॥४६॥
 प्रयुज्यते च कश्चिद्विचद् धर्मं सङ्घातवाद्ययोः । कर्णं स्यात्कर्णं स्यात्कर्णं वेद्यं उच्यते ॥४७॥
 चमूश्च धर्मं सङ्घातः प्रचरति मनीषिणः । अमुराश्च मुरा ज्ञेयाः स्वचित्चैवारयोऽमुराः ॥४८॥
 नापाश्च द्विरथा ज्ञेया पल्पपतश्च स्वचित्मत्ताः । गच्छंश्च तथा वायुः स्वचित्स्वार्थं देवायाम् ॥४९॥
 तास्यो ह्यपः समुद्दिष्टस्तार्थश्चैव पतिश्चिरात् । जालेयान्मुद्रानाहुर्बलिमाश्च स्वचित् करान् ॥५०॥
 तुनी बन्धवति प्रीयता स्वचित्चरश्चि कथ्यते । निरुदरी बुध उद्दिष्टः निरुदरी परवत् स्मत् ॥५१॥
 द्विषो विप्रश्च शस्त्रश्च द्विजः पत्नी नियद्यते । शौरो मन्त्रिणश्चो ज्ञेयो ज्ञातश्चापि मन्त्रिणश्च ॥५२॥
 मास्म्यं रश्ममुद्दिष्टं मुत कामस्तर्षश्च च । कीनाद्यो मुतको ज्ञेयः कीनाद्यश्चापि राजतः ॥५३॥
 कीनाद्योऽग्निः कृतस्मश्च कृपणो यम एव च । कीनाद्यः कर्णको ज्ञेयः कीनाद्यश्च बुकोदरः ॥५४॥
 भवदात्तः प्रजानं स्यादश्वात्तं च पाप्मुरम् । ज्योतिस्तोषणमुद्दिष्टं ज्योतिर्नशात्रमुच्यते ॥५५॥
 ज्योतिश्च गद्यतो बह्विः काव्येषु भविष्युर्बह्वैः । प्रधानं तज्जगत् ज्ञेयं प्रधानं ज्ञेयतमुच्यते ॥५६॥
 अश्वः संवत्सरो ज्ञेयो वैश्वश्चापि स्वचित्मत्तः । बसाहृका महापैया विरुदरी च बसाहृकाः ॥५७॥
 तोयश्च जलं प्राणुस्तोयं कथ्यते घृतम् । बीमूतश्च मतो नागो बीमूतः स्वचित्चरश्च ॥५८॥
 पीलस्त्यं तु मत्तं पुष्टं पीलस्त्यं पीलं विदुः । दुर्बिहृजश्चरश्च प्रोक्तो निर्यं दुर्बः रत्तः ॥५९॥
 पञ्चम्यं जलं प्राणु पर्यन्त्यं तु शनश्चतुः । शिलीमुञ्जा स्मृता वाया श्वरराश्च शिलीमुञ्जा ॥६०॥
 मेघाः तीमेति विज्ञेया मेघा विजहृतो मत्ताः । अम्बरोयं स्वचित्चुष्मायुं स्वचित्चुष्टं नियद्यते ॥६१॥
 पुस्त्यश्चापि मत्तं पुष्टं पुस्त्यं पील्यमुच्यते । विद्यासोऽरिपयो ज्ञेया विद्यासस्त्यस्यो मत्ताः ॥६२॥
 मायाप्रिच्येति विज्ञेया स्वचित्मत्ताया तु सावरी । मधुः शालीति विज्ञेया स्वचित्स्यान्मधुः मासिकम् ॥६३॥
 सङ्कुः कर्मणुः सङ्कुश्चात्तं मुरा च सङ्कुश्चक्रः । सङ्कुश्चक्रः सङ्कुश्चक्रः सङ्कुश्चक्रः सङ्कुश्चक्रः ॥६४॥
 मन्त्रिण्यमिति ज्ञेयत्वं च च नक्षत्रमुच्यते । पार्थराय्याः महार्थता घृतपाण्डुता स्वचित् ॥६५॥
 प्रजाकरो मत्तः सूर्यो बह्विश्चापि प्रजाकरः । सितं भुवमिति ज्ञेयं सितं बर्धं प्रचक्षते ॥६६॥
 जसितं कृष्णमित्युक्तं जसितं मन्त्रितं स्मृणम् । बन्धस्तु तद्रुको ज्ञेयः नाशको मन्त्रस्तथा ॥६७॥
 विद्यश्चक्रुमाहुर्मार्शरुविश्चापि तवेच्यते । धमस्तु वायसो ज्ञेयो यमः प्रेताविपस्तथा ॥६८॥
 लक्ष्मणं शारत्तं विद्यातथा शरत्तारमन्त्रम् । लक्ष्मणं चन्द्रस्य काव्यं स्यात्लक्ष्मणः केतुः प्रकीर्तितः ॥६९॥
 केतुश्चापि मत्तः काव्ये लक्ष्मेति मुनिपुङ्गवैः । मातृज्येयः स्मृतो हतो वज्रश्चाप्येतत् स्वचित् ॥७०॥
 आयुक्तायी भवेद्देवः स्यादली तीमत् स्मृतः । मादित्यं च रश्चि विद्यार्षैश्चश्चाप्यदितेः शुभः ॥७१॥
 रोपी रक्षस्तथा रेणु रक्षो लोहितमुच्यते । रक्षो नित्यसंज्ञः स्यान्नित्यसंज्ञः ज्ञेयं तटम् ॥७२॥
 हेम रश्चिति विज्ञेयं वसु तेजो नियद्यते । सारङ्गं जलार्थं प्राणुः स्वर्णं चापि सितार्थिनी ॥७३॥
 रम्भाश्च कदलीः प्राणु रम्भा स्वर्णं ज्ञेया मत्ता । पाशापो गिरिजा प्रीयता ज्ञेयाश्चापि मनीषिणि ॥७४॥

निगद्यते । शीघ्रं रसमुद्दिष्टमृतं सत्यमपि बभूवित् ॥७५॥
 अथ भालेति विज्ञेयः शेषवाहुविनीतकम् । शेषनिष्ठियमस्य च पाण्डं कर्षं एव च ॥७६॥
 अलं च पाण्डं विद्युत्पाचहारिकमैव च । पयमिन्द्रियमित्युक्तं पयं तामरसं विदुः ॥७७॥
 शंस्यमाप्यनं प्रोक्तं नीडमायतनं तथा । पूर्वं सौहित्यमुद्दिष्टं पूर्वं च कुसुमं तथा ॥७८॥
 बाजी सुरङ्गमी शैवी बाजी श्वेनो विहङ्गमः । विज्यन्त्रसिद्धमयूकचक्रावित्यास्तु बानरान् ॥७९॥
 बभ्रवावातिकुह्यान् हरोदिग्धमिति कोचिराः । पुष्यपञ्चमसिद्धेषु ह्यभूयवत्तमसु ॥८०॥
 रामोपावकीश्वेयु कर्मानं तत्रमु स्मृतम् । सुधा स्मृतासिद्धोपोना स्वामी मञ्जरी तथा ॥८१॥
 बभ्रवत्र शुको शैवः कोकिला बभ्रवप्रिया । पुष्पिनं बभ्रविकुष्ठैः पञ्चमं स्यात्कुशोपायम् ॥८२॥
 रतं पापमिति शैवं सत्वरं शीघ्रमुच्यते । पिण्डं रोचनानं स्यान्नेककस्तिकको मता ॥८३॥
 तसाऽऽवसितं विह्वं विह्वङ्गस्तिकरं मतम् । परिचर्यं च कर्षं निकास्तु कपो मताः ॥८४॥
 नामारत्नरत्नचिता मञ्जुवृष रागिणी स्मृता । विण्डुवामिन्दिहेयु केसरित्थं विनीयते ॥८५॥
 मध्यान्तो मधुराः शरः कल इत्यभिधीयते । अनातमुस्सुखं शैव छेदो नाम मयङ्कटः ॥८६॥
 भावः शृङ्गारमायुषं भाषीः स्वस्वाग्ररपयम् । विनातः कामजो शेषस्तरेव लक्षितं मतम् ॥८७॥
 उत्तमाङ्गं विना वैहं कर्षणं चेति शास्वते । शिरसो केचन यद् गुरुधीयं निगद्यते ॥८८॥
 आहृतं तामरीयं स्यान्मिषिदं पीडिनोन्नतम् । मधुकी भेकसंज्ञः स्यात्पर्वभूजवातको मता ॥८९॥
 मिषा पिङ्गवती श्रेया विद्यानं सत्तमं मतम् । कुडवर्मा मिषिन्दिष्ट स्यात्कर्षकस्तु हृषीकला ॥९०॥
 कन्यात्राताश्च बाजीनो वण्ड कपो इति स्मृतः । उत्कृष्टः इभुनुर स्यात्तां म्लिष्टमन्वत्तवाचकम् ॥९१॥
 रवनी हस्तिवन्तः स्याद्गानं कर्करुतं कितम् । तोरनं चाहुदुर्गं विद्यारानानं हस्तिवचनम् ॥९२॥
 पनापन इति स्यात्तः शास्त्रप्रधिकारोपः । अयाधीनं जनैश्च च बुद्धिर्मेवा तु ज्ञेयुवी ॥९३॥
 अर्धस्तु वाहवे शैवी मदी स्यात्केनवाहिनी । मन्धारोहो मन्धानोऽन्धानो हृदये ध्वनिः ॥९४॥
 भास्वर इति विज्ञेयः सुराश्च शकतीञ्जिता । धाममातं भवैत्यर्थं बभ्रवं पिण्डिनमुच्यते ॥९५॥
 पूर्वं तु विरतं शैवं नृप्यं सरतमुच्यते । शङ्खं मुक्तित्रयं चैव वाराहं तिमिमीरिणकम् ॥९६॥
 ब्रह्मावासीविद्यान्नामात्रोन्मृताश्च तथाष्टमम् । लोकतो वसिष्ठो शची वसिष्ठश्च सुरः स्मृतः ॥९७॥
 आननं तु मनं विद्यात्कथं गहनं मनम् । आननं चातुने मन्त्रे विदुरं चापि शास्वते ॥९८॥
 पात्र इयाम इति प्रोक्तो बभ्रुस्तु कपिलो मन्त्रः । स्यविष्टं स्यादरे चैव बभ्रुष्टं ह्रुतमुच्यते ॥९९॥
 ब्रह्मेष्टी मन्त्रः शेरुः प्रमः त्रियमुदाहृतम् । प्रकाशः शरीपुष्टेरनः र्धन्य इति तज्जितः ॥१००॥
 पशुचर्ममन्त्रः स्यात्तन्निर्गतवचनः स्मृतः । लावण्यमाहुर्नारिं विनं च तुल्यकर्मजम् ॥१०१॥
 व्यापयन्नामयाः प्रोक्ताः बानीयं तु तनुवचनम् । व्यापयतु स्मृताः प्राग्निचरितोऽन्धा उपजवाः ॥१०२॥
 र्हो वेगः समाप्तवानः तत्रं तत्रचितं स्मृतम् । आनघातं स्मृतं तन्निररतं वैगनिवारणम् ॥१०३॥
 बहवः कर्मावदुः स्यात्सुखं तनुगन्तव्यम् । विनातं पाण्डरं शैवं शीघ्रं प्रेङ्गुनि शास्वते ॥१०४॥
 अशिरः मन्त्रं शयं निरनं चापि अशिरम् । तन्त्रवचनोऽन्धारिः प्रथमं बुद्धमुच्यते ॥१०५॥
 पनातो हृत्तमो बन्तोः शेषको शीघ्रनिञ्जराः । उन्नानं कुचं विद्यान्मतायो अशियो मताः ॥१०६॥
 उता वाया वना वैष्णु बुद्धोऽहो वसिष्ठी इति वा । व्याप्तानो मन्त्रो वेगुत्सवित्मन्त्रः वरिणीनिगः ॥१०७॥
 त्रिजः वायः तत्र चैव रोचमाहुर्नीरिजः । कन्धोऽन्धवः शायः कन्धं चाशिरं मनम् ॥१०८॥
 अशिरः अशिरः विद्यान्मन्त्रः पात्रा च भूवन्तोः । रत्नं वाः विद्यानीयात्तियाना कन्धरा मता ॥१०९॥
 शेषः शानः विद्यानीयान् इत्यं नीचकमुच्यते । अशिरः प्रथमविष्टमन्त्रिनः सर्ववाचकम् ॥११०॥
 ब्रह्मावासीनो अथ ब्रह्मावासीनो मन्त्रः । त्रियवाचो ब्रह्मेशः स्यात्तत्र वरिणीनिगः ॥१११॥
 आनघातश्च वः शेरुऽन्धं शेषं मनम् । विरिणी कन्धरी स्यात्ता शीघ्रा चैव निगद्यते ॥११२॥
 आननी बुचरा शैवा बुचरा अशिरो मन्त्रः । कन्धरी मञ्जरी स्यात्ता मन्त्रा पाना शरीरिनिगः ॥११३॥

धामुनिवश्यते तोषं तेन बीभति पद्यकम् । तस्य पत्राक्षिनालेन रामो राजीवलोचना ॥११४॥
 परस्त्व कथं वेहावत्परायं च पत्युरा । इन्द्राय वसुधाकर्णस्तेन बंधुर्तनः स्मृतः ॥११५॥
 तीक्ष्णचर्चं प्रचण्डश्च बुधो नावान्धो मतः । स पाण्डवस्य उदरे तेन भीमो बुधोदरः ॥११६॥
 यस्य क्षुतिमुखा बाभी पुष्य-सूक्तं स जघ्नते । यः खेरी चाभिषर्त्ता च मुद्गासीधः च जघ्नते ॥११७॥
 महासंसर्गसङ्घर्षं महेश्वासं प्रचक्षते । स्वधिकर्मस्तरायेण परं पूषं तापयेत् ॥११८॥
 पूषं तापयेत्तं विभेयश्च स मूपयः । तस्माद्यपि च यो बन्धुः स तु मूषयमुपय ॥११९॥
 सिद्धान्तितास्तसीवीरः स नृसिंह इति स्मृतः । ये हि स्पष्टप्रचस्तारो मत्तस्ते व्यक्तवाक्वि ॥१२०॥
 यो यमित्थं च नाम्नाति स कीनाम इति स्मृतः । योऽम्बुद्वीपुम्बुद्विद्वेष स तु मन्व इति स्मृतः ॥१२१॥
 उपकारं तु यो हृन्ति स कृतज्ञ इति स्मृतः । हृयं गर्भं सुखं खेदे नृद्वी च प्रतिभातते ॥१२२॥
 स्नेहमागच्छये बंधु मन्वशास्त्री निघण्टते । नस्तीत्य कर्तते यत्र त्वभ्यात्मं प्रचक्षते ॥१२३॥
 केतसश्च समाधानं समाधिरिति पद्यते । सर्वकलेसाधिनमु क्तो स हि राज्ञा इति स्मृतः ॥१२४॥
 निर्ममो निष्पुङ्गुरो बिलेयः छिन्नसंसयः । प्रवाता वेधाकाञ्चल तनाधिस्यः स जघ्नते ॥१२५॥
 मुकरोऽम्बवतिर्बस्तु सञ्चेद्यश्च कीटकः । क्षुत्तिर्मत्र तु नृहृद्यानां परोक्षे बहिः तस्मिन् ॥१२६॥
 बाह्यारण्यहारेषु सा प्रीतिर्निवपस्करा । परस्परं स्ववारेषु ततां येषां प्रकर्तते ॥१२७॥
 विधम्यात्प्रमयाद्वापि सा प्रीतिर्निक्यद्वया । यथा क्वातिरिति प्रोक्तं तद्योपायानुभव्यते ॥१२८॥
 कीर्तिव्याप्तियशोयोगाद् मगधमिति बोध्यते । प्रियवानेषु यः शूद्र स उदार इति स्मृतः ॥१२९॥
 एवञ्चका तु या नारी सा बोधक्या प्रकीर्तिता । प्रीतिर्भाषिक्ये स्वच्छरसात्मिगित्तु विपुम् ॥१३०॥
 तेनो रैतति वीर्यो तपो हि स्याद् बुधार्थकः । योऽप्यजातो ह्यनो बोधः स शाराक इति स्मृतः ॥१३१॥
 विष्णुबुधिर्युमानो नास्ति सः प्रकीर्तितः । कामः क्रोधश्च ई पूर्वं बोधोऽस्तयं च मध्यमे ॥१३२॥
 मन्ते मोक्षो विद्याश्च यस्य ज्ञेयः स पद्भवः । जमूले चारणः कुण्डो मृते भर्त्सरि गोष्ठकः ॥१३३॥
 नमस्तेऽन्मनसाति स जघ्नाश्री निघण्टते । जूवन्तो र्मिषी वाका इन्द्रायी च ह्यधीक्षिनी ॥१३४॥
 पश्चित्ते पथीयान् बोः खेच्छपलीं वरामुसन् । यः पश्चिमश्च खेच्छोऽपि पश्चितः स जघ्नते ॥१३५॥
 पुष्यं क्रोधं चर्म्यकीद्वं जन्मं तथा । नुजवं च समुद्दिष्टं तद्भेषा वस्त्रवापियु ॥१३६॥
 विम्बारक्तवरा या स्त्री विम्बोष्ठी तां विनिर्दिशेत् । या स्यात् संखीडनपरा लक्ष्मो तां विनिर्दिशेत् ॥१३७॥
 दृग्दर्शकाश्चप्रतीकायां नुमी मस्यास्तान् कृषीः । सर्वकर्मविधित्ताङ्गी सा मधेइरर्षाङ्गिनी ॥१३८॥
 कावप्यपवता या नारी लक्ष्मि तां विनिर्दिशेत् । या मत्ता मत्तजग्योतिः सा ज्ञेया मत्तकास्तिनी ॥१३९॥
 मूरिश्च मूरिमुद्दिष्टं जलं च इति स्मृतम् । मूरि यथो दवशीहृ तस्माद् मूरियथो हि स ॥१४०॥
 क्षुब्धाश्चिद्विस्तमुषो लोहितश्रीच एव च । भित्तर्हाहाश्चत्कूपाश्चक्षान् रावणः स्मृतः ॥१४१॥
 रोचना या भक्षेभारी नाक्षिनी तां विनिर्दिशेत् । खड्गोचमत्तार्ण विद्याद्बला परिमन्त्रम् ॥१४२॥
 ताम्यामुषेता बलिता म्यप्रोचपरिचक्षता । तदुष्ये चाक्षिणी यस्यः सा स्त्री राजीवलोचना ॥१४३॥
 बर्षप्रमाद्यनिर्धोऽच्छिन्नसंस्तरिचिन्तः । राजीवमन्थे दंतमित्ति स्नायवर्षे सितासितम् ॥१४४॥
 किञ्चिदुत्तरतद्योपास्तीता राजीवलोचना । बलिमिपिर्दिक्षिमिमुक्ता सङ्कच्छी उषाहृता ॥१४५॥
 चरत्कराकारं त्यन्वापदिवाधतः । बस्त्रे ति तन्त्रेयं तस्येवार्धं ॥१४६॥
 तं मर्मसंबुक्तं तत्तथाजिनमुच्यते । इहने पारथे तादे बाहने धर्मसंपुता ॥१४७॥
 रज्ज्वं कीदने सङ्गे भाषां नाम प्रवर्तते । मूढतायां लक्षिणायां तत्तावत्संबुजाक्षिणि ॥१४८॥
 विपमन्त्रवरा एते ज्ञेयार्थं तैः शिसंस्थिताः । कोटरस्था इति ज्ञेयाः सप्यकीद्वशाद्व ॥१४९॥
 यत्तात्रपत्न्यो पत्यु बुजावाभधिरोग्म । ॥१५०॥
 धीकुमाय किञ्चलं क्रोमत्तवं च तत्तस्मृतम् । अतार्ता च क्षुद्भिस्तं मन्वं तद्विद्विद्वितम् ॥१५१॥

कुम्भो बाहु प्रस्वः समं गन्ध इति विधीयते । विविधं धूम्यमित्युक्तं विविधं गृहमेव च ॥१५२॥
 वस्त्रं वस्त्रं च वानं च वर्तनीयार्थवाचकः । तर्वावर्तवाप्त्युत्तरार्थं वागीर्णं वीतमुच्यते ॥१५३॥
 नीहारं वीतमित्युक्तं प्रबोधान्तो निहोवकः ॥

इति महाकविधीबलम्बयकृते निबन्धुसमये शब्दसंकीर्णे अनेकार्थप्रकरणे त्रितीयपरिच्छेदे ॥२॥

एकाक्षरी-कोषः

विश्वानिबान्धोऽपि प्रकिलोत्थय प्रमाप्यते । अमरेषु कवीन्द्रैककारनाममाक्षिका ॥१॥
 अः कृष्णः जाः स्वर्गमूर्तिः काम ई श्रीवरीस्वरः ॥ २ ॥ रत्नं च्च च्च अयी देवबालवमातरी ॥२॥
 सूर्यस्तुतु वारण्डी भवेरेकिन्तुरः शिवः । मोर्षेवा मोरनेतः स्यादं वद्यपरमः शिवः ॥३॥
 ओ बह्वात्तलम्बकाधार्थं कः स्याद्वायुपमानिवु । अं दीर्घं गुगुले कुस्तु भूमी शब्दे च किं पुनः ॥४॥
 स्यात्संज्ञेपतिशब्दोः प्रश्ने वितर्कं च क्षमिन्निवे । स्वर्णं ज्योतिः सुखे धूम्यं सुखे सौविदि ओ रवी ॥५॥
 गस्तु पातरि मंत्रार्थं वा वीती ओ विनायके । स्वर्णं विशि पत्नी वस्त्रे भूमाविष्ठी जले पिरि ॥६॥
 वस्तु सुवटीतो वा किञ्चिप्या च धूर्धनी । इं मन्त्रने इो भुव पेजिन वाः कन्त्रवीरयो ॥७॥
 च धूर्धे कचण्णे अं तु निर्मले वस्तु जेतारि । विजने तेवति वाधि विज्ञाध्यां वि जवेऽपि च ॥८॥
 ओ लघुं रवे वायी ओ गान्धे धर्धरम्बनी । इं वृषिध्यां करते च ठी प्बभो ठी महेश्वरे ॥९॥
 सूर्ये गृह्णन्वकी अंजनंवेले अं सिते प्बनी । हो भवे निरुंने शब्दे इक्ष्वायां वस्तु निरुचये ॥१॥
 आने तास्तास्वरे ओडुपु ज्योस्ता पुनर्बवा । ओ वीमाथे म्हीथे इं पत्न्यां वा वस्तुबालयोः ॥१२॥
 वन्धे च वा गृह्णे केऽत्रे वातरि वीर्मती । भूर्धरार्थपक्षितानु मो नरे वन्धुगुडयोः ॥१३॥
 त्तिस्तु जेतारि नुः स्तुत्यां नी सूर्ये वस्तु पातरि । पावने वक्त्याने च ओ अंघ्राजल्लेगयो ॥१४॥
 वाः कांठी भूर्धुवः स्वाने मोर्धये नः शिबे विधी । अंघ्रे शिरसि वा माने श्रीमावीर्वाः श्चेऽभ्यवम् ॥१५॥
 नुः पुः शिर्बं वने वस्तु मातरिवचनि अं यधः । वास्तु वातरि अर्धार्थे माने लम्ब्यां च रो वृती ॥१६॥
 तीक्ष्णे वेरवानरे वामे राः स्वर्णं वज्रने प्बनी । री अने धर्धये सूर्ये ल इडे वज्रनेपि च ॥१७॥
 अं तीक्ष्णे लीः पुनः लेने ओ जये ओ महेश्वरे । चः वरिचमविसास्वामी च इधार्थे स्मरेऽभ्यवम् ॥१८॥
 अं सुने प्रा नु ज्ञोनायां श्री ज्ञाने नु निघात्तरे । चः शिबे पुनर्धर्मे विधीषे वः परेऽभ्ये ॥१९॥
 वा लम्ब्यां हो निपते च हुस्ते वाधि धूमिनि । अं जेवरवटीत्वुक्ता माला प्राकट्टरिसम्भता ॥२०॥

इति एकाक्षरी नाममाळा समाप्ता ॥३॥

धनञ्जय-नाममालागतशब्दानु क्रमणिका

शब्द	पृष्ठा अ	श्लोक	शब्द	पृष्ठ	श्लोक	शब्द	पृष्ठ	श्लोक
बध्नु	२३	४५	अत्यर्थ	८३	१७३	अन्तक	७१	१४५
बध्नुत	५९	११७	वदन्न	९	१९१	अन्तरिक्ष	२८	५३
बध्नु	५	११	अधितिद्युत	३	५६	अन्वय	६३	१२४
बह्नु	६६	१३	अध्भूत	८४	१७४	अन्वयकास्मप	५८	११५
बह्नुप	५	११	अग्नि	४	८	अन्वयवाप्ति	३	४
बह्नुपार	१२	२५	अग्रम	{ ७३ ८१	{ १५४ १५८	अन्वकार	७२	१४८
बध	{ ६१ ६५	{ १२२ १३	अग्रर	५	१	अन्वय	६३	१२४
बधि	४९	९९	अधिप	५	१	अन्वयाय	"	
बधीहिणी	४३	८६	अधीसाज	३७	७५	अन्वह	७९	१८९
बधिस	८८	१८७	अधीमन्	७८	१६२	अन्वित	७७	१६१
बध	५	११	अधन्तर	६९	१४१	अन्वीत	"	
बधिन	३३	६४	अधन्तारमन्	३६	७३	अह्नाय	७६	१५७
बधिसूनु	३४	६६	अधन्वज	३९	७७	अप	७	१५
बधन्न	{ २१ ५७	{ ४३ ११४	अधभाट	८	१८	अपचन	१९	३८
बधिम	७५	१५६	अधक	३३	६५	अपरय	१९	३९
बध	६६	१३	अधारत	८९	१८९	अपाङ्ग	४९	९९
बध्नु	८	१६५	अधाकन्व	६७	१३५	अपारवार	१३	२५
बध्नुता	१९	३८	अधिमिय	}	८	अप्राप्त	८	१६६
बध्नुता	१४	३	अधिमेष				अप्सरानाथ	३
अध्नुता	६	११९	अधिस	३२	६२	अवका	१५	३१
अध्नीकृत	९१	१९७	अधीक	४३	८६	अव्य	२७	५१
अधिप्र	५१	१३	अधुक्त्वा	५४	११	अधिष	१२	२५
अधिप्रप	५	११	अधकोभ			अधप	९१	२
अधक	४	८	अधुग	१४	२९	अधिमोम	८४	१७४
अध	३६	७२	अधुषर			अधिराम	८५	१७५
अधर्म	९१	१९७	अधुज	२१	४२	अधिराप	५५	१११
अधस	८९	१८९	अधुजा	२१	४३	अधिसाप	७७	१६
अधसतरिपु	७१	१४६	अधुजीविन्	१४	२९	अधिसापुक	८४	१७५
अध्जनासमज	३३	६३	अधुष्टम्	८४	१७५	अधिसारिका	१७	३५
अधनी	४	७९	अधेकप	४५	८८	अधीक्य	८८	१८५
अधनी	६	१३	अधेहम्	६२	११२	अध्मर्ष	६९	१४१
अधपत्	८३	१७३	अधेतरह	५	११	अध्म्यात	{ ६९ ८६	{ १४१ १८५
			अधन	५	९	अध	{ ८ २८	{ १८ ५३
			अधत्करज	४१	८१	अधर	३	५६

शब्द	पृष्ठ	श्लोक	शब्द	पृष्ठ	श्लोक	शब्द	पृष्ठ	श्लोक
अमल	५४	१ ९	अमरज	२१	४२	आर्यन्तिक	७७	१६१
अमल	८४	१७३	अमलज	९७	१८१	आरिष	७४	१५५
अमा	७७	१५९	अमलज	६६	१३३	आगत	४९	९८
अमिष	२२	४४	अमलज	८२	१७१	आगत्य	९	१९१
अमृत	६२	१२२	अमलज	८६	१८२	आगत्य	५४	१ ९
अमृतोत्सव	१५	२५	अमलज	८५	१७९	आपना	१२	२४
अम्बर	{ २८ ५९	{ ५३ ११७	अमलज	६९	१४२	आमरण	६	११९
अम्बु	७	१५	अमलज	७५	१ ५	आद्य	५७	११४
अम्बुजालन	६८	१३७	अमलज	९८	५२	आम्नाय	६३	१२४
अम्बुधि	८	१६	अमलज	४६	९	आत्म	४२	८३
अम्बुध	७	१५	अमलज	{ ४६ ४७	{ ९ ९३	आर्षा	१७	३४
अमघ	८२	१७२	अमलज	४३	८५	आत्मन्मनुष्य	६७	१३५
अमघ	६	१३	अमलज	७२	१४८	आत्म	६६	१३३
अमघानीचर	७	१४	अमलज	१८	३७	आत्म	७७	१६
अमघ	८३	१७२	अमलज	१८	३७	आत्मी	२	४१
अमघिन्	११	२१	अमलज	८९	१८८	आत्मिक	१३	२७
अमघि	२२	४४	अमलज	९१	१९६	आवास	६६	१३३
अमघ	२२	४४	अमलज	४२	८३	आवृत्ति	९	१९४
अमघ	७२	१५	अमलज	८१	१६८	आवृत्त	५१	११
अमघ	२६	४९	अमलज	२६	५	आवा	३२	६१
अमघ	२३	४५	अमलज	५४	११	आवृ	८३	१७२
अमघ	{ ४७ ७	{ ९३ १४३	अमलज	६४	१२८	आवृत्तधि	३३	६४
अमघ	७१	१४७	अमलज	२२	४४	आत्मन्	८४	१७४
अमघ	१५	२६	अमलज	८४	१७४	आत्मन्	{ ५९ ६७	{ ११३ १३५
अमघ	७	१५	आकाशिकी	९	१९	आत्मन्	५६	११३
अमघ	४७	९५	आकाश	२८	५३	आत्मन्	६९	१४१
अमघ	२	४	आकाश	४१	८१	आत्मन्	६१	१२१
अमघ	२६	४९	आकाश	३	५७	आत्मन्	५६	११२
अमघ	२७	५२	आकाश	३	४	आत्मन्	६६	१३३
अमघ	५८	११६	आकाश	५५	१११	आत्मन्	४९	९८
अमघ	४८	९६	आकाश	४४	८७	आत्मन्	४१	८१
अमघ	४२	८३	आकाश	७४	१५४	आत्मन्	४	
अमघ	७२	१४८	आकाश	६१	१२९	आत्मन्	{ ५ २६	{ १ ५
अमघ	८८	१८६	आकाश	७६	१५८	आत्मन्	३८	७६
अमघ	७१	१४७	आकाश	९	१९४	आत्मन्	११	२१ २२
अमघ	७३	१५९	आकाश	१९	३९	आत्मन्	२३	४६
अमघ	१३	२६	आकाश	३६	७३	आत्मन्	३५	६९
अमघ	३	५	आकाश					

शब्द	पृष्ठ	श्लोक	शब्द	पृष्ठ	श्लोक	शब्द	पृष्ठ	श्लोक
इन्द्र	{ ५ ३	१ ५०	अधोग	८४	१०४	ऐक्याडु	५०	११४
इन्द्रविज्	६५	१२८	उद्ग्रह	२	८	ओ		
इन्द्रिय	६५	१२९	उद्ग्राह	८९	१८९	आप	{ ६३ ६९	१२ १४
इम	४५	८८	उभय	७६	१५८	आच्छ	५	११
इरा	६१	१२	उभयकण्ठ	१३	२६	आपपीत्वर	२४	४०
इला	३	६	उपगमना	४	९	क		
इपु	३९	७८	उपमा	६०	१३६	{ ७ ३६		१५ ७१
इष्ट	१८	३७	उपमान	६८	१३७	५२		१४
इष्टा	१६	३३	उपल	८२	१०	कङ्काल	३२	६१
ईरित	५२	१०४	उपाम	८४	१०५	कमा	६	१३
ईसान	५	१	उपेन्द्र	३०	७४	कला	६०	१३६
ईशिव्	५	१	उपम	२	२	कम	९	१९
ईश्वर	५	१	उपापति	३५	७	कम्पुब	९	१९४
ईहामुग	६५	१२७	उपय	६४	१२८	कट्याक्ष	४९	९०
उ			उपरीष्टन	१	१९६	कटि (कमी)	५१	१३
उप	{ ३५ ८०	७ १८४	उपय	५१	१११	कङ्कित		
उप्य	७६	१५८	उर्ध्व	३	६	कटीमुन	{ ६	१२
उप्यबाध	"	१५८	उर्ध्व	३	६	कटिग	७५	१५५
उप्यम	१५८	१५८	उर्ध्व	३	६	कम	३९	७८
उप्यवृत्त	१५८	१५८	उष्का	९	१९	कच्छ	५	१
उप्य	२५	४८	उरुवाग	८०	१८४	कच्छीरव	४५	९
उप्य	८०	१८४	उरु	४६	११	कच्छ	४४	८७
उप्यकृष्णा	१३	२७	उप्यबाध	९	१९४	कच्छक	६९	१३९
उप्यमान	५२	१४	उय	२३	८५	कच्छ	८	१६६
उप्यपमापति	४८	९६	ऊ			कच्छ	४७	९३
उप्यनमय	२	४	ऊरीकृत	९१	१९६	कमीवच्	२१	४३
उप्यक	११	२२	ऊर्ध्व	२३	४६	कम्प	४२	८३
उप्येला	६८	१३८	ऊर्ध्वम्बिन	९	१९३	कम्प	३५	७
उप्यस	५४	१९	ऊर्ध्व	२५	४८	कम्पामिन्	३५	७
उप्यग्राह	८४	१७४	ऊर्ध्व	८०	१८२	कम्पि	६	१२
उप्यवन्	१३	२७	ऊर्ध्व	२	३	कम्पिपत्र	७	१४३
उप्यर	५१	१२	ए			कम्प	९१	१९५
उप्यविज्	६२	१२३	एकपत्नी	१७	३४	कम्प	८५	१७७
उप्यम	४	८	एकविज्जक	४८	९५	कम्पनीय	८५	"
उप्यीष	८१	१६८	एकानारिक	८१	१९९	कम्प	१	२
उप्यव	८१	१६८	एगम	६६	१३१	कम्प	८५	१७७
उप्यर	८१	१६८	ए			कम्प	{ २३ ५	४५ ११
उप्यम	८४	१७४	ऐक्य	४२	८३	कम्प	१५	१२९
			ऐरावत्यापि	३	५९			

शब्द	पृष्ठ	श्लोक	शब्द	पृष्ठ	श्लोक	शब्द	पृष्ठ	श्लोक
करम	४६	९१	कामिन्	१८	३७	कुमुद	११	२२
करवाहक	४३	८५	कामिनी	१४	३	कुमुदप्रिय	२४	४७
कण्ठसूक्ति	५	११	कामुक	१८	३७	कुमुदविप्रिय	२७	५१
करिन्	४५	८८	कामुकी	{ १५ १७	३१ २६	कुम्भिन्	४५	८८
करज	५४	११	काय	१९	३८	कुम्भिनी	३	६
करेण्	४५	८९	कार्तस्वर	४७	९४	कुम्भम्	८४	१४५
करैय	७५	१५४	कार्तिकेय	३४	९७	कुण्ड	६३	१२४
कर्ण	४९	९८	कार्मुक	४	७९	कुण्डटा	१७	३५
कर्मसूक्तिन्	७	१४४	कार्मुकिन्	७	१४३	कुख्या	१६	३२
कर्मम	१	२	काक	{ ७१ ७२	१४५ १४८	कुवलय	११	२२
कपूर	५९	११८	काक	{ ७१ ७२	१४५ १४८	कुष	७	१५
कच्छु	७३	१५२	काकघेय	३२	१२३	कुषकिन्	७९	१६४
ककन	१६	३२	काली	७३	१५	कुसुम	४	८
ककपीठ	४७	९४	कावय	५८	११५	कुपार	१२	२५
ककम	५२	१५	काहल	७५	१५५	कुपसि	९	१९४
ककम	८१	१६७	काष्ठा	३२	६१	कुष्क	८८	१८९
ककह	{ ४४ ८९	८७ १८८	काष्ठाशक	३२	६१	कुशाण	{ ३ ७१	४ १४५
ककापिन्	६३	१२६	काष्ठाश्वर	३२	६१	कुशिल्	७९	१६४
ककामुष	२४	४७	किसकली	७४	१५४	कुशल	८८	१८७
ककिक	६६	१३१	किका	१४	२९	कुषल	८४	१७५
ककेशर	१९	३९	किवान	७६	१५७	कुषा	५४	११
कक्यापी	७३	१५	किजम्ब	{ ७३ ७३	१५१ १५२	कुषाम	४३	८५
कक्याश	९१	१९८	किताव	७९	१६	कुष्य	८२	१७१
ककसोक	१३	२७	किरण	२३	४५	कुष्याणु	३३	६५
ककष	९	१९४	किरण	२३	४५	कुम्भ	{ ३९ ७२	७४ १४८
ककण	८८	१८६	किरण	७	१४	केकर	४९	९९
ककनूरी	५९	११७	किरीटिग	७	१४४	केलिन्	६३	१२५
ककवर	४७	९५	किम्बिष	६६	१३१	केनु	४३	८४
ककचल	४७	९३	कीचकसन	७१	१४५	केसविन्	५८	११६
काकधी	६	११९	कीर्ति	७४	१५३	केषा	९	१९५
काकह	३९	७८	कीनाय	८४	१७५	केषामलय	९१	९
काकम्बरी	६१	१२	कृ	३	६	केषविन्	४५	९
कानन	६	१३	कुक्कुर	४६	९२	केषण	३७	७४
कानीनजलक	२७	५१	कुम्भि	५१	१२	केषामाय	७	१४२
कान्त	{ १८ ८५	३७ १७७	कुम्भ	१९	११७	केसिन्	३६	७५
कान्ता	१६	३३	कुम्भ	५१	१२	केरव	११	९९
काश्वार	६	१३	कुम्भ	७६	१५८	कोक	६४	१२७
काश्विनय	२४	४७	कुमार	३४	६७	कोकनर	१	२१
काम	३९	७७						

पद	पृष्ठ	श्लोक	सम्पद	पृष्ठ	श्लोक	सम्पद	पृष्ठ	श्लोक
वादि	४००	७९	वाग	३९	७८	गुरुपान	६८	१३७
कोण्डक	६	७९	वाङ्म	४३	८५	मुम्बिका	४७	९४
कोप	५६	१९	वाङ्म	८९	१८७	मुग्	३४	६७
कामक	७५	१५५	वाङ्म	५३	१६	मुडक	८१	१६९
कोविर	७९	१६४	वाङ्म	१	२१	मुष्ण	८४	१५५
कोप	८९	१८८	वाङ्म	२२	४४	गु	{ १६ ६६	{ ३२ १३२
कोण्डक	८३	८५	वाङ्म	१७	३५	गङ्ग	६६	१३२
कोनुक	८४	१७४	वाङ्म	{ ७६ ८४	{ १५९ १७३	गङ्गिणी	१६	३२
कोन्धेय	७१	१४६	वाङ्म	६७	१३४	गा	{ ३ २३ ७९	{ ६ ४५ १६३
कोमुदी	२४	४७	वाङ्म	९८	५४	गोत्र	८	१६५
कोन्धेय	७१	१४६	वाङ्म	५४	१९	गोत्रगुरु	३	५८
कोन्धेयः	६६	९२	वाङ्म	६७	१३४	गापा	१३	२८
कोविट	३	६	वाङ्म	७४	१५३	गापु	६७	१२४
कोमुय	७३	१५१	वाङ्म	२८	५३	गामकक	७८	१६२
कनु	५६	११२	वाङ्म	{ ३६ ७८	{ ७१ १६२	कोविनी	३८	७६
कङ्क	५३	१७	वाङ्म	४५	८८	गामाद्गुम्	६	१२
काट	४६	९१	वाङ्म	१७	३६	काविग	३७	७६
कोष	५४	१९	वाङ्म	३२	६२	गोत्रम	५७	११४
कोष	५३	१७	वाङ्म	२३	४५	गौर	७२	१४
कोषभेदिन	३४	६७	वाङ्म	३५	१२८	गीरी	७३	१५
क्षणे	७६	१५७	वाङ्म	६५	१२८	गण	३	४
क्षयवा	२५	४८	वाङ्म	६५	१२८	प्रापिप	२६	४०
क्षयवधि	९	१९	वाङ्म	५२	१५	पामगात्रु	४६	९२
क्षयत्र	८९	१८८	वाङ्म	८९	१९	पीवा	५	१
क्षयाकर	२६	४८	वाङ्म	८१	१६८	गु	गु	१८
क्षमा	३	५	वाङ्म	५	१	वन	{ ८ ८९	{ १८ १७
क्षाम	८२	१७१	वाङ्म	४३	८२	वनमार	५९	११८
क्षिति	३	६	वाङ्म	{ ६ ८८	{ १३ १८३	वनावन	८	१८
क्षिपा	२५	४८	वाङ्म	८९	१९	बुद्धि	४६	९१
क्षिप्र	८३	१७२	वाङ्म	३	५	वीर	८७	१८४
क्षीर	६२	१२२	वाङ्म	७	१४३	कोप	७८	१६२
क्षीर	८२	१७४	वाङ्म	५२	१४	प्राण	५	१२
क्षुब्ध	७९	१६४	वाङ्म	४	८	वक्र	३८	७६
क्षुब्ध	३९	७८	वाङ्म	३५	६९	वक्रवाट	२७	५१
क्षम	९१	१९८	वाङ्म	३	५८	वक्रक	६३	१२५
क्षोभी	३	६	वाङ्म	{ ४१ ६	{ ८२ ११९	वक्रडी	१६	३३
क्षमा	३	६	वाङ्म	८८	११९	वक्रु	७९	१६५
क्ष	{ २८ १५५	{ ५३ १२९	क्षुब्धनिवा	८८	११९			
			गुणाधिक	७४	१५३			
			गुरु	६२	१२३			

शब्द	पृष्ठ	श्लोक	शब्द	पृष्ठ	श्लोक	शब्द	पृष्ठ	श्लोक
शतुमस्त	३६	७२	शगनी	१८	३८	शट	४	९
शतुष्पात्	७९	१६३	शनपद	४८	९७	शट्ट	१७	२६
शत्रु	२४	४७	शनान्त	४८		शटी	४	९
शत्रुमस्	२४		शनि	१६	३२	शटोच्छ्वास	१३	२७
शमु	४३	८६	शनोदाहरण	८४	१५३	शक्ति	९	१८
शमूर	४६	९	शङ्क	५१	१३	शक्तिवन्धा	३	५६
शर	८६	१८२	शक	७	१५	शक्ति	६९	१४
शरप	५१	१३	शक्य	५३	१५	शमम	२	४०
शरम्भु	३२	६३	शक्य	८५	१७२	शमु	१	३८
शरुन	५१	१३	शक्य	३२	६३	शमुभ	९	१९४
शका	१५	३१	शक्यक	२९	५	शमुवरी	१५	३१
शादुङ्कर	७९	१६५	शात	८१	१६७	शमुतपान्	३३	६४
शाप	४	७९	शातक्य	४७	९३	शापन	२६	४९
शाप	८६	१८२	शातशेखर	३३	६४	शापीम	४७	९४
शाप	८५	१७८	शानु	५१	१३	शापिन्	२	३
शिकुण	९	१९५	शापा	१६	३२	शाप	७२	१४८
शिन	४१	८१	शाह्वी	३६	७१	शापस	७२	
शिन	८४	१७४	शिन्या	७	१४२	शापीरि	२६	५
शिह	४३	८४	शिन	५७	११२	शर	८३	१७२
शिराय	४४	१८२	शिव्यु	७	१४३	शरग	१३	२७
शीनकृता	५३	१६	शिह्वप	४६	९२	शरिणीशी	१२	२४
शीर	५९	११७	शीमूढ	८	१८	शरिपि	२६	४९
शुद्धापाश	१	१९९	शीर्ष	७६	१५६	शरिबारि	४६	८५
शेठम्	४१	८१	शीर्ष	८२	१७१	शरिस्विन्	९	१९३
शर	५९	११७	शीमन	७	१५	शर	५	११
शोच	८४	१७३	शीवा	४१	८२	शरकर	८१	१६९
शौर	८१	१७९	श्यापस	४२	८२	शापस	९	३
शु	७		श्यापस	५७	११४	शामरस	१	२
शुभ	९	१९४	श्वेठ	२१	४३	शाप	२५	४८
शुभान	१८	१३८	श्वोति	२३	४६	शास्य	३२	१२४
शुभ्र	८९	१९	श्वकन	३३	६५	शाश्व	३५	१२८
शुक्र	{ १८ ८९	{ १३८ १८८	शक्ति	८३	१७२	शिम	{ २६ ८७	{ ४९ १८४
शुभ	५७	११३	शप	८	१७	शिमि	८	१७
शुभती	३	६	शपकेपु	४३	८४	शिमिर	{ ७२ ८७	{ १४८ १८४
शुभन	५१	१३	शपध्वज	४३		शिमिरादि	२६	५
शुभर	{ ५१ ७६	{ १२ १५६	शरु इत	५३	११	शीर	१३	२६
शुभ	८	१६६	शरु	८		शीर्ष	५८	११५
शुभक	१८	३८	शरु	१२	१२३	शीर्षकर	५८	११६
			शरु			शीर्षकम्	५८	

शब्द	पृष्ठ	श्लोक	शब्द	पृष्ठ	श्लोक	शब्द	पृष्ठ	श्लोक
तीर्थ कर	५८	११६	बधमीस्व	५४	१८	बुद्धि	४९	९९
तीघ	८७	१८४	बधा	६२	१२४	बेव	३	५६
तुक	१८	३९	बन्ध	७	१४	बेवानाप्रिय	८	१६६
तुङ्ग	७६	१५८	बहन	३३	६५	बेह	१९	३८
तुरक	२७	५२	बामोदर	३७	७४	बेहिका	७९	१६३
तुरंगम	२७		वारक	२	४	बैद्यारि	७	१४४
तुण्डमाह	३	३	बाध	१६	३२	बास्	५	११
तुला	६७	१३६	वारिका	१७	३६	बोप	{ २५ ५०	{ ५ ११
तुलाकोटि	५३	१७	बाबन	८७	१८४	बुधि	२३	४५
तुल्य	३७	१३६	बाघी	१७	३६	बुमानि	२६	४९
तुपार	८५	१७९	बिक्-बिप्	३२	६३	बुनु नी	३६	७१
तुहित	८५	१७९	बिक्पाक	३२	६१	बुस	{ २८ ३९	{ ५३ ७१
तूर्ण	१३	१७२	बिगम्बर	३२	८१	बूत	६१	१२२
तेजस्	२३	४५	बिगाज	३२	६१	बो	{ २८ ३	{ ५३ ५६
तेजस्मिन्	९	१९३	बिन	२६	५	ब्रह्मिण	४७	९५
तेज	१९	३९	बिक्-बिक्	{ २८ ३	{ ५३ ५६	ब्रह्म	४७	"
तेमर	३९	७८	बिजल	२६	५	ब्रह्म	७६	१५७
तेम	७	१५	बिवा	२६	५	बुत	८३	१७२
तेप	५४	१०९	बिष्यबाक्पति	५८	११६	ब्रम	५	११
तिकट्टन्	४	८	बीक्षित	३	४	बुद्धि	३६	७१
त्रिबल	३	५३	बीक्षित	२३	४५	ब्रह्म	२	७
त्रिनेत्र	३५	३९	बीज	८४	१७५	ब्रह्म	२	
त्रिपञ्चा	३६	७१	बीप्ति	२३	४६	ब्रिचय	२	
त्रिपुण्ड्रि	३५	६९	बीर्ष	८७	१८३	ब्रिप	४५	८९
त्रिमार्गमा	७८	१६२	ब्रुण्य	१२	१२०	ब्रिरव	४५	८८
त्र्यम्बक	३५	३८	बुरित	३६	१३१	ब्रिरप	{ १२ ४२	{ २४ ८२
	६		बुर्ण	९	१३	ब्रिभ	२३	४४
बद्धिन्	४६	९१	बुर्ण	२२	४४	ब्रिभत्	२३	४४
बलाकम्पा	३२	६१	बुष्कृन्	३९	१३१	ब्रैव	५४	१९
बल	४३	८६	बुष्ट	२९	४४	ब्रैविन्	२२	४४
बल	४	९	बुष्टिप्	२	४	ब्रैठ	२	२
बलब्राह्म	५	१	बुणी	१७	३५	बन	४७	९५
बन्धिन्	४५	८८	बुन	८२	१७१	बनजय	७	१४४
बन्धा	५४	११	बुन	७५	१५५	बनब	४८	९६
बन्धित	१८	३७	बुन	७८	१६३	बनबाय	४८	
बन्धिण	१६	३३	बुधिपु	८१	१६८	बनुप	४	७९
बन्धिन्	४	८	बुध	४९	९९	बनुप	४	७९
बर्धनीय	८५	१७८	बुधत्	८२	१७	बनुप	४	७९
बधनच्छत्र	५	१	बुष्ट	५४	१८	बनुप	५	१

शब्द	पृष्ठ	श्लोक	शब्द	पृष्ठ	श्लोक	शब्द	पृष्ठ	श्लोक
शम्भिल्ल	९१	११५	नगोद्	२१	४३	निरय	७७	१५९
नरणी	३	६	नाम्न	२	४	निरस	७४	१५४
नरा	३	५	नमस्	२८	५३	निपुम	७	१६४
नरिणी	३	६	नमस्कन्	३२	६३	निबोध	७३	१५२
नम	४	७९	नाम्नाद्	८	१८	निम	६८	१३८
नर्मचक्रभू	५८	११६	नमुषिष्यन्	३	५८	निम्नया	१२	२४
नर्मोत्तम	७१	१४६	नयन	४९	९९	निमन्त्रित	८५	१७६
नम	१४	२८	नर	१३	२८	नियामित	८५	१७६
नमक	७१	१४७	नरक	८९	१९	निवीग	७४	१५४
नातु	८२	१७	नक्तिन	१	२	निर्घात	९	१९
नाशी	३	५	नख	७५	१५६	निष्पु ह	१७	१३५
नानुष्क	७	१४	नख		"	निष्कम	६६	१३३
नामन्	{ २३ ६६	{ ४६ १३३	नाक	३	५६	निष्कसन	५९	११७
नापना	५५	११	नाग	{ ४५ ६४	{ ८९ १२८	निवृत्त	६६	१३२
निष्कम्य	६६	१३२	नाकारिक	८	१६५	निवेद्यन	८९	१८९
नी	५५	११	नागारि	४५	९	निष्ठा	२५	४८
नीनी	१२	२४	नाथ	५	१	निष्ठाचर	८१	१६९
नीर्ष	२७	५९	नाथहरि	७८	१६३	निष्ठात	६६	१३२
नीम	७२	१४८	नाथात्म्य	५८	११५	निष्ठाव	७	१४
नीर्षटि	३५	६८	नाभिज	५७	११४	निष्ठादिन्	४५	८९
नीत	७९	१६५	नाम	८	१६५	निष्ठात	७९	१६४
नीति	७३	१५१	नाम	८	१६५	निष्ठाव	८८	१८५
नीमिषुटिम	६७	१३४	नामर	३७	७३	निष्ठात	८७	१८३
नीन	५२	१५	नाराच	३९	७८	निष्ठाव	४३	८५
नीर्म्यं	८३	१७१	नाराचण	३७	७४	नीच	{ ७६ ८१	{ १५८ १६८
नीरजा	४३	८४	नाराचण	३७	७४	नीचैस्	७६	१५८
नीरिणी	४३	८६	नारी	१४	३	नीर	७	१५
नीरानारि	२६	५	नाठा	५	१२	नीम	७२	१४८
नी	७६	१५७	निष्क	६९	१४१	नीमकष्ट	६२	१२६
नीनम	२५	४८	निष्क	६९	१३९	नीमपिच्छरी	७३	१५
नीकच	७५	११	निष्ठाव	{ ६६ ६९	{ १३३ १४	नीमकोशिन	३५	६९
नीग	५	११	निष्ठाव	६	१३२	नीमकमल	७	१४१
नीदरी	६८	७	निष्ठाव	६६	१८२	नीमाम्बजम्भन्	११	२२
नीर	१२	२४	निष्ठाव	६९	१४	नीगार	८५	१७९
नीरी	१२	२४	निष्ठाव	८८	१८५	नीनन	७५	१५१
नीरिणी-नीरिणी	७१	७१	निष्ठाव	{ ४ ५१	{ ९ १३	नीपूर	५३	१७
नीरिणी	७	१६४	निष्ठाव	१५	३१	नी	१३	२८
			निष्ठाव	८३	१७३	नी	{ ४ १४	{ ७ २८

शब्द	पृष्ठ	श्लोक	शब्द	पृष्ठ	श्लोक	शब्द	पृष्ठ	श्लोक
नृपकृत	१६	११२	परासु	५४	१०८	पाणित्र	८५	१०८
नर	८	१६६	परिला	६७	१३४	पापनीत	८५	१०८
नम	४९	९९	परिचित	५४	१८	पापाम	८७	१००
नैष्ट	६	१६१	परिमयत	८९	१८९	पितामह	३६	७२
नीपायिक	५५	१११	परिचि	६७	१३४	पितृ	१८	३८
न्यत्र	७६	१५८	परिचार	{ ८६ ८६	{ १८१ १८८	पिनङ्ग	८५	१०६
	५		परिकुड	५	१	पिनाकिन	३५	९८
पक्षिन्	२९	५८	परिपठ	१	२	पिपित	२	५५
पशुक	{ १ ७३	{ २ १५२	पश्य	७५	१५५	पिपुन	८१	१६८
पक्षि	६१	१४	पर्वन्व	८	१८	पिपिगी	७३	१५
पट्ट	७९	१६४	पर्वत	४	८	पीठ	५९	११३
पट्टन	८८	९७	पक	२९	५५	पीत	७०	१४९
पक्षिण	५५	१११	पक्क	७७	१३	पुङ्गवनी	१७	३५
पक्ष्यस्त्री	१७	३६	पवन	३२	६२	पुटभेदन	४८	९७
पत्रह	{ २६ २६	{ ४६ ५४	पवनपुत्र	३३	६३	पृथ्व	६५	१२९
पत्रविभ	२९	५४	पवमान	३२	६२	पञ्चरीक	१	२१
पत्राका	४३	८४	पवममल	३३	६४	पुत्र	१९	३९
पत्रि	५	१	पधु	७	१६३	पुत्रम्	१७	३९
पत्रिबन्नी	१७	३४	पाणु	७३	१५१	पुत्रम्	१३	२८
पत्रिज्जा	१७	३४	पाकघनु	३	५८	पुत्र	४८	९७
पत्रज	४८	९७	पाकक	७७	१८९	पत्र	४८	"
पत्रि	१४	२९	पाटीन	८	१७	पुम्प	३०	५८
पत्नी	१६	३२	पाणि	५	११	पुम्प्री-पुम्पि	१६	३१
पत्रिन	२६	५४	पाण्डु	७३	१४७	पत्राम	७६	१५९
पत्रिन्	७८	१६१	पाण्डु	७३	१४	परी	४८	७
पत्र	{ ५१ ६६ ६८	{ १३ १३३ १३८	पाण्डु	८९	१९	पुत्र	५७	११४
पत्रग	१४	२	पाण्डु	७	१५	पुत्रप	१३	२८
पत्रागि	१४	"	पाण्डु	{ २३ ५१	{ ४५ १३	पुत्रपोगम	३७	७४
पत्र	१	२	पाण्डु	५	११	पुत्रहृत	३	६०
पत्रागम	३७	७५	पाण्डु	६६	१३१	पुरापनि	४६	९२
पत्रम	१६	१२८	पाण्डु	३६	१३१	पुत्र	६२	१२३
पत्रम्	{ ७ ६९	{ १५ १२२	पाण्डु	१३	२६	पुत्रिन्व	७	१४
पत्रोत्तर	५१	१२	पाण्डु	१७	२७	पुत्रोत्तरि	३	६
पत्राग	७३	१५१	पाण्डु	५६	११	पुत्रर	११	३१
			पाण्डु	८	१	पुत्ररिन्	४५	८९
			पाण्डु	७७	१८९	पुत्रर	{ ८१ ९	{ १०३ १४
			पाण्डु	३३	६४	पुत्रर	४	८

शब्द	पृष्ठ	श्लोक	शब्द	पृष्ठ	श्लोक	शब्द	पृष्ठ	श्लोक
पुष्पहेति	४२	८३	प्रकृति	७४	१५४	फल	४	८
पुग	१९	१३९	प्रशास्त्र	८६	१७८		४	
पुनन्	२३	४९	प्रसन्ना	६१	१२१	बद्ध	८५	१७६
पुठना	४३	८३	प्रसन्न	४	८	बन्धकी	१७	३५
पुचिरी	३	५	प्रसाधन	६	११८	बन्धु	२१	४२
पुमुपोमन्	८	१७	प्रसून	४	८	बन्धुर	८५	१७८
पुमुक्त	८७	१८३	प्रस्तर	८२	१७	बद्ध	{ ४३ ७	{ ८६ १४२
पुम्	८७		प्रस्व	४	९	बलमान्	३	५८
पुष्पी	३	५	प्रसन्ना	१६	१२१	बलाहक	८	१८
पुष्पत	६४	१२७	प्रोष्ठ	८७	१८३	बलिभूषण	३७	७५
पेयल	७५	१५५	प्रोकार	६७	१३४	बहिष्ठ	९	१९१
पेयिन	२९	५५	प्रोक्तन	७६	१५६	बहु	९	१९५
पोत	२	४	प्राचीनबहि	३	५७	बहुत	{ ८७ ९	{ १८३ १९७
पोभिन	४६	९१	प्राग्य	९	१९१	बाम (बाज)	३९	७८
पीर्य	८३	१७१	प्राज्ञ	५५	१११	बाधबाध	९	१९४
प्रकर	६९	१४	प्रामूय	९	१९१	बाधयुक्त	३७	७५
प्रकृति	८८	१८५	प्रायम्	६२	१२३	बाधी (बाधी)	५४	१७४
प्रकम्प	७९	१६४	प्रारम्भ	५२	१४	बाध	९	१९५
प्रकर	७८	१६२	प्राज्ञेय	८५	१७९	बासा	१५	३१
प्रकुर	९	१९१	प्राज्ञिक	६३	१२६	बाहु	५	११
प्रजा	१०	३९	प्रस्ताव	६७	१३५	बाहुधिरम्	५	
प्रजापति	{ ३७ ५७	{ ७४ ११४	प्रिय	{ १८ ७४	{ ३७ १५४	बिहिनो	११	२३
प्रजा	५५	११	प्रिया	१६	३३	बुध	५६	११२
प्रजापिनी	१९	३६	प्रियाम्बिका	२२	४३	बुध	२६	४९
प्रजिधि	{ ८१ ८३	{ १९९ १८२	प्रिय	१८	३७	बहुत	७३	११६
प्रतिरोधक	८१	१९९	प्रेमन्	७७	१६	भीहि	८१	१९१०
प्रगीत	५४	१८	प्रेमम्	१८	३७		म	
प्रतोली	६७	१३४	प्रयती	१६	३३	म	२५	४८
प्रत्यक्ष	७५	१५६	प्रेरित	५२	१४	मग	१३	२७
प्रमञ्जल	३२	६३	प्रेष्ठा	१६	३३	मट	{ १४ ५३	{ १९ १६
प्रभा	२३	४५	प्रेष्य	७४	१५४	मह	९१	१७८
प्रभु	५	१	प्लवाग	६	१२	मर्तु		१
प्रमधाविप	३५	६८		फ		मर्तुस्वरा	२१	४३
प्रमह	५४	१९	फलित्	३४	१२८	मर्मन्	४७	९१
प्रमहा	१६	३३	फलित्	५	११			
प्रमोह	५४	१	फलबाहित	५	११			
प्रधीव	७९	१६४	फल्यु	७५	१५५			
प्रधीर	९	१९३	फास्वन	७	१४३			

शब्द	पृष्ठ	श्लोक	शब्द	पृष्ठ	श्लोक	शब्द	पृष्ठ	श्लोक
भरणान्वय	७१	१४८	भ्रातृवाणी	२१	४३	भग्नु	५४	१९
भक्त	{ ३५ ९	७ ११२	भ्रातृभ्य	२२	४४	भक्तपुत्राभ्यम्	३५	१२९
भवन	६६	१३२	भ			भक्त	४६	९१
भक्तिक	११	१९८	भक्तध्वज	३९	७७	भक्तवत्	२८	५२
भक्त्य	११	१९८	भक्तान्	७३	१५१	भक्तुर	६३	१२६
भाष्येय	३५	१३	भक्तु	८३	१७२	भक्तुः	६३	१२५
भाषीरपी	३६	७१	भक्त्य	९१	१९१	भक्तीणि	२३	४५
भाष्य	६५	१३	भक्त्यन्	३	६	भक्तुः	{ ४ ३२	{ ८ ६२
भानु	{ २३ २६	{ ४५ ४९	भक्तीक	५३	१७	भक्त्यन्	३	५९
भामा	१५	३१	भक्त्य	४६	९२	भक्त्युक्त	३३	६३
भामिनी	१४	३	भक्त्याद्य	४९	८५	भक्त्यन्त	{ ३ ३३	{ ६० ६४
भारती	५२	१४	भक्ति	३	१३	भक्त्यन्त		
भार्या	१६	३२	भक्तिवत्	४५	८८	भक्त्यन्त		
भाष	९	११२	भक्त्याम्	६७	१३५	भक्त्यन्त	६	१२
भाषुक	११	१९८	भक्त्य	८	१६	भक्त्यन्त	१३	२८
भाम्	२३	४५	भक्त्याभ्य	६७	१३५	भक्त्यन्त	८९	१८८
भामुर	९	११३	भक्ति	६२	१२३	भक्ति	७३	१५२
भास्कर	२३	४६	भक्त्य	३९	७७	भक्तिवत्	५९	११३
भास्वर	९	११३	भक्ति	६१	१२	भक्तिमत्	७३	१५२
भिस	२	३	भक्त्य	६१	१२	भक्ति	५८	११५
भीष	१४	३	भक्त्य	६१	१२१	भक्तिम्	५३	४३
भुक्त	५	११	भक्त्य	७३	१५१	भक्तिवत्	५८	११५
भक्तमत्	६४	१२८	भक्त्याद्य	६१	१२१	भक्तिवत्	४४	८७
भुक्त	१७	११३	भक्त्यन्त	४२	८२	भक्ति	१६	३२
भू	३	५	भक्त्यन्त	३७	७५	भक्तिपी	७९	१६३
भूमि	{ ३ ३८	{ ५ ७३	भक्त्यन्त	७	१४३	भक्ति	३	५
भूमिश्च	३८	७३	भक्त्यन्त	४	८१	भक्तिश्च	३५	६८
भूमिष्	९	१११	भक्त्यन्त	९	१९३	भक्त्यन्त	१	२१
भूरि	९	१११	भक्त्यन्त	१७	३४	भक्त्यन्त	२९	५५
भुक्त	३	१११	भक्त्या	५१	११	भक्त्या	७६	१५९
भुक्त	४३	८२	भक्त्या	१३	२८	भक्त्या	४५	८९
भुक्त	१४	९	भक्त्या	१३	"	भक्त्या	३२	६३
भुक्त	१४	९९	भक्त्या	८५	१७८	भक्त्या	२२	४३
भुक्त	८३	१७३	भक्त्या	८५	१७७	भक्त्या	१८	३६
भुक्त	७६	१५७	भक्त्या	{ ८ ८७	{ १६६ १८४	भक्त्या	१३	२८
भुक्त	४२	८९	भक्त्या	३६	७१	भक्त्या	८१	१६८
			भक्त्या	६६	१३०	भक्त्या	१६	३९
			भक्त्या	३९	७७	भक्त्या	१३	२८
			भक्त्या	३९	७७	भक्त्या	६१	८१

शब्द	पृष्ठ	श्लोक	शब्द	पृष्ठ	श्लोक	शब्द	पृष्ठ	श्लोक
मार्क	७८	१६२	मैत्री	९१	१९७	रक्षस्	२९	५५
मार्गण	१	७८	मैत्रेयिक	९१	१९७	रजत	४७	९४
मार्तण्ड	२६	४९	मैरेय	६१	१२	रजनी	२५	४८
मासा	६	११९	मात्र	८८	१८९	रजस्	७३	१५१
मास्य	६		मीश्वय	३	४	रज	४४	८७
मिर्गमग	४५	८८	मीश्विक	४७	९४	रत्नाकर	१२	२५
मिथ	२	४१	मीर्षी	४१	८२	रथ्य	२७	५२
मिथयुक्त	२		य	५		रथ्र	८९	१९
मिथि	८	१८	यज्ञादि	३५	६९	रमण	१८	३७
मीन	८	१७	यदि	२	३	रमणी	१६	३३
मीमाकर	१२	२५	यन्तु	४५	८	रमणीय	८५	१७७
मुक्त	४७	९८	यम	{ २ ७१	{ २ १४५	रम्य	८५	'
मुग्ध	८	१६६	यमजनक	९०	५१	रम	८३	१७२
मुग्धा	१४	३	यनक	२	२	रभि	२६	४९
मकटा	१७	३५	यमनाशनक	२७	५१	रभिन्	२३	४६
मुद्	५४	१९	यसू	४५	८९	रसता	६	११९
मुग्धा	८१	१८६	यासू	४५	८९	रस्य	८१	१९
मुनि	१	३	यासुवान	२९	५५	रस्यु	८४	१०५
मुत्सुबन	३७	७५	यासु	४५	८९	रस्यु	८४	१०५
मुहुमुहु	८८	१८५	यास	८७	१८४	राम	७७	१६
मुक्	८	१६६	यासु	८	१७	राजन्	५	१
मुक्त		"	मुक्त	७७	१६१	राजयक्ष्मन्	७१	१४६
मुक्त		"	मुग	२	२	राजराज	४८	९६
मुक्ति	१९	३९	मुक्क	२	२	राजशुभ	५६	११२
मुक्तिन्	५२	१४	मुग्म	२	२	राजिन्	२९	५५
मुग	६४	१२७	मुग	७७	१६१	राजिन्	४६	९२
मुगतात्रिणा	५९	११७	मुद्ग	४४	८७	राजा	१५	३१
मुपाक	८६	१७९	मुदिच्छिद्र	७१	१४६	राष्ट्र	४८	९७
मुक्क	४५	९	मुदिति	१५	३१	रिपु	२२	४४
मुग	५४	१८	मुगिन्	२	३	रिषि	८४	१७८
मुल्यु	७१	१४५	मुग्धा	८५	१८५	रिषि	२३	४५
मुहु	७५	१५५	मुवा	१४	३	रिष्य	६	११९
मुग्धा	८८	१८६	मुविपु	१४	३	रिष्य	३५	९९
मेरुमा	{ ४ ६	{ ९ ११९	मुवित	६२	१२४	रिषि	{ ५९ ८९	{ ११८ १८८
मेघ	८	१८	मुवितक	६२	१२३	रिष्य	५४	१९
मेघपत्र	२८	५३	र	२		रुपाजीवा	१७	३६
मेदिनी	३	५	रक्ष्म	८३	१७२	रुप्य	४७	९४
मेधावी	५५	१११	रक्ष्म	{ ५९ ७२ ८१	{ ११८ १४९ १८८	रु	७६	१५७

शब्द	पृष्ठ	श्लोक	शब्द	पृष्ठ	श्लोक	शब्द	पृष्ठ	श्लोक
रेणु	७३	१५१	वस्त्र	८१	१३७	वस्तु	६६	१३३
रेवनीवधित	७	१४२	वस्त्र	४९	९८	वस्त्र	५९	११७
रे	४७	९५	वपु	१४	३	वागिमन्	५५	१११
रोषम	१३	२६	वन	{ ६	१३	वाग्	५२	१४
रोषम	३९	७८	वनम्पति	{ ७	१५	वाग्स्पति	९२	१९९
रोहिणीपति	८६	१७९	वनिता	५	११	वाग्निन्	२७	५२
रोहिण्यारम	३३	६५	वनेचर	१	१३	वाग्	३२	६२
	७२	१५२	वह्नि	३३	६४	वातात्मन	६७	१३५
सङ्गमन्	७२	१५२	वपुस्	१९	३८	वाक्	६	१२
सङ्गी	३८	७६	वप	३७	१३४	वाक् (वाक्)	३९	७८
उष्णीपति	३८		वयम्	{ २९	५४	वाग्वाचन	९	१९४
उष्णु	८३	१७२	{ ६२	१२४	वाग्म वन	३७	७५	
संज्ञिका	१७	३६	वयम्या	२	४१	वाग्नी (वाग्नी)	५२	१४
स्रग्	११	२३	वर्	{ १८	३७	वाग्नीष्यना	१५	३१
सत्तान्त	४	८	{ ८९	१८९	वाग्	३२	६२	
सपन	४९	९८	वर्टा	६४	११७	वाग्पत्र	२८	५३
सम्भ	५४	१८	वराह	४६	९१	वाग्पुत्र	७१	१४५
सम्भना	१८	१	वस्त्रिणी	४३	८६	वार्	७	१५
सम्भ	८९	१९७	वर्ष	६३	१२५	वार्ता	७४	१५४
सांख्य	७	१४२	वर्ष	७४	१५३	वारण	४५	८८
सांख्यन	७३	१५२	वर्षिन्	२	३	वारणी	६४	१२०
सम्भ	८४	१७५	वर्षुक्त	८७	१८३	वारि	७	१५
सम्भक	७	१४	वर्षेत्	७८	१६२	वारिधि	१२	२३
सेलिहाग	६४	१२८	वर्षेमान	५७	११५	वारिरामि	१२	२६
सेय	८२	१८७	वर्षेत्	९	१९४	वारणी	६१	१२१
सेक	५७	११३	वर्षेत्	५७	११४	वार्डेन	६३	१२४
सेह	८२	१७	वर्षिन् (वर्षिन्)	६३	१२६	वाघर	२६	५०
सेहिग	{ ७२	१४९	वस्त्र	७१	१४७	वासव	३	५९
{ ८९	१८८	वस्त्रिमन् (वस्त्रिमन्)	६	१२	वाघद्	५९	११७	
सेहिनी	७३	१५	वस्त्रम	१८	३७	वाग्देव	३७	७६
	९२	१२९	वस्त्रमा	१६	३३	वाह	२७	५२
वपन	४१	९८	वस्त्रही	११	२३	वाहिनी	४६	८६
वपन्	५१	१२	वस्त्री	११	२३	वि	२९	५४
वपन	५२	१४	वपति	६६	१३३	विक्रम	८९	१८७
वपन्	५२	१४	वपु	४७	९५	विजय	८४	१७४
वपन्	५२	१४	वपुवा	३	६	विषयम	५५	१११
वपन्	९	१९	वपुम्पण	३	६	विट	१८	३७
वपिन्	३	५७	वपुमनी	३	५	विद्विन्	५	११
			वपु	४७	९५	विद्विजन्	३	५

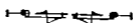
शब्द	पृष्ठ	श्लोक	शब्द	पृष्ठ	श्लोक	शब्द	पृष्ठ	श्लोक
विनाय	८८	१८६	विरहकप	३५	७	वैपारिण	८	१७
विरा	४७	५	विरहस	८८	१८५	वैश्वग	४८	९९
विरहव	७९	१६६	विरहममरा	३	५	वैश्वानर	३३	६५
विरहमान	८६	१३७	विप	७	१५	वंश	६३	१२४
विद्यत्	९	१९	विपलव	६९	१२८	व्यतिकर	९८	१३८
विद्वत्	५५	१११	विपथर	६४	१२७	व्यपदेश	९८	१३८
विद्यान्	३६	७२	विपय	४८	९७	व्यसन	८८	१८६
विधि	३६	७२	वितिकर	२९	५४	व्याम	४६	९
विधियुक्त	३७	७३	वित्यप	५७	११३	व्याज	९८	१३७
विधु	२४	४७	विद्यार	५९	११३	व्याज	७	१४
विद्वुर	८८	१८६	विद्यु	३७	७४	व्यूह	६९	१३९
विद्वतात्मज	६१	१२७	वित्तमय	८४	१७४	धज	६९	१३९
विद्वान्य	६८	१३७	विहामय	२८	६३	धज	६९	१४
विदिग	६	१३	वीथि	१३	२७	धज	७८	१६२
विदिम	८८	१८६	वीतराग	५८	११६	धञ्जरी (धञ्जति)	११	२३
विद्यामसु	२३	४६	वीर	५८	११५	धत्तिन्	२	३
	३३	६५	वक्र	६४	१२७	धान	६९	१३९
विधु	५		वृकोदर	७१	१५५	धोमन्	२८	५३
विज्ञम	१३	२७	वरा	४	७	धृ	३९	१८७
	४९	९	वृजिन	६६	१३९	धृक	८९	१८७
विद्यत्	३८	५३	वृत्त	८७	१८३	धृकुनि	२९	५४
विद्योग	७७	१६	वृत्तान्त	६८	१३८	धृकुनीरवर	६५	१२८
विरादिन्	३६	७२	वृत्तहृत्	३	५८	धृकुण्डि	२९	५४
विरह	७७	१६	वृत्पा	८८	१८६	धृकुण्डरि	८१	१६७
विश्वपादा	३५	७	वृत्पन्	३	५९	धृनिमत्	३४	६७
विराचन	२६	५	वृत्पम	५७	११४	धृज	३	५७
वित्तम्बिन	८७	१८५	वृत्पमन्त्र	३५	६९	धृज	१२	१९
विराजल	६	११८	वृत्पमेरवर	५९	११७	धृज	७	१४४
विशोचन	४७	९९	वृत्पमन	७	१४४	धृज	३५	९८
विरा	८९	१	वृत्पावधि	३३	६६	धृज	३५	९८
विराज	८	१८९	वृत्तित	५२	१५	धृज	४३	८४
विद्या	७२	१४८	वृत्त	८३	१७२	धृज	७९	१६५
	८४	१७३	वृत्त	३६	७२	धृज	३	५७
विद्यास	३४	६७	वृत्त	१३	२७	धृज	११	९१
विद्यात्		१५३	वृत्त	६६	१३२	धृज	३	६
विद्याग्नि	८	१७	वृत्त	१७	३६	धृज	२९	४४
विद्याक	८७	१८५	वृत्त	१७	३६	धृज	८	१७
विद्यालासा	३५	६९	वृत्त	४३	८४	धृज	७३	१५१
विदिग	४१	८१	वृत्त	६२	१७९	धृज	७	१४४
विरा	८८	१८६	वृत्त	२२	४४			

शब्द	पृष्ठ	श्लोक	शब्द	पृष्ठ	श्लोक	शब्द	पृष्ठ	श्लोक
घार	{ ७ ३९	१५ ७८	शिव	{ ३५ ९१	६८ १९	श्रीर	४८	१६
घारण	६९	१३३	शिव्य	३	४	श्रुति	४९	९८
घारम	४६	९	श्रीम	८३	१०६	श्रेयस	९१	१९८
घारवभौद्रम	३४	६७	श्रीरगामुक	४६	९१	श्रीनि (श्रीनी)	५१	१३
घारीर	१९	३९	श्रीतरु	८८	१८४	श्रीश्रीविभ	६	१२
घार्व	१५	६७	श्रीपु	६१	१२	श्रीतघ	६३	१२९
घार्वरी	६४	१२६	श्रीर्ष	८२	१०१	श्रीठा	९२	१९९
घार्वरीकर	६४	१२७	श्रीस	८८	१८५	श्रीम	४९	९८
घारुक	८९	१८७	श्रुक्तिम	४७	९४	श्रमण	८५	१७८
घारुण	७	१४	श्रुतक	७१	१४७	श्रमन्	४९	९२
घामिन्	२३	४७	श्रुति	७१	१४७	श्रमण्	८९	१९
घामिप्रम	७१	१४७	श्रुता-श्रुत	६१	१२१	श्रमण्	३२	६२
घारवन्	७७	१५९	श्रुतक	४५	८९	श्रवत	७१	१४७
घाम्य	४२	८३	श्रुनासीर	३	३७	श्रवतश्रामिन्	७	१४३
घारवमीमिन्	१४	२९	श्रुभ	७१	१४७	श्रवतमीम	९१	१९८
घारिन्	५	११	श्रुपिर	८९	१९	प		
घारुकुम्भ	८२	१७२	श्रुकर	४६	९	पट्टप	४२	८२
घारुठ	८२	१७१	श्रुूर	९	१९३	पट्टवपन	८१	१६७
घार्वी-घार्वी	७३	१५	श्रुमिन्	३५	७	पट्टवीभ	८	१७
घारिन्	३७	७४	श्रुत्कथित	४६	९१	पट्टुक	३४	६७
घारुक्	४६	९	श्रुत्कथित	८४	१७६	पाकिन्	८१	१६७
घारुकि	८१	१६७	श्रुगिन्	{ ४ ७८	८ १६३	पोडन्	८१	१६७
घारुतम	७४	१५४	श्रुदुपी	५५	११	स		
घारुम	२	४	श्रुत	{ ४ ३८	७ ७६	संयत	४४	८७
घारुमरिन्	४	८	श्रुसभर	३८	७६	संयमिन्	२	३
घारिन्	{ ३३ ६३	६४ १२६	श्रुशिव	८९	१८८	संयम	४४	८७
घारिवाहम	३४	६६	श्रुश्री	७३	१५	संयित	२	३
घारिन्	६३	१२६	श्रुश्रीर	६१	१२	संयतम	९	१९२
घारिपिन्	३५	७	श्रुश्रीर	८१	१६८	संयार	९	'
घारिन्	५२	१४	श्रुश्रीर	६७	७५	संयुति	९	'
घारिन्	५	१	श्रुश्रीर	८३	१७१	संयुत	७७	१६१
घारिन्	९	१५५	श्रुश्रीर	२५	४८	संयुत	५४	१८
घारिन्	८२	१७	श्रुश्रीर	७१	१४८	संयुत	५४	१८
घारिन्	{ ३९ ६५	७८ ८२	श्रुश्रीर	७३	१५	संयुत	७७	१६१
घारिन्	४	७९	श्रुश्रीर	४९	९८	संयुत	८८	१८७
घारिन्	४	८	श्रुश्रीर	४९	९८	संयुत	६१	१२९
घारिन्	४७	९४	श्रुश्रीर	३८	७६	संयुत	२	४१

शब्द	पृष्ठ	श्लोक	शब्द	पृष्ठ	श्लोक	शब्द	पृष्ठ	श्लोक
शगोत्र	२१	६२	सप्याचिप्	३३	६४	सत्तिक	७	१५
संक्रान्त	३	६	सपिठ	२७	५२	सचयम्	२	४१
संगत	११	१९७	सभोषित	५६	११२	सवर्ग	६७	१३६
संधान	४४	८७	सम्भ	५६	११२	सकिन्	{ १८ २७	{ ७८ ५१
संब	६९	१४	सम	{ ६७ ७७	{ १३६ १६९	सकिनी	१८	३८
संबात	६९	१४	समज	६९	१४	सम्भसाधिन्	७	१४३
सनाति	६७	१३६	समर	४४	८७	सह	७७	१५९
सज्जुम्	७७	१५९	समवर्तिन्	७१	१४५	सहकारित	२१	४९
संकर	७८	१६२	समवायिक	२१	४२	सहकृत्स्वन्	२१	४२
संज्ञा	८	१६५	समभेत	७७	१६१	सहृषी	२	४१
संतत	८९	१८९	समस्त	८८	१८७	सहृषा	८३	१७२
सतत	७७	१५७	समाश	६२	१३९	सहस्य	२१	४२
सती	१७	३४	समाकम्भ	६	११८	सहस्रपात्	३६	७३
सत्कृत	६५	१२९	समिति	६९	१४	सहस्राक्ष	३	५८
सत्य	८७	१८२	समीपर्म	३३	६६	सहित	७७	१६१
सत्यकार	११	१९७	समीप	६९	१४१	साकम्	७७	१६
सत्ता	७७	१६	समीरय	३२	६२	साकर	१२	२६
सपन	६६	१३२	समुद्यय	६९	१४	सावन	४३	८६
सवद्विषित	५६	११२	समुद्र	१२	२६	साधीमधु	८३	१७३
सवा	७७	१५९	समह	६९	१३९	सानु	{ २ ८	{ ३ १७
सवागति	३२	६२	सम्पत्तय	४४	८७	सानुबाध	७४	१५३
समुचित	५६	११२	सम्पुक्त	७७	१६१	साष्ठी	१७	३४
सद्वक्ष	६७	१३६	सम्प्री	१७	३५	सानु	४	९
सद्वप	६७	१३६	सम्पुव	७७	१६१	सानुमत्	४	८
सद्वधु	६७	१३६	सम्भान्	२	४१	सामज	४५	८९
सचयम्	६६	१३२	सरथि	७८	१६२	साम्प्रतम्	७५	११६
सचर्म	६७	१३६	सरसीधह	१	२	साम्प्रैय	४६	९२
सचुषी	२	४१	सरस्वत्	१२	२६	सार्ध	७७	१५९
सनातन	६३	१२५	सरस्वती	५२	१४	साक	{ ६७ ८९	{ १३६ १८१
सनाति	२१	४२	सपिन्	१२	२६	साहस	७४	१५३
सन्धति	{ ६३ ६	{ १२५ १३९	सकम्	६७	१३६	साहाय्य	६२	१९७
सन्धमस	७२	१८८	सरोज	१	२	सित	{ ७१ ८५	{ १४९ १७६
सन्नात	६३	१२५	सर्ग	६४	१२८	सिद्धास्त	३	४
सन्धेय	७४	१५४	सर्गिन्	६१	१२२	सिन्धु	१२	२४
सन्धानीत	८५	१७६	सर्व	८८	१८७	सिन्धर	४५	८९
सन्धिधि	६९	१४१	सर्वज्ञ	५८	११६	सिंह	५२	१५
सम्पति	५८	११५	सर्वदा	७७	१५९			
सपल	२२	४४	सर्ववन्तना	१७	३६			
सपरि	७६	१५७						

शब्द	पृष्ठ	श्लोक	शब्द	पृष्ठ	श्लोक	शब्द	पृष्ठ	श्लोक
सीकृत	५३	१६	सीहृत्	९१	१९७	स्वाहापठि	३३	६५
सीमन्	१३	१६	सीहृष	९१	१९७	स्वीरिणी	१७	३
सीमन्निनी	१४	३	स्कन्ध	३४	९६			
सीर	७	१४२	स्तन	५१	१२	हृष	६३	१२५
सुकृत	६५	१२१	स्तर्गभय	२	४	हृषनाह	६३	१२५
सुबिरेण	७६	१५९	स्तानि	५३	१५	हृषी	६४	१२७
सुन	१९	३९	स्तम्भ	{ ७१ ८१	{ १५६ १६८	हृषी	७६	१५७
सुभाषि	२४	४७	स्तम्भकरि	८१	१९७	हृषीलि	५४	११
सुभाषीर	३	५७	स्तम्भोरम	४५	८८	हृष	२७	५२
सुनिमौक	७	१४४	स्तोत्र	८१	१६९	हर	३५	७०
सुन्दर	८५	१७७	स्त्री	१४	३			
सुन्दरी	१५	३१	स्वपुत्र	८७	१८३	हरि	{ ६ २७ ३ ३७ ४५	{ १२ ५ ५७ ७४ ९
सुपर्ण	६५	१२९	स्वबिर	६३	१२४	हरिया	३४	१२७
सुमन	९	१९६	स्वाधु	३५	६८	हरिणी	७३	१५
सुमन	४	८	स्वान	६६	१३३			
सुर	३	५६	स्नेह	७७	१६	हरिण	{ ६२ ७२	{ ६१ १४९
सुरा	६१	१२१	स्पर्शा	१७	३५	हरित	७२	१४९
सुबर्ण	४७	९३	स्पष्ट	८४	१७३	हरिषाम	७२	१४९
सुष्ठ	८३	१७२	स्वीकृत	५२	१५	हरिबाहन	३	५९
सुष्ठु	२	४१	स्तुत	८८	१७३	हर्म	६७	१५
सुभामन्	६	५७	स्तर	४	८	हर्ष	५४	१९
सुनु	१९	३९	स्मृत	५४	१८	हृक	७	१४२
सुनुय	८७	१८५	स्वय	८३	१७२	हृकि	७	
सूरि	५५	१११	स्वम्भन	५३	१६	हृषबाह	३३	६६
सूर्य	२६	५	सञ्	६	११९	हस्त	५	११
सुयकारि	३९	७७	सप्यु	३६	७३	हस्ताबा	५	११
सना	४३	८६	सबन्ती	१२	२४	हस्तिन्	४५	८८
सेनानी	३४	६६	सोतस्त्रिणी	१२	२४	हाटक	४७	९२
सेनानीपिवू	३५	६८	सोतस्त्रिणीपति	१२	२५	हाब	९१	१९७
सन्ध	३	५६	स	४७	९५	हाला	६१	१२१
सैन्ध	४३	८६	समाह	८८	१८५			
सोबय	११	४२	स्वर्	३	५६	हिम	{ ५९ ८५	{ ११८ १७९
सोमबंस	७१	१४६	स्वर्ग	३	५६	हिमपसुणा	३६	७१
सोभामिनी	९	१८	स्वर्ण	४७	९३	हिरण्य	४७	९३
सोभ	६७	१३५	स्वर्ण	४७	९३	हिरण्यकण्ठिमुसुन	३७	७५
सोभ्य	८७	१७७	स्वर्ण	४७	९३	हिरण्यगर्भ	३६	७३
सोभ्य	९१	१९७	स्वर्ण	४७	९३	हिरण्यपरेणु	३३	६४
सोभ्य	१८	७५	स्वर्ण	४७	९३			
सोहाब	९१	१९७	स्वर्ण	{ ५ ३४	{ १ ६७			

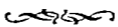
शब्द	पृष्ठ	श्लोक	शब्द	पृष्ठ	श्लोक	शब्द	पृष्ठ	श्लोक
हीन	८२	१७१	हृद्य	८५	१७८	हेमन्	४७	१३
हुताश	३३	६५	हृषीक	३५	१२९	हेरिक	८१	१३९
हुताशम	३३	६६	हृषीकेष	३७	७४	हेपा	५२	१५
हृद्य	५३	१५	हे	७६	१५६	हेर्मपबीन	६१	१२२
हृद्य	४१	८१	हेति	४२	८३	हृद्य	७३	१५८



अनेकार्थनाममालास्थशब्दानुक्रमणिका

शब्द	पृष्ठ	श्लोक	शब्द	पृष्ठ	श्लोक	शब्द	पृष्ठ	श्लोक
अक्ष	१८	२६	कैवस्य	१	४४	बाध	१७	१८
अक्ष	१८	२१	कोणि	१६	१५	ब्रह्म	१	४१
अक्षम	१४	९	कीर	१५	१३	त्रिज	१५	११
अक्ष	१	३९	ग	१	३७	घ		
अक्षि	१५	११	पुन	१	३७	घर्न	१	४१
अक्षम	१३	४	पुस्त	१६	१५	बातु	१९	३२
अक्ष	१८	२५	भो	१८	२७	बिम्ब	१४	७
अक्षर	१	३८	घ			प		
अक्ष	१७	१७	पुत	१३	५	पठंग	१४	८
अक्षर	१४	७	व			पमस्	६	१३
अक्ष	१६	१६	वर्षा	१७	१७	पर्वीय	१३	४
अक्ष	१८	२४	व्यास्य	१६	१६	पाश्चिम्य	१५	१
अक्षोक्त	५	१२	बित	१३	३	पुस्तक	१	४२
इति	१	४	बीमूत	१३	४	पुत्रान	१४	९
इ			भ्योतिष्	१४	९	पुष्कर	१९	२९
क			त			प्राय-प्रायस्	१८	२४
कक्षी	१५	१२	तंज	१	३६	बाबा	१६	१५
कक्षु	१५	१	तस्य	१४	६	ब्रह्मबाध	१	३७
कक्षर	१५	१	तार	१५	१३	म		
कक्ष्या	१६	१४	तार्क्ष्य	७	१६	भव	१	४३
कीनाश	१७	१९	तीर्थ	१९	३१	भाज	८	२४
कीकाल	१६	१५	वृ			भुवन	१३	५
केतन	१४	७	वज	१७	१८	भूरि	१५	१३

शब्द	श्रुत	श्लोक	शब्द	श्रुत	श्लोक	शब्द	श्रुत	श्लोक
म			विदम्बत्	३	३	मारुत	१४	९
मयूत	४	८	वि	१४	५	मागम	१४	१
	४		वृषावनि	१३	३	माक	१८	७
रम्भा	१५	११	बेकका	१३	४	मिष	१४	७
रग		३	व्यामाह	१६	१४		१६	१४
राजम्	१५	११		१		मुपनम्	५	१२
राग	६५	६	राहू	१७	१८	मोम	७	२१
	६५		रागम्	१३	३	स्वम	३	१७
राशि	११	१८	रागदित्	५	११	व्यानु	७	१७
राशाम	९	१३	राशि	२१	३	व्याग्न	५	११
	९		रा	३		व्यान्	११	१५
राग	१३	५	राह	१	३६	व्या	९	३५
राशपा	१	१२	राशि	१६	१४	व्ये	७	१७
राप		३४	रागय		३५		७	
राग	८	६	रागक	८	९	राग	७	२
राशिचत	१७		राग	४	८	राशि	१८	२८



नाममालाभाष्यस्य शब्दानामकाराणिसूची

शब्द	श्रुत	पंक्ति	शब्द	श्रुत	पंक्ति	शब्द	श्रुत	पंक्ति
अ			अभिगाता	२	२	अप्यवित्	३६	८
अग	७६	७१	अचरन	३८	१५	अप्यनमम	७२	१३
अगमान्	३६	२१	अचरज	८	२८	अपधी	२३	
अगमान्	२६	१	अचिमात्र	८३	१८	अपनी	१६	३
अद्य	६९	२३	अचिह्न	८३	१८	अपारित	३६	१६
अग	९	९	अचिनचप्रभू	८	७५	अपम	९	७६
अचिह्न	३५	३	अचिप्लान	६९	८	अपत्र	८	५
अचिह्नवन्	३१	२६	अचल	८	१५	अपत्र	९	१७
अचिह्न	७१	१८	अचला	८	६	अचिह्नरा	३८	७७
अचूक	३	१३	अचलरा	७७	११	अचिह्न	१८	७
अच	५	२४	अचिह्न	३	१६	अचिह्नपा	७६	१३
अचूहि	५	८	अचिह्न	७७	२	अचिह्नन	६३	८
अचला	८	६	अचिह्ननी	८८	७	अचिह्नव	७५	१७

शब्द	पृष्ठ	पंक्ति	शब्द	पृष्ठ	पंक्ति	शब्द	पृष्ठ	पंक्ति
भूमिमन्त्री	२३	३	आ	३८	००	उदधि	१३	२
भूमियाति	२३	१	आ	३८	००	उदन्त	{ ६८ ७५	{ ० २
भूमिसारिका	१७	१७	भाष्कारण	५९	१२	उदन्तान्	१३	२
भूमिक	१८	१९	भाम्नीय	२१	१	उदन्त	५४	२४
भूमिग	२३	१८	भाशिय	{ २३ ३	{ १ १२	उपस्य	६२	१३
भूम्यप	७	१	भाभार	६०	७	उपकण्ठ	६९	२३
भूम्यापम	४५	२	भाभग	८		उपमठ	९१	१
भूम्य	१८	२	भात्	२१	१	उपमृति	२३	१
भूम्यनिर्गम	२५	२	भात्करण	६	०	उपमा	६८	८
भूम्यागत	३	१६	भावीक	८७	२२३	उपकम्पि	५	८
भूम्या	१८	२३	भासिय	९	२१	उपहूर	८६	१८
भूम्युभू		१३	भास्यत	७५	१८	उपापि	६८	१८
भूम्य	७८	१२	भासोवन	५५	१	उपसिञ्ज	५१	२३
भूम्यववा	६४	१४	भापय्	६	२३	उर	८७	१८
भूम्यवानी	६	२३	भापोह	१		उपशुभ	३६	१
भूमिष्	६२	१८	भापीबिज	६५	१	ऊ		
भूमिष्पान्	३४	१५	भापुग	३३	८	ऊमि	१३	१०
भूमिणि	२७	२५	भापयाम	३६	१६	शु		
भूमि	८९	४	भापुन	१	१	शुनय	८८	७
भूमिक	२	५	भापन	७०	१	शुतोम	२६	२
भूमिकार	१	११	भापय	६१	१	शुभु	१	११
भूमिकन	७२	१२	भाप्यन्त	५५	१	शुभ्य	१८	१७
भूमिकान	७६	१	भाहाय	५	३	शुलि	१३	२३
भूमिक	१	१६				शुल्य	६६	१०
भूमिकार	७७	११	इभूय	१३	३	शु		
भूमिकीना	१७	१७	इभिविज	१	१	एकपदी	७८	१२
भूमिक	८१	१६	इभकी	१७	१७	एवान	१८	१८
भूमिक	१६	१	इभिमिद	५		एम	६६	१७
भूमिक	१		इभु	०६	२६	ए	११	
भूमिक	१७	१७	इभकाम	१८	१५	ऐरावती		३१
भूमिक	१	१	ई	३८	२	क		
भूमिक	१	१	ईगान	३६		कदुम्पनी	१	१
भूमिक	१		उ			कदुप	३	
भूमिक	१		उकानं	८	८	ककत	१३	
भूमिक	१	१३	उक	८	८	ककपदी	६	१
भूमिक	१		उर	७६	१८	ककिकु	६	१
						ककी	१	१

शब्द	पृष्ठ	पंक्ति	शब्द	पृष्ठ	पंक्ति	शब्द	पृष्ठ	पंक्ति
कञ्ज	५१	१	कान्तिनीमोदर	७१	११	कैटब	६८	१८
कदम्ब	{ ३ ६१	२१ १२	काश्यपमन्त्रम	६५	१६	कैरवमिप्रिय	३७	८
कदम्ब	८५	१	काश्यपी	६	७	कोक	४६	१५
कनिष्ठ	२१	१५	किष्क	६६	१	कोविन्द	५६	०
कम्बरा	५	११	किम्बचाग	८५	१	कोकप	०	२८
कम्पाङ्ग	२		किर	६६	१४	कौमुदिक	८	
कपट	३८	१८	किरि	६६	१५	कनुपुरुष	३७	१६
कवच	८	४	किमि	११	२७	कम्पार	२९	२८
कमल	८	४	कीताग	{ २९ ७१	२८ ११	कसीब	८५	१
कमला	३८	२१	कीसाम	८	६	कणिका	९	२
कमिता	१८	१	कीघ	६	१५	विशिषर	६	
कम्बल	६५	२१	कुच	६	५	कीर	८	६
कर्णवप	८१	२१	कुट	६	५	कीरोप	१३	२
कर्णमन्त्र	१	१२	कुण्डली	६५	१	कीरोपतमया	३८	१
कर्पण	५	१२	कुप्र	४	६	कुत्र	{ ८१ ८५	२१ १
कर्पूर	{ २ ६७	८ १५	कुलक	९१	१	कुम्भ	८५	१
कर्मसाक्षी	२६	२२	कुमुदविचरुणम	२७	७	कुम्भक	८५	१
कस्यु	१२	११	कुम्भीनस	६५	३	कुम्भ	{ १६ १९	१५ १६
कलत्र	५१	१८	कुरंग	६४	१७	कुम्भ	७९	२
कलम्ब	३९	२	कुरपम	६६	१७	कुम्भ		
कलापीन	४७	१९	कुल	६७	२	कुम्भ	२६	२१
कलाप	{ ५३ ६	१४ १९	कुम्पा	१२	११	कुम्भ	३९	२१
कलक	६६	९	कुहक	८	२	कुम्भ	४७	१९
कलमप	६६	१	कुहर	८९	२१	कुम्भ		
कल्प	६१	१६	कुच	१	१	कुम्भ		
कल्पयाग	४७	१	कट	९८	१८	कुम्भ		
कवि	६	२	कक	१		कुम्भ		
कवय	६१	१६	ककडुपा	१२	१	कुम्भ		
काकोत्तर	६	२	कटकमा	७	२	कुम्भ		
काकपीपत्र	१	१	कतमुप	७९	२	कुम्भ		
कान्ता	१६	१	कतहृत्	७९	२	कुम्भ		
कापिमापन	६१	१६	कृती	५६	२	कुम्भ		
कामधर्मी	३६	६	कृतिवाद्या	३६	५	कुम्भ		
कार्तिक	८	२	कृपीन्दामि	३६	१५	कुम्भ		
कालसार	६४	१७	कृष्ण	५६	२	कुम्भ		
कालिदस	६	१६	कृष्णवर्मा	३४	१६	कुम्भ		
कालिन्दीकर्म	७	११	कृष्णसार	६६	१७	कुम्भ		
			कृष्ण	७९	१९	कुम्भ		

शब्द	पृष्ठ	पंक्ति	शब्द	पृष्ठ	पंक्ति	शब्द	पृष्ठ	पंक्ति
दुस्मिनी	११	२०	धम्रहास	४३	३३	जैबातुक	१५	२
दुष्ट	४४		धपसा	{ ९ १७	२ १७	ज	५६	२
दुष्टपात्	१५	१	धय	६३	१२	जाति	११	१
दुष्टा	१९	१५	धसा	३८	२०	ज्योति	४९	१३
गोकर्ष	१५	३	धामीकर	६७	१५	ज		
गोकुल	७८	१८	धिकुर	९	२९	जिम्म	२	२
गोत्र	{ ८ ११ १३	{ ३ १६ ८	धिकरस	१	१	ज		
गोत्रमिह	३१	२६	धिकर	८९	११	जटिनी	१२	१
गोत्रति	{ २९ ३१	२ ६	धिकरकाय	४९	७	जनी	१६	
गोष्ट	७८	११	धिकरपुत्र	३	२	जबिलवान्	९	१३
गौर	७०	१	धिकरभाणु	{ २९ ३४	२१ १५	जमया	२	१४
गौरीपुत्र	३५		धीवर	५	११	जत्र	४४	२
ग्राहन्	८०	९	ज			जत्पकी	६	१
ग्राहा	६	३	जयज्वलु	२६	१०	जमाळ	६६	९
ग्रीबी	६६	१९	जयलकर्षा	३०	१	जमस्त्रिनी	२५	२५
घ			जयलभ्राय	३३	७	जमालपत्र	८३	११
घन	१९	१६	जयन	५१	१	जमिस	७२	१२
घनरस	८	३	जयज्ञा	५१	२२	जमिसा	२५	४
जय	१६	८	जयान्तिफ	८४	१८	जमी	२१	२५
जुनि	३	१९	जय्य	४५	१	जमोहन	२४	१६
जुन	६२	७	जय्याळ	१	१	जरभू	४६	७
जूतीह	१३	३	जय्यूनर	४७	१५	जरस	२९	२२
ज्योत्स	२७	५	जय्यता	४३	१	जा	३८	२
जोगा	५१	२	जय्यती	४३	१	जार	६०	१
ज			जरठ	६३	४	जारफा	६०	२३
जर	४६	९	जरन्	६३	४	जारफारि	३	३
जरबाळ	६३	१३	जलवार	८	९	जारपत्र	२८	१६
जराकूषाह	६	१५	जरुमुष्		१३	जार्व	२०	२५
जरी	१५	१	जलराधि	१३	१	जिम्मांगु	२९	१
जरा घरा	६		जलघपन	३८	१	जिधिरिष्टि	२६	९
जम्बरीर	८	९	जाल	{ ६३ ६७	१३ ३	जीर	१३	१
जम्बसा			जालक	६०	२३	जुष्	६९	१६
जदुला			जालिक	८	९	जुम्ब	५१	१
जदुली	६४	३	जिवाणु	२३	३	जोमनिधि	१३	०
जदुलु	८	१५	जिन	३८	१५	जपीडनु	२९	२
जदुलु			जिणु	३१	१५	जिन	५१	१
जदुलु			जिणग	१५	०	जिजराजान	५१	१
जदुलु			जीर्ष	६३	४	जिजरा	३	१८

त्रिपसवीर्षिका	३६	११	बीर्ष	७९	१८	भूमिका	८५	२५
त्रिविध	२८	१५	बीर्षबद्ध	४६	१९	भूमिग	२३	१९
त्रिपदा	७८	१५	बीर्षपृष्ठ	६५	२	भ्रुव	७७	११
त्रिपुरान्तक	३६	९	दुर्मति	९	१	न		
त्रिप्रचटा	७८	१५	दुर्जंग	८१	२१	गक्तमुखा	२५	२५
त्रियामा	२५	२६	दुर्जर्भ	४७	१	गकरामुख	४६	४
त्रिभरमा	२७	१५	दुर्ज्ञेय	२३	३	नक्षिणी	११	२२
त्रिकिष्टपसब्	३	१३	दुर्गन्धवन	३१	२५	नाक	२८	१५
त्रिचक्र	७८	१५	दुर्कस्युति	६५	३	नामान्तर	६५	१६
त्रिचरुभि	७८	१४	द्वेवता	१	१२	नालीक	८	१५
त्रिजोडा	३६	११	द्वैवत	३	१४	नासिका	५१	२
त्र्यध्या	७८	१४	द्वोपघाही	८१	२१	निःश्रुताक	८४	१८
द			द्वोपज्ञ	५६	२	निकाय	६३	११
दक	८	४	द्वु	२६	२८	निकुरम्ब	६३	१२
दल	७९	२	द्वुम्न	४८	६	निसिक	८८	२४
दशाध्वरध्वरक	३६	४	द्वुज्ज	४९	८	नियम	{ ४९ ७८	{ ८ १२
दशिभापति	७१	१२	द्वु	९	५	गितराम्	८८	११
दशध्वर	७१	११	द्वुपा	४२	१	गिरय	९	१
दशबाहु	६२	१८	द्वुन्द्र	४५	२	गिर्जर	३	१२
दशभुव	१३	३	द्वुषपालमा	२६	२३	गिर्जरिणी	१२	१
दशानक	४५	१६	द्वुषराज	२५	१	गिर्ज्यवन	८९	२१
दशधुक्त	६५	२	द्वुषिज्ञ	८१	२१	गिर्जह	६३	११
दमुना	३४	१६	द्वुषरज	६५	२	गिर्धीबिनी	२५	२६
दमुना	३४	१७	द्वुषबटी	१२	११	गिर्धीबिनीगाय	२५	१
दमिता	१६	१	द्वुषी	४६	७	गिर्पहर	१	१
दमीकण	६५	२	द्वुषण	२३	२	गूल	७६	१७
दक	८९	४	घ			गुपकश्म	९	२६
दत्तमीस्य	६३	४	घनलज्जय	३४	१६	नम	८९	४
दत्तु	{ २३ ८२	{ ३ ४	घरभिषक	३८	१४	नेस्ना	५१	१
दावापनीरमज	२५	२	घर्मराज	७१	११	नेकपेय	२९	२८
दाशडिभिगक	८	२	घर्षणी	१७	१७	नेकसेम	२९	२८
दाव	६	२३	घव	१८	१९	नीर्हण	२९	२८
दापार्ह	३८	१४	घाम	२३	१९	न्यङ्क	६४	१७
दाशरक	४६	१९	घाराधर	९	१२	घ		
दियम्बर	७२	१३	घीर	५६	१	पङ्क	६६	१०
दितकर	२६	१	घुपक	४६	१९	पङ्कव	१	१२
दिनमणि	२६	१९	घुमम्बज	३४	१५	पञ्चधाव	५	१९
दिदस्पति	३१	२७	घुमयादि	९	१३	पञ्चानन	४६	४
			घुमक	७२	७			

पञ्चमेयु	३९	१२	विष्णु	१९	१६	प्रच्छन्न	८४	१८
पट	१९	१३	विष्णुपति	७१	११	प्रथम	७६	६
पटी	५९	१३	वीथबाधा	३८	१३	प्रथमिनी	११	२७
पट्टसूत्र	६१	१	वीथि	२७	१५	प्रतिच्छिद्य	६९	१
पटाकिनी	४४	२	वीथुष	६२	१३	प्रतिज्ञात	९१	१
पठि	१८	१९	वीथुषवधि	२५	१	प्रतिपक्ष	२३	२
पथकप	१४	३	वीथ	४५	१६	प्रथिमय	८७	२२
पथनी	७८	१२	पुञ्ज	३३	१७	प्रथिमा	५५	१७
पथाङ्ग	५२	१४	पुटकिनी	११	२२	प्रथिम	६८	८
पथिक	१४	३	पुच्छरीक	४६	७	प्रथिमोषक	८२	५
पथ्य	१४	३	पुषी	२	१४	प्रतीक	१९	१६
पथ्यति	७८	१२	पुष्पक	१९	१६	प्रतीपवधिनी	१६	१
पथ्यागधन	६५	१६	पुट	{ १९ ६७	१६ २	प्रत्य	७६	४
पथ्यवाधा	३८	२१	पुरन्धी	१५	२८	प्रत्यगीक	२३	२
पथ्या	३८	२१	पुत्रज	९	७	प्रबहु	३९	११
पथ्यी	४५	१६	पुत्रक	८२	९	प्रद्युम्न	३९	११
पथा	७८	१२	पुत्रप	१४	९	प्रद्योत	२३	१९
पथ्य	६२	१६	पुत्र	९	७	प्रद्योतम	२६	१९
पथ्यकर	९	१२	पुत्रकर	{ ८ २८	३ १४	प्रजन	४५	१
पथ	२३	५	पुष्ट	९	७	प्रपाल	११	१
परमेष्टर	३६	३	पुष्पमिद्	४२	९	प्रबुद्ध	५६	२
परमेष्ठी	३७	१	पुष्प	३३	१२	प्रमाकर	२६	२१
परास्वामी	८२	४	पुष्पज	२१	१८	प्रमदा	१५	२८
परिवन्धी	२३	२	पुष्पव्यति	३१	२६	प्रमम्भ	७	११
परिवन्धा	६१	१५	पुष्पक	९	२	प्रमया	६३	४
परिव्यज	१	१२	पथ्याङ्ग	२५	१	प्रविहारक	४५	१
परिव्यार	६	११	पुष्पि	२३	१९	प्रवृत्ति	६८	९
पर्यग	३१	२६	पुष्पिनी	२३	१९	प्रवेणी	९१	७
पथ्यागधन	२३	२	पुष्पिनी	३३	८	प्राङ्गु	७६	१८
पथ्यादी	६	५	पुष्पिनी	३३	२१	प्राणाभिनाथ	१८	२
पथ्य	७७	१४	पुष्पिनी	३३	२१	प्राणवाधु	२५	१
पथ्यापन	६५	३	पुष्पिनी	३३	२१	प्राण	५९	१६
पथ	८	१५	पुष्पिनी	३३	२१	प्राकार	५९	१६
पथ्यापि	३६	३	पुष्पिनी	३३	२१	प्रीति	५४	२३
पथ्याला	१७	१७	पुष्पिनी	३३	२१	प्रीत्य	५५	७
पथ	२	२	पुष्पिनी	३३	२१	प्रीत्यति	७१	११
पथ्यामन	३१	२७	पुष्पिनी	३३	२१	पुष्पानुम	६	१५
पथ्याप	८	४	पुष्पिनी	३३	२१		५	
पथ्यापान	३५	४	पुष्पिनी	३३	२१	पुष्प	६	२३
पथ्यापि	५१	१	पुष्पिनी	३३	२१	पुष्प	५१	१९

व	शुभ	८	४	मास	६१	१६		
बयनू मिक	१७	७	मुष्णाय	७२	१३	मासक	६१	१६
बयूर	८	१४	भूतभाषी	४	६	माष्णीक	६१	१७
बभू	३८	१५	भूतेषा	३६	३	मानसौक्य	६३	२३
बक	७	११	भैरव	८७	२२	माया	३८	२२
बसभूत	३१	२५	भोक्ता	१८	१९	मायावी	८	३
बहिष्पीति	३४	१५	भोगी	६५	२	मायी	८	३
बहुक	३४	१४	भूष	२	३	मितम्प	८५	१
बाडिष	८	१४	म			मिष	२६	११
बाणासन	४२	१	मन्त्रुकैष	३८	१३	मिष	६८	१८
बास	{ २ ८	१	मन्त्रन	६	११	मिहिका	८५	२५
बाधिष	८	१४	मन्त्रस	६३	१२	मिहिर	२६	२
बाहुकेप	३५	४	मति	५५	८	भुकुम्ब	३८	१४
बकप	४७	२	मतिमान्	५६	३	मभिर	९	१३
बडि	५५	८	मस्य	८	२८	भुविज	१९	२
बुहू	८७	१८	मभू	६१	१५	भूर्धज	९	२९
बुहूमान	३४	१६	मभूकर	४२	८	भूयसंघ	४७	२
बहुभाषी	३५	४	मभूयस	३९	१२	भुयसिपु	४६	४
बाइरी	५२	२	मनयिज	२९	११	भुगान्	२५	२
म			मनीनी	५६	२	भुगारि	४६	७
मग	२३	२	मन्त्र	८७	२	भुषाभिणी	११	२२
मदानक	८७	२२	मन्था	५	११	भुसुक्त	७५	१४
मर्ग	३६	४	मयूष	२३	१९	भुष	४५	१
मर्ता	१८	१९	मरालबाह	६३	२५	भुडीक	३१	१७
मन्त्री	३८	२२	मबन्	३	१३	भेषपुण	८	४
मन्त्र	३९	२३	मरुडर्मन्	१८	१४	भेषा	५५	८
मन्त्रि	३९	२३	मस	६६	१-	भापक	८२	५
मपत्र	४७	२	मन्त्रिक	८२	४	य		
मसक	४२	९	महादेवम्	५२	९	यथार्थवर्ण	८७	१
मानमान्	२६	२१	महाबल	३१	४	यपु	२७	२५
मास्त्र	२६	१९	महाबिक	३३	८	धाप्य	३२	७
मास्त्रान्	२६	२	महारिक	२८	१५	यत्नयाम	३३	४
मीम	{ ३६ ८७	४	महारकठ	४७	१५	यामिनी	२५	२६
मीपत्र	८७	२२	महाभन	३५	४	यूष	६३	१२
मीप्य	८७	२२	महिमा	१६	१	यूनी	१५	२३
मीप्यन्	३६	११	महीकह	६	५			
मुत्रकमुक	६५	३	महेमा	१६	१			
			मा	{ २५ ३८	२	रजनीकर	२५	१
			मासक	२	३	रत्नवर्षा	४	६
						रत्नवर्षी	४	६

रत्नाङ्गपाणि	३८	१४	वरविद्या	१८	१९	विरु	८९	२१
रत्नपी	१५	२८	वरला	६४	११	विरुदाय	६५	२
रत्ना	३८	२९	वराज	८५	१	विरुसत	५९	१
रत्नग	४६	१९	वरिष्ठ	२१	१८	विरुस्वान्	२६	२
रत्निम	२३	१९	वदिनी	१५	२८	विरुसत	८४	१८
रसा	४	६	वर्तनी	७८	१२	विद्यारद	५६	३
राक्षस	२९	२७	वर्षीयान	२१	१८	विदिष	३९	२६
राजभूष	६१	१	वर्ष	१९	१६	विधम्म	८८	६
राजसर्प	६५	३	वर्षण	५२	२८	विषवकाय	३८	१३
राजा	२४	२४	वशा	१६	१	विस्वास	८८	६
राधि	२५	२६	वसति	२५	२६	विष्टर	६	६
राधि	६३	१२	वसु	{ २३	१९	विष्टरधवा	३८	१५
रिच्य	६४	१७	वसु	{ ३४	१५	विष्णुपद	२८	१५
वसम	४७	१५	वस	५९	१२	विष्णुपदी	३६	११
वसम	४७	१५	वस	५९	१	विष्णुपद	६५	१६
वसि	२३	१९	वसिरेता	३६	४	विष्णुसौन	३८	१३
वस्य	२९	२२	वाटप्रमी	६४	१७	विनर	६३	११
वद	६४	१७	वामदेव	३६	१	विनार	८	२९
वोक	८९	२३	वामनेत्रा	१५	२८	विस्तीर्ण	८७	१८
वोधि	२३	१८	वारिख	९	१३	वीचिमात्री	१३	९
वोषोववा	१९	११	वार्ता	६८	२	वीजा	९१	७
वोड	३९	२१	वामनेत्री	२५	२६	वीजहोत्र	३४	१६
वोडम्ब	४२	९	वासिष्ठा	१५	२८	वीति	२७	२५
वोडिर्वावस्तम	२४	२५	वास्तोष्पति	३१	२६	वीरव्	११	२७
	६		विह्वर	६३	११	वृध	६	५
वदय	६८	१८	विह्वर	२९	१७	वृद्धिम	९१	१
वदयवग	५६	१	विजगन	२६	२	वृत्तान्त	७५	७
वदयवार	१३	९	विजाल	९	१८	वृत्तारि	३१	२५
वदही	१३	१७	विजह	{ १९	१५	वृत्त	{ ५६	२
वदग	३	१३	विजह	{ ७५	२	वृत्त	{ ६३	४
वदवद	४७	९	विजह	८४	१८	वृत्तधवा	३१	२५
	५		विपा	६८	८	वृत्तारण	३	१३
वदोदह	५१	१४	विपय	८	१५	वृत्तारण	३८	१५
वदव	३१	२६	विपविषय	५६	२	वृत्तारण	३६	५
वदु	३	३	विपुला	४	६	वृत्तारण	९१	७
वदवामी	३८	१५	विषय	३	१३	वृत्तारण	३८	१५
वदोदह	६	१५	विषय	४८	७	वृत्तारण	४३	१
वदा	८९	२२	विषा	२३	१९	वृत्तारण	७१	११
वदमी	२	१६	विषावर्षी	२५	२५	वृत्तारण	९६	३
			विषाव	३३	१	वृत्तारण	८	३

व्यास	६५	१	सुनक्षानाङ्ग	६४	३	सदया	६९	२३
ब्रूह	६३	१३	सुभि	६४	१५	सन्	४६	२
व्योमकोस	३६	३	सुवडा	६१	१५	सनातन	{ ३८ ७७	{ १५ १०
वज्र	६३	११	सुयि	८९	२२	समाभेय	२१	१
वात	११	२७	सुर	२६	२	समीह	६९	२३
			सुक	२३	२	सभिकट	७	१
			सोवसिनी	१२	११	सभिग	६८	८
उकसी	८	२८	सैस	४	३	सपिण्ड	२१	१
सक्तिपात्रि	३५	३	स्यामकृष्ण	६४	३	सप्यारव	२६	२१
सतवृत्ति	३०	१	स्यादेव	७१	११	समासव	५६	७
सतहृदा	९	२	सीवष्ट	३६	३	समाप्सार	५६	७
सदानन्द	३७	१	सीतम्बन	३९	११	समय	३	१४
सबक	६४	१७	स्योपति	३८	१३	समयार्थ	६९	२३
सम	५	१९	स्योवत्साङ्ग	३८	१३	समवाय	६३	१२
समन	७१	११	स्योक्त	७४	१३	समाख्या	७४	१३
सम्बर	६४	१७	स्यभ	८९	२२	समामोहर	२१	१
सम्भू	{ ३६ ३८	{ ३ १५	स्येत	४७	१९	समामोहार्थ	१	१
सय	५	१९	स्येतकृष्ण	६३	२३	सभिति	४५	२
सखरी	२५	२५	स्येतरोचि	२५	१	समीक	४५	१
सस्त्री	८	२९				समीर	३३	८
सधम्ब	१३	२				समुद्यय	६३	१२
सधाङ्ग	२५	१	पद्भरव	४२	९	समदाय	{ ४५ ६३	{ २ १२
सधिसकर	३३	३	पङ्क्ति	६२	९	समुद्रकान्ठा	१२	१२
सात्तामूढ	६	१५				समुद्रनवनीत	२५	२
सातकुम्भ	४७	१५	नीय	४५	१	समूर्ह	६३	११
साधव	२३	२	संग्ना	५५	८	सम्भर	४५	३
साध	१	१	संभवावात्	५६	३	सम्मिन्	४५	२
साधिका	११	२७	संगर	४५	३	सरस्वती	१२	११
साध	६	५	सञ्चिति	५५	८	सरिङ्ग	३६	११
सासाङ्ग	४७	२	सञ्जि	८७	१३	सरीसृप	६५	१
साव	२	३	संभ्याग	५९	१३	सर्पाजल	६६	३
सावत	७७	११	ससपाय	६७	२	सर्वं सहा	४	७
सावतक	७१	११	सस्यो	४५	२	सर्वत्र	३६	३
सिद्धिग	७९	१	सत्या	२१	७	सर्वतामूढ	८	८
सिद्धाकर	६४	३	सधर्म	७१	१	सभि	८	१
	{ ५३ ६	{ १३ १९	सङ्कल्पक्या	३९	११	सञ्जिता	२६	१९
सिद्धिनी			सञ्जय	६३	११	सहृद्य	१६	१५
सिद्धिभ्र	९	२९	सञ्ज	६	२३	सहृद्यी	१६	१५
सिध	२	२	सदान	७७	११	सहृद्यार्थिनी	१६	१५
सिध	५२	९						

सहस्रकिरण	२६	१९	सुरधर्म	२८	१५	स्नातृव	१३	३
सहाय	१४	३	सुरसयिद्	३६	१	स्नापतेय	४८	६
सामयम्बरा	४	६	सुरोय	१३	३	स्त्रीभि	१७	१७
सामाधिक	५६	७	सुर	२६	१			
सामि	८९	४	सेवता	१८	२	हृष	२६	२१
सायक	३९	२१	सेवक	१४	३	हृषण	५३	१४
सार	४८	६	सेरिन्धी	१८	१८			
सारङ्ग	६४	१७	शोकर	२१	१	हरि	२६	२
सारसन	६	१९	स्कण्ड	५	२१	हरि	३३	८
सार्ध	३३	१२	स्तनमित्तु	९	१२	हरि	७२	११
सिद्ध	४९	४	स्तम्भ	३२	१३	हरिबन्ध	२६	२१
सिद्धवती	५१	२	स्तोम	६३	१३	हरिमिया	३८	२१
सिद्धय	५९	१२	स्वभिर	३७	१	हरिमान्	३१	२७
सिद्ध	४७	१९	स्वानीय	४९	८	हरिहृम	३१	२६
सिद्धाभ	६	५	म्बरा	४	७	हर्षसा	४६	४
सिद्धेतरवति	३४	१५	स्मिन्ध	२१	२	हर्षिः	३२	७
सीता	३८	२२	स्पर्शन	३३	८	हृष्य	६	२३
सुकुमार	७५	१४	स्पष्ट	८७	१	हाङ्गूर	६१	१६
सुकरिता	१७	९	स्पृष्ट	३२	७	हिमवाचक	६	५
सुक्षामृषि	२५	२	स्रष्टा	३६	४	हिरण्य	४८	७
सुषी	५६	२	स्रोतस्	१२	११	हृष्यम	३९	१२
सुषभित्तु	३८	१४	स्वजन	२१	१	हृषण	५२	२६
सुषभौ	३	१४	स्वमम्भू	३७	१	हृषा	५२	२६
सुमनस्	३	१२	स्वराट्	३१	२६	हाभिनी	९	२
सुरज्येष्ठ	३७	१	स्ववी कश्	३	१२	हाभिनी	१२	११
सुरनिम्बना	३६	११	स्वाङ्कुरसा	६१	१५	हृषा	५२	२६

यौगिकशब्दानुक्रमणिका

अभिपर्थायम् नुप	सेनाती	६६	त्रित्वापर्थायकर बल	१४२	मनुष्यपर्थायपति नुप	१४
अक्षपर्थायपि जिन		१३१	अपाद्यादि ध्वजाद्यन्त स्मर	८४	मयूरपर्थायपति मुह	१२६
अपिपित्तव्याप्तर्धृज्जर्थाय			तामरसपयामपनी विधिनी	२३	भक्षपर्थायपक्ष आत्ताद्य	५३
प्रयोगे हेतनामनि		५६	द्विनपर्थायकरः सुध	५०	रात्रिपर्थायपक्ष राक्षस	५५
आकाशपर्थायपक्ष		५४	रेवपर्थायपति इन्द्र	५७	रुद्रमीपमपिपति हृदि	७६
आकाशपर्थायपक्ष ओषध		५४	देहपर्थायमम सत	३९	नामुपर्थायपक्ष आकाश	५३
उदपर्थायपति चन्द्र		४८	सुपपर्थायपुनी मंगा	७१	वार्धपर्थायपक्ष मस्त्य	१६
काष्ठप्रतिनामत् परं पासप्रयोग			वनपर्थायपक्ष कुबेर	९६	वार्धपार्थायपिः अन्धुभि	१६
नक्षत्रप्रयोगे अम्बरप्रयोग च			धीनामवर्जित मूर्ध	१६६	वार्धपार्थायपिः पक्षम्	१६
द्विधा नामानि		६१	नामपर्थायपिः मृगेन्द्र	९	विलपपर्थायपति कुबेरः	१६
कायपर्थायपिः हृत् मन्मथ		७७	मिगापपर्थायपक्ष चन्द्र	४८	विधिपपर्थायपुत्रः नारद	५३
कार्मुकपर्थायपिः कोटि अटनी		७९	पत्रगपपर्थायपक्षैरो गदह	१२८	विपिनपपर्थायपक्षः वनेपक्ष	१३
किरकवाचिन्म्य पूर्वं दीपशब्द			परिपत्तपर्थायपक्ष कमलम्	२	विष्णुपपर्थायपति जित	११३
प्रयोगे चन्द्रनामानि यथा			पवनपपर्थायपुत्र भीम	६६	धाम्पापपर्थायपति अन्धुष	१९
दीपकिरक		४६	पवनपपर्थायपुत्रः हनुमान्	६३	सकभम्भ्यादिपक्षः हृदि	७६
किरकशब्देभ्यः पूर्वं उष्णशब्द			पवनवाचिसञ्ज्ञा जनि	६४	शेनाभीपपर्थायपिता सक्कुर	६८
प्रयोगे सूर्यनामानि यथा			पुष्पपपर्थायपक्ष स्मर	८	शोतस्त्रिणीपपर्थायपतिः	
उष्णकिरक		४६	पुष्पपपर्थायपक्ष स्मरः	८	अम्भि	२४
हृत्पपपर्थायपुत्रः मन्मथ		७७	प्ररक्षपपर्थायपक्षान् गिरिः	९	स्वर्धपपर्थायपतिः इन्द्र	५७
यङ्गानदीपक्ष सिन्धु		७१	मूमिपपर्थायपक्षः दाल	७	द्वर्धपपर्थायपक्षः विदधः	५७
विलपपपर्थायपिः सतोहृत्		१७८	मूमिपपर्थायपति नुप	७	स्वान्तपपर्थायपिः मन्मथः मा	८१
वाङ्मपपपर्थायपिः राक्षस		५४	मूमिपपर्थायपक्ष बुध	७	द्विपपपर्थायपक्षः चन्द्रः	१७९

अनेकार्थनिघण्टुगतशब्दानामकरादिसूची

अ			इ			केसरिन्		
अक्ष	१ ४	७६ ७७	इडा	१ २	२९	कोकिळा	१ ४	८२
अगारि	१ ४	१०५				कोटस्त्व	१ ५	१४९
अङ्ग	१ ३	४	उ			कोमळ	१ २	२६
अज	१ २	३४ ३५	उसान्	१ ४	१ ६	कोविक	१ २	१३
अपिति	१ २	२९	उरक्षया	१ ५	१३	कृष्य	१ ४	९५
अभ्यात्म	१ १	१२३	उवार	१ ५	१२९	क्षता	१ ३	३८
अभ्यूडा	१ २	३	उम्भीष	१ ४	८८	क्षय	१ ३	४५
अनन्त	१ २	३७	उसा	१ ४	१ ७	खर	१ २	२१
अभिमिय	१ २	४						
अपाचीन	१ ४	९३	झ			ख		
अज्ज	१ ३	५७	झट	१ ४	७५	घ	१ ३	६४ ६५
अमृत	१ २	२२				ग		
अम्बर	१ २	१९	गीषम	१ ४	७५	गो	१ २	२
अम्बरीष	१ ३	६१				गोळक	१ ५	१३३
			क	१ २	३४	घावाव	१ ३	७४
अर्क	{ १ २	१५	ककुप	१ २	४४			
	{ १ ४	९४	कवण	१ ४	८८	घ		
असात	१ ४	८६	कम्बु	१ २	११	घन	१ ३	४६, ४७
अववात	१ ३	५५	कर	१ २	२४	घनावन	१ ४	९३
अव्वापोह	१ ४	९४	कर्य	१ ४	९	घुठ	१ २	२३
अधित	१ ३	६७	कस	१ ४	८६	घ		
अगुर	१ ३	४८	कसम	१ ४	१ ८	घक	१ ४	१ ४
			कखप	१ ४	१ ८	घमू	१ ३	४८
आ			कलीन	१ ४	९			
आकत	१ ४	९८	किलात	१ ४	१ ४	छ		
आकम्ब	१ ४	९५	कीक	१ ५	१२६	छेव	१ ४	८६
आकोर	१ ३	४						
आइम्बर	१ ४	११२	कीनाम	{ १ ३	५३ ५४	झ		
आप्यत्र	१ ३	५३	{ १ ५	१२१		पम्बुक	१ २	१६
आरिण्य	१ ३	७१	कीसात	१ २	२५	कीमुन	१ ३	५८
आधि	१ ४	१ २	कुल	१ ५	१३३	प्यर्णि	१ ३	५५, ५६
आगतन	१ ४	७८	कृशापी	१ ५	१३४			
आर्ष	१ ४	१११	कस	१ ३	३६	त		
आप्यत्राप	१ ४	१ ३	कनघ्न	१ ५	१२३	तास	१ ५	१३१
आप्यत्र	१ ४	९२	कण	१ २	२२	तनीतद	१ २	१३
आप्यत्र	१ ४	८९	कैजु	१ ३	१६	तार्य	१ ३	५

विद्यक	१ ४	८४	पण्ड	१ ४	११	मार्वा	१ १	१८८
सुर्य	१ ४	१ ४	पण्ड	१ २	१२	माष	१०४	८७
सुनी	१ ३	५१	पण्ड	१ ४	१ १	मास्कर	१ २	१२
प्रेमसू	१ ५	१३१	पय	१ ४	७७	भुवन	१ २	२५
ठोसत	१ ४	१२	पय	१ २	१९	भूरिपय	१ ५	१४
पोपद	१ ३	५८	परचित	१ ५	१३५	म		
बिबामा	१ ४	१ ९	परमेष्ठी	१ ४	१	मज्जूषा	१ ४	८१
निष्ठ	१ ३	३८	परिचर्य	१ ४	८४	मज्जूक	१ ४	८९
	५		पर्यस्य	१ ३	३	मत्तकादिनी	१ ५	१३९
बल	१ ३	७१	पकास	१ ४	१ ६	मभु	१ ३	६३ ६४
बक्षिण	१ ४	९७	पवन	१ ४	१११	मभिनू	१ २	१५
बक्षिण	१ ४	९९	पानीय	१ ४	१ २	मन्य	१ ५	१२१ १२३
बान	१ ४	९९	पाप	१ ४	९९	मभिर	१ ४	१ ५
बान्त	१ ५	१२४	पाण्डवजम्ब	१ २	११	मभूक	१ २	१७
बीर्ष	१ ४	११०	पिण्ड	१ ४	८३	मभिमन्त्र	१ ३	५२
दुपधर्मन्	१ ४	९	पिण्डित	१ ४	९५	मभिर	१ ४	१ ७
बोला	१ ४	१ ४	पुम्पस्फोक्त	१ १	११७	महेष्वास	१ ५	११८
बिज	१ ३	५९	पुसिन	१ ४	८२	माया	१ ३	६३
	५		पुष्कर	१ ३	३६	मूक	१ ४	९६
बनभ्रम	१ २	९	पुञ्ज	१ ४	७८	मेवक	१ ४	८३ १ ६
बावैरप	१ ३	६५	पुस्तक	१ ३	६२	मिच्छ	१ ४	९१
बिज्य	१ २	१८	पृष्ठीशी	१ ४	१ ७	य		
	५		पीसस्त्य	१ ३	५९	यम	१ ३	६८
मकुल	१ ३	६७	प्रजापति	१ ३	३८	मज्जमद्योष	१ ५	११७
मत्त	१ ५	१५१ १५२	प्रजात	{ १ ३	५१	पूषप	१ ५	११९
मान	१ ३	४९	प्रजा	{ १ ४	१ ५	पूषपपूषप	१ ५	११९
मापित	१ ४	१ १	प्रजाकर	१ ४	११३	२		
मास्तिक	१ ५	१३२	प्रासाद	१ ३	४६	रंक्ष	१ ४	१ ३
मिक्य	१ ४	८४	प्यव	१ ३	४५	रजसू	१ ३	७२
मिचम्ब	१ ३	७२		क		रज	१ ४	८३
मिचपत्रका	१ ५	१२८	फेगवाहिनी	१ ३	९४	रत्न	१ ४	१ ९
मिचपत्रका	१ ५	१२७		क		रत्न	१ ४	९२
मिचिद	१ ४	८९	बभू	१ ४	९९	रम्भा	१ ३	७४
मूधिह	१ ५	१२	बीमत्त	१ २	९	राजन्	१ २	७
म्ववीचपरिमन्त्रका	१ ५	१४३		म		राजीवबोधन	१ ५	११४
	५		मनवन्	१ ५	१२९	राजीवबोधना	१ ५	१४३
पञ्च	१ ४	८२	मामिनी	१ ५	१४२	राम	१ २	३७, ३३

राजन	१ ५	१४१	विभावायु	{ १ २	८	शुभ	१ ४	९६
रोहिणेव	१ २	३१		{ १ ३	४१	श्रेयसी	१ ४	९३
	ल		विष्णोष्ठी	१ ५	१३७	शेष	१ २	३२
कर्म	१ ३	१९७	विरोचन	३ २	१	शैलप	१ ४	१
कर्मम	१ ३	६९	विकाश	१ ४	८७	प		
कस्तुरा	१ ५	१३७	विद्याक	१ ४	९	पद्मप	१ ५	१३३
कलाम	१ ४	८१	विद्य	१ २	२४	स		
कम्पिता	१ ५	१३९	बुकोवर	१ ५	११६	सगर	१ २	२७ २८
कवली	१ ४	८१	बुजिन	१ ४	१ ९	सग	१ ४	१ ३
कामध्व	१ ४	१ १	बुध	१ २	३	सत्वर	१ ४	८१
कलाय	१ ४	१ ३	बुधा	१ २	३१	सडन	१ २	२६
केला	१ ३	६१	बेहम्	१ ४	१ ७	सधूम	१ २	२७
	क		बैजर्वन	१ ५	११५	सध्वपि	१ २	१७
ककवपत्र	१ ४	८९	भक्तिवनायिन्	१ ५	१२	सध्याम्ब	१ ५	१४८
कल्प्या	१ ४	१ ७	भञ्जव	१ ४	११२	समाधि	१ ५	१२४
करमपिनी	१ ५	१३८	भ्याधि	१ ४	१ २	समाधिसम्ब	१ ५	१२५
कराह	१ २	३३ ३४		स		समाद्	१ ४	१ ९
करम	१ ३	४७	पञ्च	१ २	१४	सान्द्र	१ ३	४२
कर्पास	१ ४	८९	पञ्चकष्ठी	१ ५	१४५	सारंग	१ ३	७३
कलाहक	१ ३	५७	सम्भु	१ २	१३	सारस	१ २	७
कस्तुरी	१ ४	११३	सरारु	१ ५	१३१	सिध	१ ३	६६
कसा	१ ४	१ ७	सरीरज	१ २	३५	सुमना	१ ४	११३
कमु	{ १ २	१८	गर्वरी	१ ३	४२	स्वविष्ठ	१ ४	९९
	{ १ ३	७३	जय	१ २	२३	स्वभल	१ २	२१
काजी	१ ४	७९	बिजिरिन्	१ ३	५१	स्वदु	१ ३	४३
काम	१ ३	३९	चिकिन्	१ २	५		ह	
काधेम	१ ३	५	चिन्	१ २	९	हंस	१ २	९
कासर	१ ३	४१	चिन्ना	१ ४	९	हरि	१ ४	८
विद्यान्	१ ३	६९	चिन्नीमुक्त	१ ३	६	क्षिपाराधि	१ २	८
विपञ्ची	१ ४	११३	शीत	१ ६	१५३	क्षि	१ ४	१८
विपिन	१ ३	१५२	शुभ	१ ४	८१	हस्त	१ ४	११
			शुभिहन्	१ ३	५९			

उद्धृतवाक्यानामकारादिसूची

यज्ञनाम्न तदेषुमां	५७	यमो बरुंठाव	१	मर्त्ता संगर एक मृत्यु वसति	१५
वतिप्रसापमावण	६१	उत्तु ह्वङ्गनीनं वग्	६१	भाग्यत्वात्वात्विद्यानां	२
जमघनाबमीशयवृत्ति-	२	उत्संवेहे कते शाभ्यां -	५८	मदन्ति मिथीमवन्ति	१२
जसुययायय निघाम्य मां	३३	दुग्धय मुहियज होज	२२	य पापपाघनाशाय	२
भारमनि मोक्षे ज्ञाने	५२ ५८	दुष्कानां विनोद्याम	६३	य उत्पन्न पुनाति बंधं	१९
भापो भाटा इति प्रोक्ताः	३७	विश्वोऽग्निं पुराण	२५	यन्धवर्षिपहितं न धर्मसहितं	५९
बाहुः पीयूषकृषी- स्मृति	६२	न कुं पृथिवी पिपति	१२	रेपभाद् क्लेशराधीनाम्	१
बाहुर्नोरोवमधोः सृष्ट	२४	नक्षत्रमूर्धं नं ताप	२५	कन्द्रीकीन्तुमपाटिवाजकमुरा	६१
उद्दीय वाञ्छितं मान्ति	१४	नक्षत्रे वासिमध्यं च	२५	करं सिप्य पाणि	२२
एका रवो मक्षरैको	४५	नभन्तु नयथा सार्धं	१	कर्त्तव्यो बनेन्द्रादी	
ऐश्वर्यस्य धमपत्य	६५	नभने प्राणसन्देशो	५६	२३ २९ ४६ ५९ ६५	
कपिर्बराहः येऽऽरव	३४	नासाकण्ठमुरस्ताक		बाहं बाहन्तु पर्वोऽपि	२७
काशयमित्युक्त्वात् उज	५७	निपडस्तु जम्बाक-	१	बाहो युयं वनो बाहो	२७
कियती पञ्चसहस्री	९६	निघासर्वमनाम्बार	५३	बृहत्कपिवन्तिरेवै	३४
कुमारकाले कामस्त्री-	५५	पञ्चमे बहते नाभम्	५४	स्वामा रात्रिस्तु विद् स्वामा	२५
कोकिलानां स्वरो रूप	५५	पञ्चाधारतो गित्यं	५५	पद्मं ममूरा बृवते	५३
कवचित्प्रवृत्ति कवचित्प्रवृत्ति-	९	पद्मं धकटंनम्	४९	सप्य बुरे विहृति धर्म	१४
किरिक्मरुदुर्गोपु	३२	पठविपथिततत्र-	२९	सन्निर्गोनी सुरङ्गावा	९९
गोसने मुर्त्तनं हन्याद्	५६	पर्यङ्गैरिज्जुषीं धर्म	४४	सर्पपत्य प्रक्षणेन	९६
गौः स्वयः सप्रहृष्टारमा	५८	पुष्परीकं सिताम्बुजम्	१	स भ्याक्याति न सास्त्रम्	३
गौर्गोः कामबुधा	५२	पुष्पसाधारणं काले	५३	स्वस्मे नरे मुष्वासीने	९९
गतुपदिककाभिजा	१८	प्रथमे जायते चित्वा	५४	स्वान्मूत्थै ननेद्	१
गत्वारः पूर्वसंज्ञा	५८	प्रथस्या न तमस्यापि	२२	हावो मुष्वाकिराटः स्वात्	१७
जातगामोऽत्र मयवान्	३१	प्राक्विषत्तदितयनीयावृत्त्य	२	हिसानुपस्तेया	९
				हिर व्यगर्गममवन्	३७

भाष्यगता ग्रन्था ग्रन्थकाराश्च

अककजु	१	१	द्विसन्धानकाव्यम्	३३	१	विद्यानवी	१	१
अनेकार्थधनिमञ्जरी-			द्विसन्धानभाष्यम्	६१	१	धन्यवचः	१	१७
{ २५	२१		माममाका	७२	२	धावकवः	२५	९
{ २७	१३		पद्यमिष्यास्त्रम्	१	१९	दीर्घोक्त	२५	९
अमरकोषः	८७	८	पुस्तपाव	१	१	समन्तमत्र	१	१
{ १	८		बृहत्प्रतिष्मन्भाष्यम्	५८	१५	मूकितमुक्तावली	२२	१८
{ १२	१५		मरुतपाठकम्	५३	२२	सामनीतिः	{ ४८ १९ २४ २७	
{ ४३	६		मारणम्	४४	४	{ १९	३४	
{ ५३	२		महानुष्यकम्	{ ५७ २९ २३		हकामुचः	{ १	२६
अमरसिंहनाममाका	२९	६		{ ५८ ३९		{ १२	२४	
अमरसिंहनाम्यम्	१९	१२	यद्यकीर्ति	२२	१५			
आद्यावरमहाविषयेकः	६२	१						
अष्टमविंशती तिघास्त्रम्	५५	२३		{ २ १६ १९				२९ ५
अष्टमविंशती-	१	२	यद्यग्लिकम्	{ १४	२१	ईमा	१४	१
औरत्वाजी	६२	६		{ २४	२५	ईमनाममाका	२७	१९
आत्मविषयः	२९	६		{ ३३	१५	ईमी	१६ १७ २५ २७	
			यद्यस्तिककम्पूकाम्यम्	९८	८	ईमीनाममाका	३४	१२

सङ्केतविवरण

क वि अमिधानचित्तामनि
 अनेका सं अनेकार्थसङ्ग्रह
 अम को अमरकोष
 अम को ही मा अमर
 कोष बीरस्वामी भाष्य
 अमर अमरकोष
 अ सं अनेकार्थसङ्ग्रह
 उ सू उच्चारिसूत्र
 कस को कल्पद्रुमास
 का उ कातन्त्र उच्चारि
 का क उ कातन्त्र रूपमाळा
 उत्तरार्थ
 का क पू कातन्त्र रूपमाळा
 पूर्वार्थ
 का क पू सू कातन्त्ररूप
 माळा पूर्वार्थसूत्र

का सू कातन्त्रसूत्र
 की भा बीरस्वामिभाष्य
 की स्वा बीरस्वामी
 कन समु कनपद्यसमुद्देश
 के सू केनेन्द्रसूत्र
 त सू उत्त्कार्थसूत्र
 तीतिघा तीतिसार
 ती वा समु सू तीति वाक्या
 यामृत समुद्देशसूक्ति
 प प पद्यनम्बिपञ्चमिच्छिका
 पा उ पाणिनि उच्चारि
 पा मजसू पाणिनि वजसूत्र
 पाठ भाष्य पाठञ्जलिमहाभाष्य
 पा सू पाणिनिसूत्र
 मो उ मौजउच्चारि
 मे को वा व मैदिनीकोष
 वास्तवर्ष

मस ति वा क महास्तिछन्द
 वास्तव्य छन्द
 नि को का विश्वकोषनकोष
 काण्डवर्ष
 नि लो विश्वकोषन कोष
 स न प्रत्यार्थवचनिका
 स न सू प्रत्यार्थवचनिका
 सूत्र
 सा कारिका शाकटायन कारिका
 सा सू शाकटायन सूत्र
 सर क सरस्वतीकण्ठमरण
 धार समा सू धारस्त
 समास सूत्र
 हे न हेमचन्द्र
 हे स हेमसम्बन्धसाधन

शुद्धिपत्रम्

पृष्ठ	प०	अशुद्धयः	शुद्धयः	पृष्ठ	प०	अशुद्धयः	शुद्धयः
७	१४	सरं	सरं	१५	९	विपाद्य-विषयः	
५३	२	स्तमितं	स्तमितं	१९	२	मिष्टुरो	मिष्टुरो
५४	२१	मुक्तीया	मूत्तीया-	७१	९१	रवेतो	रवेतो

